published on August 13, said: "Our exports have continued at record levels, with recent growth especially marked to European Community countries (an increase of 9 per cent., seasonally adjusted, in the latest three months over the previous three months) and to Japan (an increase of 13 per cent.). Over the previous year the increase has been: to the EEC 35 per cent., and to Japan 63 per cent.

Longer-term picture

"Looking to the longer term, the value of exports so far this year is 19 per cent. higher than in the second half of last year; and the volume increase in the first six months of 1973 was 13 per cent. up over the second half of 1972. In contrast, the increase in the volume of imports was much less — 8 per cent. — and this

....is largely

Issued by British Information Services

British High Commission,
Chanakyapuri,
New Delhi 21.
Tel: 70371

British Deputy High Commission,
Mercantile Bank Building,
Mahatma Gandhi Road,
Bombay 1: Tel: 259981

British Deputy High Commission,
1 Ho Chi Minh Sarani,
Calcutta 16.
Tel: 445171

British Deputy High Commission,
Central Library Buildings,
15^A Mount Road;
Madras ... Tel: 83136

(नक्षत्राणि)

सू
चं
मं
बु
बृ
शु
श
रा
के

मे
वृ
मि
क
सिं
क
तु
वृ
ध
म
कुं
मी

अश्विनी
भरणी
कृत्तिका
रोहिणी
मृगशिरः
आर्द्रा
पुनर्वसु
तिष्य
अश्लेषः
मघा
पूर्वाफाल्गुनी
उत्तराफाल्गुनी
हस्तः
चित्रा
स्वाति
विशाखा
अनुराधा
ज्येष्ठः
मूलः
पूर्वाषाढा
उत्तराषाढा
श्रवणः
धनिष्ठः
शतभिषक्
पूर्वाभाद्रपदा
उत्तराभाद्रपदा
रेवती





This copy book b

This copy book belongs to

~~P. Kashi Nath Akura~~

S. Pt. ~~Thakur Bain~~

Vijayshwar Jyotish Karyalaya.

Brijlehar Rashmi

Achaarya Bhushan.
M.A Sahityalankar

Achaarya Bhushan

अमरकोश

२५८

श्रीः।

अथामरकोशः।

श्रीमदमरसिंहविरचितः।

मुरादाबादवास्तव्यश्रीयुतगौडवंशावतंसभोला-
नाथात्मजपण्डितरामस्वरूपकृतभाषाटीकया
शब्दानुक्रमणिकया च समेतः।

खेमराज श्रीकृष्णदास,

" श्रीवेङ्कटेश्वर " स्टीम्-प्रेस,

बंबई.

संवत् १९९२, शके १८५७.

मुद्रक और प्रकाशक—
खेमराज श्रीकृष्णदास,
मालिक—"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्—प्रेस, बम्बई.

AMARKOSHA

OF

Amarsingh

AMARSINGH

WITH AN INDEX AND A COMMENTARY

BY

Ramaswarupa Bholanath Pandit

Printed and Published

BY

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS,

AT HIS

SHRI VENKATESHWAR STEAM PRESS,

BOMBAY.

1935

श्रीः ।

अकारादिक्रमेण अमरकोश–शब्दानुक्रमणिका ।

२

३

६

१ (प्राघूर्णिकः प्राघुणकश्चाभ्युत्थानं तु गौरवम्)

इत्यमरकोशशब्दानुक्रमणिका समाप्ता ।

श्रीः ।

अथामरकोशः

भाषाटीकासमेतः ।

प्रथमं काण्डम् १.

अथ स्वर्गवर्गः १.

यस्य ज्ञानदयासिन्धोरगाधस्यानघा गुणाः । सेव्यतामक्षयो धीराः स श्रिये चामृताय च ॥ १ ॥

यस्य भासा जगद्भाति सदैव सचराचरम् । तं नौमि परमात्मानं भक्तानामभयङ्करम् ॥ १ ॥ जटाटवीगलद्गंगं चन्द्रचूडामणिं शिवम् । स्मृत्वामरकृतेः कुर्वे भाषां व्याख्यासुधानुगाम् ॥ २ ॥

अन्वयः–हे अनघाः! भवद्भिः, सः, अक्षयः, धीरोः, श्रिये, च, अमृताय, च, सेव्यताम् । ज्ञानदयासिन्धोः, अगाधस्य, अस्य, ई, अस्ति, गुणाः, च, सन्ति॥ १॥

अर्थः–हे सज्जनो ! तुम उस अविनाशी ज्ञानदाता गुरुकी भोग और मोक्षकी प्राप्ति होनेके अर्थ सेवा करो, जो शास्त्रकरके संपन्न और दयाकरके पूर्ण तथा विषयोंसे विरक्त हैं, ऐसे इन गुरुके पास अखण्ड लक्ष्मी और सत्य, शौच, दया, क्षमा आदिक गुण हैं ॥ १ ॥

ग्रंथमें वक्तव्य विषय दिखलाते हैंः–

समाहृत्यान्यतन्त्राणि संक्षिप्तैः प्रतिसंस्कृतैः । सम्पूर्णमुच्यते वर्गैर्नामलिङ्गानुशासनम् ॥ २ ॥

अन्वयः–मया, अन्यतन्त्राणि, समाहृत्य, संक्षिप्तैः, प्रतिसंस्कृतैः, वर्गैः, युक्तम्, नामलिंगानुशासनं, सम्पूर्णम्, उच्यते ॥ २॥

अर्थः–मैं व्याडि आदिकोंके नामलिङ्गानुशासन अथवा सिद्धांतोंका संग्रह करके शब्दोंके क्रमानुसार कथन करनेसे सुशोभित ऐसे थोड़े २ शब्दोंके वर्गोंसे अर्थात् पृथक् २ प्रकरणोंसे युक्त ऐसा शब्द और उनके लिंगोंका स्पष्ट रीतिसे बोध करनेवाला कोश परिपूर्ण रीतिसे कहता हूँ ॥ २ ॥

---

१ धियं राति ददाति । 'रा दाने' अस्मात् क्विप् । धीरा ज्ञानप्रदो गुरुरित्यर्थः ।

अर्थात्–ज्ञानके देनेवाले गुरुको धीर कहते हैं ।

इस ग्रंथमें लिंगादिव्यवस्था किस प्रकारसे की है वह कहते हैं:—

प्रायशो रूपभेदेन साहचर्याच्च कुत्रचित् । स्त्रीपुंनपुंसकं ज्ञेयं तद्विशेषविधेः क्वचित् ॥ ३ ॥

अन्वयः—अत्र, प्रायशः, रूपभेदेन, स्त्रीपुंनपुंसकं, ज्ञेयम्; च कुत्रचित्, साहचर्यात्, स्त्रीपुंनपुंसकं ज्ञेयम्; क्वचित्, तद्विशेषविधेः, स्त्रीपुंनपुंसकं ज्ञेयम् ॥३॥

अर्थः--इस ग्रंथमें बहुत करके ईप्, आप्, विसर्ग और अनुस्वार इनसे स्त्रीलिंग, पुँल्लिंग और नपुँसकलिंग जानना, जैसे—'पद्मालया' और 'पद्मा' यहां 'आप्' होनेसे 'पद्मालया' और 'पद्मा' यह स्त्रीलिङ्ग हैं। 'पिनाकोऽजगवं धनुः' 'पिनाकः' यहांपर विसर्ग है इससे 'पिनाक' शब्द पुँल्लिङ्ग है । 'अजगवम्' यहांपर अनुस्वार होनेसे 'अजगव' शब्द नपुंसक है. कहींपर विशेषणमें स्थित अथवा सर्वनामवाचक शब्दमें स्थित रूपके भेदसे लिंगोंमें भेद होता है, जैसा—'तत्परो हनुः' यहांपर 'तत्परः' इस विशेषणका पुँल्लिंगरूप होनेसे उसका विशेष्य जो 'हनु' शब्द है उसका भी पुँल्लिंगहीमें रूप चलता है तथा 'कुतूः कृत्तेः स्नेहपात्रं सैवाल्पा कुतुपः पुमान्' यहां 'सा' यह जो सर्वनामसंज्ञक शब्द है वह '[illegible] शब्दका विशेषण है इससे 'सा' इ[illegible] स्त्रीलिंग होनेसे उसका विशेष्य [illegible] 'कुतू' शब्द है उसका भी स्त्रीलिंग[illegible] और निश्चित है लिंग जिसका ऐसा [illegible] समीप उच्चारण करनेसे उसका जो [illegible] है वही लिंग उस समीप पढ़े हुए अ[illegible]श्चितलिंगवाले शब्दका जानना, [illegible] 'अश्वयुगश्विनी' 'भानुः करः' 'वि[illegible]ष्णुपदम्' यहांपर 'अश्वयुज्' 'भानु' [illegible] 'वियद्' इन अनिश्चितलिंगवाले शब्[illegible] समीप निश्चित लिंगवाले 'अश्वि[illegible] 'कर' और 'विष्णुपद' ये शब्द है[illegible] उनके जो लिंग हैं वे ही लिंग उन अ[illegible]श्चित लिंगवाले शब्दोंके जानने अ[illegible] 'अश्वयुज्' शब्दका स्त्रीलिंग, 'भा[illegible] शब्दका पुँल्लिंग और 'वियद्' शब्[illegible] नपुंसक लिंग है, इस प्रकारसे जान[illegible] और कहीं कहींपर उन स्त्री, [illegible] नपुंसक इनके विशेषरीतिसे कथन [illegible]नेसे स्त्रीलिंग, पुँल्लिंग और नपुंसक[illegible] जानना. जैसे 'भेरी स्त्री दुन्दुभिः पुम[illegible] 'रोचिः शोचिरुभे क्लीबे' यहां [illegible] भेरी शब्दके समीप 'स्त्री' [illegible] विशेषरीतिसे कथन किया है इस[illegible] 'भेरी' यह शब्द स्त्रीलिंग है [illegible] 'दुन्दुभि' शब्दके समीप 'पुमान्' [illegible]

थन करनेसे 'दुन्दुभि' शब्द पुँलिंग है और 'रोचिस्' 'शोचिस्' शब्दोंके समीप भे क्लीबे' अर्थात् दोनों भी नपुंसक ह विशेष कथन करनेसे 'रोचिस्' और ोचिस्' ये शब्द नपुंसकलिङ्ग हैं, इस कारसे सर्वत्र जानना ॥ ३ ॥

भेदाख्यानाय न द्वन्द्वो नैकशेषो संकरः । कृतोऽत्र भिन्नलिंगाना-नुक्तानां क्रमादृते ॥ ४ ॥

अन्वयः—अत्र, अनुक्तानां, भिन्न-लिङ्गानां, भेदाख्यानाय, द्वन्द्वः,न, कृतः, कशेषः, न, कृतः, क्रमात्, ऋते, करः, न, कृतः ॥ ४ ॥

अर्थः—इस कोशमें अपने अपने र्यायेंमें नहीं पढ़े हुए भिन्न २ लिङ्ग-ले शब्दोंका लिङ्गभेद कहनेके अर्थ न्द्व और एकशेष नहीं किया है,जैसे-'दे-ता'शब्द स्त्रीलिङ्ग है'दैवत' शब्द नपुं-कलिङ्ग है और 'अमर' शब्द पुँलिङ्ग , इन भिन्नभिन्न लिङ्गवाले 'देवता''दै-त' और 'अमर' शब्दोंका लिङ्गभेद हनेके अर्थ 'देवतादैवतामराः' ऐसा न्द्वसमास नहीं कियां है. द्वन्द्वसमास िया जाय तो 'अमर' शब्दका पुँलिङ्ग 'देवता' और'दैवत' इनका हो जाय-. कारण द्वन्द्व समासमें और तत्पुरुष-में परपदका ही लिङ्ग होता है. वह यहां पर परपदालिङ्ग जो 'अमर' शब्दका पुँ-लिङ्ग है सो 'देवता' और 'दैवत' शब्द-का नहीं होनेके वास्ते द्वन्द्व समास नहीं किया ऐसा सर्वत्र जानना. ऐसे ही 'नभः खं श्रावणो नभाः' यहांपर'अश्राव-णौ तु नभसी' ऐसा 'नभसी' इसप्रका-रका एकशेष भी नहीं किया, यदि'नभा-श्च नभश्च नभसी'ऐसा एकशेष करनेसे 'नभसी' यह नपुंसकलिङ्ग शेष रहेगा फिर आकाशवाचक 'नभस्' शब्द नपुं-सकलिङ्ग होगा परन्तु श्रावणवाचक 'नभस्' शब्द पुँल्लिङ्ग है ऐसा नहीं जाना जायगा, इस वास्ते 'खं नभः' और ' श्रावणो नभाः' ऐसा पृथक् २ 'नभस्' शब्द कहा है, लिङ्गभेद समझनेके लिये एकशेष'नभसी' ऐसा नहीं किया, परन्तु समान लिङ्गोंका तो द्वन्द्वसमास किया ही है. जैसे—'स्वर्गनाकत्रिदिवत्रिदशालयाः' 'पादा रश्म्यंघ्रितुर्यांशाः' यहां पर एक-लिङ्गके ही सब शब्द हैं, इसवास्ते उनका द्वन्द्वसमास किया है और जिन शब्दोंके पर्यायशब्द और लिङ्ग स्वतंत्रतासे अन्य स्थलोंमें कहे हैं, उससे अन्यत्र जो उस भिन्नलिङ्ग शब्दोंका किसी अर्थान्तरके अर्थ कथन करनेके लिये द्वन्द्वसमास

किया है, जैसे–'विद्याधराप्सरोयक्षरक्षोगन्धर्वकिन्नराः' 'मातापितरौ पितरौ' यहांपर 'अप्सरस्' शब्द अपने पर्यायोंमें 'स्त्रियां बहुष्वप्सरसः स्वर्वेश्या उर्वशीमुखाः' यहां ही स्त्रीलिङ्ग है ऐसा कहा है. उसी 'अप्सरस्' शब्दको देवयोनिमें परिगणनरूप अर्थके लिये विद्याधर आदिक गणोंमें पठित किया है और 'विद्याधर' 'अप्सरस्' 'यक्ष' 'रक्षस्' 'गन्धर्व' 'किन्नर' इन सब शब्दोंका द्वन्द्व, समास किया है, अब यहांपर यद्यपि सर्वशब्दोंका द्वन्द्वसमास होनेसे 'विद्याधराप्सरोयक्षरक्षोगन्धर्वकिन्नराः' ऐसा पुँल्लिङ्ग रूप बना है तो भी 'अप्सरस्' शब्दका अन्यत्र 'स्त्रियां बहुष्वप्सरसः' यहांपर कथन करनेके अनुसार स्त्रीलिङ्ग ही है ऐसा समझना और 'मातापितरौ पितरौ' यहांपर 'पितरौ' इसमें 'मातृ' और 'पितृ' ऐसे दोनों शब्दोंका एकवद्भाव किया गया है, इसमें 'मातृ' और 'पितृ' इनमेंसे 'पितृ' इसका शेष रहा है, इससे 'पितृ' इस शब्दको 'मातृ' 'पितृ' इन दोनोंका वाचकत्व होनेसे भी उसके अन्तर्गत यद्यपि 'मातृ' यह शब्द है तथापि वह 'मातृ' शब्द 'जनयित्री प्रसूर्माता' इस स्थलमें पर्यायशब्दोंके साथ स्त्रीलिङ्ग पठित है इसवास्ते उस 'पितरौ' इसके अन्तर्गत 'मातृ' शब्दका स्त्रीलिङ्ग ही है ऐसा जानना। और इस कोशमें उन भिन्न भिन्न लिङ्गवाले शब्दोंका क्रम छोड़के भिन्न २ लिङ्गवाले शब्दोंमें संकर कहिये मिश्रण नहीं किया है. जैसे–'स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः' यहांपर 'स्तव' ऐसा पुँल्लिङ्ग कहा, फिर 'स्तोत्रं' यह नपुंसकलिंग कहा, फिर 'स्तुतिः' 'नुतिः' वे स्त्रीलिङ्ग शब्द कहे हैं. 'स्तुतिः स्तोत्रः स्तवो नुतिः' ऐसा लिंगोंका मिश्रणरूप संकर नहीं किया है. ऐसा ही 'जनुर्जननजन्मानि जनिरुत्पत्तिरुद्भवः' यहांपर 'जनुर्जननजन्मानि' ये नपुंसक शब्द कहे, फिर 'जनिः' 'उत्पत्ति' ये स्त्रीलिङ्ग शब्द कहे, फिर 'उद्भवः' यह पुँल्लिङ्ग शब्द कहा। इस प्रकारसे सर्वत्र लिङ्गविषयमें जानना॥४॥

त्रिलिङ्ग्यां त्रिष्विति पदं मिथुने तु द्वयोरिति। निषिद्धलिंगं शेषार्थं त्वन्ताथादि न पूर्वभाक्॥ ५॥

अन्वयः–त्रिलिङ्ग्याम्, त्रिषु, इति, पदम्, ज्ञेयम्, मिथुने, तु, द्वयोः, इति पदम्, ज्ञेयम्, निषिद्धलिङ्गम्, शेषार्थम्,

ज्ञेयम्, त्वन्ताथादि, पूर्वभाक्, न, इति ज्ञेयम् ॥ ५ ॥

अर्थः—इस ग्रंथमें जहांपर कोई शब्द तीनों लिंगोंमें चलता हो वह 'त्रिषु' ऐसा पद कथन किया है सो जानना, जैसे-- 'त्रिषु स्फुलिंगोऽग्निकणः' यहांपर 'स्फुलिङ्ग' शब्द तीनों लिंगोंमें होता है इसवास्ते उस 'स्फुलिङ्ग' शब्दके समीप 'त्रिषु' यह पद कथन किया है। और जहांपर स्त्रीलिंग और पुँलिङ्ग इन दोनों लिंगोंमें कोई शब्द होता हो तो वहां 'द्वयोः' ऐसा पद कथन किया है सो जानना, जैसे—'द्वयोर्ज्वालकीलौ' यहांपर 'ज्वाल' और 'कील' ये दोनों शब्द पुँलिङ्ग और स्त्रीलिंग हैं इसवास्ते 'द्वयोः' ऐसा कथन किया है। 'द्वयोः' यह केवल द्विशब्दका उपलक्षण है, अर्थात् किसी भी तरहसे द्वि--शब्दका जहांपर प्रयोग होगा वहां स्त्रीलिंग और पुँलिंग जानना. जैसे-'द्विहीनं प्रसवे सर्वम्' और 'द्वयहीने कुकुन्दरे' इत्यादिक स्थलमें द्वि शब्दसे स्त्रीलिंग और पुँलिंग ऐसा अर्थ करनेसे प्रसव--वाचक जितने शब्द हैं वे सर्व स्त्रीलिंग और पुँलिंगसे रहित हैं अर्थात् नपुंसकलिंग हैं और कुकुन्दर-शब्द द्वय-कहिये स्त्रीलिंग और पुँलिंग इनसे रहित है अर्थात् नपुंसकलिंग है ऐसा जानना. तथा जिस शब्दका जो लिंग निषिद्ध किया हो उसके अतिरिक्त बाकी रहा लिंग उस शब्दका जानना. जैसे 'वज्रमस्त्री' यहांपर 'वज्र' यह शब्द 'अस्त्री' कहिये स्त्रीलिंग नहीं है, इससे 'वज्र' शब्दको स्त्रीलिंगत्वका निषेध होनेपर बाकी रहे पुँलिंग और नपुंसकलिंग इस 'वज्र' शब्दके हैं ऐसा जानना और जहां जिस शब्दके पीछे 'तु' यह शब्द हो वहां उस तु-शब्दके प्रथम जो शब्द हो उसका पर्यायवाचक शब्द केवल उस तु-शब्दके पीछे पढ़ा हुआ ही शब्द होता है, उससे पहला शब्द उस 'तु' के पहले पठित किये शब्दका पर्यायवाचक शब्द नहीं होता है. जैसे-- 'नगरी' त्वमरावती' यहांपर 'तु' यह जो शब्द पठन किया है इसके पूर्व पठित जो 'नगरी' शब्द है उसका पर्यायअर्थबोधक शब्द 'अमरावती' यह है इस तु--शब्दके कथन करनेसे 'नगरी' इसका संबंध 'अमरावती' इसमें होता है उस 'नगरी' शब्दके प्रथम पठित 'इन्द्राणी' शब्दमें नहीं होता है यह 'तु' अन्त में जिसके है ऐसे नामपदकी व्यवस्था कही अत्र इसी प्रकारसे 'तु' जिसके अन्तमें

है ऐसा लिंगवाचक पद सर्वनामसंज्ञक पद और अव्ययसंज्ञक पद इन पदोंका भी संबंध उस तु-शब्दके पीछे पढ़े हुए शब्दमें ही होता है,जैसे—'पुंसि त्वन्तार्धिः' यहां 'पुंसि' इस लिंगवाचक पदका 'अन्तार्धिः' इस पदमें संबंध हुआ और 'तस्य तु प्रिया' यहां 'तस्य'इस सर्वनामसंज्ञक पदका तु--शब्दके पीछे पठित प्रिया-शब्दमें संबंध हुआ और 'वा तु पुंसि' यहांपर 'वा' इस अव्ययसंज्ञक पदका तु-शब्दके पीछे पठित 'पुंसि' इसमें संबंध हुआ. इस प्रकारसे सर्वत्र तु-शब्दके विषयमें जानना । और इस कोशमें जहांपर जिन शब्दोंके प्रथम 'अथ' यह शब्द हो वहां उस अथ--शब्दके पीछे पठित नामपद, लिंगपद, सर्वनामपद और अव्ययपद इनका संबंध उस अथ-के प्रथम पठित शब्दोंमें नहीं होता है । उन अथ-शब्दके पीछे पठित शब्दोंका सम्बन्ध अथ--शब्दके पीछे पठित शब्दोंमें ही होता है जैसे—'जवोऽथ शीघ्रं त्वरितम्' यहांपर अथ-शब्दके पीछे पठित 'शीघ्र' इस नामपदका सम्बन्ध उस अथ—के प्रथम पठित जब-शब्दमें नहीं होता है किंतु अथ-शब्दके पीछे पठित 'शीघ्र' इस नामपदका संबंध उस अथ—शब्दके पीछे पठित 'त्वरितम्' 'लघु' 'क्षिप्रम्' 'अरम्' 'द्रुतम्' इन शब्दोंमें होता है। ऐसे ही 'शस्तं चाथ त्रिषु द्रव्ये' यहांपर अथ-शब्दके पीछे पठित 'त्रिषु' इस लिंगवाचक पदका द्रव्यवाचक पाप, पुण्य, सुख आदिक पदोंमें संबंध होता है. उस अथ—के प्रथम पठित 'शस्तं' इसमें संबंध नहीं होता है. अब जहां अथ--शब्दके बदलेमें कहीं कहीं अथो-शब्द कहा हो वहां भी इसी प्रकारकी व्यवस्था जाननी. जैसे—' अनुक्रोशोऽप्यथो हसः' यहांपर अथो इस शब्दके पीछे पठित 'हस' इस नामपदका संबंध उनके पीछे पठित 'हास' 'हास्य' इन शब्दोंमें होता है. उस अथो-शब्दके प्रथम पठित अनुक्रोश--शब्दमें नहीं होता है । इस प्रकारसे व्यवस्था इस कोशमें की है, सो जिज्ञासु जनोंको जाननी चाहिये ॥५॥

इति परिभाषा ॥

स्वरव्ययं स्वर्गनाकत्रिदिवत्रिदशालयाः॥सुरलोको द्योदिवौ द्वे स्त्रियां क्लीबे त्रिविष्टपम् ॥ ६ ॥

स्वर्गके नाम ९–स्वर् १ स्वर्ग २ नाक ३ त्रिदिव ४ त्रिदशालय ५ सुरलोक ६ द्यो ७ दिव् ८ त्रिविष्टप ९ ॥ ६ ॥

अमरा निर्जरा देवास्त्रिदशा विबुधाः सुराः । सुपर्वाणः सुमनसस्त्रिदिवेशा दिवौकसः ॥ ७ ॥ आदितेया दिविषदो लेखा अदितिनन्दनाः । आदित्या ऋभवोऽस्वप्ना अमर्त्या अमृतान्धसः ॥ ८ ॥ बर्हिर्मुखाः क्रतुभुजो गीर्वाणा दानवारयः । वृन्दारका दैवतानि पुंसि वा देवताः स्त्रियाम् ॥ ९ ॥

देवताओंके नाम २६–अमर १ निर्जर २ देव ३ त्रिदश ४ विबुध ५ सुर ६ सुपर्वन् ७ सुमनस् ८ त्रिदिवेश ९ दिवौकस् १० ॥ ७ ॥ आदितेय ११ दिविषद् १२ लेख १३ अदितिनन्दन १४ आदित्य १५ ऋभु १६ अस्वप्न १७ अमर्त्य १८ अमृतान्धस् १९ ॥ ८ ॥ बर्हिर्मुख २० क्रतुभुज २१ गीर्वाण २२ दानवारि २३ वृंदारक २४ दैवत २५ देवता २६ ॥ ९ ॥

आदित्यविश्ववसवस्तुषिताभास्वरानिलाः । महाराजिकसाध्याश्च रुद्राश्च गणदेवताः ॥ १० ॥

गणदेवताओंके नाम ९–आदित्य (बारह) १ विश्व (तेरह) २ वसु (आठ) ३ तुषित (छत्तिस) ४ आभास्वर (चौंसठ) ५ अनिल (उनञ्चास) ६ महाराजिक (दोसौ बीस) ७ साध्य (बारह) ८ रुद्र (ग्यारह) ९ ॥ १० ॥

विद्याधराप्सरोयक्षरक्षोगन्धर्वकिन्नराः । पिशाचो गुह्यकः सिद्धो भूतोऽमी देवयोनयः ॥ ११ ॥

देवताओंकी जातिके भेद १०–विद्याधर १ अप्सरस् २ यक्ष ३ रक्षस् ४ गंधर्व ५ किन्नर ६ पिशाच ७ गुह्यक ८ सिद्ध ९ भूत १० ॥ ११ ॥

असुरा दैत्यदैतेयदनुजेन्द्रारिदानवाः । शुक्रशिष्या दितिसुताः पूर्वदेवाः सुरद्विषः ॥ १२ ॥

दैत्योंके नाम १०–असुर १ दैत्य २ दैतेय ३ दनुज ४ इन्द्रारि ५ दानव ६ शुक्रशिष्य ७ दितिसुत ८ पूर्वदेव ९ सुरद्विष् १० ॥ १२ ॥

सर्वज्ञः सुगतो बुद्धो, धर्म्मराजस्तथागतः । समन्तभद्रो भगवान्मारजिल्लोकजिज्जिनः ॥ १३ ॥ षडभिज्ञो दशबलोऽद्वयवादी विनायकः । मुनीन्द्रः श्रीघनः शास्ता, मुनिः-

बुद्धिके नाम १८--सर्वज्ञ १ सुगत २ बुद्धि ३ धर्मराज ४ तथागत ५ समन्तभद्र ६ भगवत् ७ माराजित् ८ लोकजित् ९ जिन १० ॥ १३ ॥ षडभिज्ञ ११ दशबल १२ अद्वयवादिन् १३ विनायक १४ मुनीन्द्र १५ श्रीघन १६ शास्तृ १७ मुनि १८ ॥-

-शाक्यमुनिस्तु यः ॥ १४ ॥ स शाक्यसिंहः सर्वार्थसिद्धः शौद्धोदनिश्च सः । गौतमश्चार्कबन्धुश्च, मायादेवीसुतश्च सः ॥ १५ ॥

शाक्यसिंहके नाम ७-शाक्यमुनि १ ॥ १४ ॥ शाक्यसिंह २ सर्वार्थसिद्ध ३ शौद्धोदनि ४ गौतम ५ अर्कबन्धु ६ मायादेवीसुत ७ ॥ १५ ॥

ब्रह्मात्मभूः सुरज्येष्ठः, परमेष्ठी पितामहः । हिरण्यगर्भो लोकेशः, स्वयंभूश्चतुराननः ॥ १६ ॥ धाताऽब्जयोनिर्द्रुहिणो विरिञ्चिः कमलासनः । स्रष्टा प्रजापतिर्वेधा, विधाता विश्वसृड्विधिः ॥ १७ ॥

ब्रह्माजीके नाम २०-ब्रह्मन् १ आत्मभू २ सुरज्येष्ठ ३ परमेष्ठिन् ४ पितामह ५ हिरण्यगर्भ ६ लोकेश ७ स्वयम्भू ८ चतुरानन ९ ॥ १६ ॥ धातृ १० अब्जयोनि ११ द्रुहिण १२ विरिञ्चि १३ कमलासन १४ स्रष्टृ १५ प्रजापति १६ वेधस् १७ विधातृ १८ विश्वसृज् १९ विधि २० ॥ १७ ॥

विष्णुर्नारायणः कृष्णो, वैकुण्ठो विष्टरश्रवाः । दामोदरो हृषीकेशः, केशवो माधवः स्वभूः ॥ १८ ॥ दैत्यारिः पुण्डरीकाक्षो, गोविन्दो गरुडध्वजः । पीताम्बरोऽच्युतः शार्ङ्गी विष्वक्सेनो जनार्दनः ॥ १९ ॥ उपेन्द्र इन्द्रावरजश्चक्रपाणिश्चतुर्भुजः । पद्मनाभो मधुरिपुर्वासुदेवस्त्रिविक्रमः ॥ २० ॥ देवकीनन्दनः शौरिः श्रीपतिः पुरुषोत्तमः। वनमाली बलिध्वंसी, कंसारातिरधोक्षजः ॥ ॥ २१ ॥ विश्वम्भरः कैटभजिद्विधुः श्रीवत्सलाञ्छनः ।--

विष्णुभगवान्के नाम ३९-विष्णु १ नारायण २ कृष्ण ३ वैकुण्ठ ४ विष्टरश्रवस् ५ दामोदर ६ हृषीकेश ७ केशव ८ माधव ९ स्वभू १० ॥ १८ ॥ दैत्यारि ११ पुण्डरीकाक्ष १२

गोविन्द १३ गरुडध्वज १४ पीतांबर १५ अच्युत १६ शार्ङ्गिन् १७ विष्वक्सेन १८ जनार्दन १९ ॥ १९ ॥ उपेन्द्र २० इन्द्रावरज २१ चक्रपाणि २२ चतुर्भुज २३ पद्मनाभ २४ मधुरिपु २५ वासुदेव २६ त्रिविक्रम २७ ॥ २० ॥ देवकीनन्दन २८ शौरिन् २९ श्रीपति ३० पुरुषोत्तम ३१ वनमालिन् ३२ बलिध्वंसिन् ३३ कंसाराति ३४ अधोक्षज ३५ ॥ २१ ॥ विश्वंभर ३६ कैटभाजित् ३७ विधु ३८ श्रीवत्सलाञ्छन ३९ ॥–

वसुदेवोऽस्य जनकः, स एवानकदुन्दुभिः ॥ २२ ॥

वसुदेवजीके नाम २–वसुदेव १ आनकदुन्दुभि २ ॥ २२ ॥

बलभद्रः प्रलम्बघ्नो, बलदेवोऽच्युताग्रजः । रेवतीरमणो रामः, कामपालो हलायुधः ॥ २३ ॥ नीलांबरो रौहिणेयस्तालांको मुसली हली । संकर्षणः सीरपाणिः कालिन्दीभेदनो बलः ॥ २४ ॥

बलदेवजीके नाम १७–बलभद्र १ प्रलम्बघ्न २ बलदेव ३ अच्युताग्रज ४ रेवतीरमण ५ राम ६ कामपाल ७ हलायुध ८ ॥ २३ ॥ नीलांबर ९ रौहिणेय १० तालांक ११ मुसलिन् १२ हलिन् १३ संकर्षण १४ सीरपाणि १५ कालिन्दीभेदन १६ बल १७ ॥ २४ ॥

मदनो मन्मथो मारः प्रद्युम्नो मीनकेतनः । कन्दर्पो दर्पकोऽनंगः, कामः पञ्चशरः स्मरः ॥ २५ ॥ शम्बरारिर्मनसिजः कुसुमेषुरनन्यजः । पुष्पधन्वा रतिपतिर्मकरध्वज आत्मभूः ॥ २६ ॥ ब्रह्मसूर्ऋष्यकेतुः–

कामदेवके नाम २१–मदन १ मन्मथ २ मार ३ प्रद्युम्न ४ मीनकेतन ५ कन्दर्प ६ दर्पक ७ अनंग ८ काम ९ पञ्चशर १० स्मर ११ ॥ २५ ॥ शम्बरारि १२ मनसिज १३ कुसुमेषु १४ अनन्यज १५ पुष्पधन्वन् १६ रतिपति १७ मकरध्वज १८ आत्मभू १९ ॥ २६ ॥ ब्रह्मसू २० ऋष्यकेतु २१ ॥–

–स्यादनिरुद्ध उषापतिः ।–

अनिरुद्धके नाम २–अनिरुद्ध १ उषापति २ ॥–

लक्ष्मीः पद्मालया पद्मा, कमला श्रीर्हरिप्रिया ॥ २७ ॥

लक्ष्मीजीके नाम ६–लक्ष्मी १ पद्मालया २ पद्मा ३ कमला ४ श्री ५ हरिप्रिया ६ ॥ २७ ॥

शंखो लक्ष्मीपतेः पाञ्चजन्य-

विष्णुभगवान्‌के शंखका नाम १--पाञ्चजन्य १ ॥-

-श्चक्रं सुदर्शनम् ।

विष्णुभगवान्‌के चक्रका नाम १--सुदर्शन १ ॥

कौमोदकी गदा-

विष्णुभगवान्‌की गदाका नाम १--कौमोदकी १ ॥-

-खड्गो नन्दकः-

विष्णुके खड्गका नाम १--नन्दक १ ॥--

-कौस्तुभो मणिः ॥ २८ ॥

विष्णुकी मणिका नाम १--कौस्तुभ १ ॥ २८ ॥

गरुत्मान्गरुडस्तार्क्ष्यो वैनतेयः खगेश्वरः । नागान्तको विष्णुरथः सुपर्णः पन्नगाशनः ॥ २९ ॥

गरुडजीके नाम ९--गरुत्मत् १ गरुड २ तार्क्ष्य ३ वैनतेय ४ खगेश्वर ५ नागान्तक ६ विष्णुरथ ७ सुपर्ण ८ पन्नगाशन ९ ॥ २९ ॥

शम्भुरीशः पशुपतिः शिवः शूली महेश्वरः । ईश्वरः शर्व ईशानः शङ्करश्चन्द्रशेखरः॥३०॥ भूतेशः खण्डपरशुर्गिरीशो गिरिशो मृडः । मृत्युञ्जयः कृत्तिवासाः पिनाकी प्रमथाधिपः ॥ ३१ ॥ उग्रः कपर्दी श्रीकण्ठः शितिकण्ठः कपालभृत् । वामदेवो महादेवो विरूपाक्षस्त्रिलोचनः ॥ ३२ ॥ कृशानुरेताः सर्वज्ञो धूर्जटिर्नीललोहितः । हरः स्मरहरो भर्गस्त्र्यम्बकस्त्रिपुरान्तकः ॥ ३३॥ गङ्गाधरोऽन्धकरिपुः क्रतुध्वंसी वृषध्वजः ।। व्योमकेशो भवो भीमः स्थाणू रुद्र उमापतिः ॥ ३४ ॥

शिवजीके नाम ४८--शम्भु १ ईश २ पशुपति ३ शिव ४ शूलिन् ५ महेश्वर ६ ईश्वर ७ शर्व ८ ईशान ९ शंकर १० चन्द्रशेखर ११ ॥ ३० ॥ भूतेश १२ खण्डपरशु १३ गिरीश १४ गिरिश १५ मृड १६ मृत्युञ्जय १७ कृत्तिवासस् १८ पिनाकिन् १९ प्रमथाधिप २० ॥ ३१ ॥ उग्र २१ कपर्दिन् २२ श्रीकण्ठ २३ शितिकण्ठ २४ कपालभृत् २५ वामदेव २६ महादेव २७ विरूपाक्ष २८ त्रिलोचन २९ ॥ ३२ ॥ कृशानुरेतस् ३० सर्वज्ञ ३१ धूर्जटि ३२ नीललोहित ३३ हर ३४ स्मरहर ३५ भर्ग ३६ त्र्यम्बक ३७ त्रिपुरान्तक ३८ ॥ ३३॥ गंगाधर ३९

न्धकरिपु ४० क्रतुध्वंसिन् ४१ वृष-
ज ४२ व्योमकेश ४३ भव ४४
म ४५ स्थाणु ४६ रुद्र ४७ उमा-
ति ४८ ॥ ३४ ॥

कपर्दोऽस्य जटाजूटः

शिवजीके जटाजूटका नाम १-
पर्द १॥-

-पिनाकोऽजगवं धनुः ।

शिवजीके धनुषके नाम २-पिनाक
अजगव २ ॥

प्रमथाः स्युः पारिषदा-

शिवजीके पार्षदोंके नाम २-प्रमथ
पारिषद २ ॥-

-ब्राह्मीत्याद्यास्तु मातरः ॥३५॥

**ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी
ष्णवी तथा । वाराही च तथेन्द्रा-
णी चामुण्डा सप्त मातरः ॥"**

ब्राह्मी आदि शक्तियोंके नाम ७-
ह्मी १ माहेश्वरी २ कौमारी ३ वैष्णवी
वाराही ५ इन्द्राणी ६ चामुण्डा
॥ ३५ ॥

विभूतिर्भूतिरैश्वर्य-

श्वर्यके नाम ३-विभूति १ भूति
ऐश्वर्य ३ ॥-

-मणिमादिकमष्टधा ।

**"अणिमा महिमा चैव गरिमा
लघिमा तथा । प्राप्तिः प्राकाम्यमी-
शित्वं वशित्वं चाष्टसिद्धयः ॥"**

ऐश्वर्यके भेद ८-अणिमन् १ महि-
मन् २ गरिमन् ३ लघिमन् ४ प्राप्ति
५ प्राकाम्य ६ ईशित्व ७ वशित्व ८ ॥

**उमा कात्यायनी गौरी काली है-
मवतीश्वरी ॥३६॥ शिवा भवानी
रुद्राणी शर्वाणी सर्वमङ्गला । अप-
र्णा पार्वती दुर्गा मृडानी चण्डिका-
म्बिका ॥ ३७ ॥**

**" आर्या दाक्षायणी चैव गिरिजा
मेनकात्मजा ॥"**

पार्वतीके नाम २१-उमा १
कात्यायनी २ गौरी ३ काली ४ हैम-
वती ५ ईश्वरी ६ ॥ ३६ ॥ शिवा ७
भवानी ८ रुद्राणी ९ शर्वाणी १०
सर्वमंगला ११ अपर्णा १२ पार्वती १३
दुर्गा १४ मृडानी १५ चण्डिका १६
अम्बिका १७ ॥ ३७ ॥ आर्या १८
दाक्षायणी १९ गिरिजा २० मेनका-
त्मजा २१ ॥

**विनायको विघ्नराजद्वैमातुरगणा-
धिपाः । अप्येकदन्तहेरम्बलम्बोदर-
गजाननाः ॥ ३८ ॥**

गणेशके नाम ८-विनायक १ विघ्न-
राज २ द्वैमातुर ३ गणाधिप ४ एकदन्त
५ हेरम्ब ६ लम्बोदर ७ गजानन ८ ॥ ३८ ॥

कार्त्तिकेयो महासेनः शरजन्मा षडाननः । पार्वतीनन्दनः स्कन्दः सेनानीरग्निभूर्गुहः ॥ ३९ ॥ बाहुलेयस्तारकजिद्विशाखः शिखिवाहनः । षाण्मातुरः शक्तिधरः कुमारः क्रौञ्चदारणः ॥ ४० ॥

स्वामिकार्त्तिकेयके नाम १७— कार्त्तिकेय १ महासेन २ शरजन्मन् ३ षडानन ४ पार्वतीनन्दन ५ स्कन्द ६ सेनानी ७ अग्निभू ८ गुह ९ ॥३९॥ बाहुलेय १० तारकजित् ११ विशाख १२ शिखिवाहन १३ षाण्मातुर १४ शक्तिधर १५ कुमार १६ क्रौञ्चदारण १७ ॥ ४० ॥

इन्द्रो मरुत्वान् मघवा बिडौजाः पाकशासनः । वृद्धश्रवाः शुनासीरः पुरुहूतः पुरंदरः॥४१॥जिष्णुर्लेखर्षभः शक्रः शतमन्युर्दिवस्पतिः । सुत्रामा गोत्रभिद्वज्री वासवो वृत्रहा वृषा॥४२॥वास्तोष्पतिः सुरपतिर्बलारातिः शचीपतिः । जम्भभेदी हरिहयः स्वाराण्नमुचिसूदनः॥४३॥ संक्रन्दनो दुश्च्यवनस्तुराषाण्मेघवाहनः । आखण्डलः सहस्राक्ष ऋभुक्षा—

इन्द्रके नाम ३५—इन्द्र १ मरुत्वत् २ मघवन् ३ बिडौजस् ४ पाकशासन ५ वृद्धश्रवस् ५ शुनासीर ७ पुरुहूत ८ पुरन्दर ९ ॥४१॥ जिष्णु १० लेखर्षभ ११ शक्र १२ शतमन्यु १३ दिवस्पति १४ सुत्रामन् १५ गोत्रभिद् १६ वज्रिन् १७ वासव १८ वृत्रहन् १९ वृषन् २० ॥ ४२ ॥ वास्तोष्पति २१ सुरपति २२ बलाराति २३ शचीपति २४ जम्भभेदिन् २५ हरिहय २६ स्वाराज् २७ नमुचिसूदन २८॥४३॥ संक्रन्दन २९ दुश्च्यवन ३० तुरासाह् ३१ मेघवाहन ३२ आखण्डल ३३ सहस्राक्ष ३४ ऋभुक्षिन् ३५ ॥—

—स्तस्य तु प्रिया ॥ ४४ ॥ पुलोमजा शचीन्द्राणी—

इन्द्राणीके नाम ३— ॥४४॥ पुलोमजा १ शची २ इन्द्राणी ३—

—नगरी त्वमरावती ।

इन्द्रपुरीका नाम १—अमरावती १॥

हय उच्चैःश्रवाः—

इन्द्रके घोड़ेका नाम १—उच्चैःश्रवस् १॥—

—सूतो मातलि—

इन्द्रके सारथिका नाम १-मातलि १॥—

—र्नन्दनं वनम् ॥ ४५ ॥

इन्द्रके बगीचेका नाम १-नन्दन १ ॥ ४५ ॥

स्यात्प्रासादो वैजयंतो--

इन्द्रके धवरहरको नाम १-वैजयन्त १ ॥

--जयंतः पाकशासनिः ।

इन्द्रके पुत्रके नाम २-जयन्त १ पाकशासनि २ ॥

ऐरावतोऽभ्रमातङ्गैरावणाभ्रमुवल्लभाः ॥ ४६ ॥

इन्द्रके हाथिके नाम ४-ऐरावत १ अभ्रमातंग २ ऐरावण ३ अभ्रमुवल्लभ ४ ॥ ४६ ॥

ह्रादिनी वज्रमस्त्री स्यात्कुलिशं भिदुरं पविः । शतकोटिः स्वरुः शम्बो दम्भोलिरशनिर्द्वयोः ॥ ४७ ॥

वज्रके नाम १०--ह्रादिनी १ वज्र २ कुलिश ३ भिदुर ४ पवि ५ शतकोटि ६ स्वरु ७ शम्ब ८ दम्भोलि ९ अशनि १० ॥ ४७ ॥

व्योमयानं विमानोऽस्त्री-

विमानके नाम २--व्योमयान १ विमान २॥-

-नारदाद्याः सुरर्षयः ।

सुरऋषियोंके नाम-नारद आदि ॥

स्यात्सुधर्मा देवसभा-

देवसभाके नाम् २-सुधर्मा १ देवसभा २॥-

-पीयूषममृतं सुधा ॥ ४८ ॥

अमृतके नाम ३-पीयूष १ अमृत २ सुधा ३ ॥ ४८ ॥

मंदाकिनी वियद्गङ्गा स्वर्णदी सुरदीर्घिका ।

स्वर्गगंगाके नाम ४--मन्दाकिनी १ वियद्गंगा २ स्वर्णदी ३ सुरदीर्घिका ४॥

मेरुः सुमेरुर्हेमाद्री रत्नसानुः सुरालयः ॥ ४९ ॥

सुमेरुपर्वतके नाम५-मेरु१सुमेरु २ हेमाद्रि ३ रत्नसानु ४ सुरालय५॥४९॥

पञ्चैते देवतरवो मन्दारः पारिजातकः । संतानः कल्पवृक्षश्च पुंसि वा हरिचन्दनम् ॥ ५० ॥

देववृक्षोंके नाम ५-मन्दार १ पारिजातक २ सन्तान ३ कल्पवृक्ष ४ हरिचन्दन ५ ॥ ५० ॥

सनत्कुमारो वैधात्रः-

सनत्कुमारके नाम २-सनत्कुमार १ वैधात्र २॥-

-स्ववैद्यावश्विनीसुतौ । नासत्यावश्विनौ दस्रावाश्विनेयौ च तावुभौ ॥ ५१ ॥

अश्विनीकुमारके नाम ६-स्ववैद्य १ अश्विनीसुत २ नासत्य ३ अश्विन् ४ दस्र ५ आश्विनेय ६ ॥ ५१ ॥

स्त्रियां बहुष्वप्सरसः स्ववैश्या उर्वशीमुखाः ।

अप्सराओंके नाम २—अप्सरस् १ स्वर्वेश्या २॥ वे उर्वशी आदिक अप्सराएँ हैं ॥

हाहाहूहूश्चैवमाद्या गन्धर्वास्त्रिदिवौकसाम् ॥ ५२ ॥

गन्धर्वोंके नाम २—हाहा १ हूहू २ आदि देवोंके गवैये हैं ॥ ५२ ॥

अग्निर्वैश्वानरो वह्निर्वीतिहोत्रो धनञ्जयः । कृपीटयोनिर्ज्वलनो जातवेदास्तनूनपात् ॥ ५३ ॥ बर्हिः शुष्मा कृष्णवर्त्मा शोचिष्केश उषर्बुधः । आश्रयाशो बृहद्भानुः कृशानुः पावकोऽनलः ॥ ५४ ॥ रोहिताश्वो वायुसखः शिखावानाशुशुक्षणिः ॥ हिरण्यरेता हुतभुग्दहनो हव्यवाहनः ॥ ५५ ॥ सप्तार्चिर्दमुनाः शुक्रश्चित्रभानुर्विभावसुः । शुचिरप्पित्त—

अग्निके नाम ३४—अग्नि १ वैश्वानर २ वह्नि ३ वीतिहोत्र ४ धनञ्जय ५ कृपीटयोनि ६ ज्वलन ७ जातवेदस् ८ तनूनपात् ९ ॥ ५३ ॥ बर्हिस् १० शुष्मन् ११ कृष्णवर्त्मन् १२ शोचिष्केश १३ उषर्बुध १४ आश्रयाश १५ बृहद्भानु १६ कृशानु १७ पावक १८ अनल १९ ॥ ५४ ॥ रो (लो) हिताश्व २० वायुसख २१ शिखावत् २२ आशुशुक्षणि २३ हिरण्यरेतस् २४ हुतभुज् २५ दहन २६ हव्यवाहन २७ ॥ ५५ ॥ सप्तार्चिस् २८ दमुनस् २९ शुक्र ३० चित्रभानु ३१ विभावसु ३१ शुचि ३२ अप्पित्त ३४—

—और्वस्तु वाडवो वडवानलः ५६

वडवानलके नाम ३-और्व १ वाडव २ वडवानल ३ ॥ ५६ ॥

वह्नेर्द्वयोर्ज्वालकीलावर्चिर्हेतिः शिखा स्त्रियाम् ।

अग्निकी ज्वालाके नाम ५—ज्वाल १ कील २ अर्चिस् ३ हेति ४ शिखा ५ ॥

त्रिषु स्फुलिंगोऽग्निकणः—

चिनगारीके नाम २—स्फुलिंग १ अग्निकण २॥—

—संतापः संज्वरः समौ ॥ ५७ ॥

संतापके नाम २—सन्ताप १ सञ्ज्वर २ ॥ ५७ ॥

धर्मराजः पितृपतिः समवर्ती परेतराट् । कृतान्तो यमुनाभ्राता शमनो यमराड्यमः ॥ ५८ ॥ कालो दण्डधरः श्राद्धदेवो वैवस्वतोऽन्तकः ।

यमराजके नाम १४—धर्मराज १ पितृपति २ समवर्तिन् ३ परेतराज् ४ कृतान्त ५ यमुनाभ्रात ६ शमन ७ यमराज् ८ यम ९॥५८॥काल १० दण्डधर ११ श्राद्धदेव १२ वैवस्वत १३ अन्तक १४ ॥

राक्षसः कौणपः क्रव्यात् क्रव्यादोऽस्रप आशरः ॥ ५९ ॥ रात्रिंचरो रात्रिचरः, कर्बुरो निकषात्मजः । यातुधानः पुण्यजनो नैर्ऋतो यातुरक्षसी ॥ ६० ॥

राक्षसोंके नाम १५--राक्षस १ कौणप २ क्रव्याद् ३ क्रव्याद ४ अस्रप ५ आशर ६॥५९॥रात्रिञ्चर ७ रात्रिचर ८ कर्बुर ९ निकषात्मज १० यातुधान ११ पुण्यजन १२ नैर्ऋत १३ यातु १४ रक्षस् १५ ॥ ६० ॥

प्रचेता वरुणः पाशी यादसां पतिरप्पतिः ।

वरुणके नाम ५--प्रचेतस् १ वरुण २ पाशिन् ३ यादसाम्पति ४ अप्पति ५॥

श्वसनः स्पर्शनो वायुर्मातरिश्वा सदागतिः ॥ ६१ ॥ पृषदश्वो गन्धवहो गन्धवाहानिलाशुगाः । समीरमारुतमरुज्जगत्प्राणसमीरणाः ॥ ६२ ॥ नभस्वद्वातपवनपवमानप्रभञ्जनाः ॥

वायुके नाम २०--श्वसन १ स्पर्शन २ वायु ३ मातरिश्वन् ४ सदागति ५ ॥६१॥ पृषदश्व ६ गन्धवह ७ गन्धवाह ८ अनिल ९ आशुग १० समीर ११ मारुत १२ मरुत् १३ जगत्प्राण १४ समीरण १५ ॥६२॥ नभस्वत् १६ वात १७ पवन १८ पवमान १९ प्रभञ्जन २० ॥

प्राणोऽपानः समानश्चोदानव्यानौ च वायवः ॥ ६३ ॥ शरीरस्था इमे—

हृदयके वायुका नाम १—प्राण १॥ गुदाके वायुका नाम १--अपान १॥ नाभिके वायुका नाम १--समान १॥ कण्ठके वायुका नाम १--उदान १॥ सब शरीरमें फिरनेवाले वायुका नाम १---व्यान १ ॥ ६३ ॥--

--रंहस्तरसी तु रयः स्यदः । जवो--

वेगके नाम ५--रंहस् १ तरस् २ रय ३ स्यद ४ जव ५॥--

-ऽथ शीघ्रं त्वरितं लघु क्षिप्रमरं द्रुतम् ॥ ६४ ॥ सत्वरं चपलं तूर्णमविलम्बितमाशु च ।

शीघ्रताके नाम ११—शीघ्र १ त्वरित २ लघु ३ क्षिप्र ४ अर ५ द्रुत ६ ॥ ६४ ॥ सत्वर ७ चपल ८ तूर्ण ९ अविलंबित १० आशु ११ ।

सततानारताश्रान्तसंतताविरतानिशम् ॥ ६५ ॥ नित्यानवरताजस्रमप्य—

निरन्तरके नाम ९--सतत १ अनारत २ अश्रान्त ३ सन्तत ४ अविरत ५ अनिश ६ ॥ ६५ ॥ नित्य ७ अनवरत ८ अजस्र ९ ॥--

--थातिशयो भरः । अतिवेलभृशात्यर्थातिमात्रोद्गाढनिर्भरम् । ॥ ६६ ॥ तीव्रैकान्तनितान्तानि गाढबाढदृढानि च ।

वारंवारके नाम १४—अतिशय १ भर २ अतिवेल ३ भृश ४ अत्यर्थ ५ अतिमात्र ६ उद्गाढ७ निर्भर ८॥६६॥ तीव्र ९ एकान्त १० नितान्त ११ गाढ १२ बाढ १३ दृढ १४ ॥

क्लीबे शीघ्राद्यसत्त्वे स्यात्रिष्वेषां सत्त्वगामि यत् ॥ ६७ ॥

अद्रव्यवाची शीघ्र आदि शब्द नपुंसक लिङ्गमें होते हैं और द्रव्यवाची तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥ ६७ ॥

कुबेरस्त्र्यम्बकसखो यक्षराड् गुह्यकेश्वरः । मनुष्यधर्मा धनदो राजराजो धनाधिपः ॥ ६८ ॥ किन्नरेशो वैश्रवणः पौलस्त्यो नरवाहनः । यक्षैकपिङ्गैलविलश्रीदपुण्यजनेश्वराः ॥ ६९ ॥

कुबेरके नाम १७—कुबेर १ त्र्यम्बकसख २ यक्षराज् ३ गुह्यकेश्वर ४ मनुष्यधर्मन् ५ धनद ६ राजराज ७ धनाधिप ८ ॥ ६८ ॥ किन्नरेश ९ वैश्रवण १० पौलस्त्य ११ नरवाहन १२ यक्ष १३ एकपिंग १४ ऐलविल १५ श्रीद १६ पुण्यजनेश्वर १७ ॥ ६९ ॥

अस्योद्यानं चैत्ररथम्—

कुबेरके बगीचेका नाम १—चैत्ररथ॥-

—पुत्रस्तु नलकूबरः ।

कुबेरके पुत्रका नाम १—नलकूबर१।

कैलासस्थान—

कुबेरके स्थानका नाम१—कैलास१।

—मलका पू—

कुबेरकी पुरीका नाम १—अलका १।—

विमानं तु पुष्पकम् ॥ ७० ॥

कुबेरके विमानका नाम १—पुष्पक १ ॥ ७० ॥

स्यात्किन्नरः किम्पुरुषस्तुरङ्गवदनो मयुः ।

किन्नरोंके नाम ४--किन्नर १ किम्पुरुष २ तुरंगवदन ३ मयु ४ ॥

निधिर्ना शेवधि--

खजानेके नाम २--निधि १ शेवधि २ ॥--

--भेदाः पद्मशङ्खादयो निधेः ॥७१॥

खजानेके भेद- पद्म, शङ्ख इत्यादि ॥ ७१ ॥

इति स्वर्गवर्गः ॥ १ ॥

अथ व्योमवर्गः २.

द्योदिवौ द्वे स्त्रियामभ्रं व्योम पुष्करमम्बरम् । नभोऽन्तरिक्षं गगनमनन्तं सुरवर्त्म खम् ॥ १ ॥ वियद्विष्णुपदं वा तु पुंस्याकाशविहायसी । विहायसोऽपि नाकोऽपि द्युरपि स्यात्तदव्ययम् ॥ २ ॥

आकाशके नाम १९-द्यो १ दिव् २ अभ्र ३ व्योमन् ४ पुष्कर ५ अम्बर ६ नभस् ७ अन्तरिक्ष ८ गगन ९ अनंत १० सुरवर्त्मन् ११ ख १२ ॥१॥ वियत् १३ विष्णुपद १४ आकाश १५ विहायस् १६ विहायस १७ नाक १८ द्युस् १९ ॥ २ ॥

इति व्योमवर्गः ॥ २ ॥

अथ दिग्वर्गः ३.

दिशस्तु ककुभः काष्ठा आशाश्च हरितश्च ताः ।

दिशाओंके नाम ५--दिश् १ ककुभ् २ काष्ठा ३ आशा ४ हरित्५॥

प्राच्यवाचीप्रतीच्यस्ताः पूर्वदक्षिणपश्चिमाः ॥ १ ॥ उत्तरा-दिगुदीची स्याद्-

पूर्व दिशाका नाम १--प्राची १ । दक्षिण दिशाका नाम १--अवाची १ । पश्चिमदिशाका नाम १-प्रतीची १ ॥१॥ उत्तरदिशाका नाम १--उदीची । १ ।

--दिश्यं तु त्रिषु दिग्भवे ।

दिशोत्पन्नवस्तुका नाम १--दिश्य १ ।--

इन्द्रो वह्निः पितृपतिर्नैर्ऋतो वरुणो मरुत् ॥ २ ॥ कुबेर ईशः पतयः पूर्वादीनां दिशां क्रमात् ।

पूर्व दिशाके स्वामीका नाम--इन्द्र १ । अग्निकोणके स्वामीका नाम--वह्नि १ । दक्षिणदिशाके स्वामीका नाम--यमराज १ । नैर्ऋत्य कोणके स्वामीका

---

१ "पद्मोऽस्त्रियां महापद्मः शङ्खो मकरकच्छपौ । मुकुन्दकुंदनीलाश्च खर्वश्च निधयो नव ॥" इति शब्दार्णवः। भाषाः--पद्म १ महापद्म २ शंख ३ मकर ४ कच्छप ५ मुकुन्द ६ कुन्द ७ नील ८ खर्व ९ यह नौ खजानेके भेद हैं।

नाम-नैर्ऋत १ । पश्चिमदिशाके स्वामीका नाम-वरुण १ । वायुकोणके स्वामीका नाम-पवन १ ॥ २॥ उत्तर दिशाके स्वामीका नाम-कुबेर १ । ईशान कोणके स्वामीका नाम-ईश १।

ऐरावतः पुण्डरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः ॥ ३ ॥ पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रतीकश्च दिग्गजाः ।

पूर्व दिशाके हस्तीका नाम-ऐरावत १ । अग्निकोणके हस्तीका नाम-पुण्डरीक २ । दक्षिण दिशाके हस्तीका नाम-वामन ३ । नैर्ऋत कोणके हस्तीका नाम-कुमुद ४ । पश्चिम दिशाके हस्तीका नाम-अञ्जन ५ । ॥ ३ ॥ वायु कोणके हस्तीका नाम-पुष्पदन्त ६ । उत्तरदिशाके हस्तीका नाम-सार्वभौम ७ । ईशान कोणके हस्तीका नाम-सुप्रतीक ८ ।

करिण्योऽभ्रमुकपिलापिङ्गलानुपमाः क्रमात् ॥ ४ ॥ ताम्रकर्णी शुभ्रदन्ती चाङ्गना चाञ्जनावती ।

ऊपर लिखे हुए ऐरावत आदि आठ हस्तियोंकी हथिनियोंके क्रमसे नाम-अभ्रमु १ कपिला २ पिंगला ३ अनुपमा ४ ॥ ४ ॥ ताम्रकर्णी ५ शुभ्रदन्ती ६ अंगना ७ अञ्जनावती ८ ।

क्लीबाव्ययं त्वपदिशं दिशोर्मध्ये विदिक् स्त्रियाम् ॥ ५ ॥

अग्नि आदि कोणके नाम २-अपदिश १ विदिश् २ ॥ ५ ॥ .

अभ्यन्तरं त्वन्तरालं-

बीचभागके नाम २-अभ्यंतर १ अन्तराल २ ।-

-चक्रवालं तु मण्डलम् ।

गोलाकार समूहके नाम २-चक्रवाल १ मण्डल २ ।

अभ्रं मेघो वारिवाहः स्तनयित्नुर्बलाहकः ॥ ६ ॥ धाराधरो जलधरस्तडित्वान्वारिदोऽम्बुभृत् । घनजीमूतमुदिरजलमुग्धूमयोनयः ॥७॥

बादलके नाम १५-अभ्र १ मेघ २ वारिवाह ३ स्तनयित्नु ४ बलाहक ५ ॥ ६ ॥ धाराधर ६ जलधर ७ तडित्वत् ८ वारिद ९ अम्बुभृत् १० घन ११ जीमूत १२ मुदिर १३ जलमुच् १४ धूमयोनि १५ ॥ ७ ॥

कादम्बिनी मेघमाला-

मेघपंक्तिके नाम २-कादम्बिनी १ मेघमाला २ ॥-

त्रिषु मेघभवेऽभ्रियम् ।

मेघोत्पन्न वस्तुका नाम १-अभ्रिय १

स्तनितं गर्जितं मेघनिर्घोषो रसितादि च ॥ ८ ॥

गर्जनेके नाम ४—स्तनित १ गर्जित २ मेघनिर्घोष ३ रसित ४ ॥ ८ ॥

शम्पाशतह्रदाह्रादिन्यैरावत्यः क्षणप्रभा । तडित्सौदामनी विद्युच्चञ्चला चपला अपि ॥ ९ ॥

बिजलीके नाम १०—शम्पा १ शतह्रदा २ ह्रादिनी ३ ऐरावती ४ क्षणप्रभा ५ तडित् ६ सौदामनी ७ विद्युत् ८ चञ्चला ९ चपला १० ॥९॥

स्फूर्जथुर्वज्रनिर्घोषो—

वज्रके शब्दोंके नाम २—स्फूर्जथु १ वज्रनिर्घोष २ ।—

—मेघज्योतिरिरंमदः ।

वज्रके अग्निके नाम २—मेघज्योतिष् १ । इरम्मद २ ।

—इन्द्रायुधं शक्रधनुस्तदेव ऋजु रोहितम् ॥ १० ॥

इन्द्रधनुषके नाम ३--इन्द्रायुध १ शक्रधनुष् २ रोहित ३ । सरल इंद्रधनुषका नाम रोहित है ॥ १० ॥

वृष्टिर्वर्ष—

वर्षाके नाम २—वृष्टि १ वर्ष २ ।—

--तद्विघातेऽवग्राहावग्रहौ समौ ।

झूराके नाम २—अवग्राह १ अवग्रह २ ॥

धारासंपात आसारः—

निरन्तर मेघधाराके नाम २--धारासम्पात १ आसार २ ।--

--शीकरोऽम्बुकणाः स्मृताः ११ ॥

वायुसे उड़ाये हुए जलकणों (फुहारों) का नाम १-शीकर १ ॥ ११ ॥

वर्षोपलस्तु करका—

आकाशसे गिरे हुए पत्थरोंके नाम २--वर्षोपल १ करका २ ।—

—मेघच्छन्नेऽह्नि दुर्दिनम् ।

मेघसे आच्छादित हुआ दिनरात्रिका नाम १—दुर्दिन १ ॥

अन्तर्धा व्यवधा पुंसि त्वन्तर्धिरपवारणम् ॥ १२ ॥ अपिधानतिरोधानपिधानाच्छादनानि च ।

झपनाके नाम ८--अन्तर्धा १ व्यवधा २ अन्तर्धि ३ अपवारण ४ ॥ ॥ १२ ॥ अपिधान ५ तिरोधान ६ पिधान ७ आच्छादन ८ ॥

हिमांशुश्चन्द्रमाश्चन्द्र इन्दुः कुमुदबान्धवः ॥ १३ ॥ विधुः सुधांशुः शुभ्रांशुरोषधीशो निशापतिः । अब्जो जैवातृकः सोमो ग्लौर्मृगांकः कलानिधिः ॥ १४ ॥ द्विजराजः शशधरो नक्षत्रेशः क्षपाकरः ।

चन्द्रमाके नाम २०--हिमांशु १ चन्द्रमस् २ चन्द्र ३ इन्दु ४ कुमुद-बान्धव ५ ॥ १३ ॥ विधु ६ सुधांशु ७ शुभ्रांशु ८ ओषधीश ९ निशापति १० अब्ज ११ जैवातृक १२ सोम १३ ग्लौ १४ मृगाङ्क १५ कलानिधि १६ ॥ १४ ॥ द्विजराज १७ शशधर १८ नक्षत्रेश १९ क्षपाकर २० ॥

कला तु षोडशो भागो--

चन्द्रमाके १/१६ वें भागका नाम १-कला १ ॥--

--बिम्बोऽस्त्री मण्डलं त्रिषु॥१५॥

चन्द्रमण्डलके नाम २--बिम्ब १ मण्डल २ ॥ १५ ॥

भित्तं शकलखण्डे वा पुंस्यर्धो-

ग्रासखण्डके नाम ४--भित्त १ शकल २ खण्ड ३ अर्द्ध ४ (पुँल्लिंग) ॥--

--ऽर्धं समेंऽशके ।

समभागका नाम १--अर्द्ध १ (नपुंसकलिंग) ॥

चन्द्रिका कौमुदी ज्योत्स्ना--

चांदनीके नाम ३--चन्द्रिका १ कौमुदी २ ज्योत्स्ना ३॥--

--प्रसादस्तु प्रसन्नता ॥ १६ ॥

निर्मलताके नाम २--प्रसाद १ प्रसन्नता २ ॥ १६ ॥

कलंकाङ्कौ लाञ्छनं च चिह्नं लक्ष्म च लक्षणम् ।

-- चिह्नके नाम ६--कलंक १ अंक २ लाञ्छन ३ चिह्न ४ लक्ष्मन् ५ लक्षण ६॥

सुषमा परमा शोभा--

अति शोभाका नाम १--सुषमा १--

-शोभा कान्तिर्द्युतिश्छविः॥१७॥

शोभाके नाम ४--शोभा १--कांति २ द्युति ३ छवि ४ ॥ १७ ॥

अवश्यायस्तु नीहारस्तुषारस्तुहिनं हिमम् । प्रालेयं मिहिका चा--

पालेके नाम ७--अवश्याय १ नीहार २ तुषार ३ तुहिन ४ हिम ५ प्रालेय ६ मिहिका ७ ॥--

--थ हिमानी हिमसंहतिः ॥१८॥

पालेके समूहके नाम २--हिमानी १ हिमसंहति २ ॥ १८ ॥

शीतं गुणे--

शीतलताका नाम १--शीत १ ॥--

-तद्वदर्थाः सुषीमः शिशिरो जडः। तुषारः शीतलः शीतो हिमः सप्तान्यलिंगकाः ॥ १९ ॥

शीतलवस्तुके नाम ७–सुषीम १ शिशिर २ जड ३ तुषार ४ शीतल ५ शीत ६ हिम ७ ॥ १९ ॥

ध्रुव औत्तानपादिः स्या-

ध्रुवजीके नाम २–ध्रुव १ औत्तानपादि २ ॥

–दगस्त्यः कुम्भसम्भवः । मैत्रावरुणि–

अगस्त्यके नाम ३–अगस्त्य १ कुम्भसम्भव २ मैत्रावरुणि ३ ॥–

रस्यैव लोपामुद्रा सधर्मिणी २०

अगस्त्यकी स्त्रीका नाम १–लोपामुद्रा १ ॥ २० ॥

नक्षत्रमृक्षं भं तारा तारकाप्युडु वा स्त्रियाम् ।

नक्षत्रोंके नाम ६–नक्षत्र १ ऋक्ष २ भ ३ तारा ४ तारका ५ उडु ६॥

दाक्षायण्योऽश्विनीत्यादितारा–

अश्विनी आदि २८ नक्षत्रोंका नाम १–दाक्षायणी १ ।–

––अश्वयुगश्विनी ॥ २१ ॥

अश्विनी नक्षत्रके नाम २–अश्वयुज् १ अश्विनी २ ॥ २१ ॥

राधा विशाखा–

विशाखानक्षत्रके नाम २–राधा १ विशाखा २ ॥–

–पुष्ये तु सिध्यतिष्यौ–

पुष्यनक्षत्रके नाम ३–पुष्य १ सिध्य २ तिष्य ३ ॥–

–श्रविष्ठया । समा धनिष्ठा–

धनिष्ठानक्षत्रके नाम २–श्रविष्ठा १ धनिष्ठा २ ॥–

–स्युः प्रोष्ठपदा भाद्रपदाः स्त्रियः ॥ २२ ॥

पूर्वभाद्रपदा और उत्तरभाद्रपदा नक्षत्रोंके नाम २–प्रोष्ठपदा १ भाद्रपदा २ ॥ २२ ॥

मृगशीर्षं मृगशिरस्तस्मिन्नेवाग्रहायणी ।

मृगशिरनक्षत्रके नाम ३–मृगशीर्ष १ मृगशिर २ आग्रहायणी ३ ॥

इल्वलास्तच्छिरोदेशे तारका निवसन्ति याः ॥ २३ ॥

मृगशिरके मस्तकपर रहनेवाले नक्षत्रोंका नाम १–इल्वल १ ॥ २३ ॥

बृहस्पतिः सुराचार्यो गीष्पतिर्धिषणो गुरुः । जीव आङ्गिरसो वाचस्पतिश्चित्रशिखण्डिजः ॥२४॥

बृहस्पतिके नाम ९—बृहस्पति १ सुराचार्य २ गीष्पति ३ धिषण ४ गुरु ५ जीव ६ आंगिरस ७ वाचस्पति ८ चित्रशिखण्डिज ९ ॥ २४ ॥

शुक्रो दैत्यगुरुः काव्य उशना भार्गवः कविः ।

शुक्रके नाम ६—शुक्र १ दैत्यगुरु २ काव्य ३ उशनस् ४ भार्गव ५ कावि ६ ॥

अंगारकः कुजो भौमो लोहितांगो महीसुतः ॥ २५ ॥

मंगलके नाम ५—अङ्गारक १ कुज २ भौम ३ लोहितांग ४ महीसुत ५ ॥ २५ ॥

रौहिणेयो बुधः सौम्यः—

बुधके नाम ३—रौहिणेय १ बुध २ सौम्य ३ ॥—

—समौ सौरिशनैश्चरौ ।

शनिके नाम २—सौरि १ शनैश्चर २॥

तमस्तु राहुः स्वर्भानुः सैंहिकेयो विधुन्तुदः ॥ २६ ॥

राहुके नाम ५—तमस् १ राहु २ स्वर्भानु ३ सैंहिकेय ४ विधुन्तुद ५ ॥ २६ ॥

सप्तर्षयो मरीच्यत्रिमुखाश्चित्रशिखण्डिनः ।

मरीचि अत्रि आदि सप्तर्षियोंके नाम—चित्रशिखण्डिन् ॥ १ ॥

राशीनामुदयो लग्नं—

राशियोंके उदयका नाम १—लग्न १—

—ते तु मेषवृषादयः ॥ २७ ॥

राशियोंके नाम—मेष १ वृष २ आदि ॥ २७ ॥

सूरसूर्यार्यमादित्यद्वादशात्मदिवाकराः । भास्कराहस्करब्रध्नप्रभाकरविभाकराः ॥ २८ ॥ भास्वद्विवस्वत्सप्ताश्वहरिदश्वोष्णरश्मयः । विकर्तनार्कमार्त्तण्डमिहिरारुणपूषणः ॥२९॥ द्युमणिस्तरणिर्मित्रश्चित्रभानुर्विरोचनः । विभावसुर्ग्रहपतिस्त्विषांपतिरहर्पतिः ॥ ३० ॥ भानुर्हंसः सहस्रांशुस्तपनः सविता रविः ।

सूर्यके नाम ३७—सूर १ सूर्य २ अर्य्यमन् ३ आदित्य ४ द्वादशात्मन् ५ दिवाकर ६ भास्कर ७ अहस्कर ८ ब्रध्न ९ प्रभाकर १० विभा—

---

१ " मरीचिरंगिरा अत्रिः पुलस्त्यः पुलहः क्रतुः । वसिष्ठश्चेति सप्तैते ज्ञेयाश्चित्रशिखंडिनः " ॥ १ ॥ भाषा—मरीचि १ अंगिरस २ अत्रि ३ पुलस्त्य ४ पुलह ५ क्रतु ६ वसिष्ठ ७ यह सप्तर्षि चित्रशिखण्डि कहलाते हैं ।

कर ११ ॥२८॥ भास्वत् १२ विवस्वत् १३ सप्ताश्व १४ हरिदश्व १५ उष्णरश्मि १६ विकर्त्तन १७ अर्क १८ मार्तण्ड १९ मिहिर २० अरुण २१ पूषन् २२ ॥ २९ ॥ द्युमणि २३ तरणि २४ मित्र २५ चित्रभानु २६ विरोचन २७ विभावसु २८ ग्रहपति २९ त्विषाम्पति ३० अहर्पति ३१ ॥ ॥ ३० ॥ भानु ३२ हंस ३३ सहस्रांशु ३४ तपन ३५ सवितृ ३६ रवि ३७ ॥

माठरः पिंगलो दण्डश्चण्डांशोः पारिपार्श्विकाः ॥ ३१ ॥

सूर्यपार्श्ववर्ती तीनोंके एक एक नाम—माठर १ पिंगल २ दण्ड ३ ॥ ३१ ॥

सूरसूतोऽरुणोऽनूरुः काश्यपिर्गरुडाग्रजः ।

सूर्यके सारथिके नाम ५—सूरसूत १ अरुण २ अनूरु ३ काश्यपि ४ गरुडाग्रज ५ ॥

परिवेषस्तु परिधिरुपसूर्यकमण्डले ॥ ३२ ॥

सूर्यके मण्डलके अर्थात् जो कभी २ उनके चारों ओर घेरासा बन जाता है उसके नाम ४—परिवेष १ परिधि २ उपसूर्यक ३ मण्डल ४ ॥ ३२ ॥

किरणोस्रमयूखांशुगभस्तिघृणिरश्मयः।भानुः करो मरीचिः स्त्रीपुंसयोर्दीधितिः स्त्रियाम् ॥ ३३ ॥

सूर्यके किरणके नाम ११—किरण १ उस्र २ मयूख ३ अंशु ४ गभस्ति ५ घृणि ६ रश्मि ७ भानु ८ कर ९ मरीचि १० दीधिति ११ ॥ ३३ ॥

स्युः प्रभारुग्रुचिस्त्विड्भाभाश्छविद्युतिदीप्तयः । रोचिःशोचिरुभे क्लीबे—

दीप्तिके नाम ११—प्रभा १ रुच् २ रुचि ३ त्विष् ४ भा ५ भास् ६ छवि ७ द्युति ८ दीप्ति ९ रोचिष् १० शोचिष् ११ ॥—

—प्रकाशो द्योत आतपः ॥३४॥

धूपके नाम ३—प्रकाश १ द्योत २ आतप ३ ॥ ३४ ॥

कोष्णं कवोष्णं मन्दोष्णं कदुष्णं त्रिषु तद्वति ।

थोड़े गरमके नाम ४—कोष्ण १ कवोष्ण २ मन्दोष्ण ३ कदुष्ण ४ ॥

तिग्मं तीक्ष्णं खरं तद्व—

बहुत गरमके नाम ३—तिग्म १ तीक्ष्ण २ खर ३ ॥—

—न्मृगतृष्णा मरीचिका ॥३५॥

मृगतृष्णाके नाम २—मृगतृष्णा १ मरीचिका २ ॥ ३५ ॥

इति दिग्वर्गः ॥ ३ ॥

अथ कालवर्गः ४.

कालो दिष्टोऽप्यनेहापि समयो-

समयके नाम ४—काल १ दिष्ट २ अनेहस् ३ समय ४ ॥—

—ऽप्यथ पक्षतिः । प्रतिपद्

द्वे इमे स्त्रीत्वे—

प्रतिपदाके नाम २—पक्षति १ प्रतिपत् २ ॥-स्त्री ४

तदाद्यास्तिथयो द्वयोः ॥ १ ॥

प्रतिपदादिका नाम १—तिथि १॥१॥

घस्रो दिनाहनी वा तु क्लीबे दिवसवासरौ ।

दिनके नाम ५—घस्र १ दिन २ अहन् ३ दिवस ४ वासर ५—

प्रत्यूषोऽहर्मुखं कल्यमुषःप्रत्युषसी अपि ॥ २ ॥ प्रभातं च—

प्रातःकालके नाम ६—प्रत्यूष १ अहर्मुख २ कल्य ३ उषस् ४ प्रत्युषस् ५ ॥ २ ॥ प्रभात ६ ॥—

—दिनान्ते तु सायंसंध्या पितृप्रसूः ।

सायंकालके नाम ४—दिनान्त १ सायम् २ सन्ध्या ३ पितृप्रसू ४ ॥

प्राह्णापराह्णमध्याह्नास्त्रिसंध्य—

प्रातःकालका नाम १ प्राह्ण १ ॥ मध्याह्नकालका नाम १—मध्याह्न १ ॥ मध्याह्नोत्तर कालका नाम १—अपराह्ण १—इन तीनों कालोंका इकट्ठा नाम—त्रिसंध्य १॥—

—मथ शर्वरी ॥ ३ ॥

निशा निशीथिनी रात्रिस्त्रियामा क्षणदा क्षपा । विभावरीतमस्विन्यौ रजनी यामिनी तमी ॥ ४ ॥

रात्रिके नाम १२—शर्वरी १—॥ ३ ॥ निशा २ निशीथिनी ३ रात्रि ४ त्रियामा ५ क्षणदा ६ क्षपा ७ विभावरी ८ तमस्विनी ९ रजनी १० यामिनी ११ तमी १२ ॥ ४ ॥

तमिस्रा तामसी रात्रि—

अंधियारी रात्रिका नाम १—तमिस्रा १॥

—ज्यौत्स्नी चन्द्रिकयान्विता ।

उजियाली रात्रिका नाम नाम १—ज्यौत्स्नी १॥

आगामिवर्तमानाहर्युक्तायां निशि पक्षिणी ॥ ५ ॥

वर्तमान और आगन्तुक दिनोंके मध्यकी रात्रिका नाम १—पक्षिणी १॥५॥

गणरात्रं निशा बह्वयः—

बहुत रात्रियोंका नाम १—गणरात्र १ ॥

—प्रदोषो रजनीमुखम् ।

रात्रिके प्रथमभागके नाम २—प्रदोष १ रजनीमुख २ ॥

अर्धरात्रनिशीथौ द्वौ—

आधीरात्रिके नाम २—अर्धरात्र १ निशीथ २ ॥

—द्वौ यामप्रहरौ समौ ॥ ६ ॥

—प्रहरके नाम २—याम १ प्रहर २ ॥ ६ ॥

स पर्वसंधिः प्रतिपत्पञ्चदश्यो-र्यदन्तरम् ।

प्रतिपदा १ और पंचदशी १५।३० के मध्यके कालका नाम १-पर्वसान्धि १ ॥

पक्षान्तौ पञ्चदश्यौ द्वे—

अमावास्या और पूर्णिमाका नाम १—पक्षान्त १ ॥

—पौर्णमासी तु पूर्णिमा ॥ ७ ॥

पूर्णिमाके नाम २—पौर्णमासी १ पूर्णिमा २ ॥ ७ ॥

कलाहीने सानुमतिः—

जिस पूर्णमासीमें प्रतिपदाके योगसे चन्द्रमाकी कला हीन हो उसका नाम १—अनुमति १ ॥

—पूर्णे राका निशाकरे ।

जिसमें पूर्ण चन्द्रमा हो उस पूर्णिमाका नाम १—राका १ ॥

अमावास्या त्वमावस्या दर्शः सूर्येन्दुसंगमः ॥ ८ ॥

अमावास्याके नाम ४—अमावास्या १ अमावस्या २ दर्श ३ सूर्येन्दु-संगम ४ ॥ ८ ॥

सा दृष्टेन्दुः सिनीवाली—

जिसमें चतुर्दशीके योगसे चन्द्रमाका दर्शन हो उस अमावास्याका नाम १—सिनीवाली १ ॥

—सा नष्टेन्दुकला कुहूः ।

जिसमें बिलकुल चन्द्रदर्शन न हो उस अमावस्याका नाम १—कुहू १ ॥

उपरागो ग्रहो राहुग्रस्ते त्विन्दौ च पूष्णि च ॥ ९ ॥ सोपप्लवो-परक्तौ द्वा—

चन्द्रग्रहण और सूर्यग्रहणके नाम ४—उपराग १ ग्रह २ ॥ ९ ॥ सोपप्लव ३ उपरक्त ४ ।

—वग्न्युत्पात उपाहितः ।

धूम्रकेतुके नाम २—अग्न्युत्पात १ उपाहित २ ॥

एकयोक्त्या पुष्पवन्तौ दिवा-करनिशाकरौ ॥ १० ॥

सूर्य और चन्द्र दोनोंका इकट्ठा नाम १—पुष्पवन्त १ ॥ १० ॥

अष्टादश निमेषास्तु काष्ठा—

पलक मारनेका नाम १—निमेष १ ॥ अठारह निमेषोंका नाम १—काष्ठा १ ॥

—त्रिंशत्तु ताः कला ।

तीस काष्ठाओंका नाम १—कला १ ॥

तास्तु त्रिंशत्क्षण-

तीस कलाओंका नाम १—क्षण १ ॥

—स्ते तु मुहूर्तो द्वादशास्त्रियाम् ११

बारह क्षणोंका नाम १—मुहूर्त्त १ ॥११॥

ते तु त्रिंशदहोरात्रः—

तीस मुहूर्तोंका नाम १—अहोरात्र १ ॥

—पक्षस्ते दशपञ्च च ।

पंद्रह दिनरातका नाम १—पक्ष १ ॥

पक्षौ पूर्वापरौ शुक्लकृष्णौ—

पक्ष दो हैं २—शुक्ल १ कृष्ण २ ॥

—मासस्तु तावुभौ ॥ १२ ॥

दो पक्षोंका नाम १—मास १॥ १२ ॥

द्वौ द्वौ मार्गादिमासौ स्यादृतु-

मार्गशीर्षादि दो दो मासोंका नाम १—ऋतु १ ॥

—स्तैरयनं त्रिभिः ।

तीन ऋतुओंका नाम १—अयन १ ॥

अयने द्वे गतिरुदग्दक्षिणार्कस्य-

दो अयनोंके २ भेद—उत्तरायण १। दक्षिणायन २ ॥

—वत्सरः ॥ १३ ॥

दो अयनोंका नाम १—वत्सर १॥१३॥

समरात्रिन्दिवे काले विषुवद्वि-षुवं च तत् ।

जिसमें दिनरात समान होते हैं उस संक्रांति (तुला और मेष) के नाम २—विषुवत् १ विषुव २ ॥

मार्गशीर्षे सहा मार्ग आग्रहा-यणिकश्च सः ॥ १४ ॥

अगहन महीनेके नाम ४—मार्ग-शीर्ष १ सहस् २ मार्ग ३ आग्रहा-यणिक ४ ॥ १४ ॥

पौषे तैषसहस्यौ द्वौ—

पूषमासके नाम ३—पौष १ तैष २ सहस्य ३ ।

—तपा माघे—

माघमासके नाम २—तपस् १ माघ २ ॥

—ऽथ फाल्गुने । स्यात्तपस्यः फाल्गुनिकः—

फाल्गुनमासके नाम ३—फाल्गुन १ तपस्य २ फाल्गुनिक ३ ॥

स्याच्चैत्रे चैत्रिको मधुः ॥ १५ ॥

चैत्रमासके नाम ३—चैत्र १ चैत्रिक २ मधु ३ ॥ १५ ॥

वैशाखे माधवो राधो—

वैशाखमासके नाम ३—वैशाख १ माधव २ राध ३ ॥

—ज्येष्ठे शुक्र—

ज्येष्ठके नाम २—ज्येष्ठ १ शुक्र २ ॥

—श्शुचिस्त्वयम् । आषाढे—

आषाढमासके नाम २—शुचि १ आषाढ २ ॥

—श्रावणे तु स्यान्नभाः श्रावणिकश्च सः ॥ १६ ॥

श्रावणमासके नाम ३—श्रावण १ नभस् २ श्रावणिक ३ ॥ १६ ॥

स्युर्नभस्यः प्रौष्ठपदभाद्रभाद्रपदाः समाः ।

भादों मासके नाम ४—नभस्य १ प्रौष्ठपद २ भाद्र ३ भाद्रपद ४ ॥

स्यादाश्विन इषोऽप्याश्वयुजोऽपि-

क्वारमासके नाम ३—आश्विन १ इष २ आश्वयुज ३ ॥

—स्यात्तु कार्त्तिके ॥ १७ ॥ बाहुलोर्जौ कार्त्तिकिको—

कार्तिकमासके नाम ४—कार्तिक १ ॥ १७ ॥ बाहुल २ ऊर्ज ३ कार्तिकिक ४ ॥

—हेमन्तः—

अगहन पूस माससे सिद्ध हुई ऋतुका नाम १—हेमन्त १ ॥

—शिशिरोऽस्त्रियाम् ।

माघ फाल्गुनसे सिद्ध हुई ऋतुका नाम १—शिशिर १ ॥

वसन्ते पुष्पसमयः सुरभि—

चैत्र वैशाखसे सिद्ध ऋतुके नाम ३—वसन्त १ पुष्पसमय २ सुरभि ३ ॥

—ग्रीष्म ऊष्मकः ॥ १८ ॥ निदाघ उष्णोपगम उष्ण ऊष्मागमस्तपः ।

ज्येष्ट आषाढके ऋतुके नाम ७—ग्रीष्म १ ऊष्मक २ ॥१८॥ निदाघ३ उष्णोपगम४ उष्ण५ ऊष्मागम६ तप ७ ॥

स्त्रियां प्रावृट् स्त्रियां भूम्नि वर्षा-

सावन भादोंके ऋतुके नाम २—प्रावट् १ वर्षा २ ॥

—अथ शरत् स्त्रियाम् ॥ १९ ॥

क्वार कार्तिकके ऋतुका नाम १—शरद् १ ॥ १९ ॥

षडमी ऋतवः पुंसि मार्गादीनां युगैः क्रमात् ।

मार्गशीर्ष आदि दो दो महीनोंके ये छः ऋतु होते हैं ॥

संवत्सरो वत्सरोऽब्दो हायनोऽस्त्री शरत्समाः ॥ २० ॥

वर्षके नाम ६—संवत्सर १ वत्सर २ अब्द ३ हायन ४ शरद् ५ समा ६ ॥ २० ॥

मासेन स्यादहोरात्रः पैत्रो—

मनुष्योंके एक महीनेका पितरोंका (दिनरात्रि) दिवस होता है ॥

—वर्षेण दैवतः ।

और एक वर्षका देवताओंका (दिनरात्रि) दिवस होता है ॥

दैवे युगसहस्रे द्वे ब्राह्मः–

देवोंके दो हजार युगका ब्रह्माका (दिनरात्रि) दिवस होता है ॥

–कल्पौ तु तौ नृणाम् ॥ २१ ॥

उन दो युगसहस्रोंको मनुष्योंका कल्प कहते हैं, ब्रह्माका दिन मनुष्योंका स्थितिकाल और ब्रह्माकी रात्रि मनुष्योंका प्रलयकाल होता है ॥ २१ ॥

मन्वन्तरं तु दिव्यानां युगानामेकसप्ततिः ।

इकहत्तर दिव्यवर्षका नाम १–मन्वन्तर १ ॥

संवर्तः प्रलयः कल्पः क्षयः कल्पान्त इत्यपि ॥ २२ ॥

प्रलयके नाम ५–संवर्त १ प्रलय २ कल्प ३ क्षय ४ कल्पान्त५॥२२॥

अस्त्री पंकं पुमान्पाप्मा पापं किल्बिषकल्मषम् । कलुषं वृजिनैनोऽघमंहो दुरितदुष्कृतम् ॥ २३॥

पापके नाम १२–पंक १ पाप्मन् २ पाप ३ किल्बिष ४ कल्मष ५कलुष ६ वृजिन ७ एनस् ८ अघ ९ अंहस् १० दुरित ११ दुष्कृत १२ ॥ २३ ॥

स्याद्धर्ममस्त्रियां पुण्यश्रेयसी सुकृतं वृषः ।

धर्मके नाम ५–धर्म १ पुण्य २ श्रेयस् ३ सुकृत ४ वृष ५ ॥

मुत्प्रीतिः प्रमदो हर्षप्रमोदामोदसंमदाः ॥ २४ ॥ स्यादानन्दथुरानन्दः शर्मशातसुखानि च ।

हर्षके नाम १२–मुद् १ प्रीति २ प्रमद ३ हर्ष ४ प्रमोद ५ आमोद ६ सम्मद ७ ॥ २४ ॥ आनन्दथु ८ आनन्द ९ शर्मन् १० शात ११ सुख १२ ॥

श्वःश्रेयसं शिवं भद्रं कल्याणं मंगलं शुभम् ॥ २५ ॥ भावुकं भविकं भव्यं कुशलं क्षेममस्त्रियाम् । शस्तं चा–

कल्याणके नाम १२–श्वःश्रेयस् १ शिव २ भद्र ३ कल्याण ४ मंगल ५ शुभ ६ ॥ २५ ॥ भावुक ७ भविक ८ भव्य ९ कुशल १० क्षेम ११ शस्त १२।

–ऽथ त्रिषु द्रव्ये पापं पुण्यं सुखादि च ॥ २६ ॥

पाप और पुण्यशब्द तथा सुखशब्द से लेकर शस्तशब्द पर्यंत जो शब्द हैं वे यदि द्रव्यवाचक हों तो तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥ २६ ॥

मतल्लिका मचर्चिका प्रकाण्डमुद्धतल्लजौ । प्रशस्तवाचकान्यमू–

अच्छेके नाम ५—मतल्लिका १ मचर्चिका २ प्रकाण्ड ३ उद्ध ४ तल्लज ५ ॥

—न्ययः शुभावहो विधिः ॥२७॥

शुभकारक विधिका नाम—अय १ ॥ २७ ॥

दैवं दिष्टं भागधेयं भाग्यं स्त्री नियतिर्विधिः ।

भाग्यके नाम ६—दैव १ दिष्ट २ भागधेय ३ भाग्य ४ नियति ५ विधि ६॥

हेतुर्ना कारणं बीजम्—

कारणके नाम ३—हेतु १ कारण २ बीज ३ ॥

—निदानं त्वादिकारणम् ॥२८॥

आदिकारणका नाम १—निदान १॥२८॥

क्षेत्रज्ञ आत्मा पुरुषः—

चैतन्यके नाम ३—क्षेत्रज्ञ १ आत्मन् २ पुरुष ३ ॥

—प्रधानं प्रकृतिः स्त्रियाम् ।

प्रकृतिके नाम २—प्रधान १ प्रकृति २ ॥

विशेषः कालिकोऽवस्था—

उमरका नाम १—अवस्था १ ।

—गुणाः सत्त्वं रजस्तमः ॥२९॥

गुणोंके नाम ३—सत्त्व १ रजस् २ तमस् ३ ॥ २९ ॥

जनुर्जननजन्मानि जनिरुत्पत्तिरुद्भवः ॥

जन्मके नाम ६—जनुस् १ जनन २ जन्मन् ३ जनि ४ उत्पत्ति ५ उद्भव ६ ॥

प्राणी तु चेतनो जन्मी जन्तुजन्युशरीरिणः ॥ ३० ॥

प्राणीके नाम ६—प्राणिन् १ चेतन २ जन्मिन् ३ जन्तु ४ जन्यु ५ शरीरिन् ६ ॥ ३० ॥

जातिर्जातं च सामान्यं—

जातिमात्रके नाम ३—जाति १ जात २ सामान्य ३ ॥

—व्यक्तिस्तु पृथगात्मता ।

व्यक्तिवाचकके नाम २—व्यक्ति १ पृथगात्मता २ ॥

चित्तं तु चेतो हृदयं स्वान्तं हृन्मानसं मनः ॥ ३१ ॥

मनके नाम ७—चित्त १ चेतस् २ हृदय ३ स्वान्त ४ हृद् ५ मानस ६ मनस् ७ ॥ ३१ ॥

इति कालवर्गः ॥ ४ ॥

अथ धीवर्गः ५.

बुद्धिर्मनीषा धिषणा धीः प्रज्ञा शेमुषी मतिः । प्रेक्षोपलब्धिश्चित्संवित्प्रतिपज्ज्ञप्तिचेतनाः ॥ १ ॥

बुद्धिके नाम १४—बुद्धि १ मनीषा २ धिषणा ३ धी ४ प्रज्ञा ५

शेमुषी ६ मति ७ प्रेक्षा ८ उपलब्धि ९ चित् १० संविद् ११ प्रतिपद् १२ ज्ञप्ति १३ चेतना १४ ॥ १ ॥

धीर्धारणावती मेधा-

कही हुई वार्त्ताको धारण रखनेवाली बुद्धिका नाम १-मेधा १ ॥

-संकल्पः कर्म्म मानसम् ।

मनकी कामनाका नाम १-संकल्प १ ॥

चित्ताभोगो मनस्कार-

किसी वस्तुमें चित्तके तत्पर हो जानेके नाम २-चित्ताभोग १ मनस्कार २॥

-श्चर्चा संख्या विचारणा ॥२॥

विचारके नाम ३-चर्चा १ संख्या २ विचारणा ३ ॥ २ ॥

अध्याहारस्तर्क ऊहो-

अपूर्व विचारके नाम ३-अध्याहार १ तर्क २ ऊह ३ ॥

-विचिकित्सा तु संशयः । संदेहद्वापरौ चा-

सन्देहके नाम ४-विचिकित्सा १ संशय २ संदेह ३ द्वापर ४ ॥

-थ समौ निर्णयनिश्चयौ॥ ३ ॥

निश्चयके नाम २-निर्णय १ निश्चय २ ॥ ३ ॥

मिथ्यादृष्टिर्नास्तिकता-

परलोकको मिथ्या जाननेके नाम २-मिथ्यादृष्टि १ नास्तिकता २ ॥

व्यापादो द्रोहचिन्तनम् ।

परद्रोहके नाम २-व्यापाद १ द्रोहचिन्तन २ ॥

समौ सिद्धान्तराद्धान्तौ-

निश्चय की हुई बातके नाम २-सिद्धान्त १ राद्धान्त २ ॥

-भ्रान्तिर्मिथ्यामतिर्भ्रमः ॥४॥

भ्रमके नाम ३-भ्रान्ति १ मिथ्यामति २ भ्रम ३ ॥ ४ ॥

संविदागूः प्रतिज्ञानं नियमाश्रवसंश्रवाः ॥ अङ्गीकाराभ्युपगमप्रतिश्रवसमाधयः ॥ ५ ॥

प्रतिज्ञाके नाम १०-संविद् १ आगू २ प्रतिज्ञान ३ नियम ४ आश्रव ५ संश्रव ६ अङ्गीकार ७ अभ्युपगम ८ प्रतिश्रव ९ समाधि १० ॥ ५ ॥

मोक्षे धीर्ज्ञान-

मोक्षमें बुद्धि लगानेका नाम १-ज्ञान १ ॥

-मन्यत्र विज्ञानं शिल्पशास्त्रयोः ।

मोक्षसे अन्यत्र शिल्पविद्या और शास्त्रमें बुद्धि लगानेका नाम-१ विज्ञान १ ॥

मुक्तिः कैवल्यनिर्वाणश्रेयोनिःश्रेयसामृतम् ॥ ६ ॥ मोक्षोऽपवर्गो-

मोक्षके नाम ८–मुक्ति १ कैवल्य २ निर्वाण ३ श्रेयस् ४ निःश्रेयस् ५ अमृत ६ ॥ ६ ॥ मोक्ष ७ अपवर्ग ८ ॥

–थाज्ञानमविद्याहंमतिः स्त्रियाम् ।

अज्ञानके नाम ३–अज्ञान १ अविद्या २ अहम्मति ३ ॥

रूपं शब्दो गन्धरसस्पर्शाश्च विषया अमी ॥ ७ ॥

पञ्चविषयोंके नाम ५–रूप १ शब्द २ गन्ध ३ रस ४ स्पर्श ५॥७॥

गोचरा इन्द्रियार्थाश्च-

इकट्ठे रूपरसादिके नाम ३–विषय १ गोचर २ इन्द्रियार्थ ३ ॥

–हृषीकं विषयीन्द्रियम् ।

इन्द्रियके नाम ३–हृषीक १ विषयी २ इन्द्रिय ३ ॥

कर्मेन्द्रियं तु पाय्वादि-

कर्मेंद्रियोंके नाम–गुदी आदि ॥[1]

–मनोनेत्रादि धीन्द्रियम् ॥८॥

ज्ञानेंद्रियोंके नाम–५ मनस् १ नेत्र २ आदि[1] ॥ ८ ॥

तुवरस्तु कषायोऽस्त्री मधुरो लवणः कटुः । तिक्तोऽम्लश्च रसाः पुंसि--

छः रसोंके नाम–तुवर–कषाय १ मधुर २ लवण ३ कटु ४ तिक्त ५ अम्ल ६ ॥

–तद्वत्सु षडमी त्रिषु ॥ ९ ॥

कषाय आदि रसवाचक शब्द यदि द्रव्यवाचक हों तो तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥ ९ ॥

विमर्दोत्थे परिमलो गन्धे जनमनोहरे ।

मनुष्योंके मनको हरनेवाले घिसनेसे उत्पन्न हुए सुगन्धका नाम १–परिमल १

आमोदः सोऽतिनिर्हारी-

अत्यन्त मनको हरनेवाले सुगंधका नाम १–आमोद १ ॥

–वाच्यलिंगत्वमागुणात् ॥१०॥

यहांसे लेकर "गुणे शुक्लादयः पुंसि" इससे पहले जो शब्द हैं वे वाच्यलिङ्ग अर्थात् विशेष्यलिंग होते हैं ॥ १० ॥

---

१ "पायूपस्थे पाणिपादा वाक्चेतीन्द्रियसंग्रहः ।" अर्थात्–पायु १ उपस्थ २ पाणि३ पाद४ और वाक् ५ यह पांच कर्मेन्द्रिय हैं ॥

१ "मनः कर्णस्तथा नेत्रं रसना च त्वचा सहानासिका चेति षट् तानि धीन्द्रियाणि प्रचक्षते ॥" अर्थात्–मन१कर्ण २ नेत्र ३ जिह्वा ४ त्वचा५और नासिका यह ६ ज्ञानेन्द्रिय (धीन्द्रिय) हैं ॥

समाकर्षी तु निर्हारी-

दूरसे ही जिसकी गन्ध आवे उसके नाम २--समाकर्षिन् १ निर्हारिन् २ ॥

--सुरभिर्घ्राणतर्पणः । इष्टगन्धः सुगन्धिः स्या-

अत्युत्तमगन्धके नाम ४--सुरभि १ घ्राणतर्पण २ इष्टगन्ध ३ सुगंधि ४ ॥

-दामोदी मुखवासनः ॥ ११॥

मुखको सुगंधित करनेवाले ताम्बूले आदिकी गंधके नाम २--आमोदिन् १ मुखवासन २ ॥ ११ ॥

पूतिगन्धिस्तु दुर्गन्धो-

दुर्गन्धके नाम २--पूतिगन्धि १ दुर्गन्ध २ ॥

--विस्रं स्यादामगन्धि यत् ।

कच्चे मांसादिके गन्धका नाम १--विस्र १ ॥

शुक्लशुभ्रशुचिश्वेतविशदश्येतपाण्डराः ॥ १२ ॥ अवदातः सितो गौरो वलक्षो धवलोऽर्जुनः ।

उज्ज्वलके नाम १३--शुक्ल १ शुभ्र २ शुचि ३ श्वेत ४ विशद ५ श्येत ६ पांडर ७॥ १२ ॥ अवदात ८ सित ९ गौर १० वलक्ष ११ धवल १२ अर्जुन १३ ॥

हरिणः पाण्डुरः पाण्डु-

कुछ पीलापन मिले हुए सफेदवर्णके नाम ३--हरिण १ पांडुर २ पांडु ३ ।

--रीषत्पाण्डुस्तु धूसरः ॥ १३ ॥

किञ्चित् उज्ज्वलका नाम १--धूसर १ ॥ १३ ॥

कृष्णे नीलासितश्यामकालश्यामलमेचकाः ।

काले वर्णके नाम ७--कृष्ण १ नील २ असित ३ श्याम ४ काल ५ श्यामल ६ मेचक ७ ॥

पीतो गौरो हरिद्राभः-

पीले वर्णके नाम ३--पीत १ गौर २ हरिद्राभ ३ ॥

--पालाशो हरितो हरित् ॥१४॥

हरे वर्णके नाम ३--पालाश १ हरित २ हरित् ३ ॥ १४ ॥

रोहितो लोहितो रक्तः-

लालवर्णके नाम ३--रोहित १ लोहित २ रक्त ३ ॥

--शोणः कोकनदच्छावः ।

लाल कमलके समान वर्णके नाम २--शोण १ कोकनदच्छवि २ ॥

अव्यक्तरागस्त्वरुणः-

थोड़े लालका नाम १--अरुण १ ।

--श्वेतरक्तस्तु पाटलः ॥ १५ ॥

मिले हुए सफेद और लालवर्णका नाम १—पाटल १ ॥ १५ ॥

श्यावः स्यात्कपिशो-

मिले हुए काले और पीले रंगके नाम २—श्याव १ कापिश २ ॥

धूम्रधूमलौ कृष्णलोहिते ।

मिले हुए काले और लालवर्णके नाम ३—धूम्र १ धूमल २ कृष्णलोहित ३ ॥

कडारः कपिलः पिङ्गपिशंगौ कद्रुपिङ्गलौ ॥ १६ ॥

वानरकेसे रंगके नाम ६—कडार १ कपिल २ पिङ्ग ३ पिशङ्ग ४ कद्रु ५ पिंगल ६ ॥ १६ ॥

चित्रं किर्मीरकल्माषशबलैताश्च कर्बुरे ।

चित्रवर्णके नाम ६—चित्र १ किर्मीर २ कल्माष ३ शबल ४ एत ५ कर्बुर ६ ॥

गुणे शुक्लादयः पुंसि गुणि-लिंगास्तु तद्वति ॥ १७ ॥

गुणवाचक शुक्ल आदि शब्द पुँल्लिंग होते हैं और द्रव्यवाचकशब्द द्रव्यके अनुसार लिंगमें होते हैं ॥ १७ ॥

इति धीवर्गः ॥ ५ ॥

अथ शब्दादिवर्गः ६.

ब्राह्मी तु भारती भाषा गीर्वाग्वाणी सरस्वती ।

सरस्वतीके नाम ७—ब्राह्मी १ भारती २ भाषा ३ गिर् गिरा ४ वाच् ५ वाणी ६ सरस्वती ७ ॥

व्याहार उक्तिर्लपितं भाषितं वचनं वचः ॥ १ ॥

बोलनेके नाम ६—व्याहार १ उक्ति २ लपित ३ भाषित ४ वचन ५ वचस् ६ ॥ १ ॥

अपभ्रंशोऽपशब्दः स्यात्-

अपभ्रष्ट अर्थात् व्याकरणकी रीतिसे अशुद्ध शब्दका नाम १--अपभ्रंश १ ।

च्छास्त्रे शब्दस्तु वाचकः ।

व्याकरणशास्त्रानुसार शुद्ध शब्दका नाम १—शब्द १ ॥

तिङ्सुबन्तचयो वाक्यं क्रिया वा कारकान्विता ॥ २ ॥

तिङन्तसुबन्तके समूह और कारक-युक्त क्रियाका नाम १—वाक्य १ ॥ २ ॥

श्रुतिः स्त्री वेद आम्नायस्त्रयी-

वेदके नाम ४—श्रुति १ वेद २ आम्नाय ३ त्रयी ४ ॥

—धर्मस्तु तद्विधिः ।

वेदमें कही हुई संध्या तर्पण आदि विधिका नाम १—धर्म १ ॥

त्रियामृक्सामयजुषी—

वेदोंके नाम३—ऋच् १ यजुष् २ सामन् ३ ॥

—इति वेदास्त्रयस्त्रयी ॥ ३ ॥

इन्हीं तीनों वेदोंका इकट्ठा नाम१—त्रयी १ ॥ ३ ॥

शिक्षेत्यादि श्रुतेरङ्ग—

वेदके छः अंगोंके नाम ६—शिक्षा १ कल्प २ व्याकरण ३ निरुक्त ४ ज्योतिष ५ छन्दस् ६ ॥

सोंकारप्रणवौ समौ ।

ओंकारके नाम २—ओंकार१प्रणव २ ॥

इतिहासः पुरावृत्त—

इतिहासके नाम २—इतिहास १ पुरावृत्त २ ॥

मुदात्ताद्यास्त्रयः स्वराः ॥ ४ ॥

उदात्त, अनुदात्त, स्वरितका नाम १—स्वर १ ॥ ४ ॥

आन्वीक्षिकी दण्डनीतिस्तर्कविद्यार्थशास्त्रयोः ।

तर्कविद्याका नाम १—आन्वीक्षिकी१ अर्थशास्त्रका नाम १-दंडनीति १ ॥

आख्यायिकोपलब्धार्था—

जिसका अर्थ जान लिया हो उस कथाके नाम २—आख्यायिका १ उपलब्धार्था २ ॥

पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥ ५ ॥

पुराणोंके नाम २—पुराण १ पंचलक्षण २ ॥ ५ ॥

प्रबंधकल्पना कथा—

कल्पना की हुई कादम्बरी आदि कथाके नाम २—प्रबन्धकल्पना १ कथा २ ॥

प्रवह्लिका प्रहेलिका ।

जिसके सुननेसे मतलब जाना जाय और विचार करनेसे दूसरा मतलब निकले उस (कहानी) के नाम २—प्रवह्लिका १ प्रहेलिका २ ॥

स्मृतिस्तु धर्मसंहिता—

धर्म जाननेको रचना किये हुए श्लोकोंके समूहके नाम२—स्मृति १ धर्मसंहिता २ ॥

—समाहृतिस्तु संग्रहः ॥ ६ ॥

संग्रहके नाम २—समाहृति १—संग्रह २ ॥ ६ ॥

समस्या तु समासार्था—

जिसमें कुछ अर्थ पूरा किया जाय उसके नाम २—समस्या१समासार्था२॥

—किंवदन्ती जनश्रुतिः ।

लोकप्रवाद अर्थात् दुर्यशके नाम२—किंवदन्ती १ जनश्रुति ॥ २ ॥

वार्ता प्रवृत्तिर्वृत्तान्त उदन्तः स्या—

वार्ताके नाम ४—वार्त्ता १ प्रवृत्ति २ वृत्तान्त ३ उदन्त ४ ॥

—दथाह्वयः ॥ ७ ॥ आख्याह्वे अभिधानं च नामधेयं च नाम च ।

नामके नाम ६—आह्वय १ ॥ ७ ॥ आख्या २ आह्वा ३ अभिधान ४ नामधेय ५ नामन् ६ ॥

हूतिराकारणाह्वानं—

पुकारनेके नाम ३—हूति १ आकारणा २ आह्वान ३ ॥

—संहूतिर्बहुभिः कृता ॥ ८ ॥

बहुत जनोंकरके पुकारनेका नाम १—संहूति १ ॥ ८ ॥

विवादो व्यवहारः स्या—

विवादके नाम २—विवाद १ व्यवहार २ ॥

—दुपन्यासस्तु वाङ्मुखम् ।

वार्ताका प्रारम्भ करनेके नाम २—उपन्यास १ वाङ्मुख २ ॥

उपोद्घात उदाहारः—

जो बात आगे कही जाय उसके उपयोगी बातके नाम २—उपोद्घात १ उदाहार २ ॥

—शपनं शपथः पुमान् ॥ ९ ॥

सौगन्ध खानेके नाम २—शपन १ शपथ २ ॥ ९ ॥

प्रश्नोऽनुयोगः पृच्छा च—

प्रश्नके नाम ३—प्रश्न १ अनुयोग २ पृच्छा ३ ॥

—प्रतिवाक्योत्तरे समे ।

उत्तरके नाम २—प्रतिवाक्य १ उत्तर २ ॥

मिथ्याभियोगोऽभ्याख्यान—

झूठे दोष लगानेके नाम २—मिथ्याभियोग १ अभ्याख्यान २ ॥

—मथ मिथ्याभिशंसनम् ॥ १० ॥ अभिशापः—

मदिरादिपान आदिका झूठा दोष लगानेके नाम २—मिथ्याभिशंसन १ ॥ १० ॥ अभिशाप २ ॥

प्रणादस्तु शब्दः स्यादनुरागजः ।

अनुरागज शब्दका नाम १—प्रणाद १॥

यशः कीर्तिः समज्ञा च—

कीर्तिके नाम ३—यशस् १ कीर्ति २ समज्ञा ३ ॥

—स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः ॥ ११ ॥

स्तुतिके नाम ४—स्तव १ स्तोत्र २ स्तुति ३ नुति ४ ॥ ११ ॥

आम्रेडितं द्विस्त्रिरुक्त—

दोतीनबार कहनेका नाम १-आम्रेडित १।

—मुच्चैर्घुष्टं तु घोषणा ।

जोरसे बोलनेके नाम २—उच्चैर्घुष्ट १ घोषणा २ ॥

काकुः स्त्रियां विकारो यः शोकभीत्यादिभिर्ध्वनेः ॥ १२ ॥

शोकभयकामादियुक्त वचनका नाम १—काकु ॥ १२ ॥

अवर्णाक्षेपनिर्वादपरीवादापवादवत् । उपक्रोशो जुगुप्सा च कुत्सा निन्दा च गर्हणे ॥ १३ ॥

निन्दाके नाम १०—अवर्ण १ आक्षेप २ निर्वाद ३ परीवाद-(परिवाद) ४ अपवाद ५ उपक्रोश ६ जुगुप्सा ७ कुत्सा ८ निन्दा ९ गर्हण १० ॥१३॥

पारुष्यमतिवादः स्या—

कठोर भाषणके नाम २—पारुष्य १ अतिवाद २ ॥

—द्भर्त्सनं त्वपकारगीः ।

ललकारनेका नाम १—भर्त्सन १ ॥

यः सनिन्द उपालम्भस्तत्र स्यात्परिभाषणम् ॥ ४१ ॥

खिजानेका नाम १—परिभाषण १ ॥ १४ ॥

तत्र त्वाक्षारणा यः स्यादाक्रोशो मैथुनं प्रति ।

परस्त्री या पुरुषसे मैथुनार्थ वार्त्ता करनेका नाम १—आक्षारणा(आक्षारण १)॥

स्यादाभाषणमालापः—

सम्बोधनपूर्वक वार्त्ता करनेके नाम २—आभाषण १ आलाप २ ॥

प्रलापोऽनर्थकं वचः ॥ १५ ॥

अनर्थ वचनका नाम १—प्रलाप १॥१५॥

अनुलापो मुहुर्भाषा—

वारंवार भाषणके नाम २—अनुलाप १ मुहुर्भाषा ॥ २ ॥

—विलापः परिदेवनम् ।

रोनेके नाम २—विलाप १ परिदेवन २॥

विप्रलापो विरोधोक्तिः—

परस्पर विरुद्ध भाषणके नाम २—विप्रलाप १ विरोधोक्ति ॥ २ ॥

—संलापो भाषणं मिथः ॥१६॥

परस्पर योग्यभाषणका नाम १—संलाप १ ॥ १६ ॥

सुप्रलापः सुवचन—

सुन्दर वचनके नाम २—सुप्रलाप १ सुवचन ॥ २ ॥

—मपलापस्तु निह्नवः ।

मुकर जानेके नाम २—अपलाप १ निह्नव २ ॥

संदेशवाग्वाचिकं स्या—

संदेशके नाम २—सन्देशवाच् १ वाचिक २ ॥

–द्वाग्भेदास्तु त्रिषूत्तरे ॥ १७ ॥

रुशती शब्दसे लेकर सम्यक्शब्द-पर्यंत जो शब्द हैं वे तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥ १७ ॥

रुशती वागकल्याणी–

अमंगल वाक्यका नाम १–रुशती १ ॥

–स्यात्कल्या तु शुभात्मिका ।

शुभवाणीका नाम १- कल्या १ ॥

अत्यर्थमधुरं सान्त्वं--

अति मिष्टवचनका नाम १–सान्त्व१॥

--संगतं हृदयंगमम् ॥ १८ ॥

सम्बद्ध अर्थात् योग्य वचनके नाम २–संगत १ हृदयंगम २ ॥ १८ ॥

निष्ठुरं परुषं–

कठोरवचनके नाम २-निष्ठुर१परुष२॥

–ग्राम्यमश्लीलं–

भाँड़ आदिके वचनोंके नाम २–ग्राम्य १ अश्लील २ ॥

सूनृतं प्रिये । सत्ये--

प्रिय और सत्यवचनका नाम १–सूनृत १ ॥

-ऽथ संकुलक्लिष्टे परस्परपराहते१९

पूर्वापर विरुद्ध वचनके नाम ३–संकुल १ क्लिष्ट२परस्परपराहत३॥१९॥

लुप्तवर्णपदं ग्रस्तं-·

अधकहे वचनके नाम २--लुप्तवर्ण-पद १ ग्रस्त २ ॥

निरस्तं त्वरितोदितम् ।

जलदी कहे हुए शब्दके नाम २–निरस्त १ त्वरितोदित २ ॥

अम्बूकृतं सनिष्ठीव--

थूकसहित बोलनेके नाम २--अम्बूकृत १ सनिष्ठीव २ ॥

-·मबद्धं स्यादनर्थकम् ॥ २० ॥

अर्थन्यूनवचनके नाम २--अबद्ध १ अनर्थक २ ॥ २० ॥

अनक्षरमवाच्यं स्या–

अकथनयोग्य निन्दायुक्त वचनके नाम २--अनक्षर १ अवाच्य २॥

--दाहतं तु मृषार्थकम् ।

झुठाईका नाम १–आहत १ ॥

"सोल्लुण्ठनं तु सोत्प्रासं--

हास्यसहित वचनके नाम २–सोल्लुण्ठन १ सोत्प्रास २ ॥

-भणितं रतिकूजितम्" ।

मैथुनके शब्दके नाम २–भणित १ रतिकूजित २ ॥

अथ म्लिष्टमविस्पष्टं–

अप्रतीकके नाम २–म्लिष्ट १ अविस्पष्ट २ ॥

–वितथं त्वनृतं वचः ॥ २१ ॥

झूठके नाम २–वितथ१अनृत२॥२१॥

सत्यं तथ्यमृतं सम्य–

सत्यके नाम ४—सत्य १ तथ्य २ ऋत ३ सम्यच् ४ ॥

—गमूनि त्रिषु तद्वति ।

सत्य आदि शब्द द्रव्यवाचक हों तो तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥

शब्दे निनादनिनदध्वनिध्वान-रवस्वनाः ॥ २२ ॥ स्वाननिर्घोष-निर्ह्रादनादनिस्वानानिस्वनाः । आर-वारावसंरावविरावा—

शब्दके नाम १७—शब्द १ निनाद २ निनद ३ ध्वनि ४ ध्वान ५ रव ६ स्वन ७ ॥ २२ ॥ स्वान ८ निर्घोष ९ निर्ह्राद १० नाद ११ निस्वान १२ निस्वन १३ आरव १४ आराव १५ संराव १६ विराव १७ ॥

—अथ मर्मरः ॥ २३ ॥ स्वनिते वस्त्रपर्णानां—

वस्त्र और पत्तोंके शब्दका नाम १—मर्मर १ ॥ २३ ॥

भूषणानां च शिञ्जितम् ।

गहनेके खनखनाहटका नाम १—शिञ्जित १ ॥

निक्वाणो निक्वणः क्वाणः क्वणः क्वणनमित्यपि ॥ २४ ॥

वीणादि शब्दोंके नाम ५—निक्वाण १ निक्वण २ क्वाण ३ क्वण ४ क्वणन ५ ॥ २४ ॥

वीणायाः क्वणिते प्रादेः प्रक्वा-णप्रक्वणादयः ।

केवल वीणाके बाजोंके नाम ३—प्रक्वाण १ प्रक्वण २ उपक्वणन आदि ३ ॥

कोलाहलः कलकल—

कोलाहलके नाम २—कोलाहल १ कलकल २ ॥

—स्तिरश्चां वाशितं रुतम् ॥ २५ ॥

पक्षियोंके शब्दके नाम २—वाशित १ रुत २ ॥ २५ ॥

स्त्री प्रतिश्रुत्प्रतिध्वाने—

आवाजकी आवाज अर्थात् गूँजनेके नाम २—प्रतिश्रुत् १ प्रतिध्वान २ ॥

—गीतं गानमिमे समे ।

गानेके नाम २—गीत १ गान २ ॥

इति शब्दादिवर्गः ॥ ६ ॥

अथ नाट्यवर्गः ७.

निषादर्षभगान्धारषड्जमध्य—

---

१ " षड्जं रौति मयूरस्तु गावो नर्दन्ति चर्षभम् । अजाविकौ च गांधारं क्रौञ्चो नदति मध्यमम् ॥ १ ॥ पुष्पसाधारणे काले कोकिलो रौति पञ्चमम् । अश्वस्तु धैवतं रौति निषादं रौति कुञ्जरः ॥ २ ॥ " अर्थात् मोर षड्ज शब्दको बोलता है । बैल ऋषभ शब्दको, भेड बकरी गान्धार स्वरको, क्रौञ्च पक्षी मध्यम स्वरको, घोड़ा धैवत स्वरको, कोकिल वसन्त कालमें पञ्चम स्वरको और हस्ती निषाद स्वरको बोलता है ।

मधैवताः ॥ पञ्चमश्चेत्यमी सप्त तन्त्रीकण्ठोत्थिताः स्वराः ॥ १ ॥

वीणासे वा कंठसे उत्पन्न होनेवाले स्वरोंके नाम ७–निषाद १ ऋषभ २ गान्धार ३ षड्ज ४ मध्यम ५ धैवत६ पञ्चम ७ ॥ १ ॥

काकली तु कले सूक्ष्मे–

सूक्ष्मशब्दका नाम १–काकली १॥

–ध्वनौ तु मधुरास्फुटे । कलो-

मीठी और अस्फुट आवाजका नाम १–कल १ ॥

–मन्द्रस्तु गम्भीरे–

गंभीर शब्दका नाम१ –मन्द्र १ ॥

–तारोऽत्युच्चै–

अत्युच्च शब्दका नाम१–तार १ ॥

–स्त्रयस्त्रिषु ॥ २ ॥

कल आदि तीन शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥ २ ॥

समन्वितलयस्त्वेकतालो–

वाद्यगानादिके एकसंग तालस्वरका नाम १–एकताल १ ॥

–वीणा तु वल्लकी । विपञ्ची–

वीणाके नाम ३–वीणा १ वल्लकी२ विपञ्ची ३ ॥

–सा तु तन्त्रीभिः सप्तभिः परिवादिनी ॥ ३ ॥

सात तारोंसे बोलनेवाली वीणाका नाम १–परिवादिनी १ ॥ ३ ॥

ततं वीणादिकं वाद्य–

वीणादिक बाजेका नाम१–तत १॥

मानद्धं मुरजादिकम् ।

मृदंगआदि बाजेका नाम १–आनद्ध१॥

वंशादिकं तु सुषिरं–

वंशी आदि बाजेका नाम१–सुषिर१।

–कांस्यतालादिकं घनम् ॥४॥

झांझ मंजीरा आदि बाजेका नाम १–घन १ ॥ ४ ॥

चतुर्विधमिदं वाद्यं वादित्रातोद्य- नामकम् ।

तत आदि चारों बाजोंका इकट्ठा नाम ३–वाद्य १ वादित्र २ आतोद्य३॥

मृदंगा मुरजा–

मृदङ्गके नाम २–मृदङ्ग १ मुरज २

–भेदास्त्वङ्क्यालिङ्ग्योर्ध्वका- स्त्रयः ॥ ५ ॥

मृदङ्गके भेद ३–अङ्क्य १ आलिङ्ग्य २ ऊर्ध्वक ३ ॥ ५ ॥

स्याद्यशःपटहो ढक्का–

नगाड़ेके नाम २–यशःपटह १ ढक्का २ ॥

भेर्यामानकदुन्दुभी ।

धौंसा नकीरी आदिके नाम ३—भेरी १ आनक २ दुन्दुभि ३ ॥

आनकः पटहोऽस्त्री स्यात्—

ढोलके नाम २--आनक१पटह २ ॥

—कोणो वीणादिवादनम् ॥ ६ ॥

जिससे वीणादि बजाते हैं उस नक्खी आदिका नाम १—कोण १ ॥ ६ ॥

वीणादण्डः प्रवालः स्या—

वीणाकी डंडीका नाम१—प्रवाल १।

—त्ककुभस्तु प्रसेवकः ।

वीणाके नीचे जो गोल गोल चर्मसे मढ़ा हुआ होता है उसके नाम २—ककुभ १ प्रसेवक २ ॥

कोलम्बकस्तु कायोऽस्या—

वीणाके सर्वांगका नाम१—कोलम्बक१

—उपनाहो निबन्धनम् ॥ ७ ॥

वीणामें जहां तार बांधे जाते हैं उसके नाम २--उपनाह १ निबन्धन२॥७॥

वाद्यप्रभेदा डमरुमड्डुडिण्डिम-झर्झराः । मर्दलः पणवोऽन्ये च-

डमरुका नाम १—डमरु १ ॥ बड़े डमरुका नाम १—मड्डु १ ॥ डिंडिमका नाम १—डिंडिम १ ॥ झांझका नाम १—झर्झर १ ॥ तथा मर्दल, पणव आदि और भी बाजे हैं ॥

—नर्तकीलासिके समे ॥ ८ ॥

नाचनेवालीके नाम २—नर्तकी १ लासिका २ ॥ ८ ॥

विलम्बितं द्रुतं मध्यं तत्त्वमोघो घनं क्रमात् ।

धीरे धीरे नाचका नाम १—तत्त्व १ ॥ शीघ्र नाचका नाम १—ओघ १ ॥ मध्यम नाचका नाम १—घन १ ॥

तालः कालक्रियामानं—

समय और क्रियाके प्रमाणका नाम १—ताल १ ॥

—लयः साम्य—

बाजा और नाचका एक संग ताल छूटनेका नाम १—लय १ ॥

—मथास्त्रियाम् ॥ ९ ॥

इसके आगे कहे ये शब्द स्त्रीलिङ्गवाची नहीं, अर्थात् पुँल्लिङ्ग-नपुंसकलिङ्गवाची होते हैं ॥ ९ ॥

ताण्डवं नटनं नाट्यं लास्यं नृत्यं च नर्तनम् ।

नाचके नाम ६—तांडव १ नटन २ नाट्य ३ लास्य४ नृत्य ५ नर्त्तन ६॥

तौर्यत्रिकं नृत्यगीतवाद्यं नाट्य-मिदं त्रयम् ॥ १० ॥

नाच गीत बाजा इन तीनके इकट्ठे नाम२–तौर्यत्रिक १ नाट्य २ ॥१०॥

भ्रकुंसश्च भ्रुकुंसश्च भ्रूकुंसश्चेति नर्तके । स्त्रीवेषधारी पुरुषो–

स्त्रीवेषधारी नाचनेवाले पुरुषके नाम ३–भ्रकुंस १ भ्रुकुंस २ भ्रूकुंस ३ ॥

–नाट्योक्तौ गणिकाज्जुका ११॥

केवल नाटकमें नाचने गानेवाली वेश्याका नाम १–अज्जुका १॥११॥

भगिनीपतिरावुत्तो–

बहनोईका नाम १–आवुत्त १ ॥

–भावो विद्वा–

विद्वान्का नाम १–भाव १ ॥

–नथावुकः । जनको–

पिताका नाम १–आवुक १ ॥

–युवराजस्तु कुमारो भर्तृदारकः ॥ १२ ॥

युवराजके नाम२–कुमार १ भर्तृदारक २ ॥ १२ ॥

राजा भट्टारको देव–

राजाके नाम २–भट्टारक १ देव २ ॥

–स्तत्सुता भर्तृदारिका ।

राजकन्याका नाम १–भर्तृदारिका १॥

देवी कृताभिषेकाया–

अभिषेक की हुई रानीका नाम १–देवी १ ॥

मितरासु तु भट्टिनी ॥ १३ ॥

अन्य राजस्त्रियोंका नाम १–भट्टिनी १ ॥ १३ ॥

अब्रह्मण्यमवध्योक्तौ–

अवध्य वचनका नाम १–अब्रह्मण्य १ ॥

–राजश्यालस्तु राष्ट्रियः ।

राजाके सालेका नाम–१राष्ट्रिय१॥

अम्बा माता–

माताके नाम२–अम्बा १ मातृ२॥

ऽथ बाला स्याद्वासू–

कुमारीके नाम२–बाला १वासू२॥

–रार्यस्तु मारिषः ॥ १४ ॥

श्रेष्ठके नाम२–आर्य१मारिष २ ॥१४॥

अत्तिका भगिनी ज्येष्ठा–

जेठी बहनका नाम १–अत्तिका १॥

निष्ठानिर्वहणे समे ।

नाटककी संधियोंके नाम२–निष्ठा १ निर्वहण २ ॥

हण्डे हञ्जे हलाह्वाने नीचां चेटीं सखीं प्रति ॥ १५ ॥

नीच स्त्रीके पुकारनेमें–हण्डे १ ॥ चेटीके पुकारनेमें–हंजे १ ॥ सखीके पुकारनेमें–हला १ ॥ १५ ॥

अंगहारोऽङ्गविक्षेपो–

लचकनेके नाम २–अंगहार १ अंगविक्षेप २ ॥

-व्यञ्जकाभिनयौ समौ ।

भाव बतानेके नाम २-व्यञ्जक १ अभिनय २ ॥

निर्वृत्ते त्वंगसत्त्वाभ्यां द्वे त्रिष्वाङ्गिकसात्त्विके ॥ १६ ॥

भौंह मटकानेका नाम १-आंगिक १ । अंतःकरणके भावका नाम १-सात्त्विक १ ॥ १६ ॥

शृङ्गारवीरकरुणाद्भुतहास्यभयानकाः । बीभत्सरौद्रौ च रसाः-

साहित्यिक रसोंके नाम १०-शृङ्गार १ वीर २ करुण ३ अद्भुत ४ हास्य ५ भयानक ६ बीभत्स ७ रौद्र ८ शांति ९ (वात्सल्य १०) ।

शृंगारः शुचिरुज्ज्वलः ॥१७॥

शृङ्गारके नाम ३-शृङ्गार १ शुचि २ उज्ज्वल ३ ॥ १७ ॥

उत्साहवर्धनो वीरः-

वीररसके नाम२- उत्साहवर्धन १ वीर २ ॥

-कारुण्यं करुणा घृणा । कृपा-दयानुकम्पा स्यादनुक्रोशो-

करुणा रसके नाम ७-कारुण्य १ करुणा २ घृणा ३ कृपा ४ दया ५ अनुकंम्पा ६ अनुक्रोश ७ ॥

-ऽप्यथो हसः ॥ १८ ॥ हासो हास्यं च-

हास्यरसके नाम३-हस १ ॥१८॥ हास २ हास्य ३ ॥

-बीभत्सं विकृतं त्रिष्विदं द्वयम् ।

बीभत्सरसके नाम २-बीभत्स १ विकृत २ ॥

विस्मयोऽद्भुतमाश्चर्यं चित्र-

अद्भुतरसके नाम ४-अद्भुत १ आश्चर्य २ विस्मय ३ चित्र ४ ॥

मप्यथ भैरवम् ॥ १९ ॥ दारुणं भीषणं भीष्मं घोरं भीमं भयानकम् । भयंकरं प्रतिभयं-

भयानक रसके नाम ९-भैरव १ ॥१९॥ दारुण २ भीषण ३ भीष्म ४ घोर ५ भीम ६ भयानक ७ भयंकर ८ प्रतिभय ९ ॥

-रौद्रं तूग्र-

रौद्ररसके नाम २-रौद्र १उग्र ३॥

-ममी त्रिषु ॥ २० ॥ चतुर्दश-

अद्भुतादि चौदह शब्द द्रव्यवाचक हों तो विशेष्यनिघ्नलिंग जानना॥२०॥

-दरस्त्रासो भीतिर्भीः साध्वसं भयम् ।

भयके नाम ६—दर १ त्रास २ भीति ३ भी ४ साध्वस ५ भय ६ ॥

विकारो मानसो भावो—

मनके विकारका नाम १—भाव १ ॥

—ऽनुभावो भावबोधकः ॥ २१॥

भावप्रकाशकका नाम १—अनुभाव १ ॥ २१ ॥

गर्वोऽभिमानोऽहंकारो -

अहंकारके नाम ३—गर्व १ अभिमान २ अहंकार ३ ॥

—मानश्चित्तसमुन्नतिः ।

बड़प्पनका नाम १—मान १ ॥

अनादरः परिभवः परीभाव-स्तिरस्क्रिया॥ २२ ॥ रीढावमानना-वज्ञावहेलनमसूर्क्षणम् ।

निरादरके नाम ९—अनादर १ परिभव २ परीभाव ३ तिरस्क्रिया ४ ॥ ॥ २२ ॥ रीढा ५ अवमानना ६ अवज्ञा ७ अवहेलन ८ असूर्क्षण ९ ॥

मन्दाक्षं ह्रीस्त्रपा व्रीडा लज्जा—

लज्जाके नाम ५—मन्दाक्ष १ ह्री २ त्रपा ३ व्रीडा ४ लज्जा ५ ॥

—सापत्रपान्यतः ॥ २३ ॥

दूसरेसे लजानेका नाम १—अपत्रपा १ ॥ २३ ॥

क्षान्तिस्तितिक्षा—

क्षमाके नाम २—क्षान्ति १ तितिक्षा २ ॥

—ऽभिध्या तु परस्य विषये स्पृहा ।

परधन लेनेकी इच्छाका नाम १—अभिध्या १ ॥

अक्षान्तिरीर्ष्या—

ईर्ष्याके नाम २—अक्षान्ति १ ईर्ष्या २॥

—ऽसूया तु दोषारोपो गुणेष्वपि ॥ २४ ॥

पराये गुणोंमें दोष प्रसिद्ध करनेका नाम १—असूया १ ॥ २४ ॥

वैरं विरोधो विद्वेषो—

वैरके नाम ३—वैर १ विरोध २ विद्वेष ३ ॥

—मन्युशोकौ तु शुक् स्त्रियाम् ।

शोकके नाम ३—मन्यु १ शोक २ शुच् ३ ॥

पश्चात्तापोऽनुतापश्च विप्रतीसार इत्यपि ॥ २५ ॥

पछतानेके नाम ३—पश्चात्ताप १ अनुताप २ विप्रतीसार ३ ॥ २५ ॥

कोपक्रोधामर्षरोषप्रतिघा रुट्क्रुधौ स्त्रियौ ।

क्रोधके नाम ७—कोप १ क्रोध २ अमर्ष ३ रोष ४ प्रतिघा ५ रुष् ६ क्रुध् ७

शुचौ तु चरिते शील—

शुद्ध आचरणका नाम १—शील १॥

—मुन्मादश्चित्तविभ्रमः ॥ २६ ॥

सिड़ीपनके नाम २—उन्माद १ चित्तविभ्रम २ ॥ २६ ॥

प्रेमा ना प्रियता हार्दं प्रेम स्नेहो—

प्रेमके नाम ५—प्रेमन् १ प्रियता २ हार्द ३ प्रेमन् ४ स्नेह ५ ॥

—ऽथ दोहदम् । इच्छा कांक्षा स्पृहेहा तृड्वाञ्छा लिप्सा मनोरथः॥२७ कामोऽभिलाषस्तर्षश्च—

इच्छाके नाम १२—दोहद १ इच्छा २ कांक्षा ३ स्पृहा ४ ईहा ५ तृष् ६ वाञ्छा ७ लिप्सा ८ मनोरथ ९ ॥२७॥ काम १० अभिलाष ११ तर्ष १२ ॥

—सोऽत्यर्थं लालसा द्वयोः ।

बड़ी इच्छाका नाम १—लालसा १।

उपाधिर्ना धर्मचिन्ता—

धर्मचिन्ताके नाम २—उपाधि १ धर्मचिन्ता २ ।

—पुंस्याधिर्मानसी व्यथा॥ २८॥

मनकी पीडाके नाम २—आधि १ मानसी व्यथा २ ॥ २८ ॥

स्याच्चिन्तास्मृतिराध्यान—

स्मरणके नाम ३—चिंता १ स्मृति २ आध्यान ३ ॥

—मुत्कण्ठोत्कलिके समे ।

कामादिसे उत्पन्न स्मृतिके नाम २—उत्कण्ठा १ उत्कलिका २ ॥

उत्साहोऽध्यवसायः स्यात्—

उत्साहके नाम २—उत्साह १ अध्यवसाय २ ॥

—स वीर्यमतिशक्तिभाक् ॥ २९॥

असाध्य साधनमें उत्साहका नाम—१ वीर्य १ ॥ २९ ॥

कपटोऽस्त्री व्याजदंभोपधयश्छद्मकैतवे । कुसृतिर्निकृतिः शाठ्यं—

कपटके नाम ९—कपट १ व्याज २ दम्भ ३ उपधि ४ छद्मन् ५ कैतव ६ कुसृति ७ निकृति ८ शाठ्य ९ ॥२९॥

—प्रमादोऽनवधानता ॥ ३० ॥

असावधानताके नाम २—प्रमाद १ अनवधानता २ ॥ ३० ॥

कौतूहलं कौतुकं च कुतुकं च कुतूहलम् ।

तमासेके नाम ४—कौतूहल १ कौतुक २ कुतुक ३ कुतूहल ४ ॥

स्त्रीणां विलासविव्वोकविभ्रमा ललितं तथा ॥ ३१ ॥ हेलालीलेत्यमी हावाः क्रियाः शृंगारभावजाः ।

शृङ्गार और भावसे उत्पन्न होनेवाले स्त्रियोंके विलासके नाम ६—विलास १ विव्वोक २ विभ्रम ३ ललित ४ ॥ ३१ ॥ हेला ५ लीला ६ ॥

द्रवकेलिपरीहासाः क्रीडा खेला च नर्म च ॥ ३२ ॥

हँसी करनेके नाम ६—द्रव १ केलि २ परीहास ३ क्रीडा ४ खेला ५ नर्मन् ६ ॥ ३२ ॥

व्याजोऽपदेशो लक्ष्यं च—

बहाना करनेके नाम ३—व्याज १ अपदेश २ लक्ष्य ३ ॥

—क्रीडा खेला च कूर्दनम् ।

बालकोंके खेलके नाम ३—क्रीडा १ खेला २ कूर्दन ३ ॥

घर्मो निदाघः स्वेदः स्यात्—

गर्मीके नाम ३—घर्म १ निदाघ २ स्वेद ३ ॥

—प्रलयो नष्टचेष्टता ॥ ३३ ॥

बेहोशीके नाम २—प्रलय १ नष्टचेष्टता ॥ २ ॥ ३३ ॥

अवहित्थाऽऽकारगुप्तिः—

शोकमें सूरत छिपानेके नाम २—अवहित्था १ आकारगुप्ति २ ॥

—समौ संवेगसंभ्रमौ ।

हर्ष आदिके कारण शीघ्र कार्य करनेके नाम २—संवेग १ संभ्रम २ ॥

स्यादाच्छुरितकं हासः सोत्प्रासः—

किसीको खिजानेके लिये हँसी करनेका नाम १—आच्छुरितक १ ॥

—स मनाक् स्मितम् ॥ ३४ ॥

मुस्कुरानेका नाम १—स्मित १॥३४॥

मध्यमः स्याद्विहसितं—

मध्यम हास्यका नाम—१ विहसित १।

—रोमाञ्चो रोमहर्षणम् ।

रोमोंके खड़े होनेके नाम २—रोमाञ्च १ रोमहर्षण २ ॥

क्रन्दितं रुदितं क्रुष्टं—

रोनेके नाम ३—क्रंदित १ रुदित २ क्रुष्ट ३ ॥

—जृम्भस्तु त्रिषु जृम्भणम्॥३५॥

जम्भाई लेनेके नाम २—जृम्भ १ जृम्भण २ ॥ ३५ ॥

विप्रलम्भो विसंवादो—

स्वीकार करके कार्यको न करनेके नाम २—विप्रलम्भ १ विसंवाद २ ॥

—रिङ्गणं स्खलनं समे ।

धर्मसे चलायमान होनेके अथवा बालकोंके घुटुओंसे चलनेके नाम २—रिङ्गण १ स्खलन २ ॥

स्यान्निद्रा शयनं स्वापः स्वप्नः संवेश इत्यपि ॥ ३६ ॥

शयन करनेके नाम ५—निद्रा १ शयन २स्वाप३स्वप्न४संवेश ५ ॥३६॥

तन्द्री प्रमीला—

ओंघनेके नाम२—तन्द्री १ प्रमीला२

—भ्रकुटिर्भ्रुकुटिर्भ्रूकुटिः स्त्रियाम्।

क्रोधसहित भौंह चढ़ानेके नाम ३—भ्रकुटि १ भ्रुकुटि २ भ्रूकुटि ३ ॥

अदृष्टिः स्यादसौम्येऽक्षिण—

क्रूरदृष्टिका नाम १—अदृष्टि १ ॥

—संसिद्धिप्रकृती त्विमे ॥ ३७ ॥ स्वरूपं च स्वभावश्च निसर्गश्चा—

स्वभावके नाम ५—संसिद्धि १प्रकृति २ ॥३७॥ स्वरूप ३ स्वभाव ४ निसर्ग५

—ऽथ वेपथुः । कम्पो—

कांपनेके नाम २—वेपथु १ कम्प२॥

—ऽथ क्षण उद्धर्षो मह उद्धव उत्सवः ॥ ३८ ॥

उत्सवके नाम ५—क्षण१उद्धर्ष२मह ३ उद्धव ४ उत्सव ५ ॥ ३८ ॥

इति नाट्यवर्गः ॥ ७ ॥

अथ पातालभोगिवर्गः ८.

अधोभुवनपातालं बलिसद्म रसातलम् । नागलोको—

पातालके नाम५—अधोभुवन१पाताल २बलिसद्मन्३रसातल ४ नागलोक ५ ॥

—ऽथ कुहरं सुषिरं विवरं बिलम् ॥ १ ॥ छिद्रं निर्व्यथनं रोकं रन्ध्रं श्वभ्रं वपा शुषिः ।

छेदके नाम ११—कुहर १ सुषिर २ विवर ३ बिल ४ ॥ १ ॥ छिद्र५ निर्व्यथन ६ रोक ७ रन्ध्र ८ श्वभ्र ९ वपा १० शुषि ११ ।

गर्तावटौ भुवि श्वभ्रे—

पृथ्वीके गड़हेके नाम २—गर्त १ अवट २ ॥

—सरन्ध्रे सुषिरं त्रिषु ॥ २ ॥

छेदयुक्त वस्तुका नाम १—सुषिर १ ॥ २ ॥

अन्धकारोऽस्त्रियां ध्वान्तं तमिस्रं तिमिरं तमः ।

अन्धकारके नाम ५—अन्धकार १ ध्वान्त २ तमिस्र ३ तिमिर ४ तमस् ५॥

ध्वान्ते गाढेऽन्धतमसं—

अत्यन्त अंधकारका नाम १—अन्धतमस १ ॥

—क्षीणेऽवतमसं—

थोड़ी अँधियारीका नाम १-अवतमस १ ॥

—तमः ॥३॥ विष्वक्संतमसं—

सब ओर फैले हुए अन्धकारका नाम १—सन्तमस १ ॥ ३ ॥

—नागाः काद्रवेया—

फन और पूंछवाले मनुष्याकार सर्पोंके नाम २—नाग १ काद्रवेय २ ॥

—स्तदीश्वरः । शेषोऽनन्तो—

शेषनागके नाम २—शेष १ अनन्त २ ॥

—वासुकिस्तु सर्पराजो—

सर्पराजके नाम २—वासुकि १ सर्पराज २ ॥

—ऽथ गोनसे॥४॥तिलित्सः स्या-

गोके समान नासिकावाले सर्पके नाम—२ गोनस १ ॥ ४ ॥ तिलित्स २ ॥

—दजगरे शयुर्वाहस इत्युभौ ।

अजगरके नाम ३—अजगर १ शयु २ वाहस ३ ॥

अलगर्दो जलव्यालः—

पानीके सर्पके नाम २—अलगर्द १ जलव्याल २ ॥

—समौ राजिलडुण्डुभौ ॥ ५ ॥

द्विमुहा सर्पके नाम २—राजिल १ ॥ डुण्डुभ २ ॥ ५ ॥

मालुधानो मातुलाहि—

चीते सर्पके नाम २—मालुधान १ मातुलाहि २ ॥

—र्निर्मुक्तो मुक्तकंचुकः ।

कचुली छोड़े हुए सब सर्पोंके नाम २—निर्मुक्त १ मुक्तकंचुक २ ॥

सर्पः पृदाकुर्भुजगो भुजङ्गोऽहि-र्भुजंगमः ॥ ६ ॥ आशीविषो विष-धरश्चक्री व्यालः सरीसृपः । कुण्डली गूढपाच्चक्षुःश्रवाः काको-दरः फणी ॥ ७ ॥ दर्वीकरो दीर्घपृष्ठो दन्दशूको बिलेशयः॥ उरगः पन्नगो भोगी जिह्मगः पवनाशनः ॥ ८ ॥

सर्पके नाम २५—सर्प १ पृदाकु २ भुजग ३ भुजंग ४ अहि ५ भुजंगम ६ ॥६॥ आशीविष ७ विषधर ८ चक्रिन् ९ व्याल १० सरीसृप ११ कुण्डलिन् १२ गूढपाद १३ चक्षुःश्रवस् १४ काकोदर १५ फणिन् १६ ॥७॥ दर्वीकर १७ दीर्घपृष्ठ १८ दन्दशूक १९ बिलेशय २० उरग २१ पन्नग २२ भोगिन् २३ जिह्मग २४ पवनाशन २५ ॥८॥

त्रिष्वाहेयं विषास्थ्यादि–

सर्पके विष और हड्डी आदिका नाम १–आहेय १ ॥

–स्फटायां तु फणा द्वयोः।

सर्पके फनके नाम २–स्फटा १ फणा २ ॥

समौ कंचुकनिर्मोकौ–

कचुलीके नाम २–कंचुक १ निर्मोक २ ॥

–क्ष्वेडस्तु गरलं विषम् ॥ ९ ॥

विषके नाम ३–क्ष्वेड १ गरल २ विष ३ ॥ ९ ॥

पुंसि क्लीबे च काकोलकालकूटहलाहलाः।सौराष्ट्रिकः शौक्लिकेयो ब्रह्मपुत्रः प्रदीपनः ॥ १० ॥ दारदो वत्सनाभश्च विषभेदा अमी नव।

विषके भेद ९–काकोल १ कालकूट २ हलाहल ३ सौराष्ट्रिक ४ शौक्लिकेय ५ ब्रह्मपुत्र ६ प्रदीपन ७ ॥१०॥ दारद ८ वत्सनाभ ९ ॥

विषवैद्यो जाङ्गुलिको–

सर्पके विषको दूर करनेकी विद्या जाननेवालेके नाम २–विषवैद्य १ जांगुलिक २ ॥

व्यालग्राह्यहितुण्डिकः ॥ ११ ॥

सर्प पकड़नेवालेके नाम २–व्यालग्राहिन् १ अहितुण्डिक २ ॥ ११ ॥

इति पातालभोगिवर्गः ॥ ८ ॥

अथ नरकवर्गः ९.

स्यान्नारकस्तु नरको निरयो दुर्गतिः स्त्रियाम्।

नरकके नाम ४–नारक १ नरक २ निरय ३ दुर्गति ४ ॥

तद्भेदास्तपनावीचिमहारौरवरौरवाः ॥ १ ॥ संहारः कालसूत्रं चेत्याद्याः–

नरकोंकी जातिके भेद–तपन १ अवीचि २ महारौरव ३ रौरव ४ ॥१॥संहार ५ कालसूत्र ६ आदि ॥

–सत्त्वास्तु नारकाः। प्रेता–

नरकवासियोंके नाम २–नारक १ प्रेत २ ॥

–वैतरणी सिंधुः–

प्रेतोंकी नदीका नाम १–वैतरणी १ ॥

–स्यादलक्ष्मीस्तु निर्ऋतिः॥२॥

नरककी अशोभाके नाम २–अलक्ष्मी १ निर्ऋति २ ॥ २ ॥

विष्टिराजूः–

नरकमें जबरदस्ती ढकेलनेके नाम २–विष्टि १ आजू २ ॥

–कारणा तु यातना तीव्रवेदना।

नरककी पीडाके नाम ३–कारणा १ यातना २ तीव्रवेदना ३ ॥

पीडा बाधा व्यथा दुःखमामनस्यं प्रसूतिजम् ॥ ३ ॥ स्यात्कष्टं कृच्छ्रमाभीलं–

पीडाके नाम ९–पीडा १ बाधा २ व्यथा ३ दुःख ४ आमनस्य ५ प्रसूतिज ६ ॥ ३ ॥ कष्ट ७ कृच्छ्र ८ आभील ९ ॥

–त्रिष्वेषां भेद्यगामि यत् ॥ ४ ॥

इन शब्दोंमें जो द्रव्यवाचक हों वे तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥ ४ ॥

इति नरकवर्गः ॥ ९ ॥

अथ वारिवर्गः १०.

समुद्रोऽब्धिरकूपारः पारावारः सरित्पतिः । उदन्वानुदधिः सिन्धुः सरस्वान्सागरोऽर्णवः ॥ १ ॥ रत्नाकरो जलनिधिर्यादःपतिरपांपतिः ।

समुद्रके नाम १५–समुद्र १ अब्धि २ अकूपार ३ पारावर ४ सरित्पति ५ उदन्वत् ६ उदधि ७ सिन्धु ८ सरस्वत् ९ सागर १० अर्णव ११ ॥ १ ॥ रत्नाकर १२ जलनिधि १३ यादःपति १४ अपाम्पति १५ ॥

तस्य प्रभेदाः क्षीरोदो लवणोदस्तथापरे ॥ २ ॥

समुद्रके भेद ७–क्षीरोद १ लवणोद २ (इक्षुरसोद ३ सुरोद ४ दधिमण्डोद ५ स्वादूद ६ घृतोद ७) ॥२॥

आपः स्त्री भूम्नि वार्वारि सलिलं कमलं जलम् । पयः कीलालममृतं जीवनं भुवनं वनम् ॥ ३ ॥ कबंधमुदकं पाथः पुष्करं सर्वतोमुखम् । अम्भोऽर्णस्तोयपानीयनीरक्षीराम्बुशम्बरम् ॥ ४ ॥ मेघपुष्पं घनरस–

जलके नाम २७–अप् १ वार् २ वारि ३ सलिल ४ कमल ५ जल ६ पयस् ७ कीलाल ८ अमृत ९ जीवन १० भुवन ११ वन १२ ॥ ३ ॥ कबन्ध १३ उदक १४ पाथस् १५ पुष्कर १६ सर्वतोमुख १७ अम्भस् १८ अर्णस् १९ तोय २० पानीय २१ नीर २२ क्षीर २३ अम्बु २४ शम्बर २५ ॥ ४ ॥ मेघपुष्प २६ घनरस २७ ॥

–स्त्रिषु द्वे आप्यमम्मयम् ।

जलविकारके नाम २–आप्य १ अम्मय २ ॥

भंगस्तरंग ऊर्मिर्वा स्त्रियां वीचि-

जलकी तरंगका नाम ४-भंग १ तरंग २ ऊर्मि ३ वीचि ४ ॥

-रथोर्मिषु ॥ ५ ॥ महत्सूल्लोलकल्लोलौ-

बड़ी तरङ्गके नाम २-॥ ५ ॥ उल्लोल १ कल्लोल २ ॥

स्यादावर्त्तोऽम्भसां भ्रमः ।

जलमें भँवर पड़नेका नाम १-आवर्त्त १ ॥

पृषन्ति बिन्दुपृषताः पुमांसो विप्रुषः स्त्रियाम् ॥ ६ ॥

बिन्दुओंके नाम ४-पृषत् १ बिन्दु २ पृषत ३ विप्रुष् ४ ॥ ६ ॥

चक्राणि पुटभेदाः स्यु-

भवँर पड़कर जलके नीचेको जानेके नाम २--चक्र १ पुटभेद २ ॥

-र्भ्रमाश्च जलनिर्गमाः ॥

जलके निकलनेके जालके नाम २-भ्रम १ जलनिर्गम २ ॥

कूलं रोधश्च तीरं च प्रतीरं च तटं त्रिषु ॥ ७ ॥

नदीके किनारेके नाम ५-कूल १ रोधस् २ तीर ३ प्रतीर ४ तट५॥७॥

पारावारे परार्वाची तीरे-

उस पारका नाम १-पार १ ॥ इस पारका नाम १-अवार १ ॥

-पात्रं तदन्तरम् ।

नदीके पाटका नाम १-पात्र १ ॥

द्वीपोऽस्त्रियामन्तरीपं यदंतर्वारिणस्तटम् ॥ ८ ॥

बेटके नाम २-द्वीप १ अन्तरीप २ ॥ ८ ॥

-तोयोत्थितं तत्पुलिनं-

छड़ावेका नाम १-पुलिन १ ॥

-सैकतं सिकतामयम् ।

वालुकाधिकस्थानके नाम २- सैकत १ सिकतामय २॥

निषद्वरस्तु जम्बालः पंकोऽस्त्री शादकर्दमौ ॥ ९ ॥

बोदा (कीच) के नाम ५-निषद्वर १ जम्बाल २ पंक ३ शाद ४ कर्दम ५ ॥ ९ ॥

जलोच्छ्वासाः परीवाहाः-

उफलानेके नाम २-जलोच्छ्वास १ परीवाह २ ॥

-कूपकास्तु विदारकाः ।

चूहा (सूखी नदीके गड़हे) के नाम २-कूपक १ विदारक २ ॥

नाव्यं त्रिलिंगं नौतार्ये-

नौकामें उतरनेके योग्य जलका नाम १-नाव्य १ ॥

स्त्रियां नौस्तरणिस्तरिः ॥ १० ॥

नौकाके नाम ३—नौ १ तरणि २ तरि ३ ॥ १० ॥

उडुपं तु प्लवः कोलः-

घन्नईके नाम ३--उडुप १ प्लव २ कोल ३ ॥

--स्रोतोऽम्बुसरणं स्वतः ।

सोतका नाम १--स्रोतस् १ ॥

आतरस्तरपण्यं स्याद्--

उतराईके नाम २-- आतर १ तरपण्य २ ॥

--द्रोणीकाष्ठाम्बुवाहिनी ॥११॥

पत्थर वा काष्ठनिर्मित नौकाके खड़ीके नाम २--द्रोणी १ काष्ठाम्बु-वाहिनी २ ॥ ११ ॥

सांयात्रिकः पोतवणिक्--

नौका लादनेवाले उद्यमीके नाम २—सांयात्रिक १ पोतवणिज् २ ॥

--कर्णधारस्तु नाविकः ।

खेवा लगानेवालेके नाम २--कर्ण-धार १ नाविक २ ॥

नियामकाः पोतवाहाः-

जो नौकाके पीछे खड़ा हुआ लकड़ी घुमाया करता है उसके नाम २--निया-मक १ पोतवाह २ ॥

कूपको गुणवृक्षकः ॥ १२ ॥

जिस खूँटेमें नौका बांधी जाती है उसके नाम २--कूपक १ गुणवृ-क्षक २ ॥ १२ ॥

नौकादण्डः क्षेपणी स्या--

पाता (नौकाके दोनों पसवाड़ोंमें बँधे हुए चलानेके काष्ठ) के नाम २--नौकादण्ड १ क्षेपणी २ ॥

--दरित्रं केनिपातकः ।

करिया (नौकाकी पीठमें लगे हुए चलानेके काठ) के नाम २--अरित्र १ केनिपातक २ ॥

अभ्रिः स्त्री काष्ठकुद्दालः--

नौका साफ करनेके कुदालके नाम २—अभ्रि १ काष्ठकुद्दाल २ ॥

--सेकपात्रं तु सेचनम् ॥ १३ ॥

जिससे नौकाका जल उलीचा जाता है उसके नाम २—सेकपात्र १ सेचन २ ॥ १३ ॥

क्लीबेऽर्धनावं नावोऽर्धे--

आधी नावका नाम १—अर्द्धनाव १॥

--ऽतीतनौकेऽतिनु त्रिषु ।

जो नौकालायक जल न हो उसका नाम १--अतिनु १ ॥

त्रिष्वागाधात्--

अगाध शब्दपर्यंत जितने शब्द हैं तीनों लिंगोंमें चलते हैं ॥

-प्रसन्नोऽच्छः-

निर्मल जलके नाम २-प्रसन्न १ अच्छ २ ॥

-कलुषोऽनच्छ आविलः ॥१४॥

मैले जलके नाम ३-कलुष १ अनच्छ २ आविल ३ ॥ १४ ॥

निम्नं गभीरं गम्भीर-

गहरे जलके नाम ३-निम्न १ गभीर २ गंभीर ३ ॥

-मुत्तानं तद्विपर्यये ।

थाह जलका नाम १-उत्तान १॥

अगाधमतलस्पर्शे-

अथाह जलके नाम २-अगाध १ अतलस्पर्श २ ॥

-कैवर्ते दाशधीवरौ ॥ १५ ॥

मल्लाहके नाम ३-कैवर्त १ दाश २ धीवर ३ ॥ १५ ॥

आनायः पुंसि जालं स्या-

जालके नाम २-आनाय १ जाल२॥

च्छणसूत्रं पवित्रकम् ।

शणसूत्र जालके नाम २-शणसूत्र१ पवित्रक २ ॥

मत्स्याधानी कुवेणी स्या-

जिसमें मछली धरी जायँ उसके नाम २-मत्स्याधानी १ कुवेणी २ ॥

-द्बडिशं मत्स्यवेधनम् ॥ १६॥

मछली पकड़नेके कांटेके नाम २-बडिश १ मत्स्यवेधन २ ॥ १६ ॥

पृथुरोमा झषो मत्स्यो मीनो वैसारिणोऽण्डजः । विसारः शकुली चा-

मछलीके नाम ८-पृथुरोमन् १ झष २ मत्स्य ३ मीन ४ वैसारिण ५ अण्डज ६ विसार ७ शकुलिन् ८॥

-थ गडकः शकुलार्भकः ॥१७॥

मछलीके बच्चोंके नाम २-गडक २ शकुलार्भक २ ॥ १७ ॥

सहस्रदंष्ट्रः पाठीनः-

पहा मछलीके नाम २-सहस्रदंष्ट्र १ पाठीन २ ॥

-उलुपी शिशुकः समौ ।

सूस मछलीके नाम २-उलुपिन् १ शिशुक २ ॥

नलमीनश्चिलिचिमः-

चेल्हवा मछलीके नाम २-नलमीन १ चिलिचिम २ ॥

--प्रोष्ठी तु शफरी द्वयोः ॥१८॥

सहरी मछलीके नाम २-प्रोष्ठी १ शफरी २ ॥ १८ ॥

क्षुद्राण्डमत्स्यसंघातः पोताधान--

अंडोंसे निकली हुई छोटी मछली-समूहका नाम १-पोताधान १ ॥

-मथो झषाः । रोहितो मद्गुरः शालो राजीवः शकुलस्तिमिः ॥ १९ ॥ तिमिंगिलादयश्चा-

रोहू मछलीका नाम १-रोहित- मगरी मछलीका नाम १-मद्गुर १ । सौरी मछलीका नाम १-शाल १ । राया मछलीका नाम १-राजीव १ । सौरा मछलीका नाम १-शकुल १ । बड़ी भारी मछलीका नाम १-तिमि १ ॥१९॥ तिमिके निगलनेवाली मछलीका नाम १-तिमिंगिल १ आदि ॥

-ऽथ यादांसि जलजन्तवः ।

सर्व जलजन्तुओंके नाम २-यादस् १ जलजन्तु २ ॥

तद्भेदाः शिशुमारोद्रशंकवो मकरादयः ॥ २० ॥

शिरसका नाम १-शिशुमार १ । ओदका नाम १-उद्र १ । शकूका नाम १-शंकु १ । मकरका नाम १-मकर १ आदि ॥ २० ॥

स्यात्कुलीरः कर्कटकः-

केकड़ाके नाम २-कुलीर १ कर्कटक २ ॥

-कूर्मे कमठकच्छपौ ।

कछुहेके नाम ३-कूर्म १ कमठ २ कच्छप ३ ॥

ग्राहोऽवहारो-

घड़ियालके नाम २-ग्राह १ अवहार २ ॥

-नक्रस्तु कुम्भीरो-

नाकेके नाम २-नक्र१कुम्भीर २॥

-ऽथ महीलता ॥ २१ ॥ गण्डूपदः किंचुलको-

केंचुवाके नाम ३-महीलता १ ॥२१॥ गण्डूपद २ किंचुलक ३ ॥

निहाका गोधिका समे ।

गोहके नाम २-निहाका १ गोधिका २ ॥

रक्तपा तु जलौकायां स्त्रियां भूम्नि जलौकसः ॥ २२ ॥

जोंकके नाम ३-रक्तपा १ जलौका २ जलौकस् ३ ॥ २२ ॥

मुक्तास्फोटः स्त्रियां शुक्तिः-

समुद्रकी सीपीके नाम २-मुक्तास्फोट १ शुक्ति २ ॥

शंखः स्यात्कम्बुरस्त्रियौ ।

शंखके नाम २-शंख १ कम्बु २॥

क्षुद्रशंखाः शंखनखाः-

छोटे शंखके नाम २-क्षुद्रशंख १ शंखनख २ ॥

-शम्बूका जलशुक्तयः ॥२३॥

सब सीपीके नाम २—शम्बूक १ जलशुक्ति २ ॥ २३ ॥

भेके मण्डूकवर्षाभूशालूरप्लवदर्दुराः ।

मेढकके नाम ६—भेक १ मण्डूक २ वर्षाभू ३ शालूर ४ प्लव ५ दर्दुर ६ ॥

शिली गण्डूपदी—

कछुईके नाम २—शिली १ गण्डूपदी २ ॥

—भेकी वर्षाभ्वी—

मेढकीके नाम२—भेकी १ वर्षाभ्वी २ ।

—कमठी डुलिः ॥ २४ ॥

कछुईके नाम २—कमठी १ डुलि २ ॥ २४ ॥

मद्गुरस्य प्रिया शृङ्गी—

शींगीका नाम १—शृङ्गी १ ॥

—दुर्नामा दीर्घकोशिका ।

झिकवाके नाम२—दुर्नामा १ दीर्घकोशिका २ ॥

जलाशयो जलाधार—

तडाग झीलादि सब जलाशयोंके नाम २—जलाशय १ जलाधार २ ॥

—स्तत्रागाधजलो ह्रदः ॥२५॥

कुण्डका नाम १—ह्रद १ ॥२५॥

आहावस्तु निपानं स्यादुपकूपजलाशये ।

कूपके निकटकी चरही (जलके लिये बनायी हुई)के नाम २—आहाव १ निपान २ ॥

पुंस्येवान्धुः प्रहिः कूप उदपानं तु पुंसि वा ॥ २६ ॥

कुएंके नाम ४—अन्धु १ प्रहि २ कूप ३ उदपान ४ ॥ २६ ॥

नेमिस्त्रिकाऽस्य—

कुएंकी पाठिकाका नाम १—त्रिका १॥

—वीनाहो मुखबन्धनमस्य यत् ।

पक्की जगतका नाम १—वीनाह १॥

पुष्करिण्यां तु खातं स्या—

चौकोने तालाबके नाम २—पुष्करिणी १ खात २ ॥

—दखातं देवखातकम् ॥ २७ ॥

नहीं खोदे हुए तालाबके नाम २—अखात १ देवखातक २ ॥ २७ ॥

पद्माकरस्तडागोऽस्त्री—

जिस तालाबमें कमल हों उसके नाम २—पद्माकर १ तडाग २ ॥

—कासारः सरसी सरः ।

सामान्य तालाबके नाम ३—कासार १ सरसी २ सरस् ३ ॥

वेशन्तः पल्वलं चाल्पसरो·

छोटी तलैयाके नाम ३—वेशन्त १ पल्वल २ अल्पसरस् ३ ॥

—वापी तु दीर्घिका ॥ २८ ॥

बावडीके नाम २—वापी १ दीर्घिका ॥ २ ॥ २८ ॥

खेयं तु परिखा—

खाँचा (खाई) के नाम २—खेय १ परिखा २ ॥

—धारस्त्वम्भसां यत्र धारणम् ।

बांधका नाम १—आधार १ ॥

स्यादालवालमावालमावापो—

थाल्हाके नाम ३—आलवाल १ आवाल २ आवाप ३ ॥

—ऽथ नदी सरित् ॥ २९ ॥ तरंगिणी शैवलिनी तटिनी ह्रादिनी धुनी । स्रोतस्वती द्वीपवती स्रवन्ती निम्नगापगा ॥ ३० ॥

नदीके नाम १२—नदी १ सरित् २ ॥ २९ ॥ तरंगिणी ३ शैवलिनी ४ तटिनी ५ ह्रादिनी ६ धुनी ७ स्रोतस्वती ८ द्वीपवती ९ स्रवन्ती १० निम्नगा ११ आपगा १२ ॥ ३० ॥

गंगा विष्णुपदी जह्नुतनया सुरनिम्नगा । भागीरथी त्रिपथगा त्रिस्रोता भीष्मसूरपि ॥ ३१ ॥

गंगाजीके नाम ८—गंगा १ विष्णुपदा २ जह्नुतनया ३ सुरनिम्नगा ४ भागीरथी ५ त्रिपथगा ६ त्रिस्रोतस् ७ भीष्मसू ८ ॥ ३१ ॥

कालिन्दी सूर्यतनया यमुना शमनस्वसा ।

यमुनाके नाम ४—कालिन्दी १ सूर्यतनया २ यमुना ३ शमनस्वसृ ४ ॥

रेवा तु नर्मदा सोमोद्भवा मेकलकन्यका ॥ ३२ ॥

नर्मदाके नाम ४—रेवा १ नर्मदा २ सोमोद्भवा ३ मेकलकन्यका ४ ॥ ३२ ॥

करतोया सदानीरा—

गौरीविवाहमें जो कन्यादानजलसे उत्पन्न हुई उस नदीके नाम २—करतोया १ सदानीरा २ ॥

—बाहुदा सैतवाहिनी ।

सहस्रबाहुकी नदीके नाम २—बाहुदा १ सैतवाहिनी ॥ २ ॥

शतद्रुस्तु शुतुद्रिः स्या—

शतलजके नाम २—शतद्रु १ शुतुद्रि २ ॥

—द्विपाशा तु विपाट् स्त्रियाम् ३३

व्यासनदीके नाम २ —विपाशा १ विपाश् २ ॥ ३३ ॥

शोणो हिरण्यवाहः स्या—

शोणभद्रके नाम २—शोण १ हिरण्यवाह २ ॥

—कुल्याल्पा कृत्रिमा सरित् ।

नहरका नाम १—कुल्या १ ॥

शरावती वेत्रवती चन्द्रभागा सरस्वती ॥ ३४ ॥ कावेरी—

शरावतीका नाम १—शरावती १। वेत्रवतीका नाम १—वेत्रवती १। चिनावका नाम १—चन्द्रभागा १। सरस्वतीका नाम १—सरस्वती १। ॥ ३४ ॥ कावेरीका नाम १ कावेरी १।

—सरितोऽन्याश्च—

और भी कौशिकी आदि नदियाँ हैं।

—संभेदः सिन्धुसंगमः ।

जहां एक नदी दूसरीसे मिलती है उस संगमके नाम २—सम्भेद १ सिन्धुसंगम २ ॥

द्वयोः प्रणाली पयसः पदव्यां—

पनारका नाम १—प्रणाली १ ॥

—त्रिषु तूत्तरौ ॥ ३५ ॥

आगे होनेवाले दोनों शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥ ३५ ॥

देविकायां सरय्वां च भवे दाविकसारवौ ।

देविका नदीमें जो जो उत्पन्न हों उनका नाम १—दाविक १॥ सरयूमें जो जो उत्पन्न हों उनका नाम १—सारव १।

सौगन्धिकं तु कह्लारं—

कुई (संध्यामें खिलनेवाले श्वेतकमल) के नाम २—सौगंधिक १ कह्लार २ ॥

—हल्लकं रक्तसन्ध्यकम् ॥ ३६ ॥

लाल कुईके नाम २—हल्लक १ रक्तसन्ध्यक २ ॥ ३६ ॥

स्यादुत्पलं कुवलय—

कुमुदकमल साधारणके नाम २—उत्पल १ कुवलय २ ॥

—मथ नीलाम्बुजन्म च । इन्दीवरं च नीलेऽस्मिन्—

काले कमलके नाम २—नीलाम्बुजन्मन् १ इन्दीवर २ ॥

—सिते कुमुदकैरवे ॥ ३७ ॥

उज्ज्वल कमलके नाम २—कुमुद १ कैरव २ ॥ ३७ ॥

शालूकमेषां कन्दः स्या—

कमलोंके कन्दका नाम १—शालूक १॥

द्वारिपर्णी तु कुम्भिका ।

जलकुम्भीके नाम २—वारिपर्णी १ कुम्भिका २ ॥

जलनीली तु शेवालं शैवलो—

शैवालके नाम ३—जलनीली १ शेवाल २ शैवल ३ ॥

—ऽथ कुमुद्वती ॥ ३८ ॥ कुमुदिन्यां—

कुमुदिनी वा कुमुदयुक्त देशके नाम २—कुमुद्वती १ ॥३८॥ कुमुदिनी २ ॥

—नलिन्यां तु बिसिनीपद्मिनीमुखाः ।

कमलिनीके नाम ३—नलिनी १ विसिनी २ पद्मिनी ३ आदि ॥

वा पुंसि पद्मं नलिनमरविन्दं महोत्पलम् ॥ ३९ ॥ सहस्रपत्रं कमलं शतपत्रं कुशेशयम् । पंकेरुहं तामरसं सारसं सरसीरुहम् ॥ ४० ॥ बिसप्रसूनराजीवपुष्कराम्भोरुहाणि च ।

कमलमात्रके नाम १६—पद्म १ नलिन २ अरविन्द ३ महोत्पल ४ ॥३९॥ सहस्रपत्र ५ कमल ६ शतपत्र ७ कुशेशय ८ पंकेरुह ९ तामरस १० सारस ११ सरसीरुह १२ ॥ ४० ॥ बिसप्रसून १३ राजीव १४ पुष्कर १५ अम्भोरुह १६ ॥

पुण्डरीकं सिताम्भोज—

उज्ज्वल कमलके नाम २—पुण्डरीक १ सिताम्भोज २ ॥

—मथ रक्तसरोरुहे ॥ ४१ ॥ रक्तोत्पलं कोकनदं—

लाल कमलके नाम ३—रक्तसरोरुह १॥४१॥ रक्तोत्पल २ कोकनद ३ ॥

—नालो नाल—

कमलकी डांडीके नाम २—नाल (पुँलिंग) १ नाल (नपुंसकलिंग) २॥

—मथास्त्रियाम् । मृणालं बिस—

भसींड़के नाम २—मृणाल १ बिस २॥

—मब्जादिकदम्बे खंडमस्त्रियाम् ॥ ४२ ॥

कमलादिके समूहका नाम १—खण्ड १ ॥ केवल भी नाम १— खण्ड १ ॥ ४२ ॥

करहाटः शिफाकन्दः—

कमलकी जड़के नाम २—करहाट १ शिफाकन्द २ ॥

—किंजल्कः केसरोऽस्त्रियाम् ।

कमल पुष्पके मध्यमें जो झालर होती है उसके नाम २—किंजल्क १ केसर २

संवर्त्तिका नवदलं—

कमलके नये पत्तोंके नाम २—संवार्तिका १ नवदल २ ॥

—बीजकोशो वराटकः ॥ ४३ ॥

कमलाक्षके नाम २—बीजकोश १ वराटक २ ॥ ४३ ॥

उक्तं स्वर्व्योमदिक्कालधीशब्दादि सनाटचकम् । पातालभोगि नरकं वारि चैषां च सङ्गतम् ॥४४॥ इत्यमरसिंहकृतौ नामालिंगानुशासने। स्वरादिकांडः प्रथमः सांग एव समर्थितः ॥ १ ॥

इति श्रीमदमरसिंहविरचितामरकोशस्य भाषाटीकायां वारिवर्गः ॥ १० ॥

इति प्रथमः कांडः समाप्तः ।

॥ श्रीः ॥

अथ द्वितीयः काण्डः ।

अथ भूमिवर्गः १.

वर्गाः पृथ्वीपुरक्ष्माभृद्वनौषधिमृगादिभिः । नृब्रह्मक्षत्रविट्शूद्रैः सांगोपांगैरिहोदिताः ॥ १ ॥

इस द्वितीय काण्डमें भूमिवर्ग १, पुरवर्ग २, शैलवर्ग ३, वनौषधिवर्ग४, सिंहादिवर्ग ५, मनुष्यवर्ग ६, ब्रह्मवर्ग-७, क्षत्रियवर्ग ८, वैश्यवर्ग ९, शूद्रवर्ग १० सांगोपांग कहेंगे ॥ १ ॥

भूर्भूमिरचलानन्ता रसा विश्वंभरा स्थिरा । धरा धरित्री धरणिः क्षोणिर्ज्या काश्यपी क्षितिः ॥ २ ॥ सर्वसहा वसुमती वसुधोर्वी वसुंधरा। गोत्रा कुः पृथिवी पृथ्वी क्ष्मावनिर्मेदिनी मही ॥ ३ ॥

पृथ्वीके नाम २७—भू १ भूमि २ अचला ३ अनन्ता ४ रसा ५ विश्वम्भरा ६ स्थिरा ७ धरा ८ धरित्री ९ धरणि १० क्षोणि ११ ज्या १२ काश्यपी १३ क्षिति १४ ॥ २ ॥ सर्वसहा १५ वसुमती १६ वसुधा १७ उर्वी १८ वसुन्धरा १९ गोत्रा २० कु २१ पृथिवी २२ पृथ्वी २३ क्ष्मा २४ अवनि २५ मेदिनी २६ मही २७ ॥ ३ ॥

मृन्मृत्तिका—

मिट्टीके नाम २—मृत् १ मृत्तिका २॥

—प्रशस्ता तु मृत्सा मृत्स्ना च मृत्तिका ।

अच्छी मिट्टीके नाम २—मृत्सा २ मृत्स्ना १ ॥

उर्वरा सर्वसस्याढ्या—

जिस मिट्टीसे सब अन्न उपजें उसका नाम १—उर्वरा १ ॥

—स्यादूषः क्षारमृत्तिका ॥ ४ ॥

खारी मिट्टी अर्थात् नोंनीके नाम २-ऊष १—क्षारमृत्तिका २ ॥ ४ ॥

ऊषवानूषरो द्वावप्यन्यलिंगौ—

कल्लरभूमिके नाम २—ऊषवत् १ ऊषर २ ॥

—स्थलं स्थली ।

स्थलके नाम २—स्थल १ स्थली २॥

समानौ मरुधन्वानौ—

निर्जल अर्थात् मरुदेशके नाम २—मरु १ धन्वन् २ ॥

–द्वे खिलाप्रहते समे ॥५॥ त्रि-

बिजोत खेतके नाम २—खिल १ अप्रहत २ ॥ ५ ॥

–ष्वथो जगती लोको विष्टपं भुवनं जगत् ।

जगत्के नाम ५—जगती १ लोक २ विष्टप ३ भुवन ४ जगत् ५ ॥

लोकोऽयं भारतं वर्षं–

हिमालयसे दक्षिण समुद्रसे उत्तरके देश तक अर्थात् हिन्दुस्थानका नाम १—भारतवर्ष १ ॥

–शरावत्यास्तु योऽवधेः ॥ ६ ॥ देशः प्राग्दक्षिणः प्राच्य–

शरावती नदीके ॥ ६ ॥ पूर्व दक्षिण देशका नाम १—प्राच्य १ ॥

–उदीच्यः पश्चिमोत्तरः ।

शरावती नदीके पश्चिमोत्तरदेशका नाम—१उदीच्य १ ॥

प्रत्यन्तो म्लेच्छदेशः स्या–

फारस रूस रूम आदि देशोंके नाम २—प्रत्यन्त १ म्लेच्छदेश २।–

–न्मध्यदेशस्तु मध्यमः ॥ ७ ॥

विंध्याचलसे उत्तर, हिमालयसे दक्षिण, कुरुक्षेत्रसे पूर्व, प्रयागसे पश्चिम देशके नाम २—मध्यदेश १ मध्यम २ ॥ ७ ॥

आर्यावर्त्तः पुण्यभूमिर्मध्यं वि-न्ध्यहिमालयोः ।

बंगालके समुद्रसे पश्चिम, अरबसमुद्रसे पूर्व, हिमाचलसे दक्षिण, विन्ध्याचलसे उत्तर देशके नाम २—आर्यावर्त्त १ पुण्यभूमि ॥ २ ॥

नीवृज्जनपदो–

राजाओंके बसाये हुए मगध आदि देशोंके नाम २—नीवृत् १ जनपद २ ॥

–देशविषयौ तूपवर्त्तनम् ॥ ८ ॥

देशमात्रके नाम ३—देश १ विषय २ उपवर्तन ३ ॥ ८ ॥

त्रिष्वागोष्ठा–

गोष्ठपर्यंत जो शब्द हैं वे तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥

–न्नडप्राये नड्वान्नड्वल इत्यपि ।

नडाधिकदेशके नाम २—नड्वत् १ नडल २ ॥

कुमुद्वान्कुमुदप्राये–

जहां बहुत कुमुद हों उस देशका नाम १—कुमुद्वत् १ ॥

–वेतस्वान्बहुवेतसे ॥ ९ ॥

जहां बहुत वेत हों उस देशका नाम १—वेतस्वत् २ ॥ ९ ॥

शाद्वलः शादहरिते-

जहां हरी घास हो उसका नाम १-शाद्वल १ ॥

-सजम्बाले तु पंकिलः ।

जहां बहुत कीच हो उस देशका नाम १-पंकिल १ ॥

जलप्रायमनूपं स्यात्पुंसि कच्छस्तथाविधः ॥ १० ॥

जहां बहुत पानी हो उस देशके नाम ३-जलप्राय १ अनूप २ कच्छ ३ ॥ १० ॥

स्त्री शर्करा शर्करिलः शार्करः शर्करावति ।

जहां रेता हो उस देशके नाम ४-शर्करा १ शर्करिल २ शार्कर ३ शर्करावत् ४ ॥

देश एवादिमा-

ऊपर कहे हुए शर्करा आदि शब्दोंमें पहले शर्करा १ और शर्करिल यह दोनों देशके ही नाम हैं ॥

-वेवमुन्नेयाः सिकतावति ॥ ११ ॥

इसी प्रकार सिकता १ और सिकतिल यह शब्द भी रेतेयुक्त देशके ही नाम हैं ॥ ११ ॥

देशो नद्यम्बुवृष्ट्यम्बुसंपन्नव्रीहिपालितः । स्यान्नदीमातृको देवमातृकश्च यथाक्रमम् ॥ १२ ॥

जहां केवल नदीजलसे खेत सींचे जायँ वर्षा न होती हो उस देशका नाम १-नदीमातृक १ ॥ जहां वर्षाके ही जलसे सींचे जायँ उसका नाम १-देवमातृक १ ॥ १२ ॥

-सुराज्ञि देशे राजन्वान्स्या-

धर्मात्मा राजाके देशका नाम १-राजन्वत् १ ॥

-त्ततोऽन्यत्र राजवान् ।

सामान्य राजाके देशका नाम १-राजवत् १ ॥

गोष्ठं गोस्थानकं-

गोष्ठके नाम २--गोष्ठ १ गोस्थान २ ॥

-तत्तु गौष्ठीनं भूतपूर्वकम् ॥ १३ ॥

जहां पूर्वकालमें गायें रही हों उसका नाम १-गौष्ठीन १ ॥ १३ ॥

पर्यन्तभूः परिसरः-

नदी पर्वतादिके समीपकी भूमिके नाम २-पर्यंतभू १ परिसर २ ॥

-सेतुरालौ स्त्रियां-

पुलके नाम २-सेतु १ आलि २ ॥

-पुमान् । वामलूरश्च नाकुश्च वल्मीकं पुंनपुंसकम् ॥ १४ ॥

बमईके नाम ३-वामलूर १ नाकु २ वल्मीक ३ ॥ १४ ॥

अयनं वर्त्ममार्गाध्वपन्थानः पदवी सृतिः । सरणिः पद्धतिः पद्यावर्त्तन्येकपदीति च ॥ १५ ॥

मार्गके नाम १२—अयन १ वर्त्मन् २ मार्ग ३ अध्वन् ४ पथिन् ५ पदवी ६ सृति ७ सरणि ८ पद्धति ९ पद्या १० वर्त्तनी ११ एकपदी १२॥ १५ ॥

अतिपन्थाः सुपन्थाश्च सत्पथश्चार्चितेऽध्वनि ।

अच्छे मार्गके नाम ३—अतिपथिन् १ सुपथिन् २ सत्पथ ३ ॥

व्यध्वो दुरध्वो विपथः कदध्वा कापथः समाः ॥ १६ ॥

खराब मार्गके नाम ५—व्यध्व १ दुरध्व २ विपथ ३ कदध्वन् ४ कापथः ५ ॥ १६ ॥

अपन्थास्त्वपथं तुल्ये—

जहां मार्ग न हो उसके नाम २—अपथिन् १ चतुष्पथ २ ॥

—शृंगाटकचतुष्पथे ।

चौहट्टा वा चौकके नाम २—शृंगाटक १ चतुष्पथ २ ॥

प्रान्तरं दूरशून्योऽध्वा·

जहां बड़ी दूरतक छाया वा मनुष्यादि न हों उस मार्गका नाम १—प्रान्तर १ ॥

—कान्तारं वर्त्म दुर्गमम् ॥१७॥

चौरकण्टकादियुक्त मार्गका नाम १-कान्तार १ ॥ १७ ॥

गव्यूतिः स्त्री क्रोशयुगं—

दो कोशका नाम १—गव्यूति १ ॥

—नल्वः किष्कुचतुःशतम् ।

४०० हाथका नाम १—नल्व १ ।

घण्टापथः संसरणं—

राजमार्ग अर्थात् सड़कके नाम २—घण्टापथ १ संसरण २।—

—तत्पुरस्योपनिष्करम् ॥ १८ ॥

ग्रामके निकासका नाम १—उपनिष्कर १ ॥ १८ ॥

इति भूमिवर्गः ॥ १॥

अथ पुरवर्गः २.

पूः स्त्री पुरीनगर्यौ वा पत्तनं पुटभेदनम् । स्थानीयं निगमे—

शहरके नाम ७—पुर् १ पुरी २ नगरी ३ पत्तन ४ पुटभेदन ५स्थानीय६ निगम ७ ॥

—ऽन्यत्तु यन्मूलनगरात्पुरम् १ ॥ तच्छाखानगरं—

शहरसम्बंधी छोटे नगरोंका नाम १— ॥ १ ॥ शाखानगर १ ॥

—वेशो वेश्याजनसमाश्रयः ।

वेश्याके स्थानके नाम २—वेश १ वेश्याजनसमाश्रय २ ॥

आपणस्तु निषद्यायां—

बजारके नाम २—आपण १ निषद्या २।

—विपणिः पण्यवीथिका ॥ २ ॥

जहाँ बाजार न हो परन्तु वस्तु बिकती हों उसके नाम २—विपणि १ पण्यवीथिका २ ॥ २ ॥

रथ्या प्रतोली विशिखा—

बीचगाँवकी गलीके नाम ३—रथ्या १ प्रतोली २ विशिखा ३ ॥

—स्याच्चयो वप्रमस्त्रियाम् ।

किलेके इधर उधरकी मिट्टीके नाम २-चय १ वप्र २ ॥

प्राकारो वरणः सालः—

किलेके नाम ३—प्राकार १ वरण २ साल ३ ॥

—प्राचीनं प्रान्ततो वृतिः ॥ ३ ॥

चारों ओर कांटोंकी बाडका नाम १—प्राचीन १ ॥ ३ ॥

भित्तिः स्त्री कुडय—

दीवारके नाम २—भित्ति १ कुड्य २।

—मेडूकं यदन्तर्न्यस्तकीकसम् ॥

जिस दीवारमें मजबूतीके वास्ते हड्डी आदि लगाई गई हों उसका नाम १—एडूक १ ॥

गृहं गेहोदवसितं वेश्म सद्म निकेतनम् ॥ ४ ॥ निशान्तपस्त्यसदनं भवनागारमन्दिरम् । गृहाः पुंसि च भूम्न्येव निकाय्यनिलयालयाः ॥ ५ ॥ वासः कुटी द्वयोः शाला सभा—

गृहके नाम २०—गृह १ गेह २ उदवसित ३ वेश्मन् ४ सद्मन् ५ निकेतन ६ ॥ ४ ॥ निशान्त ७ पस्त्य ८ सदन ९ भवन १० अगार ११ मंदिर १२ गृह (पुं० बहुवचन) १३ निकाय्य १४ निलय १५ आलय १६ ॥ ५ ॥ वास १७ कुटी १८ शाला १९ सभा २० ॥

—संजवनं त्विदम् । चतुःशालं—

जिस गृहमें आमने सामने एकसे चार मकान हों उसके नाम २—संजवन १ चतुश्शाल २ ॥

—मुनीनां तु पर्णशालोटजोऽस्त्रियाम् ॥ ६ ॥

मुनियोंकी कुटीके नाम २—पर्णशाला १ उटज २ ॥ ६ ॥

चैत्यमायतनं तुल्ये—

यज्ञशालाके नाम २—चैत्य १ आयतन २ ॥

—वाजिशाला तु मन्दुरा ।

घुड़सालके नाम २—वाजिशाला १ मन्दुरा २ ॥

आवेशनं शिल्पिशाला—

कारीगरोंके स्थानके नाम २—आवेशन १ शिल्पिशाला २ ॥

—प्रपा पानीयशालिका ॥ ७ ॥

गौशाला अर्थात् पानी पिलानेके स्थानके नाम २—प्रपा १ पानीयशालिका २ ॥ ७ ॥

मठश्छात्रादिनिलयः—

विद्यार्थी और संन्यासी आदिके रहनेके स्थानका नाम १—मठ १ ॥

—गञ्जा तु मदिरागृहम् ।

जहां मद्य बनाया जाय अथवा जहां मद्य रखा जाय उस स्थानके नाम २—गञ्जा १ मदिरागृह २ ॥

गर्भागारं वासगृह—

गृहके मध्यभागके नाम २—गर्भागार १ वासगृह २ ॥

—मरिष्टं सूतिकागृहम् ॥ ८ ॥

सोबरके (प्रसूतीके) गृहके नाम २—अरिष्ट १ सूतिकागृह २ ॥ ८ ॥

वातायनं गवाक्षो—

झरोखोंके नाम २—वातायन १ गवाक्ष २ ।

—ऽथ मण्डपोऽस्त्री जनाश्रयः ।

मण्डपके नाम २—मण्डप १ जनाश्रय २ ॥

हर्म्यादि धनिनां वासः—

धनवानोंके गृहका नाम १—हर्म्य १ आदि ॥

—प्रासादो देवभूभुजाम् ॥ ९ ॥

देवता और राजाओंके गृहका नाम १—प्रासाद १ ॥ ९ ॥

सौधोऽस्त्री राजसदन—

राजाओंके गृहके नाम २—सौध १ राजसदन २ ॥

—मुपकार्योपकारिका ।

राजाओंके साधारण गृहोंके नाम २—उपकार्या १ उपकारिका २ ॥

स्वस्तिकः सर्वतोभद्रो नन्द्यावर्त्तादयोऽपि च ॥ १० ॥ विच्छन्दकः प्रभेदा हि भवन्तीश्वरसद्मनाम् ।

राजगृहोंके भेद जिनमें ४ दरवाजे आदि भेद हैं ॥ स्वस्तिक १ सर्वतोभद्र २ नन्द्यावर्त्त ३॥१०॥ विच्छन्दक ४ इत्यादि ।

स्त्र्यगारं भूभुजामन्तःपुरं स्यादवरोधनम् ॥ ११ ॥ शुद्धान्तश्चावरोधश्च—

राजस्त्रियोंके रहनेके स्थानके नाम ४—अन्तःपुर १ अवरोधन २ ॥ ११ ॥ शुद्धान्त ३ अवरोध ४ ॥

स्यादट्टः क्षौममस्त्रियाम् ।

गृहके ऊपरके घरके नाम २—अट्ट १ क्षौम २ ॥

प्रघाणप्रघणालिन्दा बहिर्द्वार-प्रकोष्ठके ॥ १२ ॥

दहलीजके नाम ३—प्रघाण १ प्रघण २ अलिन्द ३ ॥ १२ ॥

गृहावग्रहणी देह—

देहलीके नाम २—गृहावग्रहणी १ देहली २ ॥

—ल्यङ्गणं चत्वराजिरे ।

आंगनके नाम ३—अंगण १ चत्वर २ अजिर ३ ॥

अधस्ताद्दारुणि शिला—

दरवाजेके नीचेके काठका नाम १—शिला १ ॥

—नासादारूपरि स्थितम् ॥ १३ ॥

दरवाजेके ऊपरके काठका नाम १—नासा १ ॥ १३ ॥

प्रच्छन्नमन्तर्द्वारं स्या—

खिडकीके नाम २—प्रच्छन्न १ अन्तर्द्वार २ ॥

—त्पक्षद्वारं तु पक्षकम् ।

बगलके द्वारके नाम २—पक्षद्वार १ पक्षक २ ॥

वलीकनीध्रे पटलप्रान्ते—

वरौनीके नाम ३—वलीक १ नीध्र २ पटलप्रान्त ३ ॥

—ऽथ पटलं छदिः ॥ १४ ॥

छानिके नाम २—पटल १ छदि २ ॥ १४ ॥

गोपानसी तु वलभी छादने वक्रदारुणि ।

छज्जेके नाम २—गोपानसी १ वलभी २ ।

कपोतपालिकायां तु विटंकं पुंनपुंसकम् ॥ १५ ॥

कबूतरखानेके नाम २—कपोतपालिका १ विटंक २ ॥ १५ ॥

स्त्री द्वार्द्वारं प्रतीहारः—

द्वारके नाम ३—द्वार् १ द्वार २ प्रतीहार ३ ॥

—स्याद्वितर्दिस्तु वेदिका ।

वेदीके नाम २—वितर्दि १ वेदिका २॥

तोरणोऽस्त्री बहिर्द्वारं—

घरके बाहरके फाटकके नाम २—तोरण १ बहिर्द्वार २—

—पुरद्वारं तु गोपुरम् ॥ १६ ॥

नगरके बाहरके फाटकके नाम २—पुरद्वार १ गोपुर २ ॥ १६ ॥

कूटं पूर्द्वारि यद्धस्तिनखस्तस्मि-

नगरके द्वारसे उतरनेके लिये उतार चढावकी भूमिका नाम १—हस्तिनख १।

--अथ त्रिपु । कपाटमररं तुल्ये-
किवाड़ोंके नाम २-कपाट १ अरर २॥

-तद्विष्कम्भोऽर्गलं नना ॥१७॥
किवाड़ोंके डण्डेलेका नाम १- अर्गल १॥ १७॥

आरोहणं स्यात्सोपानं-
मिट्टी पत्थर आदिकी सीढ़ीके नाम २-आरोहण १ सोपान २।

-निश्रेणिस्त्वधिरोहणी ।
काठकी सीढ़ीके नाम २-निश्रेणि १ अधिरोहणी २॥

संमार्जनी शोधनी स्यात्-
बुहारी अर्थात् झाडूके नाम २-संमार्जनी १ शोधनी २॥

-संकरोऽवकरस्तथा ॥ १८॥

कतवार वा कूड़ेके नाम २-संकर १ अवकर २॥ १८॥

क्षिप्ते मुखं निःसरणं-

निकासके नाम २-मुख १ निःसरण २॥

-संनिवेशो निकर्षणम् ।

नगर इत्यादिमें स्थानके निमित्त मापी हुई भूमिके नाम २-संनिवेश १ निकर्षण २॥

समौ संवसथग्रामौ-
ग्रामके नाम २-संवसथ१ ग्राम२॥

-वेश्मभूर्वास्तुरस्त्रियाम्॥ १९॥
घरकी भूमिका नाम १-वास्तु १॥ १९॥

ग्रामान्त उपशल्यं स्यात्-
ग्रामके समीपका नाम १-उपशल्य १॥

-सीमसीमे स्त्रियामुभे ।
सीमाके नाम २-सीमन् १सीमा २॥

घोष आभीरपल्ली स्यात्-
अहीरोंके ग्रामके नाम २-घोष १ आभीरपल्ली २॥

-पक्कणः शबरालयः॥ २०॥
जंगलियोंके ग्रामके नाम २-पक्कण १ शबरालय २॥ २०॥

इति पुरवर्गः॥ २॥

अथ शैलवर्गः ३.

महीध्रे शिखरिक्ष्माभृदहार्यधरपर्वताः । अद्रिगोत्रगिरिग्रावाचलशैलशिलोच्चयाः॥ १॥
पर्वतके नाम १३-महीध्र १ शिखरिन् २ क्ष्माभृत् ३ अहार्य ४ धर ५ पर्वत ६ आद्रि ७ गोत्र ८ गिरि ९ ग्रावन् १० अचल ११ शैल १२ शिलोच्चय १३॥ १॥

लोकालोकश्चक्रवाल-
जो पर्वत पृथ्वीको धरे हैं उनके नाम २-लोकालोक १ चक्रवाल २॥

-त्रिकूटस्त्रिककुत्समौ ।

त्रिकूट कि जिसपर लंका बसी उसके नाम २-त्रिकूट १ त्रिककुद् २॥

अस्तस्तु चरमक्ष्माभृ-

अस्ताचलके नाम २-अस्त १ चरमक्ष्माभृत् २ ॥

-दुदयः पूर्वपर्वतः ॥ २ ॥

उदयाचलके नाम २-उदय १ पूर्वपर्वत २ ॥ २ ॥

हिमवान्निषधो विन्ध्यो माल्यवान्पारियात्रकः । गन्धमादनमन्ये च हेमकूटादयो नगाः ॥ ३ ॥

पर्वतोंके भेद ६-हिमवत् १ निषध २ विन्ध्य ३ माल्यवत् ४ पारियात्रक ५ गन्धमादन ६ तथा हेमकूट आदि अन्य भी पर्वत हैं ॥ ३ ॥

पाषाणप्रस्तरग्रावोपलाश्मानः शिला दृषत् ।

पत्थरके नाम ७-पाषाण १ प्रस्तर २ ग्रावन् ३ उपल ४ अश्मन् ५ शिला ६ दृषत् ७ ॥

कूटोऽस्त्री शिखरं शृङ्गं-

पहाड़की चोटी वा कंगूराके नाम ३-कूट १ शिखर २ शृङ्ग ३ ॥

-प्रपातस्त्वतटो भृगुः ॥ ४ ॥

बीहड़के नाम ३-प्रपात १ अतट २ भृगु ३ ॥ ४ ॥

कटकोऽस्त्री नितम्बोऽद्रेः-

बीच पर्वतका नाम १-कटक १ ॥

-स्नुः प्रस्थः सानुरस्त्रियाम् ।

पर्वतके किनारेके नाम ३-स्नु १ प्रस्थ २ सानु ३ ॥

उत्सः प्रस्रवणं-

जहां पर्वतसे चूकर पानी बहुरता है अर्थात् कुण्डके नाम २-उत्स १ प्रस्रवण २ ॥

-वारिप्रवाहो निर्झरो झरः ॥५॥

झरनोंके नाम ३-वारिप्रवाह १ निर्झर २ झर ३ ॥ ५ ॥

दरी तु कन्दरो वा स्त्री-

बनाई हुई गुफाके नाम २-दरी १ कन्दर-कन्दरा २ ॥

-देवखातबिले गुहा । गह्वरं-

अपने आप बनी हुई गुफाके नाम ४-देवखात १ बिल २ गुहा ३ गह्वर ४॥

-गण्डशैलास्तु च्युताः स्थूलोपला गिरेः ॥ ६ ॥

जो कि पर्वतसे भारी भारी पत्थर गिरते हैं उनका नाम १-गण्डशैल १॥ ६॥

खनिः स्त्रियामाकरः स्यात्-

खानिके नाम २-खनि १ आकर २ ॥

--पादाः प्रत्यंतपर्वताः ।

पर्वतके समीप छोटे पर्वतके नाम २—पाद १ प्रत्यन्तपर्वत २ ॥

उपत्यकाद्रेरासन्ना भूमिरूर्ध्वमधित्यका ॥ ७ ॥

पहाड़के नीचेकी भूमिका नाम १—उपत्यका १ । पहाड़की ऊपरकी भूमिका नाम १—अधित्यका १ ॥ ७ ॥

धातुर्मनःशिलाद्यद्रेर्गैरिकं तु विशेषतः ।

पर्वतसे उत्पन्न हुए जो मनःशिल आदिका नाम १—धातु १ । गैरिक (गेरू) तो धातु शब्दसे ही विख्यात है।

निकुञ्जकुञ्जौ वा क्लीबे लतादिपिहितोदरे ॥ ८ ॥

जहां कि बहुत लतातृणादिसे घिरा हो उसके नाम २—निकुञ्ज १ कुञ्ज २ ॥ ८ ॥

इति शैलवर्गः ॥ ३ ॥

अथ वनौषधिवर्गः ४.

अटव्यरण्यं विपिनं गहनं काननं वनम् ।

वनके नाम ६—अटवी १ अरण्य २ विपिन ३ गहन ४ कानन ५ वन ६ ॥

महारण्यमरण्यानी—

बड़े वनके नाम २—महारण्य १ अरण्यानी २ ॥

—गृहारामास्तु निष्कुटाः ॥ १ ॥

गृहके समीप बनाये हुए बगीचेके नाम २—गृहाराम १ निष्कुट २ ॥ १ ॥

आरामः स्यादुपवनं कृत्रिमं वनमेव यत् ।

गृहसमीपके वनके नाम २—आराम १ उपवन २ ॥

अमात्यगणिकागेहोपवने वृक्षवाटिका ॥ २ ॥

जहां राजाके नौकर चाकर और उनकी वेश्या रहें उस बगीचेका नाम १—वृक्षवाटिका १ ॥ २ ॥

पुमानाक्रीड उद्यानं राज्ञः साधारणं वनम् ।

राजाके उस बगीचेका नाम जिसका सब पुरुष भोग कर सकें १—आक्रीड १ ॥

स्यादेतदेव प्रमदवनमंतःपुरोचितम् ॥ ३ ॥

जहां राजा स्त्रियों सहित क्रीडा करें उस बगीचेका नाम १—प्रमदवन १ ॥ ३ ॥

वीथ्यालिरावलिः पंक्तिः श्रेणी—

पंक्तिके नाम ५—वीथी १ आलि २ आवलि ३ पंक्ति ४ श्रेणी ५ ॥

—लेखास्तु राजयः ।

लकीरके नाम २—लेखा १ राजि २ ॥

वन्या वनसमूहे स्या—

वनके झुंडके नाम २-वन्या १ वनसमूह २ ॥

-दंकुरोऽभिनवोद्भिदि ॥ ४ ॥

अंकुरके नाम २-अंकुर १ अभिनवोद्भिद् २ ॥ ४ ॥

वृक्षो महीरुहः शाखी विटपी पादपस्तरुः । अनोकहः कुटः शालः पलाशी द्रुद्रुमागमाः ॥ ५॥

वृक्षके नाम १३-वृक्ष १ महीरुह२ शाखिन् ३ विटपिन् ४ पादप ५ तरु ६ अनोकह ७ कुट ८ शाल ९ पलाशिन् १० द्रु ११ द्रुम १२ अगम १३॥५॥

वानस्पत्यः फलैः पुष्पात्-

जो वृक्ष फूलकर फले उसका नाम १-वानस्पत्य १ ॥

-तैरपुष्पाद्वनस्पतिः ।

जो कि फूलने विना फलें जैसे गूलर कटहर आदि उनका नाम १-वनस्पति १ (वृक्षमात्रको भी वनस्पति कहते हैं)।

ओषध्यः फलपाकान्ताः स्यु-

फलकर पकनेपर नष्ट होनेवाले अर्थात् अन्न आदिका नाम १-ओषधी १

-रवन्ध्यः फलेग्रहिः ॥ ६ ॥

फलनेवाले वृक्षके नाम २-अवन्ध्य १ फलेग्रहि २ ॥ ६ ॥

वन्ध्योऽफलोऽवकेशी च-

जो नहीं फले उस वृक्षके नाम ३-वन्ध्य १ अफल २ अवकेशिन् ३ ॥

-फलवान् फलिनः फली ।

फलयुक्त वृक्षके नाम ३-फलवत् १ फलिन २ फलिन् ३ ॥

प्रफुल्लोत्फुल्लसंफुल्लव्याकोशविकचस्फुटाः ॥ ७ ॥ फुल्लश्चैते विकसिते-

फूलयुक्त (विकसित) वृक्षके नाम ८--प्रफुल्ल १ उत्फुल्ल २ संफुल्ल ३ व्याकोश ४ विकच ५ स्फुट ६ ॥ ७ ॥ फुल्ल ७ विकसित ८ ।

--स्युरवन्ध्यादयास्त्रिषु ।

अवंध्य आदि शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥

स्थाणुर्वा ना ध्रुवः शंकु--

ठूठ वृक्षके नाम ३-स्थाणु १ ध्रुव २ शंकु ३ ॥

-र्ह्रस्वशाखाशिफः क्षुपः ॥ ८ ॥

जिस वृक्षमें छोटी २ डालें और जडे हों उसका नाम १-क्षुप १॥ ८॥

अप्रकाण्डे स्तम्बगुल्मौ-

जिसमें डालियां न हों उस वृक्षके नाम २-स्तम्ब १ गुल्म २ ॥

-वल्ली तु व्रततिर्लता ।

बेलके नाम ३-वल्ली १ व्रतति २ लता ३ ॥

लता प्रतानिनी वीरुद्गुल्मिन्युलप इत्यपि ॥ ९ ॥

वडी लंबी बेलके नाम ३—वीरुद् १ गुल्मिनी २ उलप ३ ॥ ९ ॥

नगाद्यारोह उच्छ्राय उत्सेधश्चोच्छ्रयश्च सः ।

वृक्षादिककी उचाईके नाम ३—उच्छ्राय १ उत्सेध २ उच्छ्रय ३ ॥

अस्त्री प्रकाण्डः स्कन्धः स्यान्मूलाच्छाखावधिस्तरोः ॥ १० ॥

जडसे शाखातक पेडके नाम २—प्रकाण्ड १ स्कन्ध २ ॥ १० ॥

समे शाखालते—

डालके नाम २—शाखा १ लता २ ॥

--स्कन्धशाखाशाले--

प्रधानशाखा (मोटे डगों) के नाम २—स्कन्धशाखा १ शाला २ ॥

—शिफाजटे ।

जडके नाम २—शिफा १ जटा २॥

शाखाशिफावरोहः स्या--

अवरोहका नाम १—अवरोह १ ॥

—न्मूलाच्चाग्रं गता लता ॥११॥

मूलसे लेकर अग्रभागपर्यंत गई हुई गिलोय आदिके बेलका नाम भी 'अवरोह' है ॥ ११ ॥

शिरोऽग्रं शिखरं वा ना--

टैनीके नाम २—शिरोग्र १ शिखर२॥

--मूलं बुध्नोऽङ्घ्रिनामकः ।

मिट्टीके भीतरकी जडके नाम ३--मूल१ बुध्न २ अंघ्रिनामक सब शब्द३॥

सारो मज्जा नरि--

गूदेके नाम २--सार १ मज्जन् २॥

--त्वक् स्त्री वल्कं वल्कलमस्त्रियाम् ॥ १२ ॥

वृक्षकी छालके नाम ३--त्वच् १ वल्क २ वल्कल ३ ॥ १२ ॥

काष्ठं दा--

काठके नाम २--काष्ठ १ दारु २ ॥

--र्विन्धनं त्वेध इध्ममेधः समित्स्त्रियाम् ।

ईंधनके नाम ३—इन्धन १ एध २ --इध्म ३ । यज्ञादिके ईंधनके नाम २। एधस् १ समिध् २ ॥

निष्कुहः कोटरं वा ना--

खोकलके नाम २--निष्कुह १ कोटर२॥

--वल्लरिर्मञ्जरिः स्त्रियौ ॥ १३ ॥

मंजरीके नाम २--वल्लरि १ मंजरि २ ॥ १३ ॥

पत्रं पलाशं छदनं दलं पर्णं छदः पुमान् ।

पत्तोंके नाम ६--पत्र १ पलाश २ छदन ३ दल ४ पर्ण ५ छद ६ ॥

पल्लवोऽस्त्री किसलयं--

कोंपलके नाम २--पल्लव १ किसलय २ ॥

--विस्तारो विटपोऽस्त्रियाम् ॥ १४ ॥

डालोंके फैलनेके नाम २--विस्तार १ विटप २ ॥ १४ ॥

वृक्षादीनां फलं सस्यं--

वृक्षादिकोंके फलका नाम १--सस्य १ ॥

--वृन्तं प्रसवबन्धनम् ।

नाकूके नाम २--वृन्त १ प्रसवबन्धन २ ॥

आमे फले शलाटुः स्या--

कच्चे फलका नाम १ --शलाटु १ ॥

--च्छुष्के वानं--

सूखे फलका नाम १--वान १ ॥

--मुभे त्रिषु ॥ १५ ॥

शलाटु और वान शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥ १५ ॥

क्षारको जालकं क्लीबे--

नई कली व कलीकी डण्डीके नाम २--क्षारक १ जालक २ ॥

--कलिका कोरकः पुमान् ।

बिना फूली कलीके नाम २--कलिका १ कोरक २ ॥

स्याद्गुच्छकस्तु स्तबकः-,

गुच्छेका नाम १--स्तबक १ ॥

--कुड्मलो मुकुलोऽस्त्रियाम् १६

अधफूली कलीके नाम २--कुड्मल १ मुकुल २ ॥ १६ ॥

स्त्रियः सुमनसः पुष्पं प्रसूनं कुसुमं सुमम् ।

फूलके नाम ५--सुमनस् १ पुष्प २ प्रसून ३ कुसुम ४ सुम ५ ॥

मकरन्दः पुष्परसः--

फूलके रसके नाम २--मकरन्द १ पुष्परस २ ॥

--परागः सुमनोरजः ॥ १७ ॥

फूलकी धूलीके नाम २--पराग १ सुमनोरजस् २ ॥ १७ ॥

द्विहीनं प्रसवे सर्वं--

आगे अश्वत्थ आदिकोंके जो फल-पुष्पादिकोंके नाम कहेंगे वह शब्द केवल नपुंसकलिंगमें ही होंगे ।

--हरीतक्यादयः स्त्रियाम् ।

हरीतकी आदिकोंके फलोंके वाचक (हरीतकी) आदि शब्द स्त्रीलिंगमें होंगे ॥

आश्वत्थवैणवप्लाक्षनैयग्रोधैङ्गुदं फले ॥ १८ ॥ बार्हतं च--

पीपलके फलका नाम १ आश्वत्थ १ ॥ बांसका फल--वैणव १ ॥

पाकड़के फलका नाम प्लाक्ष १ ॥

वटके फलका नाम--नैयग्रोध १ ॥

—इंगुदीके फलका नाम ऐङ्गुद १॥ १८॥

—भटकटैयाके फलका नाम बार्हत १॥

—फले जम्बवा जम्बू स्त्री जम्बु जाम्बवम् ।

जामुनके फलके नाम ३—जम्बू १ जम्बु २ जाम्बव ३ ॥

पुष्पे जातीप्रभृतयः स्वलिंगा—

जूहीके फुलका नाम १—जाती १ ॥

—व्रीहयः फले ॥ १९ ॥

यव आदि धान्योंके फल भी यव आदि नामसे ही कहे जाते हैं, जैसे यवका फल यव, माषका फल माष, मुद्गका फल मुद्ग ॥ १९ ॥

विदार्याद्यास्तु मूलेऽपि—

विदारी आदिकोंके जड़, पुष्प और फल भी विदारी आदि नामवाले ही होते हैं अर्थात् जाती आदि शब्दोंके पुष्पादिक भी स्वलिंग ही होते हैं ॥

—पुष्पे क्लीबेऽपि पाटला ।

पाटलाके पुष्पका नाम १—पाटला १॥ यह शब्द पुष्पका नाम होकर भी स्वलिङ्ग अर्थात् पाटलाका लिङ्ग जो स्त्रीलिङ्ग उसीमें होता है ॥

बोधिद्रुमश्चलदलः पिप्पलः कुञ्जराशनः ॥ २० ॥ अश्वत्थे—

पीपलके नाम ५—बोधिद्रुम १ चलदल २ पिप्पल ३ कुंजराशन ४ ॥ २० ॥ अश्वत्थ ५ ॥

—ऽथ कपित्थे स्युर्दधित्थग्राहिमन्मथाः । तस्मिन्दधिफलः पुष्पफलदन्तशठावपि ॥ २१ ॥

कैथके नाम ७—कपित्थ १ दधित्थ २ ग्राहिन् ३ मन्मथ ४ दधिफल ५ पुष्पफल ६ दन्तशठ ७ ॥ २१ ॥

उदुम्बरो जन्तुफलो यज्ञाङ्गो हेमदुग्धकः ।

गूलरके नाम ४—उदुम्बर १ जन्तुफल २ यज्ञांग ३ हेमदुग्धक ४ ॥

कोविदारे चमरिकः कुद्दालो युगपत्रकः ॥ २२ ॥

कचनारके नाम ४—कोविदार १ चमरिक २ कुद्दाल ३ युगपत्रक ४ ॥२२॥

सप्तपर्णो विशालत्वक्छारदो विषमच्छदः ।

छतिवनीके नाम ४—सप्तपर्ण १ विशालत्वच् २ शारद ३ विषमच्छद ४।

आरग्वधे राजवृक्षशम्याकचतुरंगुलाः ॥ २३ ॥ आरेवतव्याधिघातकृतमालसुवर्णकाः ।

अमलतासके नाम ८—आरग्वध १ राजवृक्ष २ शम्याक ३ चतुरंगुल ४ ॥२३॥

आरेवत ५ व्याधिघात ६ कृतमाल ७ सुवर्णक ८ ॥

स्युर्जम्बीरे दन्तशठजम्भजम्भीरजम्भलाः ॥ २४ ॥

जम्बीरीनिंबूके नाम ५–जम्बीर १ दन्तशठ २ जम्भ ३ जंभीर ४ जंभल ५ ॥ २४ ॥

वरणो वरुणः सेतुस्तिक्तशाखः कुमारकः ।

वरुण (वरुणा)के नाम ५–वरण १ वरुण २ सेतु ३ तिक्तशाख ४ कुमारक ५ ॥

पुन्नागे पुरुषस्तुङ्गः केसरो देववल्लभः ॥ २५ ॥

नागकेशरके नाम ५–पुन्नाग १ पुरुष२तुङ्ग३केशर४देववल्लभ ५ ॥२५॥

पारिभद्रे निम्बतरुर्मन्दारः पारिजातकः ।

बकायनके नाम ४–पारिभद्र १ निम्बतरु २ मन्दार ३ पारिजातक ४॥

तिनिशे स्यन्दनो नेमी रथद्रुरतिमुक्तकः ॥ २६ ॥ वञ्जुलश्चित्रकृच्चा–

वञ्जुल वृक्षके नाम ७–तिनिश १ स्यन्दन२नेमि३रथद्रु ४अतिमुक्तक ५ ॥ ॥ २६ ॥वञ्जुल ६ चित्रकृत् ७ ॥

–थ द्वौ पीतनकपीतनौ ।

आम्रातके–

अम्बाड़ेके नाम ३–पीतन १ कपीतन २ आम्रातक ३ ॥

–मधूके तु गुडपुष्पमधुद्रुमः॥२७॥ वानप्रस्थमधुष्ठीलौ–

महुएके नाम ५–मधूक १गुडपुष्प२ मधुद्रुम ३ ॥ २७ ॥ वानप्रस्थ ४मधुष्ठील ५ ॥

–जलजेऽत्र मधूलकः ।

जलके महुएका नाम१–मधूलक१॥

पीलौ गुडफलः स्रंसी–

देशी अखरोटके नाम ३–पीलु १ गुडफल २ स्रंसिन् ३ ।

–तस्मिंस्तु गिरिसंभवे ॥ २८ ॥ अक्षोटकन्दरालौ द्वा–

पहाड़ी अखरोटके नाम २–॥२८॥ अक्षोट १ कन्दराल २ ॥

–वंकोटे तु निकोचकः ।

अंकोलके नाम २–अंकोट १ निकोचक २ ॥

पलाशे किंशुकः पर्णो वातपोथो–

पलाशके नाम४–पलाश १ किंशुक २ पर्ण ३ वातपोथ ४ ॥

–ऽथ वेतसे ॥ २९ ॥ रथाभ्रपुष्पविदुरशीतवानीरवञ्जुलाः ।

वेतके नाम ७-वेतस १ ॥ २९ ॥

रथ २ अभ्रपुष्प ३ विदुर ४ शीत ५ वानीर ६ वंजुल ७ ॥

द्वौ परिव्याधविदुलौ नादेयी चाम्बुवेतसे ॥ ३० ॥

पानीके बेतके नाम ४—परिव्याध १ विदुल २ नादेयी ३ अम्बुवेतस ४ ॥ ३० ॥

शोभाञ्जने शिग्रुतीक्ष्णगन्धका—क्षीवमोचकाः ।

सँहिजनेके नाम ५—शोभाञ्जन १ शिग्रु २ तीक्ष्णगन्धक ३ अक्षीव ४ मोचक ५ ॥

रक्तोऽसौ मधुशिग्रुः स्या—

लाल फूलवाले सँहिजनेका नाम १—मधुशिग्रु १ ॥

—दरिष्टः फेनिलस्समौ ॥ ३१ ॥

रीठेके नाम २—अरिष्ट १ फेनिल २ ॥ ३१ ॥

बिल्वे शाण्डिल्यशैलूषौ मालूर-श्रीफलावपि ।

बेलके नाम ५—बिल्व १ शाण्डिल्य २ शैलूष ३ मालूर ४ श्रीफल ५ ॥

प्लक्षो जटी पर्कटी स्या—

पाकरके नाम ३—प्लक्ष १ जटिन् २ पर्कटिन् ३ ॥

—न्यग्रोधो बहुपाद्वटः ॥ ३२ ॥

वटके नाम ३—न्यग्रोध १ बहुपाद् २ वट ३ ॥ ३२ ॥

गालवः शाबरो लोध्रस्तिरीट-स्तिल्वमार्जनौ ।

लोधके नाम ६—गालव १ शाबर २ लोध्र ३ तिरीट ४ तिल्व ५ मार्जन ६ ।

आम्रश्चूतो रसालो—

आमके नाम ३—आम्र १ चूत २ रसाल ३ ॥

—ऽसौ सहकारोऽतिसौरभः ॥ ३३ ॥

सुगंधित आमका नाम १—सहकार १ ॥ ३३ ॥

कुंभोलूखलकं क्लीबे कौशिको गुग्गुलुः पुरः ।

गूगलके नाम ५—कुम्भ १ उलूखलक २ कौशिक ३ गुग्गुलु ४ पुर ५ ॥

शेलुः श्लेष्मातकः शीत उद्दा-लो बहुवारकः ॥ ३४ ॥

लसोढ़ेके नाम ५—शेलु १ श्लेष्मातक २ शीत ३ उद्दाल ४ बहुवारक ३ ॥ ३४ ॥

राजादनं प्रियालः स्यात्सन्नक-द्रुर्धनुष्पटः ।

चिरौंजीके नाम ४—राजादन १ प्रियाल २ सन्नकद्रु ३ धनुष्पट ४ ।

गंभारी सर्वतोभद्रा काश्मरी मधुपर्णिका ॥३५॥ श्रीपर्णी भद्रपर्णी च काश्मर्यश्चा–

खँभारीके नाम७—गम्भारी १ सर्वतोभद्रा २ काश्मरी ३ मधुपार्णिका ४ ॥३५॥श्रीपर्णी५भद्रपर्णी६काश्मरी ७॥

–प्यथ द्वयोः॥कर्कन्धूर्बदरी कोली–

बेरके नाम ३—कर्कंधू १ बदरी २ कोली ३ ॥

–कोलं कुवलफेनिले ॥ ३६ ॥ सौवीरं बदरं घोण्टा–

बेरके फलके नाम ६—कोल १ कुवल २ फेनिल ३ ॥ ३६ ॥ सौवीर ४ बदर ५ घोण्टा ६ ॥

–प्यथ स्यात्स्वादुकण्टकः । विकंकतः स्रुवावृक्षो ग्रन्थिलो व्याघ्रपादपि ॥ ३७ ॥

टेंटीके नाम ५—स्वादुकण्टक १ विकङ्कत २ स्रुवावृक्ष ३ ग्रन्थिल ४ व्याघ्रपाद् ५ ॥ ३७ ॥

ऐरावतो नागरंगो नादेयी भूमिजम्बुका ॥

नारंगीके नाम४—ऐरावत १ नागरङ्ग २ नादेयी ३ भूमिजम्बुका ४ ॥

तिन्दुकः स्फूर्जकः कालस्कन्धश्च शितिसारके ॥ ३८ ॥

तेंदूके नाम ४—तिन्दुक १ स्फूर्ज्जक २ कालस्कन्ध ३ शितिसारक ४ ॥३८॥

काकेन्दुः कुलकः काकतिन्दुकः काकपीलुके ।

कुचलेके नाम ४—काकेन्दु १ कुलक२काकतिन्दुक३ काकपीलुक ४ ॥

गोलीढो झाटलो घण्टापाटलिर्मोक्षमुष्ककौ ॥ ३९ ॥

लोधके भेद मोखाके नाम ५—गोलीढ१झाटल २ घण्टापाटलि३ मोक्ष ४ मुष्कक ५ ॥ ३९ ॥

तिलकः क्षुरकः श्रीमान्–

तिलकके नाम ३—तिलक १ क्षुरक २ श्रीमत् ३ ॥

–समौ पिचुलझाबुकौ ।

झाऊके नाम २—पिचुल १ झावुक २ ॥

श्रीपर्णिका कुमुदिका कुम्भी कैडर्यकट्फलौ ॥ ४० ॥

कायफलके नाम ५—श्रीपर्णिका १ कुमुदिका २ कुम्भी ३ कैडर्य ४ कट्फल ५ ॥ ४० ॥

क्रमुकः पट्टिकाख्यः स्यात्पट्टी लाक्षाप्रसादनः ।

पठानी लोधके नाम ४—क्रमुक १ पट्टिकाख्य २ पट्टी ३ लाक्षाप्रसादन ४॥

तूदस्तु यूपः क्रमुको ब्रह्मण्यो ब्रह्मदारु च ॥ ४१ ॥ तूलं च—

पार्श्वपिप्पल वा तूतके नाम ६—तूद १ यूप २ क्रमुक ३ ब्रह्मण्य ४ ब्रह्मदारु ५ ॥ ४१ ॥ तूल ६ ॥

—नीपप्रियककदम्बास्तु हरिप्रियः।

कदम्बके नाम ४—नीप १ प्रियक २ कदम्ब ३ हरिप्रिय ४ ॥

वीरवृक्षोऽरुष्करोऽग्निमुखी भल्लातकी त्रिषु ॥ ४२ ॥

भिलावेके नाम ४—वीरवृक्ष १ अरुष्कर २ अग्निमुखी ३ भल्लातकी ४ ॥४२॥

गर्दभाण्डे कन्दरालकपीतनसुपार्श्वकाः । प्लक्षश्च

गेठी (पिलखन) के नाम ५—गर्दभाण्ड १ कन्दराल २ कपीतन ३ सुपार्श्वक ४ प्लक्ष ५ ॥

—तिन्तिडी चिञ्चाम्लिका—

इमलीके नाम ३—तिन्तिडी १ चिञ्चा २ अम्लिका ३ ॥

—ऽथ पीतसारके ॥ ४३ ॥ सर्जकासनबन्धूकपुष्पप्रियकजीवकाः ।

विजयसारके नाम ६—पीतसारक १ ॥ ४३ ॥ सर्जक २ असन ३ बन्धूक ४ पुष्पप्रियक ५ जीवक ६ ॥

साले तु सर्जकार्श्याश्वकर्णकाः सस्यसम्बरः ॥ ४४ ॥

शालके नाम५—साल १ सर्ज २ कार्श्य ३ अश्वकर्णक ४ सस्यसंबर ५॥ ४४ ॥

नदीसर्जो वीरतरुरिन्द्रद्रुः ककुभोऽर्जुनः ।

अर्जुनवृक्षके नाम५—नदीसर्ज १ वीरतरु २ इन्द्रद्रु ३ ककुभ ४ अर्जुन ५॥

राजादनः फलाध्यक्षः क्षीरिकायां—

खिन्नीके नाम ३—राजादन १ फलाध्यक्ष २ क्षीरिका ३ ॥

—मथ द्वयोः ॥ ४५ ॥ इङ्गुदी तापसतरु—

पांखीके नाम २—इंगुदी १ तापसतरु २ ॥ ४५ ॥

—र्भूर्जे चर्मिमृदुत्वचौ ॥

भोजपत्रके वृक्षके नाम ३—भूर्ज १ चर्मिन् २ मृदुत्वच् ३ ॥

पिच्छिला पूरणी मोचा स्थिरायुः शाल्मलिर्द्वयोः ॥ ४६ ॥

सेमलके नाम ५—पिच्छिला १ पूरणी २ मोचा ३ स्थिरायु ४ शाल्मलि ५॥४६॥

पिच्छा तु शाल्मलीवेष्टे—

सेमलके गोंदके नाम २–पिच्छा १ शाल्मलीवेष्ट २ ॥

–रोचनः कूटशाल्मलिः ।

काले सेमलके नाम २–रोचन १ कूटशाल्मलि २ ॥

चिरबिल्वो नक्तमालः करजश्च करञ्जके ॥ ४७ ॥

करञ्जके नाम ४–चिरबिल्व १ नक्तमाल २ करज ३ करंजक ४ ॥४७॥

प्रकीर्यः पूतिकरजः पूतिकः कलिमारकः ।

कटीले करंजके नाम ४–प्रकीर्य १ पूतिकरज २ पूतिक ३ कलिमारक ४॥

करञ्जभेदाः षड्ग्रन्थो मर्कट्यङ्गारवल्लरी ॥ ४८ ॥

करंजके भेद ३–षड्ग्रन्थ १ मर्कटी २ अङ्गारवल्लरी ३ ॥ ४८ ॥

रोही रोहितकः प्लीहशत्रुर्दाडिमपुष्पकः ।

रोहिडाके नाम ४–रोहिन् १ रोहितक २ प्लीहशत्रु ३ दाडिमपुष्पक ४॥

गायत्री बालतनयः खदिरो दंतधावनः ॥ ४९ ॥

खैर अर्थात् कत्थेके नाम ४–गायत्री १ बालतनय २ खदिर ३ दन्तधावन ४ ॥ ४९ ॥

अरिमेदो विट्खदिरे–

दुर्गंधयुक्त खैरके नाम २–अरिमेद १ विट्खादिर २ ॥

–कदरः खदिरे सिते । सोमवल्को–

सफेद खैरके नाम २–कदर १ सोमवल्क २ ॥

–ऽथ व्याघ्रपुच्छगन्धर्वहस्तकौ॥५०॥एरण्ड उरुवूकश्च रुचकश्चित्रकश्च सः । चञ्चुः पञ्चांगुलो मण्डवर्धमानव्यडम्बकाः ॥ ५१ ॥

रेंड़ अर्थात् एरंडके नाम ११–व्याघ्रपुच्छ १ गन्धर्वहस्त २ ॥ ५० ॥ एरण्ड ३ उरुवूक ४ रुचक ५ चित्रक ६ चञ्चु ७ पञ्चांगुल ८ मंड ९ वर्धमान १० व्यडम्बक ११ ॥ ५१ ॥

अल्पा शमी शमीरः स्या–

छोटी शमी (साँइ) का नाम १–शमीर १।

–च्छमी सक्तुफला शिवा ।

शमी (जाँटी) के नाम ३–शमी १ सक्तुफला २ शिवा ३ ॥

पिण्डीतको मरुबकः श्वसनः करहाटकः ॥ ५२॥ शल्यश्च मदने–

मयनफलके नाम ६–पिण्डीतक १ मरुबक २ श्वसन ३ करहाट ४॥५२॥ शल्य ५ मदन ६ ॥

–शक्रपादपः पारिभद्रकः । भद्रदारु द्रुकिलिमं पीतदारु च दारु च ॥ ५३ ॥ पूतिकाष्ठं च सप्त स्युर्देवदारु–

देवदारुके नाम ८–शक्रपादप १ पारिभद्रक २ भद्रदारु ३ द्रुकिलिम ४ पीतदारु ५ दारु ६ ॥ ५३ ॥ पूतिकाष्ठ ७ देवदारु ८ ॥

–ण्यथ द्वयोः । पाटलिः पाटला मोघा काचस्थाली फलेरुहा ॥५४॥ कृष्णवृन्ता कुबेराक्षी–

पाढरीके नाम ७–पाटलि १ पाटला २ मोघा ३ काचस्थाली ४ फलेरुहा ५ ॥ ५४ ॥ कृष्णवृन्ता ६ कुबेराक्षी ७॥

–श्यामा तु महिलाह्वया । लता गोविन्दिनी गुन्द्रा प्रियंगुः फलिनी फली ॥ ५५ ॥ विष्वक्सेना गन्धफली कारम्भा प्रियकश्च सा ।

काकुनीके नाम १२–श्यामा १ महिलाह्वया २ लता ३ गोविन्दिनी ४ गुन्द्रा ५ प्रियंगु ६ फलिनी ७ फली ८ ॥ ५५ ॥ विष्वक्सेना ९ गन्धफली १० कारम्भा ११ प्रियक १२ ॥

मण्डूकपर्णपत्रोर्णनटकट्वंगटुण्टुकाः ॥ ५६ ॥ स्योनाकशुकनासर्क्षदीर्घवृन्तकुटन्नटाः । शोणकश्चारलौ–

सखिन (सोनापाठा) के नाम १२–मण्डूकपर्ण १ पत्रोर्ण २ नट ३ कट्वङ्ग ४ टुण्टुक ५ ॥ ५६ ॥ स्योनाक ६ शुकनास ७ ऋक्ष ८ दीर्घवृन्त ९ कुटन्नट १० शोणक ११ अरलु १२ ॥

–तिष्यफला त्वामलकी त्रिषु ॥५७॥ अमृता च वयःस्था च–

आमलोंके नाम ४–तिष्यफला १ आमलकी २॥५७॥अमृता ३ वयःस्था ४।

–त्रिलिङ्गस्तु विभीतकः । नाऽक्षस्तुषः कर्षफलो भूतावासः कलिद्रुमः ॥ ५८ ॥

बहेड़ेके नाम ६–विभीतक १ अक्ष २ तुष ३ कर्षफल ४ भूतावास ५ कलिद्रुम ६ ॥ ५८ ॥

अभया त्वव्यथा पथ्या कायस्था पूतनामृता । हरीतकी हैमवती चेतकी श्रेयसी शिवा ॥५९॥

हरडेके नाम ११–अभया १ अव्यथा २ पथ्या ३ कायस्था ४ पूतना ५ अमृता ६ हरीतकी ७ हैमवती ८ चेतकी ९ श्रेयसी १० शिवा ११ ॥५९॥

पीतद्रुः सरलः पूतिकाष्ठं चा-

सरलाके नाम ३-पीतद्रु १ सरल २ पूतिकाष्ठ ३ ॥

-ऽथ द्रुमोत्पलः । कर्णिकारः परिव्याधो-

कनेरके नाम ३-द्रुमोत्पल १कर्णिकार २ परिव्याध ३ ॥

-लकुचो लिकुचो डहुः॥६० ॥

बड़हरके नाम ३-लकुच १ लिकुच २ डहु ३ ॥ ६० ॥

पनसः कंटकिफलो-

कटहरके नाम २-पनस १ कण्टकिफल २ ॥

-निचुलो हिज्जलोऽम्बुजः ।

समुद्रफलके नाम ३-निचुल १ हिज्जल २ अंबुज ३ ॥

काकोदुम्बरिका फल्गुर्मलयूर्जघनेफला ॥ ६१ ॥

कठूमरके नाम ४-काकोदुम्बरिका १ फल्गु २ मलयू३जघनेफला४॥६१॥

अरिष्टः सर्वतोभद्रहिंगुनिर्यासमालकाः । पिचुमन्दश्च निंबे-

नींबके नाम ६-अरिष्ट १ सर्वतोभद्र २ हिंगुनिर्यास ३ मालक ४ पिचुमन्द ५ निंब ६ ॥

-ऽथ पिच्छिलाऽगुरुशिंशपाः ॥६२॥

सीसमके नाम ३-पिच्छिल १ अगुरु २ शिंशप ३ ॥ ६२ ॥

कपिला भस्मगर्भा सा-

कृष्णवर्ण सीसमका नाम-१ भस्मगर्भा १ ॥

-शिरीषस्तु कपीतनः । भण्डिलो-

शिरिसके नाम ३-शिरीष १ कपीतन २ भंडिल ३ ॥

-ऽप्यथ चाम्पेयश्चम्पको हेमपुष्पकः ॥ ६३ ॥

चम्पेके नाम ३-चाम्पेय १ चम्पक २ हेमपुष्पक ॥ ३ ॥ ६३ ॥

एतस्य कलिका गन्धफली स्या-

चम्पेके कलीका नाम १-गन्धफली १ ॥

-द्थ केसरे । बकुलो-

मौलसिरीके नाम २-केसर १ बकुल २ ॥

-वञ्जुलोऽशोके-

अशोकके नाम २-वञ्जुल १ अशोक २ ॥

-समौ करकदाडिमौ ॥ ६४ ॥

अनारके नाम २-करक १ दाडिम २ ॥ ६४ ॥

चाम्पेयः केसरो नागकेशरः काञ्चनाह्वयः ।

चंपापुष्पके नाम ४—चाम्पेय १ केसर २ नागरकेशर ३ काञ्चनाह्वय ४ ॥

जया जयन्ती तर्कारी नादेयी वैजयन्तिका ॥ ६५ ॥

जाहीके नाम ५—जया १ जयंती २ तर्कारी ३ नादेयी ४ वैजयन्तिका ५ ॥ ६५ ॥

श्रीपर्णमग्निमन्थः स्यात्कणिका गणिकारिका । जयो—

अरणीके नाम५—श्रीपर्ण १ अग्निमंथ २ कणिका ३ गणिकारिका ७ जय ५ ॥

—ऽथ कुटजः शक्रो वत्सको गिरिमल्लिका ॥ ६६ ॥

कुरैयाके नाम ४—कुटज १ शक्र २ वत्सक ३ गिरिमल्लिका ४ ॥ ६६ ॥

एतस्यैव कलिङ्गेन्द्रयवभद्रयवं फले ।

इन्द्रजव अर्थात् कुरैयाके फलके नाम ३—कलिंग १ इन्द्रयव २ भद्रयव ३ ॥

कृष्णपाकफलाविघ्नसुषेणाः करमर्दके ॥ ६७ ॥

करोंदाके नाम ४—कृष्णपाकफल १ अविघ्न २ सुषेण ३ करमर्दक ४॥६७॥

कालस्कन्धस्तमालः स्यात्तापिच्छो—

तमालके नाम ३—कालस्कन्ध १ तमाल २ तापिच्छ ३ ॥

—ऽप्यथ सिन्दुके । सिन्दुवारेन्द्रसुरसौ निर्गुण्डीन्द्राणिकेत्यपि ६८॥

स्योंडी (सिंभालू) के नाम५—सिंदुक १ सिन्दुवार २ इन्द्रसुरस ३ निर्गुण्डी ४ इन्द्राणिका ५ ॥ ६८ ॥

वेणी खरा गरी देवताडो जीमूत इत्यपि ।

वृन्दाल वृक्ष जो गुजरातमें गोड़ी प्रसिद्ध है उसके नाम ५—वेणी १ खरा २ गरी ३ देवताड ४ जीमूत ५ ॥

श्रीहस्तिनी तु भूरुण्डी—

घुइयां (अरवी) के नाम २—श्रीहस्तिनी १ भूरुण्डी २ ॥

—तृणशून्यं तु मल्लिका ॥६८॥ भूपदी शीतभीरुश्च—

बेला (मल्लिका) के नाम ४—तृणशून्य १ मल्लिका २ ॥ ६९ ॥ भूपदी ३ शीतभीरु ४ ॥

—सैवास्फोटा वनोद्भवा ।

वनवेलाका नाम १—आस्फोटा १॥

शेफालिका तु सुवहा निर्गुण्डी नीलिका च सा ॥ ७० ॥

न्यवारी (काले पुष्पवाली निर्गुण्डी) के नाम ४—शेफालिका १ सुवहा २ निर्गुण्डी ३ नीलिका ४ ॥ ७० ॥

सितासौ श्वेतसुरसा भूतवेश्य—

उजडी नेवाडीके नाम २—श्वेत-सुरसा १ भूतवेशी २ ॥

—थ मागधी । गणिका यूथिकाम्बष्ठा—

जूहीके नाम ४—मागधी १ गणिका २ यूथिका ३ अम्बष्ठा ४ ॥

—सा पीता हेमपुष्पिका ॥७१॥

पीले फूलकी जूहीका नाम १ हेमपुष्पिका १ ॥ ७१ ॥

अतिमुक्तः पुण्ड्रकः स्याद्वासन्ती माधवी लता ।

वसन्तीके नाम ५—अतिमुक्त १ पुण्ड्रक २ वासन्ती ३ माधवी ४ लता ५॥

सुमना मालती जातिः—

चमेलीके नाम ३—सुमनस् १ मालती २ जाति ३ ॥

—सप्तला नवमालिका ॥ ७२ ॥

वर्षाकी बेलीके नाम २—सप्तला १ नवमालिका २ ॥ ७२ ॥

माध्यं कुन्दं—

कुन्दके नाम २—माध्य १ कुन्द २ ॥

—रक्तकस्तु बन्धूको बन्धुजीवकः।

दुपहरी फूलके नाम ३—रक्तक १ बंधूक २ बंधुजीवक ३ ॥

सहा कुमारी तरणि—

घीकारके नाम ३—सहा १ कुमारी २ तरणि ३ ॥

—रम्लानस्तु महासहा ॥ ७३ ॥

कठैयाके नाम २—अम्लान १ महासहा २ ॥ ७३ ॥

तत्र शोणे कुरबक—

लाल कटैयाका नाम १—कुरबक १॥

—स्तत्र पीते कुरण्टकः ।

पीली कटैयाका नाम १-कुरण्टक १ ॥

नीली झिण्टी द्वयोर्बाणा दासी चार्तगलश्च सा ॥ ७४ ॥

नीली झिंडीके नाम ३—बाणा १ दासी २ आर्तगल ३ ॥ ७४ ॥

सैरेयकस्तु झिण्टी स्या—

झिंडीमात्रके नाम २—सैरेयक १ झिण्टी २ ॥

—त्तस्मिन्कुरबकोऽरुणे ।

लाल झिंडीका नाम १—कुरबक १॥

पीता कुरण्टको झिंटी तस्मिन्सहचरी द्वयोः ॥ ७५ ॥

पीली झिंडीके नाम २—कुरण्टक १ सहचरी २ ॥ ७५ ॥

ओण्ड्रपुष्पं जपापुष्पं—

गुड़हरके नाम २—ओण्ड्रपुष्प १ जपापुष्प २ ॥

—वज्रपुष्पं तिलस्य यत् ।

तिलीके फूलका नाम १—वज्रपुष्प १ ॥

प्रतिहासशतप्रासचण्डातहयमारकाः ॥ ७६ ॥ करवीरे—

कंदइल (कनेर) के नाम ५—प्रतिहास १ शतप्रास २ चण्डात ३ हयमारक ४ ॥ ७६ ॥ करवीर ५ ॥

—करीरे तु क्रकरग्रन्थिलावुभौ ।

करीरके नाम ३—करीर १ क्रकर २ ग्रन्थिल ३ ॥

उन्मत्तः कितवो धूर्तो धत्तूरः कनकाह्वयः ॥ ७७ ॥ मातुलो मदनश्चा—

धतूरेके नाम ७—उन्मत्त १ कितव २ धूर्त २ धत्तूर ४ कनकाह्वय५॥७७॥ मातुल ६ मदन ७ ॥

—स्य फले मातुलपुत्रकः ।

धतूरेके फलका नाम १—मातुलपुत्रक १ ॥

फलपूरो बीजपूरो—

बिजौरा निंबूके नाम २—फलपूर १ बीजपूर २ ॥

—रुंचको मातुलुङ्गके ॥ ७८ ॥

बिजौरा नींबूके भेद—मातुलुङ्ग १ रुचक २ ॥ ७८ ॥

समीरणो मरुबकः प्रस्थपुष्पः फणिज्जकः । जम्बीरो—

मरुआके नाम ५—समीरण १ मरुबक २ प्रस्थपुष्प ३ फणिज्जक ४ जंबीर ५ ॥

—ऽप्यथ पर्णासे कठिञ्जरकुठेरकौ ॥ ७९ ॥

पनसके नाम ३—पर्णास १ कठिञ्जर २ कुठेरक ३ ॥ ७९ ॥

सितेऽर्जकोऽत्र—

श्वेत पनसका नाम १—अर्जक १॥

—पाठी तु चित्रको वह्निसंज्ञकः ।

चीतके नाम ३—पाठी १ चित्रक२ वह्निसंज्ञक ३ और जितने आग्निके नाम उतने भी चीतके नाम हैं ॥

अर्काह्ववसुकाऽऽस्फोटगणरूपविकीरणाः ॥ ८० ॥ मन्दारश्चार्कपर्णो—

आकके नाम ७—अर्काह्व १ वसुक२ आस्फोट ३ गणरूप ४ विकीरण ५ ॥ ८० ॥ मन्दार ६ अर्कपर्ण ७ और सूर्यके सब नाम आकके नाम हैं॥

—ऽत्र शुक्लेऽलर्कप्रतापसौ ।

श्वेत आकके नाम २—अलर्क १ प्रतापस २ ॥

शिवमल्ली पाशुपत एकाष्ठीलो बुको वसुः ॥ ८१ ॥

गूमेके नाम ५—शिवमल्ली १ पाशुपत २ एकाष्ठील ३ बुक ४ वसु ५ ॥ ८१ ॥

वन्दा वृक्षादनी वृक्षरुहा जीवन्तिकेत्यपि ।

आकाशवेलिके नाम ४--वन्दा १ वृक्षादनी २ वृक्षरुहा ३ जीवन्तिका ४ ॥

वत्सादनी छिन्नरुहा गुडूची तन्त्रिकाऽमृता ॥ ८२ ॥ जीवन्तिका सोमवल्ली विशल्या मधुपर्ण्यपि ।

गिलोयके नाम ९—वत्सादनी १ छिन्नरुहा २ गुडूची ३ तन्त्रिका ४ अमृता ५ ॥ ८२ ॥ जीवंतिका ६ सोमवल्ली ७ विशल्या ८ मधुपर्णी ९ ॥

मूर्वा देवी मधुरसा मोरटा तेजनी स्रवा ॥ ८३ ॥ मधूलिका मधुश्रेणी गोकर्णी पीलुपर्ण्यपि ।

किनारके नाम १०—मूर्वा १ देवी २ मधुरसा ३ मोरटा ४ तेजनी ५ स्रवा ६ ॥ ८३ ॥ मधूलिका ७ मधुश्रेणी ८ गोकर्णी ९ पीलुपर्णी १० ॥

पाठाम्बष्ठा विद्धकर्णी स्थापनी श्रेयसी रसा ॥ ८४ ॥ एकाष्ठीला पापचेली प्राचीना वनतिक्तिका ।

पेठेके नाम १०—पाठा १ अम्बष्ठा २ विद्धकर्णी ३ स्थापनी ४ श्रेयसी ५ रसा ६ ॥ ८४ ॥ एकाष्ठीला ७ पापचेली ८ प्राचीना ९ वनतिक्तिका १० ॥

कटुः कटम्भराऽशोकरोहिणी कटुरोहिणी ॥ ८५ ॥ मत्स्यपित्ता कृष्णभेदी चक्रांगी शकुलादनी ॥

कुटकीके नाम ८—कटु १ कटम्भरा २ अशोकरोहिणी ३ कटुरोहिणी ४ ॥ ८५ ॥ मत्स्यपित्ता ५ कृष्णभेदी ६ चक्रांगी ७ शकुलादनी ८ ॥

आत्मगुप्ताजहाऽव्यण्डा कण्डूरा प्रावृषायणी ॥ ८६ ॥ ऋष्यप्रोक्ता शूकशिम्बिः कपिकच्छुश्च मर्कटी ।

कचके नाम ९—आत्मगुप्ता १ अजहा २ अव्यण्डा ३ कण्डूरा ४ प्रावृषायणी ५ ॥ ८६ ॥ ऋष्यप्रोक्ता ६ शूकशिम्बि ७ कपिकच्छु ८ मर्कटी ९ ॥

चित्रोपचित्रा न्यग्रोधी द्रवन्ती शम्बरी वृषा ॥ ८७ ॥ प्रत्यक्छ्रेणी सुतश्रेणी रण्डा मूषिकपर्ण्यपि ।

मूलीके नाम १०—चित्रा १ उपचित्रा २ न्यग्रोधी ३ द्रवन्ती ४ शम्बरी ५ वृषा ६ ॥ ८७ ॥ प्रत्यक्श्रेणी ७ सुतश्रेणी ८ रण्डा ९ मूषिकपर्णी १० ॥

अपामार्गः शैखरिकोऽधामार्गवमयूरकौ ॥ ८८ ॥ प्रत्यक्पर्णी केशपर्णी किणिही खरमञ्जरी ।

अपामार्गके नाम ८—अपामार्ग १

शैखरिक २ अधामार्गव ३ मयूरक ४ ॥ ८८ ॥ प्रत्यक्पर्णी ५ केशपर्णी ६ किणिही ७ खरमञ्जरी ८ ॥

हञ्जिका ब्राह्मणी पद्मा भार्ङ्गी ब्राह्मणयष्टिका ॥ ८९ ॥ अंगारवल्ली बालेयशाकबर्बरवर्धकाः ।

भारंगीके नाम ९—हञ्जिका १ ब्राह्मणी २ पद्मा ३ भार्ङ्गी ४ ब्राह्मणयष्टिका ५ ॥ ८९ ॥ अंगारवल्ली ६ बालेयशाक ७ बर्बर ८ वर्धक ९ ॥

मञ्जिष्ठा विकसा जिंगी समंगा कालमेषिका ॥ ९० ॥ मण्डूकपर्णी मण्डीरी भण्डी योजनवल्ल्यपि ।

मञ्जीठके नाम ९—मंजिष्ठा १ विकसा २ जिंगी ३ समंगा ४ कालमेषिका ५ ॥ ९० ॥ मण्डूकपर्णी ६ मण्डीरी ७ भण्डी ८ योजनवल्ली ९ ॥

यासो यवासो दुःस्पर्शो धन्वयासः कुनाशकः ॥ ९१ ॥ रोदनी कच्छुरानन्ता समुद्रांता दुरालभा ।

जवासेके नाम १० —यास १ यवास २ दुस्पर्श ३ धन्वयास ४ कुनाशक ५ ॥ ९१ ॥ रोदनी ६ कच्छुरा ७ अनन्ता ८ समुद्रान्ता ९ दुरालभा १० ॥

पृश्निपर्णी पृथक्पर्णी चित्रपर्ण्यंघ्रिपर्णिका ॥ ९२ ॥ क्रोष्टुविन्ना सिंहपुच्छी कलशी धावनी गुहा ।

पिठिवनके नाम ९—पृश्निपर्णी १ पृथक्पर्णी २ चित्रपर्णी ३ अंघ्रिपर्णिका ४ ॥ ९२ ॥ क्रोष्टुविन्ना ५ सिंहपुच्छी ६ कलशी ७ धावनी ८ गुहा ९ ॥

निदिग्धिका स्पृशी व्याघ्री बृहती कण्टकारिका ॥ ९३ ॥ प्रचोदनी कुली क्षुद्रा दुःस्पर्शा राष्ट्रिकेत्यपि ।

भटकटैया (कटेहली) के नाम १०—निदिग्धिका १ स्पृशी २ व्याघ्री ३ बृहती ४ कण्टकारिका ५ ॥ ९३ ॥ प्रचोदनी ६ कुली ७ क्षुद्रा ८ दुःस्पर्शा ९ राष्ट्रिका १० ॥

नीली काला क्लीतकिका ग्रामीणा मधुपर्णिका ॥ ९४ ॥ रञ्जनी श्रीफली तुत्था द्रोणी दोला च नीलिनी ।

नीलके नाम ११—नीली १ काला २ क्लीतकिका ३ ग्रामीणा ४ मधुपर्णिका ५ ॥ ९४ ॥ रंजनी ६ श्रीफली ७ तुत्था ८ द्रोणी ९ दोला १० नीलिनी ११ ।

अवल्गुजः सोमराजी सुवल्लिः सोमवल्लिका ॥ ९५ ॥ कालमेषी कृष्णफला बाकुची पूतिफल्यपि ।

बाकुचीके नाम ८—अवल्गुज १ सोमराजी २ सुवल्लि ३ सोमवल्लिका ४॥९५॥ कालमेषी ५ कृष्णफला ६ बाकुची ७ पूतिफली ८॥

कृष्णोपकुल्या वैदेही मागधी चपला कणा ॥ ९६ ॥ उषणा पिप्पली शौण्डी कोला-

पीपलके नाम १०—कृष्णा १ उपकुल्या २ वैदेही ३ मागधी ४ चपला ५ कणा ६ ॥ ९६ ॥ उषणा ७ पिप्पली ८ शौण्डी ९ कोला १० ॥

—ऽथ करिपिप्पली।कपिवल्ली कोलवल्ली श्रेयसी वशिरः पुमान् ९७ ॥

गजपीपलके नाम ५—करिपिप्पली १ कपिवल्ली २ कोलवल्ली ३ श्रेयसी ४ वशिर ५ ॥ ९७ ॥

चव्यं तु चविका-

चाबके नाम २—चव्य १ चविका २॥

—काकचिञ्चागुञ्जे तु कृष्णला।

घुँघुची (चिरमठी) के नाम ३—काकचिंचा १ गुंजा २ कृष्णला ३ ॥

पलंकषा त्विक्षुगन्धा श्वदंष्ट्रा स्वादुकण्टकः ॥ ९८ ॥ गोकण्टको गोक्षुरको वनशृंगाट इत्यपि।

गोखरूके नाम ७—पलंकषा १ इक्षुगन्धा २ श्वदंष्ट्रा ३ स्वादुकण्टक ४ ॥ ९८ ॥ गोकण्टक ५ गोक्षुरक ६ वनशृङ्गाट ७॥

विश्वा विषा प्रतिविषाऽतिविषोपविषारुणा ॥ ९९ ॥ शृंगी महौषधं चा-

अतीसके नाम ८—विश्वा १ विषा२ प्रतिविषा ३ अतिविषा ४ उपविषा ५ अरुणा ६॥९९॥ शृंगी ७ महौषध८ ॥

—ऽथ क्षीरावी दुग्धिका समे।

दूधीके नाम२—क्षीरावी १ दुग्धिका२॥

शतमूली बहुसुताऽभीरुरिन्दीवरी वरी ॥ १०० ॥ ऋष्यप्रोक्ताऽभीरुपत्रीनारायण्यः शतावरी । अहेरु-

शतावरीके नाम १०- शतमूली १ बहुसुता २ अभीरु ३ इन्दीवरी ४ वरी ५ ॥ १०० ॥ ऋष्यप्रोक्ता ६ अभीरुपत्री ७ नारायणी ८ शतावरी ९ अहेरु १० ॥

—ऽथ पीतद्रुकालेयकहरिद्रवः ॥ १०१ ॥ दार्वी पचम्पचा दारुहरिद्रा पर्जनीत्यपि।

दारुहलदीके नाम ७—पीतद्रु १ कालेयक २ हरिद्रु३ ॥ १०१ ॥ दार्वी४ पचंपचा ५ दारुहरिद्रा ६ पर्जनी ७ ॥

वचोग्रगन्धा षड्ग्रन्था गोलोमी शतपर्विका ॥ १०२ ॥

वचके नाम ५—वचा १ उग्रगन्धा २ षड्ग्रन्था ३ गोलोमी ४ शतपर्विका ५ ॥ १०२ ॥

शुक्ला हैमवती—

जिसका श्वेत जड हो उस वचका नाम १—हैमवती १ ॥

—वैद्यमातृसिंह्यौ तु वाशिका । वृषोऽटरूषः सिंहास्यो वासिको वाजिदन्तकः ॥ १०३ ॥

अडूसेके नाम ८—वैद्यमातृ १ सिंही २ वाशिका ३ वृष ४ अटरूष ५ सिंहास्य ६ वासिक ७ वाजिदन्तक ८ ॥१०३॥

आस्फोटा गिरिकर्णी स्याद्विष्णुक्रान्तापराजिता ।

विष्णुक्रान्ताके नाम ४—आस्फोटा १ गिरिकर्णी २ विष्णुक्रान्ता ३ अपराजिता ४ ॥

इक्षुगन्धा तु काण्डेक्षुकोकिलाक्षेक्षुरक्षुराः ॥ १०४ ॥

तालमखानेके नाम ५—इक्षुगन्धा १ काण्डेक्षु २ कोकिलाक्ष ३ इक्षुर ४ क्षुर ५ ॥ १०४ ॥

शालेयः स्याच्छीतशिवश्छत्रा मधुरिका मिसिः । मिश्रेया—

सौंफके नाम ६—शालेय १ शीतशिव २ छत्रा ३ मधुरिका ४ मिसि ५ मिश्रेया ६ ॥

—ऽथ सीहुण्डो वज्रः स्नुक्स्त्री स्नुही गुडा ॥१०५॥ समन्तदुग्धा—

सेहुंड (थूहर) के नाम ६—सीहुंड १ वज्र २ स्नुह् ३ स्नुही ४ गुडा ५ ॥ ॥ १०५ ॥ समन्तदुग्धा ६ ॥

—ऽथो वेल्लममोघा चित्रतण्डुला । तण्डुलश्च कृमिघ्नश्च विडङ्गं पुंनपुंसकम् ॥ १०६ ॥

वायविडंगके नाम ६—वेल्ल १ अमोघा २ चित्रतण्डुला ३ तण्डुल ४ कृमिघ्न ५ विडङ्ग ६ ॥ १०६ ॥

बला वाट्यालको—

बरियरा (खरहँटी) के नाम २—बला १ वाट्यालक २ ॥

—घण्टारवा तु शणपुष्पिका ।

सनाटाके नाम २—घण्टारवा १ शणपुष्पिका २ ॥

मृद्वीका गोस्तनी द्राक्षा स्वाद्वी मधुरसेति च ॥ १०७ ॥

दाखके नाम ५—मृद्वीका १ गोस्तनी २ द्राक्षा ३ स्वाद्वी ४ मधुरस ५ ॥ १०७ ॥

सर्वानुभूतिः सरला त्रिपुटा त्रिवृता त्रिवृत् । त्रिभण्डी रोचनी—

श्वेत त्रिधारा (निसोत) के नाम ७—सर्वानुभूति १ सरला २ त्रिपुटा ३ त्रिवृता ४ त्रिवृत् ५ त्रिभण्डी ६ रोचनी ७ ॥

-श्यामापालिन्द्यौ तु सुषेणिका ॥ १०८ ॥ काला मसूरविदलार्धऽ-चन्द्रा कालमेषिका ।

काले त्रिधारे (निसोत) के नाम ७–श्यामा १ पालिन्दी २ सुषेणिका ३ ॥ १०८ ॥ काला ४ मसूरविदला ५ अर्द्धचन्द्रा ६ कालमेषिका ७ ॥

मधुकं क्लीतकं यष्टीमधुकं मधुयष्टिका ॥ १०९ ॥

जेठीमधुके नाम ४–मधुक १ क्लीतक २ यष्टीमधुक ३ मधुयष्टिका ४ ॥ १०९ ॥

विदारी क्षीरशुक्लेक्षुगन्धा क्रोष्ट्री तु या सिता ।

कृष्णभूकूष्माण्डके नाम ४–विदारी १ क्षीरशुक्ला २ इक्षुगन्धा ३ क्रोष्ट्री ४॥

अन्या क्षीरविदारी स्यान्महाश्वेतर्क्षगन्धिका ॥ ११० ॥

शुक्लभूकूष्माण्डके नाम ३–क्षीरविदारी १ महाश्वेता २ ऋक्षगन्धिका ३ ॥ ११० ॥

लांगली शारदी तोयपिप्पली शकुलादनी ।

जलपीपलके नाम ४–लांगली १ शारदी २तोयपिप्पली ३शकुलादनी ४॥

खराश्वा कारवी दीप्यो मयूरो लोचमस्तकः ॥ १११ ॥

मयूरशिखा वा अजमोदके नाम–५ खराश्वा १ कारवी २ दीप्य ३ मयूर ४ लोचमस्तक ५ ॥ १११ ॥

गोपी श्यामा शारिवा स्यादनन्तोत्पलशारिवा ।

कालीशाम्ब (अनंतमूल) के नाम ५–गोपी १ श्यामा २ शारिवा ३ अनंता ४ उत्पलशारिवा ५ ॥

योग्यमृद्धिः सिद्धिलक्ष्म्यौ-

ऋद्धि ओषधिके नाम ४–योग्य १ ऋद्धि २ सिद्धि ३ लक्ष्मी ४ ॥

-वृद्धेरप्याह्वया इमे ॥ ११२ ॥

ये ही नाम वृद्धिनामक ओषधिके भी होते हैं ॥ ११२ ॥

कदली वारणबुसा रम्भा मोचांशुमत्फला । काष्ठीला-

केलेके नाम ६–कदली १ वारणबुसा २ रम्भा ३ मोचा ४ अंशुमत्फला ५ काष्ठीला ६ ॥

-मुद्गपर्णी तु काकमुद्गा सहेत्यपि ॥ ११३ ॥

वनमूंगके नाम ३–मुद्गपर्णी १ काकमुद्गा १ सहा ३ ॥ ११३ ॥

वार्ताकी हिंगुली सिंही भण्टाकी दुष्प्रधर्षिणी ।

वनभांटे (रानकटेहली) के नाम ५–

वार्ताकी १ हिंगुली २ सिंही ३ भण्टाकी ४ दुष्प्रधर्षिणी ५ ॥

नाकुली सुरसा रास्ना सुगन्धा गन्धनाकुली ॥ ११४ ॥ नकुलेष्टा भुजंगाक्षी छत्राकी सुवहा च सा ।

रासन (तुलसी) के नाम ९—नाकुली १ सुरसा २ रास्ना ३ सुगंधा ४ गन्धनाकुली ५॥ ११४ ॥ नकुलेष्टा ६ भुजंगाक्षी ७ छत्राकी ८ सुवहा ९ ॥

विदारिगन्धांशुमती सालपर्णी स्थिरा ध्रुवा ॥ ११५ ॥

शालपर्णी वा सरिवनके नाम ५—विदारिगन्धा १ अंशुमती १ सालपर्णी ३ स्थिरा ४ ध्रुवा ५ ॥ ११५ ॥

तुण्डिकेरी समुद्रान्ता कार्पासी बदरेति च ।

कपासके नाम ४—तुंडिकेरी १ समुद्रांता २ कार्पासी ३ बदरा ४ ॥

भारद्वाजी तु सा वन्या—

वनकी कपास अर्थात् नरमाका नाम १—भारद्वाजी १ ॥

—शृंगी तु ऋषभो वृषः ॥११६॥

काकड़ासिंगीके नाम ३—शृङ्गी १ ऋषभ २ वृष ३ ॥ ११६ ॥

गांगेरुकी नागबला झषा ह्रस्वगवेधुका ॥

ककही (गँगेरन) के नाम ४—गांगेरुकी १ नागबला २ झषा ३ ह्रस्वगवेधुका ४ ॥

धामार्गवो घोषकः स्या—

श्वेत तुरईके नाम २—धामार्गव १ घोषक २ ॥

—न्महाजाली स पीतकः ॥ ११७ ॥

पीलेफूलकी तुरईका नाम १—महाजाली १ ॥ ११७ ॥

ज्योत्स्नी पटोलिका जाली—

चचेंड़ेके नाम ३—ज्योत्स्नी १ पटोलिका २ जाली ३ ॥

—नादेयी भूमिजम्बुका ।

भूमिजामुनके नाम २—नादेयी १ भूमिजम्बुका २ ॥

स्याल्लांगलिक्यग्निशिखा—

करियारी (कलहारी) के नाम२—लांगलिकी १ अग्निशिखा २ ॥

—काकांगी काकनासिका ११८॥

काकजंघा अर्थात् कौवाटोढी (मकोह) के नाम २—काकांगी १ काकनासिका २ ॥ ११८ ॥

गोधापदी तु सुवहा—

हंसपदी (लज्जावंती) के नाम२—गोधापदी १ सुवहा २ ॥

—मुसली तालमूलिका ।

मुसलीके नाम २—मुसली १ तालमूलिका २ ॥

अजशृंगी विषाणी स्या-

मेढ़ासींगीके नाम २-अजशृंगी १ विषाणी २ ॥

-द्गोजिह्वादार्विके समे ॥११९॥

गोमीके नाम २-गोजिह्वा १ दार्विका २ ॥ ११९ ॥

ताम्बूलवल्ली ताम्बूली नागवल्लच-

नागबेल अर्थात् पानके नाम ३-तांबूलवल्ली १ तांबूली २ नागवल्ली ३॥

-प्यथ द्विजा । हरेणू रेणुका कौन्ती कपिला भस्मगन्धिनी १२०

गगनधूरिके नाम ६-द्विजा १ हरेणु २ रेणुका ३ कौन्ती ४ कपिला ५ भस्मगन्धिनी ६ ॥ १२० ॥

एलावालुकमैलेयं सुगन्धि हरिवालुकम् । वालुकं चा-

एलुआ नामक गन्धद्रव्य विशेषके नाम ५-एलावालुक १ ऐलेय २ सुगन्धि ३ हरिवालुक ४ वालुक ५ ॥

-थ पालंक्यां मुकुन्दः कुन्दकुन्दुरू ॥ १२१ ॥

पालवाके नाम ४-पालंकी १ मुकुन्द २ कुन्द ३ कुन्दुरु ४॥१२१॥

वालं ह्रीबेरबर्हिष्ठोदीच्यं केशाम्बु नाम च ।

नेत्रवालाके नाम ४-वाला १ ह्रीबेर २ बर्हिष्ठ ३ उदीच्य ४ ॥ एवं केशके और उदकके सब नाम ॥

कालानुसार्यवृद्धाश्मपुष्पशीतशिवानि तु ॥ १२२ ॥ शैलेयं-

शिलाजीतके नाम ५-कालानुसार्य १ वृद्ध २ अश्मपुष्प ३ शीतशिव ४ ॥ १२२ ॥ शैलेय ५ ॥

-तालपर्णी तु दैत्या गंधकुटी मुरा । गंधिनी-

मुरैठी वा तालीसपत्रके नाम ५-तालपर्णी १ दैत्या २ गन्धकुटी ३ मुरा ४ गंधिनी ५ ॥

-गजभक्ष्या तु सुवहा सुरभी रसा ॥ १२३ ॥ महेरुणा कुन्दुरुकी सल्लकी ह्लादिनीति च ।

कांसके नाम ८-गजभक्ष्या १ सुवहा २ सुरभि ३ रसा ४ ॥ १२३॥ महेरुणा ५ कुन्दुरुकी ६ सल्लकी ७ ह्लादिनी ८ ॥

अग्निज्वालासुभिक्षे तु धातकी धातुपुष्पिका ॥ १२४ ॥

धव (धायफूल) के नाम ४-अग्निज्वाला १ सुभिक्षा २ धातकी ३ धातुपुष्पिका ४ ॥ १२४ ॥

पृथ्वीका चन्द्रवालैला निष्कुटिर्बहुला-

बड़ी इलायचीके नाम ५—पृथ्वीका १ चन्द्रवाला २ एला ३ निष्कुटी ४ बहुला ५ ॥

—ऽथ सा । सूक्ष्मोपकुञ्चिका तुत्था कोरङ्गी त्रिपुटा त्रुटिः १२५॥

गुजराती (छोटी) इलायचीके नाम ५—उपकुञ्चिका १ तुत्था २ कोरङ्गी ३ त्रिपुटा ४ त्रुटि ५ ॥१२५ ॥

व्याधिः कुष्ठं पारिभाव्यं व्याप्यं पाकलमुत्पलम् ।

कूठके नाम ६—व्याधि १ कुष्ठ २ पारिभाव्य ३ व्याप्य ४ पाकल ५ उत्पल ६ ॥

शंखिनी चोरपुष्पी स्यात्केशि-

शंखाहुलीके नाम ३—शंखिनी १ चोरपुष्पी २ केशिनी ३ ॥

—न्यथ वितुन्नकः ॥ १२६ ॥ झटामलाज्झटा ताली शिवा तामलकीति च ।

भूम्यामलकी अर्थात् अँबरीके नाम ७—वितुन्नक १ ॥ १२६ ॥ झटा २ अमला ३ अज्झटा ४ ताली ५ शिवा ६ तामलकी ७ ॥

प्रपौण्डरीकं पौण्डर्य-

गुलाबके नाम २—प्रपौण्डरीक १ पौण्डर्य २ ॥

—मथ तुन्नः कुबेरकः ॥ १२७ ॥ कुणिः कच्छः कान्तलको नन्दिवृक्षो—

तुनके नाम ६—तुन्न १ कुबेरक २ ॥ १२७ ॥ कुणि ३ कच्छ ४ कान्तलक ५ नंदिवृक्ष ६ ॥

—ऽथ राक्षसी । चण्डा धनहरी क्षेमदुष्पत्रगणहासकाः ॥ १२८ ॥

धनहरीके नाम ६—राक्षसी १ चण्डा २ धनहरी ३ क्षेम ४ दुष्पत्र ५ गणहासक ६ ॥ १२८ ॥

व्याडायुधं व्याघ्रनखं करजं चक्रकारकम् ।

नखा(गन्धद्रव्य) के नाम ४—व्याडायुध १ व्याघ्रनख २ करज ३ चक्रकारक ४ ॥

सुषिरा विद्रुमलता कपोताङ्घ्रि-र्नटी नली ॥ १२९ ॥

मालकांगनीके नाम ५—सुषिरा १ विद्रुमलता २ कपोतांघ्रि ३ नटी ४ नली ५ ॥ १२९ ॥

धमन्यञ्जनकेशी च हनुर्हट्टविलासिनी ।

ककूदनिके नाम ४—धमनि १ अञ्जनकेशी २ हनु ३ हट्टविलासिनी ४ ॥

शुक्तिः शंखः खुरः कोलदलं नख-

नखी नाम गन्धद्रव्यविशेषके नाम ५–शुक्ति १ शंख २ खुर ३ कोलदल ४ नख ५ ॥

–मथाढकी ॥ १३० ॥ काक्षी मृत्स्ना तुवरिका मृत्तालकसुराष्ट्रजे ।

अरहरके नाम ६–आढकी १ ॥ ॥ १३० ॥ काक्षी २ मृत्स्ना ३ तुवरिका ४ मृत्तालक ५ सुराष्ट्रज ६ ॥

कुटन्नटं दाशपुरं वानेयं परिपेलवम् ॥ १३१ ॥ प्लवगोपुरगोनर्दकैवर्तीमुस्तकानि च ।

मोथाके नाम ९–कुटन्नट १दाशपुर २ वानेय ३ परिपेलव ४॥१३१॥प्लव४ गोपुर ६ गोनर्द ७ कैवर्त्ती८मुस्तक ९॥

ग्रन्थिपर्णं शुकं बर्हपुष्पं स्थौणेयकुक्कुरं ॥ १३२ ॥

ककरोंके नाम ५–ग्रन्थिपर्ण१शुक२ बर्हपुष्प ३ स्थौणेय ४ कुक्कुर॥१३२॥

मरुन्माला तु पिशुना स्पृक्का देवी लता लघुः । समुद्रान्ता वधूः कोटिवर्षा लंकोपिकेत्यपि ॥ १३३ ॥

अस्परकके नाम १०–मरुन्माला १ पिशुना २ स्पृक्का ३ देवी ४ लता ५ लघु ६ समुद्रान्ता ७ वधू ८ कोटिवर्षा ९ लंकोपिका १० ॥ १३३ ॥

तपस्विनी जटा मांसी जटिला लोमशा मिशी ।

जटामांसीके नाम ६–तपस्विनी १ जटा २ मांसी ३ जटिला ४ लोमशा ५ मिशी ६ ॥

त्वक्पत्रमुत्कटं भृंगं त्वचं चोचं वराङ्गकम् ॥ १३४ ॥

तजके नाम ६–त्वक्पत्र १ उत्कट २ भृङ्ग३त्वच५चोच५वरांगक ६॥१३४॥

कर्चूरको द्राविडकः काल्पको वेधमुख्यकः ।

कचूरके नाम ४–कर्चूरक १ द्राविडक ५ काल्पक ३ वेधमुख्यक ४ ॥

ओषध्यो जातिमात्रे स्यु–

सब अन्नोंका नाम १–ओषधि १॥

–रजातौ सर्वमौषधम् ॥१३५॥

अन्नमात्रका नाम १–औषध १ ॥ १३५ ॥

शाकाख्यं पत्रपुष्पादि–

तर्कारीमात्रका नाम १–शाक १ ॥

–तण्डुलीयोऽल्पमारिषः ।

चौराईके नाम २–तण्डुलीय १ अल्पमारिष २ ॥

विशल्याग्निशिखाऽनन्ता फलिनी शक्रपुष्पिका ॥ १३६ ॥

कलियारी (इन्द्रपुष्पीके) नाम ५–विशल्या १ अग्निशिखा २ अनन्ता ३ फलिनी ४ शक्रपुष्पिका ५ ॥ १३६ ॥

स्यादृक्षगन्धा छगलान्त्र्यावेगी वृद्धदारकः । जुङ्गो-

विधाराके नाम५—ऋक्षगन्धा१छगलान्त्री२आवेगी ३वृद्धदारक४जुङ्ग ५॥

—ब्राह्मी तु मत्स्याक्षी वयस्था सोमवल्लरी ॥ १३७ ॥

ब्राह्मीके नाम ४—ब्राह्मी १मत्स्याक्षी २ वयस्था ३ सोमवल्लरी ४ ॥ १३७॥

पटुपर्णी हैमवती स्वर्णक्षीरी हिमावती ।

मकोइके नाम ४—पटुपर्णी १ हैमवती २ स्वर्णक्षीरी ३ हिमावती ४ ॥

हयपुच्छी तु काम्बोजी माषपर्णी महासहा ॥ १३८ ॥

मूंगके नाम ४—हयपुच्छी१काम्बोजी २ माषपर्णी ३ महासहा ४ ॥ १३८॥

तुण्डिकेरी रक्तफला बिम्बिका पीलुपर्ण्यपि ।

कुंदुरीके नाम ४—तुण्डिकेरी १ रक्तफला २ बिम्बिका ३ पीलुपर्णी ४॥

बर्बरा कबरी तुंगी खरपुष्पाऽजगान्धिका॥ १३९ ॥

बर्बराके नाम ५—बर्बरा १ कबरी२ तुंगी३खरपुष्पा४अजगन्धिका५।१३९॥

एलापर्णी तु सुवहा रास्ना युक्तरसा च सा ।

एलापर्णीके नाम ४—एलापर्णी १ सुवहा २ रास्ना ३ युक्तरसा ४ ॥

चांगेरी चुक्रिका दन्तशठाम्बष्ठाम्ललोणिका ॥ १४० ॥

अम्लोना वा चूकाके नाम ५—चांगेरी १ चुक्रिका २ दन्तशठा ३ अम्बष्ठा ४ अम्ललोणिका ५ ॥ १४०॥

सहस्रवेधी चुक्रोऽम्लवेतसः शतवेध्यपि ।

अमलवेतके नाम ४—सहस्रवेधी १ चुक्र २ अम्लवेतस ३ शतवेधी ४ ॥ (किसी किसीके मतसे चांगेरी आदि९ भी अमलवेतके नाम हैं) ॥ ९ ॥

नमस्कारी गण्डकारी समंगा खदिरेत्यपि ॥ १४१ ॥

लजालूके नाम४—नमस्कारी १गण्डकारी २ समंगा ३ खदिरा ४ ॥१४१॥

जीवन्ती जीवनी जीवा जीवनीया मधुः स्रवा ।

जिसे गुर्जरदेशमें दोड़ी कहते हैं उस ओषधिके नाम ६—जीवंती १ जीवनी २ जीवा ३ जीवनिया ४ मधु ५ स्रवा ६। (कोई 'मधुस्रवा'एकनाम कहतेहैं)॥

कूर्चशीर्षो मधुरकः शृंगह्रस्वाङ्गजीवकाः ॥ १४२ ॥

जीवकके नाम ५—कूर्चशीर्ष १मधुरक २ शृंग ३ ह्रस्वांग ४जीवक५॥१४२॥

किराततिक्तो भूनिम्बोऽनार्यतिक्तो-

चिरायतेके नाम ३–किराततिक्त १ भूनिम्ब २ अनार्यतिक्त ३ ॥

ऽ–थ सप्तला । विमला सातला भूरिफेना चर्मकषेत्यपि ॥ १४३ ॥

सीहुण्डभेदके नाम ५–सप्तला १ विमला २ सातला ३ भूरिफेना४ चर्मकषा ५ ॥ १४३ ॥

वायसोली स्वादुरसा वयस्था–

काकोलीके नाम ३–वायसोली १ स्वादुरसा २ वयस्था ॥ ३ ॥

–थ मकूलकः । निकुम्भो दन्तिका प्रत्यक्छ्रेण्युदुम्बरपर्ण्यपि १४४

वज्रदन्ती अर्थात् दँतियाके नाम (जिसके बीजको 'जयपाल'कहते हैं)५–मकूलक १निकुम्भ २ दंतिका ३ प्रत्यक्श्रेणी ४ उदुम्बरपर्णी ५ ॥ १४४ ॥

अजमोदा तूग्रगन्धा ब्रह्मदर्भा यवानिका ।

अजमोद या अजवायनके नाम४–अजमोदा १ उग्रगन्धा २ ब्रह्मदर्भा ३ यवानिका ४ ॥

मूले पुष्करकाश्मीरपद्मपत्राणि पौष्करे ॥ १४५ ॥

पोहकरमूलके नाम ३–पुष्कर १ काश्मीर २ पद्मपत्र ३ ॥ १४५ ॥

अव्यथातिचरा पद्मा चारटी पद्मचारिणी ।

पद्माखके नाम ५–अव्यथा १ अतिचरा २ पद्मा ३ चारटी ४ पद्मचारिणी ५ ॥

काम्पिल्यः कर्कशश्चन्द्रो रक्तांगो रोचनीत्यपि ॥ १४६ ॥

कबीलेके नाम ५–कांपिल्य१कर्कश २चन्द्र ३रक्तांग ४ रोचनी ५॥१४६॥

प्रपुन्नाडस्त्वेडगजो दद्रुघ्नश्चक्रमर्दकः । पद्माट उरणाख्यश्च–

चकवड़ वा पवाड़के नाम ६–प्रपुन्नाड १ एडगज २ दद्रुघ्न ३ चक्रमर्दक ४ पद्माट ५ उरणाख्य ६ ॥

–पलांडुस्तु सुकन्दकः ॥१४७॥

प्याजके नाम २–पलांडु १ सुकन्दक २ ॥ १४७ ॥

लतार्कदुद्रुमौ तत्र हरिते–

हरे प्याजके नाम २–लतार्क१दुद्रुम२॥

–ऽथ महौषधम् । लशुनं गृञ्जनारिष्टमहाकन्दरसोनकाः ॥१४८॥

लहसुनके नाम ६–महौषध १ लशुन २ गृञ्जन ३ अरिष्ट ४ महाकन्द ५ रसोनक ६ ॥ १४८ ॥

पुनर्नवा तु शोथघ्नी–

गदहपुरैना (साठी) के नाम २–पुनर्नवा १ शोथघ्नी २॥

–वितुन्नं सुनिषण्णकम् ।

विषखपड़ाके नाम २–वितुन्न १ सुनिषण्णक २ ॥

स्याद्वातकः शीतलाऽपराजिताशणपर्ण्यपि ॥ १४९ ॥

पटशनके नाम ४–वातक १ शीतल २ अपराजिता ३ शणपर्णी ४॥१४९॥

पारावताङ्घ्रिः कटभी पण्या ज्योतिष्मती लता ।

मालकांगनीके नाम ५–पारावतांघ्रि १ कटभी २ पण्या ३ ज्योतिष्मती ४ लता ५ ॥

वार्षिकं त्रायमाणा स्यात्त्रायन्ती बलभद्रिका ॥ १५० ॥

त्रायमाणके नाम ४–वार्षिक १ त्रायमाणा २ त्रायन्ती ३ बलभद्रिका ४ ॥ १५० ॥

विष्वक्सेनप्रिया गृष्टिर्वाराही बदरेत्यपि ।

वाराहीकन्दके नाम ४–विष्वक्सेनप्रिया १ गृष्टि २ वाराही ३ बदरा ४॥

मार्कवो भृङ्गराजः स्यात्–

भृंगराज (भँगरा) के नाम २–मार्कव १ भृंगराज २ ॥

–काकमाची तु वायसी ॥ १५१ ॥

कांवैया वा कौवाहांडी गोर्ड़ाके नाम २–काकमाची १ वायसी २ ॥१५१॥

शतपुष्पासितच्छत्राऽतिच्छत्रा मधुरा मिसिः । अवाक्पुष्पी कारवी च–

सौंफके नाम ७–शतपुष्पा १ सितच्छत्रा २ अतिच्छत्रा ३ मधुरा ४ मिसि ५ अवाक्पुष्पी ६ कारवी ७ ॥

–सरणा तु प्रसारिणी ॥१५२॥ तस्यां कटम्भरा राजबला भद्रबलेत्यपि ।

कुब्जप्रसारिणी वा चांदवेल वा प्रसारनि (खीप) के नाम ५–सरणा १ प्रसारिणी २॥ १५२ ॥ कटम्भरा ३ राजबला ४ भद्रबला ५ ॥

जनी जतूका रजनी जतुकृच्चक्रवर्तिनी ॥ १५३ ॥ संस्पर्शा–

चकवतके नाम ६–जनी १ जतूका २ रजनी ३ जतुकृत् ४ चक्रवर्तिनी ५ ॥ १५३ ॥ संस्पर्शा ६ ॥

–ऽथ शठी गन्धमूली षड्ग्रन्थिकेत्यपि । कर्चूरोऽपि पलाशो–

कचूरके नाम ५–शठी १ गन्धमूली २ षड्ग्रन्थिका ३ कर्चूर ४ पलाश ५ ॥

–ऽथ कारवेल्लः कठिल्लकः ॥ ॥ १५४ ॥ सुषवी चा–

करेलोंके नाम ३--कारवेल्ल १ कठिल्लक २ ॥ १५४ ॥ सुषवी ३ ॥

–ऽथ कुलकं पटोलस्तिक्तकः पटुः ।

परवरके नाम ४–कुलक १ पटोल २ तिक्तक ३ पटु ४ ॥

कूष्मांडकस्तु कर्कारु–

कुम्हड़ा (कोहला) के नाम २–कूष्माण्डक १ कर्कारु २ ॥

–र्वारुः कर्कटी स्त्रियौ ॥१५५॥

ककड़ीके नाम २–ईर्वारु १ कर्कटी २ ॥ १५५ ॥

इक्ष्वाकुः कटुतुम्बी स्या–

रामतुरई अर्थात् लौकीके नाम २–इक्ष्वाकु १ कटुतुम्बी २ ॥

–त्तुम्ब्यलाबूरुभे समे ॥

तुम्बीके नाम २–तुम्बी १ अलाबू २॥

चित्रा गवाक्षी गोडुम्बा–

जठऊ ककरी(गड़ूभा)के नाम३–चित्रा १ गवाक्षी २ गोडुम्बा ३ ॥

–विशाला त्विन्द्रवारुणी॥१५६॥

इंद्रवारुणीके नाम २–विशाला १ इंद्रवारुणी २ ॥ १५६ ॥

–अर्शोघ्नः सूरणः कन्दः–

सूरण अर्थात् जमीकन्दके नाम ३–अर्शोघ्न १ सूरण २ कन्द ३ ॥

गण्डीरस्तु समष्ठिला ।

गंडरीके नाम २–गंडीर १ समष्ठिला २ ॥

कलम्ब्युप–

करेंबुआका नाम १–कलम्बी १ ॥

–पोदिका–

पोईका नाम १–उपोदिका १ ॥

–स्त्री तु मूलकं–

मूलीका नाम १–मूलक १ ॥

–हिलमोचिका ॥ १५७ ॥

हिलसाका नाम १–हिलमोचिका १ ॥ १५७ ॥

वास्तूकं–

बथुएका नाम १–वास्तूक १

–शाकभेदाः स्यु–

यह सब शाकके भेद कहे ॥

–र्दूर्वा तु शतपर्विका । सहस्रवीर्याभार्गव्यौ रुहाऽनन्ता–

दूबके नाम ६–दूर्वा १ शतपर्विका २ सहस्रवीर्या ३ भार्गवी ४ रुहा ५ अनन्ता ६ ॥

–ऽथ सा सिता ॥ १५८ ॥ गोलोमी शतवीर्या च गण्डाली शकुलाक्षकः ।

उजली दूबके नाम ४–॥ १५८ ॥ गोलोमी १ शतवीर्या २ गण्डाली ३ शकुलाक्षक ४ ॥

कुरुविन्दो मेघनामा मुस्ता मुस्तकमस्त्रियाम् ॥ १५९ ॥

मोथाके नाम ४–कुरुविन्द १ मेघनामन् २ मुस्ता ३–मुस्तक– ॥ १५९ ॥

स्याद्भद्रमुस्तको गुन्द्रा–

नागरमोथाके नाम २–भद्रमुस्तक १ गुन्द्रा २ ॥

–चूडाला चक्रलोच्चटा ।

मोथाविषके नाम ३–चूडाला १ चक्रला २ उच्चटा ३ ॥

वंशे त्वक्सारकर्मारत्वचिसारतृणध्वजाः ॥ १६० ॥ शतपर्वा यवफलो वेणुमस्करतेजनाः ।

बांसके नाम १०–वंश १ त्वक्सार २ कर्मार ३ त्वचिसार ४ तृणध्वज ५ ॥ १६० ॥ शतपर्वन् ६ यवफल ७ वेणु ८ मस्कर ९ तेजन १० ॥

वेणवः कीचकास्ते स्युर्ये स्वनन्त्यनिलोद्धताः ॥ १६१ ॥

जो छेदमें वायु जानेसे शब्द करने लगें उन बांसोंका नाम १–कीचक ॥ १ ॥ १६१ ॥

ग्रन्थिर्ना पर्वपरुषी–

गांठके नाम ३–ग्रन्थि १ पर्वन् २ परुष् ३ ॥

गुन्द्रस्तेजनकः शरः ।

शरके नाम ३–गुंद्र १ तेजनक २ शर ३ ॥

नडस्तु धमनः पोटगलो–

नलके नाम ३–नड १ धमन २ पोटगल ३ ॥

–ऽथो काशमस्त्रियाम् ॥ १६२ ॥ इक्षुगन्धा पोटगलः–

काशके नाम ३–काश १ ॥ १६२ ॥ इक्षुगन्धा २ पोटगल ३ ॥

–पुंसि भूम्नि तु बल्वजाः ।

बगईका नाम १–बल्वज १ ॥

रसाल इक्षु–

ऊख अर्थात् गन्नाके नाम २–रसाल १ इक्षु २ ॥

–स्तद्भेदाः पुंड्रकान्तारकादयः ॥ १६३ ॥

पौंडा ऊखके नाम २–पुण्ड्र १ कान्तारक २ आदि ॥ १६३ ॥

स्याद्वीरणं वीरतरं–

गांडरके नाम २–वीरण १ वीरतर २ ॥

–मूलेऽस्योशीरमस्त्रियाम् । अभयं नलदं सेव्यममृणालं जलाशयम् ॥ १६४ ॥ लामज्जकं लघुलयमवदाहेष्टकापथे ।

गांडरकी जड़ अर्थात् खशके नाम १०–उशीर १ अभय २ नलद ३ सेव्य ४

अमृणाल ५ जलाशय ६ ॥ १६४ ॥ लामज्जक ७ लघुलय ८ अवदाह ९ इष्टकापथ १० ॥

नडादयस्तृणं गर्मुच्छ्यामाक-प्रमुखा अपि ॥ १६५ ॥

नलादि गर्मुत् श्यामाक आदिका नाम १–तृण १ ॥ १६५ ॥

अस्त्री कुशं कुथो दर्भः पवित्र–

कुशके नाम ४–कुश १ कुथ २ दर्भ ३ पवित्र ४ ॥

–मथ कत्तृणम् । पौरसौगन्धि-कध्यामदेवजग्धकरौहिषम् ॥१६६॥

रोहिसके नाम ६–कत्तृण १पौर २ सौगन्धिक ३ ध्याम ४ देवजग्धक ५ रौहिष ६ ॥ १६६ ॥

छत्रातिच्छत्रपालघ्नौ–

पानीके तृणके नाम ३–छत्रा १ अतिच्छत्र २ पालघ्न ३ ॥

–मालातृणकभूस्तृणे ।

तृणविशेषके नाम २–मालातृणक १ भूस्तृण २ ॥

शष्पं बालतृणं–

नये तृणके नाम २–शष्प १ बाल-तृण २ ॥

–घासो यवसं–

घासके नाम २–घास १ यवस २॥

तृणमर्जुनम् ॥ १६७ ॥

तृणमात्रके नाम २–तृण १ अर्जुन २ ॥ १६७ ॥

तृणानां संहतिस्तृण्या–

तृणसमूहका नाम १–तृण्या १ ॥

–नड्या तु नडसंहतिः ।

नलोंके समूहका नाम १–नड्या १॥

तृणराजाह्वयस्तालो–

ताड़के नाम २–तृणराज १ ताल २॥

–नालिकेरस्तु लाङ्गली ॥१६८॥

नारियलके नाम २–नालिकेर १ लांगली २ ॥ १६८ ॥

घोण्टा तु पूगः क्रमुको गुवाकः खपुरो–

सुपारीके नाम ५–घोण्टा १ पूग २ क्रमुक ३ गुवाक ४ खपुर ५ ॥

–ऽस्य तु । फलमुद्वेग–

सुपारीके फलका नाम १–उद्वेग १ ॥

–मेते च हिन्तालसहितास्त्रयः ॥ १६९ ॥ खर्जूरः केतकी ताली खर्जूरी च तृणद्रुमाः ।

खजूरीके नाम ४–खर्जूर १ केतकी २ ताली ३ खर्जूरी ४। पेड़का 'तृण-द्रुम' नाम है ॥ १६९ ॥

इति वनौषधिवर्गः ४.

अथ सिंहादिवर्गः ५.

सिंहो मृगेन्द्रः पञ्चास्यो हर्यक्षः केसरी हरिः ।

सिंहके नाम ६–सिंह १ मृगेन्द्र २ पञ्चास्य ३ हर्यक्ष ४ केसरिन् ५ हरि ६॥

शार्दूलद्वीपिनौ व्याघ्रे–

बाघके नाम ३–शार्दूल १ द्वीपिन् २ व्याघ्र ३ ॥

–तरक्षुस्तु मृगादनः ॥ १ ॥

चीतेके नाम २–तरक्षु १ मृगादन २ ॥ १ ॥

वराहः सूकरो घृष्टिः कोलः पोत्री किरिः किटिः। दंष्ट्री घोणी स्तब्धरोमा क्रोडो भूदार इत्यपि ॥ २ ॥

सूअरके नाम १२–वराह १ सूकर २ घृष्टि ३ कोल ४ पोत्रिन् ५ किरि ६ किटि ७ दंष्ट्रिन् ८ घोणिन् ९ स्तब्धरोमन् १० क्रोड ११ भूदार १२॥२॥

कपिप्लवङ्गप्लवगशाखामृगवलीमुखाः । मर्कटो वानरः कीशो वनौका–

वानरके नाम ९–कपि १ प्लवङ्ग २ प्लवग ३ शाखामृग ४ वलीमुख ५ मर्कट ६ वानर ७ कीश ८ वनौकस् ९ ॥

–अथ भल्लुके ॥ ३ ॥ ऋक्षाच्छभल्लभल्लूका–

रीछके नाम ४–भल्लुक १ ॥३॥ ऋक्ष २ अच्छभल्ल ३ भल्लूक ४ ॥

–गण्डके खड्गखड्गिनौ ।

गैंडेके नाम ३–गण्डक १ खड्ग २ खड्गिन् ३ ॥

लुलायो महिषो वाहद्विषत्कासरसैरिभाः ॥ ४ ॥

भैंसेके नाम ५–लुलाय १ महिष २ वाहद्विषत् ३ कासर ४ सैरिभ ५ ॥४॥

स्त्रियां शिवाभूरिमायगोमायुमृगधूर्तकाः । शृगालवञ्चकक्रोष्टुफेरुफेरवजम्बुकाः ॥ ५ ॥

सियार–गीदडके नाम १०–शिवा १ भूरिमाय २ गोमायु ३ मृगधूर्तक ४ शृगाल ५ वंचक ६ क्रोष्टु ७ फेरु ८ फेरव ९ जम्बुक १० ॥ ५ ॥

ओतुर्बिडालो मार्जारो वृषदंशक आखुभुक् ।

बिलावके नाम ५–ओतु १ बिडाल २ मार्जार ३ वृषदंशक ४ आखुभुक् ५॥

त्रयो गौधेरगौधारगौधेया गोधिकात्मजे ॥ ६ ॥

चन्दनगोह (गुहेरा) अर्थात् यह जन्तु काले सर्पसे गोहमें उत्पन्न होता है उसके नाम ३–गौधेर १ गौधार २ गौधेय ३ ॥ ६ ॥

श्वावित्तु शल्य–

साहीके नाम२—श्वाविद् १शल्य२॥

—स्तल्लोम्नि शललो शललं शलम् ॥

साहीके परोंके नाम—३ शलली १ शलल २ शल ३ ॥

वातप्रमीर्वातमृगः—

शीतगामी मृगविशेषके नाम २—वातप्रमी १ वातमृग २ ॥

—कोकस्त्वीहामृगो वृकः ॥७॥

भेड़ियेके नाम ३-कोक १ ईहामृग २ वृक ३ ॥ ७ ॥

मृगे कुरंगवातायुहरिणाजिनयोनयः ।

मृगके नाम ५—मृग १ कुरङ्ग २ वातायु ३ हरिण ४ अजिनयोनि ५॥

ऐणेयमेण्याश्चर्माद्य—

हरिणके चर्म मांसादिका नाम १—ऐणेय १ ॥

—मेणस्यैण—

हरिणके चर्म मांसादिका नाम१—ऐण १

—मुभे त्रिषु ॥ ८ ॥

ऐणेय और ऐण ये शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥ ८ ॥

कदली कंदली चीनश्चमूरुप्रियकावपि । समूरुश्चेति हरिणा अमी अजिनयोनयः ॥ ९ ॥

मृगोंके भेद ७—कदलिन् १ कन्दलिन् २ चीन ३ चमूरु ४ प्रियक ५ समूरु ६ हरिण ७ ॥ ९ ॥

कृष्णसाररुरुन्यंकुरंकुशम्बररौहिषाः । गोकर्णपृषतैणर्श्यरोहिताश्चमरो मृगाः ॥ १० ॥

तथा मृगोंके भेद १२—कृष्णसार १ रुरु २ न्यंकु ३ रंकु ४ शम्बर ५ रौहिष ६ गोकर्ण ७ पृषत ८ एण ९ ऋश्य १०रोहित ११चमर१२ ॥१०॥

गन्धर्वः शरभो रामः सृमरो गवयः शशः । इत्यादयो मृगेन्द्राद्या गवाद्याः पशुजातयः ॥ ११ ॥

तथा मृगोंके भेद ६—गन्धर्व १ शरभ २ राम ३ सृमर४ गवय ५ शश ६ इस प्रकार मृग आदि और सिंह आदि तथा गौ आदि पशुजाति कहलाते हैं ॥ ११ ॥

उन्दुरुर्मूषकोऽप्याखु—

चूहेके नाम ३—उन्दुरु १ मूषक २ आखु ३ ॥

—र्गिरिका बालमूषिका ।

छोटी चुहियाके नाम२—गिरिका १ बालमूषिका २ ॥

सरटः कृकलासः स्या—

गिरगटके नाम २—सरट १ कृकलास २ ॥

—न्मुसली गृहगोधिका ॥ २ ॥

छपकलीके नाम २—मुसली १ गृहगोधिका २ ॥ १२ ॥

लूता स्त्री तन्तुवायोर्णनाभमर्कटकाः समाः।

मकड़ीके नाम ४—लूता १ तन्तुवाय २ ऊर्णनाभ ३ मर्कटक ४ ॥

नीलंगुस्तु कृमिः—

कीटविशेषके नाम २—नीलंगु १ कृमि २।

—कर्णजलौकाः शतपद्युभे॥ १३॥

कानखजूरेके नाम २—कर्णजलौकस् १ शतपदी २ ॥ १३ ॥

वृश्चिकः शूककीटः स्या—

ऊनी वस्त्रके खानेवाले कीड़ेके नाम २—वृश्चिक १ शूककीट २ ॥

—दलिद्रोणौ तु वृश्चिके।

बीछूके नाम ३—अलि १ द्रोण २ वृश्चिक ३ ॥

पारावतः कलरवः कपोतो—

कबूतरके नाम ३—पारावत १ कलरव २ कपोत ३ ॥

—ऽथ शशादनः ॥१४॥ पत्री श्येन—

बाजके नाम ३—शशादन १॥१४॥ पत्रिन् २ श्येन ३ ॥

—उलूकस्तु वायसारातिपेचकौ।

उल्लूके नाम ३—उलूक १ वायसाराति २ पेचक ३ ॥

व्याघ्राटः स्याद्भरद्वाजः—

भरद्वाज पक्षीके नाम २—व्याघ्राट १ भरद्वाज २ ॥

खञ्जरीटस्तु खञ्जनः ॥ १५ ॥

खञ्जनके नाम २—खञ्जरीट १ खञ्जन २ ॥ १५ ॥

लोहपृष्ठस्तु कङ्कः स्या—

कंक पक्षीके नाम २—लोहपृष्ठ १ कंक २॥

—दथ चाषः किकीदिविः।

नीलकण्ठके नाम २—चाष १ किकीदिवि २ ॥

कलिङ्गभृङ्गधूम्याटा—

मस्तकचूडपक्षीके नाम ३—कलिंग १ भृंग २ धूम्याट ३ ॥

—अथ स्याच्छतपत्रकः॥ १६ ॥ दार्वाघाटो—

खुटबढई पक्षीके नाम २—शतपत्रक १ ॥ १६ ॥ दार्वाघाट २ ॥

—ऽथ सारंगस्तोककश्चातकः समाः।

पपीहा अर्थात् चातकके नाम ३—सारंग १ तोकक २ चातक ३ ॥

कृकवाकुस्ताम्रचूडः कुक्कुटश्चरणायुधः ॥ १७ ॥

मुरगेके नाम ४—कृकवाकु १ ताम्रचूड २ कुक्कुट ३ चरणायुध ४ ॥१७॥

चटकः कलविङ्कः स्यात्–

चिरौंटे (चिडे) के नाम २–चटक १ कलविंक २ ॥

–तस्य स्त्री चटका–

चिडियाका नाम १–चटका १ ॥

–तयोः । पुमपत्ये चाटकैरः–

इनके बच्चेका नाम १–चाटकैर १॥

–स्त्र्यपत्ये चटकैव सा ॥ १८ ॥

इनके बच्चीका नाम१-चटका१॥१८॥

कर्करेटुः करेटुः स्यात्–

एक प्रकारके अशुभ शब्द करनेवाले पक्षीके नाम २–कर्करेटु १ करेटु २ ॥

–कृकणक्रकरौ समौ ।

चिडियाविशेषके नाम २–कृकण १ क्रकर २ ॥

वनप्रियः परभृतः कोकिलः पिक इत्यपि ॥ १९ ॥

कोयलके नाम ४–वनप्रिय १ परभृत २ कोकिल ३ पिक ४ ॥१९॥

काके तु करटारिष्टबलिपुष्टसकृत्प्रजाः । ध्वाङ्क्षात्मघोषपरभृद्बलिभुग्वायसा अपि ॥ २० ॥

कौवेके नाम १०–काक १ करट२ अरिष्ट ३ बलिपुष्ट ४ सकृत्प्रज ५ ध्वांक्ष ६ आत्मघोष ७ परभृत् ८ बलिभुज् ९ वायस १० ॥ २० ॥

द्रोणकाकस्तु काकोलो–

डोम कौवेके नाम २–द्रोणकाक १ काकोल २ ॥

–दात्यूहः कालकण्ठकः ।

काले कौवेके नाम २–दात्यूह १ कालकण्ठक २ ॥

आतापिचिल्लौ–

चीलके नाम २–आतापि १चिल्ल२

–दाक्षाय्यगृध्रौ–

गीधके नाम २–दाक्षाय्य१गृध्र२ ॥

–कीरशुकौ–

तोतेके नाम २–कीर १ शुक २ ॥

–समौ ॥ २१ ॥

आतापि, और चिल्ल, दाक्षाय्य और गृध्र तथा कीर और शुक शब्द समानलिंग है ॥ २१ ॥

क्रुङ्क्रौञ्चो–

क्रौञ्चपक्षीके नाम२–क्रुंच १ क्रौञ्च २ ॥

–ऽथ बकः कह्वः–

बगुलेके नाम २–बक १ कह्व २ ॥

पुष्कराह्वस्तु सारसः ।

सारसके नाम२–पुष्कराह्व१सारस २॥

कोकश्चक्रश्चक्रवाको रथाङ्गाह्वयनामकः–॥ २२ ॥

चकई चकवाके नाम ४–कोक १ चक्र २ चक्रवाक ३ रथांग ४॥ २२ ॥

कादम्बः कलहंसः स्या-

वर्त्तक पक्षीके नाम २—कादम्ब १ कलंहस २ ॥

—दुत्क्रोशकुररौ समौ ।

कुररी पक्षीके नाम २—उत्क्रोश १ कुरर २ ॥

हंसास्तु श्वेतगरुतश्चक्रांगा मानसौकसः ॥ २३ ॥

हंसके नाम ४—हंस १ श्वेतगरुत् २ चक्रांग ३ मानसौकस् ४ ॥ २३ ॥

राजहंसास्तु ते चञ्चुचरणै-र्लोहितैः सिताः ।

जिन हंसोंकी चोंच और पैर लाल हों और देह उज्ज्वल हो उन हंसोंका नाम १—राजहंस १ ॥

मलिनैर्मल्लिकाक्षास्ते-

जिन हंसोंके चरणादि मैले हों उनका नाम १—मल्लिकाक्ष १ ॥

—धार्तराष्ट्राः सितेतरैः ॥ २४ ॥

जिनके चोंच और चरण काले हों उन हंसोंका नाम १—धार्त्तराष्ट्र १॥२४॥

शरारिराटिराडिश्च—

आडी पक्षीके नाम ३--शरारि १ आटि २ आडि ३ ॥

—बलाका बिसकण्ठिका ।

बगुलेके दूसरी जातिके नाम २—बलाका १ बिसकण्ठिका २ ॥

हंसस्य योषिद्वरटा-

हंसनीका नाम १—वरटा १ ॥

—सारसस्य तु लक्ष्मणा ॥२५॥

सारसकी स्त्रीका नाम १—लक्ष्मणा १ ॥ २५ ॥

जतुकाऽजिनपत्रा स्यात्-

चिमगादरके नाम २—जतुका १ अजिनपत्रा २ ॥

—परोष्णी तैलपायिका ।

चपरा पक्षीके नाम २—परोष्णी १ तैलपायिका २ ॥

वर्वणा मक्षिका नीला-

मक्खीके नाम ३—वर्वणा १ मक्षिका २ नीला ३ ॥

—सरघा मधुमक्षिका ॥ २६ ॥

शहदकी मक्खीके नाम २—सरघा १ मधुमाक्षिका २ ॥ २६ ॥

पतंगिका पुत्तिका स्या-

छोटी मधुमक्खीके नाम २—पतंगिका १ पुत्तिका २ ॥

दंशस्तु वनमक्षिका ।

डांसके नाम २-दंश १ वनमक्षिका २ ॥

दंशी तज्जातिरल्पा स्या-

छोटे डांसका नाम १—दंशी १ ॥

—द्गन्धोली वरटा द्वयोः ॥ २७ ॥

गन्धेली मक्खीके नाम २—गंधोली १ वरटा २ ॥ २७ ॥

भृंगारी झीरुका चीरी झिल्लिका च समा इमाः।

झींगरके नाम ४—भृंगारी १ झीरुका २ चीरी ३ झिल्लिका ४ ॥

समौ पतंगशलभौ—

पतंगके नाम २—पतंग १ शलभ२॥

खद्योतो ज्योतिरिंगणः॥ २८ ॥

जुगनू कीडे़के नाम २—खद्योत १ ज्योतिरिङ्गण २ ॥ २८॥

मधुव्रतो मधुकरो मधुलिण्मधुपालिनः। द्विरेफपुष्पलिड्भृंगषट्पदभ्रमरालयः ॥ २९ ॥

भँवरेके नाम ११—मधुव्रत १ मधुकर २ मधुलिह् ३ मधुप ४ अलिन् ५ द्विरेफ ६ पुष्पलिह् ७ भृङ्ग ८ षट्पद ९ भ्रमर १० अलि ११ ॥ २९ ॥

मयूरो बर्हिणो बर्ही नीलकण्ठो भुजंगभुक्। शिखावलः शिखी केकी मेघनादानुलास्यपि ॥ ३० ॥

मोरके नाम ९—मयूर १ बर्हिण २ बर्हिन् ३ नीलकण्ठ ४ भुजंगभुज् ५ शिखावल ६ शिखिन् ७ केकिन् ८ मेघनादानुलासिन् ९ ॥ ३० ॥

केका वाणी मयूरस्य—

मोरके शब्दका नाम १—केका १॥

समौ चन्द्रकमेचकौ।

मोरके परोंपर चन्द्राकार चिह्नोंके नाम २— चन्द्रक १ मेचक २ ॥

शिखा चूडा—

मोरकी चोटीके नाम २—शिखा १ चूडा २ ॥

—शिखण्डस्तु पिच्छबर्हे नपुंसके ॥ ३१ ॥

मोरके परोंके नाम ३—शिखण्ड १ पिच्छ २ बर्ह ३ ॥ ३१ ॥

खगे विहंगविहगविहंगमविहायसः। शकुन्तिपक्षिशकुनिशकुन्तशकुनद्विजाः ॥ ३२ ॥ पतत्रिपत्रिपतगपतत्पत्ररथाण्डजाः। नगौकोवाजिविकिरविविष्किरपतत्रयः ॥ ३३ ॥ नीडोद्भवा गरुत्मन्तः पित्सन्तो नभसंगमाः।

पक्षीमात्रके नाम २७—खग १ विहंग २ विहग ३ विहंगम ४ विहायस् ५ शकुन्ति ६ पक्षिन् ७ शकुनि ८ शकुन्त ९ शकुन १० द्विज ११ ॥ ३२ ॥ पतत्रिन् १२ पत्रिन् १३ पतग १४ पतत् १५ पत्ररथ १६ अण्डज १७ नगौकस् १८ वाजिन् १९ विकिर २० वि २१ विष्किर २२ पतत्रि २३ ॥ ३३ ॥ नीडोद्भव २४ गरुत्मत् २५ पित्सत् २६ नभसंगम २७ ॥

तेषां विशेषा हारीतो मद्गुः कारण्डवः प्लवः ॥ ३४ ॥ तित्तिरिः-

–कुक्कुभो लावो जीवंजीवश्च–
कोरकः॥ कोयष्टिकष्टिट्टिभको वर्तको
वर्तिकादयः ॥ ३५ ॥

पक्षियोंके भेद १३–हारीत १ मद्गु २ कारण्डव ३ प्लव ४ ॥ ३४ ॥ तित्तिरि ५ कुक्कुभ ६ लाव ७ जीवंजीव ८ चकोरक ९ कोयष्टिक १० टिट्टिभक ११ वर्तक १२ वर्तिका १३ इत्यादि ॥ ३५ ॥

गरुत्पक्षच्छदाः पत्रं पतत्रं च
तनूरुहम् ।

पक्षियोंके परोंके नाम ६–गरुत् १ पक्ष २ छद ३ पत्र ४ पतत्र ५ तनूरुह ६॥

स्त्री पक्षतिः पक्षमूलं–

पक्षियोंके बाजके नाम २–पक्षति १ पक्षमूल २ ॥

–चञ्चुस्त्रोटिरुभे स्त्रियौ ॥३६॥

चोंचके नाम २–चञ्चु १ त्रोटि २ ॥ ३६ ॥

प्रडीनोड्डीनसंडीनान्येताः खगगतिक्रियाः ।

पक्षियोंकी चालके भेद ३–प्रडीन उड्डीन २ संडीन ३ ॥

पेशी कोशो द्विहीनेऽण्डं–

अण्डके नाम ३–पेशी १ कोश २ अण्ड ॥ ३ ॥

–कुलायो नीडमस्त्रियाम् ॥३७॥

पक्षियोंके घरके नाम २–कुलाय १ नीड २ ॥ ३७ ॥

पोतः पाकोऽर्भको डिम्भः पृथुकः
शावकः शिशुः ।

पक्षियोंके वा साधारण बच्चोंके नाम ७–पोत १ पाक २ अर्भक ३ डिम्भ ४ पृथुक ५ शावक ६ शिशु ७ ॥

स्त्रीपुंसौ मिथुनं द्वन्द्वं–

स्त्रीपुरुषके जोडेके नाम ३–स्त्रीपुंस १ मिथुन २ द्वन्द्व ३ ॥

–युग्मं तु युगलं युगम् ॥३८॥

जोडेके नाम ३–युग्म १ युगल २ युग ३ ॥ ३८ ॥

समूहो निवहव्यूहसंदोहविसर-
व्रजाः । स्तोमौघनिकरव्रातवारसंघा-
तसंचयाः ॥ ३९ ॥ समुदायः समु-
दयः समवायश्चयो गणः । स्त्रियां
तु संहतिर्वृन्दं निकुरम्बं कदम्ब-
कम् ॥ ४० ॥

समूहके नाम २२–समूह १ निवह २ व्यूह ३ सन्दोह ४ विसर ५ व्रज ६ स्तोम ७ ओघ ८ निकर ९ व्रात १० वार ११ संघात १२ संचय १३ ॥ ३९ ॥ समुदाय १४ समुदय १५ समवाय १६ चय १७ गण १९ संहति १९ वृन्द २० निकुरम्ब २१ कदंबक २२ ॥ ४० ॥

वृन्दभेदाः—

अथ समूहोंके भेद कहते हैं ॥

—समैर्वर्गः—

जीव अजीव एकही जातिके समूहका नाम १—वर्ग १—

—संघसार्थौ तु जन्तुभिः ।

केवल प्राणियोंके समूहके नाम २—संघ १ सार्थ २ ॥

सजातीयैः कुलं—

एक जातिके ही प्राणियोंके समूहका नाम १—कुल १ ॥

—यूथस्तिरश्चां पुंनपुंसकम् ॥४१

पक्षियोंके समूहका नाम १—यूथ १ ॥ ४१ ॥

पशूनां समजो—

पशुओंके समूहका नाम १—समज १

—ऽन्येषां समाजो—

पक्षी और पशुओंसे दूसरोंके समूहका नाम १—समाज १ ॥

—ऽथ सधर्मिणाम् । स्यान्निकायः—

एक धर्मावलंबियोंके समूहका नाम १—निकाय १ ॥

—पुञ्जराशी तूत्करः कूटमस्त्रियाम् ॥ ४२ ॥

अन्नादिक ऊंचे ढेरके नाम ४—पुञ्ज १ राशि २ उत्कर ३ कूट ४॥४२॥

कापोतशौकमायूरतैत्तिरादीनि तद्गणे ।

(कबूतरोंके समूहका नाम) कापोत॥ (तोतोंके समूहका नाम) शौक ॥ (मयूरोंके समूहका नाम) मायूर ॥ (तीतरोंके समूहका नाम) तैत्तिर इत्यादि ॥

गृहासक्ताः पक्षिमृगाश्छेकास्ते गृह्यकाश्च ते ॥ ४३ ॥

घरके पाले हुए मृगपक्षी आदिके नाम २—छेक १ गृह्यक २ ॥ ४३ ॥

इति सिंहादिवर्गः ॥ ५ ॥

अथ मनुष्यवर्गः ६.

मनुष्या मानुषा मर्त्या मनुजा मानवा नराः ॥

मनुष्यमात्रके नाम ६—मनुष्य १ मानुष २ मर्त्य ३ मनुज ४ मानव ५ नर ६ ॥

स्युः पुमांसः पञ्चजनाः पुरुषाः पूरुषा नरः ॥ १ ॥

मनुष्यजातिपुरुषके नाम ५—पुंस् १ पञ्चजन २ पुरुष ३ पूरुष ४ नृ ५ ॥१॥

स्त्री योषिदबला योषा नारी सीमंतिनी वधूः । प्रतीपदर्शिनी वामा वनिता महिला तथा ॥ २ ॥

स्त्रीके नाम ११—स्त्री १ योषित् २ अबला ३ योषा ४ नारी ५ सीमंतिनी ६

वधू ७ प्रतीपदर्शिनी ८ वामा ९ वनिता १० महिला ११ ॥ २ ॥

विशेषा–

स्त्रियोंके विशेषभेद कहते हैं ॥

–स्त्वङ्गना भीरुः कामिनी वामलोचना । प्रमदा मानिनी कान्ता ललना च नितम्बिनी ॥ ३ ॥ सुन्दरी रमणी रामा–

अच्छे अंगोंवाली स्त्रीका नाम १–अंगना १ ॥ डरभूत स्त्रीका नाम १–भीरु १ ॥ कामयुतस्त्रीका नाम १–कामिनी १ ॥ सुंदरनेत्रोंवाली स्त्रीका नाम १–वामलोचना १॥ बहुत कामवती स्त्रीका नाम १–प्रमदा १ ॥ प्रणयकोपवाली स्त्रीका नाम १–मानिनी १ ॥ मन हरनेवाली स्त्रीका नाम १–कान्ता १ ॥ दुलारी स्त्रीके नाम २–ललना १ नितम्बिनी २ ॥ ३ ॥ सुन्दर अंगोंवाली स्त्रीका नाम १–सुन्दरी १॥ जिसमें चित्तअतिरमित हो उस स्त्रीका नाम १–रमणी १ ॥ विहारके योग्य स्त्रीका नाम १–रामा १ ॥

–कोपना सैव भामिनी ।

कोपवाली स्त्रीके नाम २–कोपना १ भामिनी २ ॥

वरारोहा मत्तकाशिन्युत्तमा वरवर्णिनी ॥ ४ ॥

बहुतही उत्तम स्त्रीके नाम ४–वरारोहा १ मत्तकाशिनी २ उत्तमा ३ वरवर्णिनी ४ ॥ ४ ॥

कृताभिषेका महिषी–

जिस रानीका अभिषेक हुआ हो उसका नाम १–महिषी १ ॥

भोगिन्योऽन्या नृपस्त्रियः ।

महिषीको छोड राजाकी अन्य स्त्रियोंका म १–भोगिनी १ ॥

पत्नी पाणिगृहीती च द्वितीया सहधर्मिणी ॥ ५ ॥ भार्या जायाथ पुंभूम्नि दाराः–

व्यांही हुई स्त्रीके नाम ७–पत्नी १ पाणिगृहीती २ द्वितीया ३ सहधर्मिणी ४॥५॥ भार्या ५ जाया ६ दार पु० ब० ७॥

–स्यात्तु कुटुम्बिनी । पुरन्ध्री–

जिस स्त्रीके पतिपुत्र दोनों विद्यमान हों उसके नाम २–कुटुंबिनी १ पुरन्ध्री २॥

–सुचरित्रा तु सती साध्वी पतिव्रता ॥ ६ ॥

पतिव्रता स्त्रीके नाम ४–सुचरित्रा १ सती २ साध्वी ३ पतिव्रता ४ ॥ ६ ॥

कृतसापत्निकाध्यूढाधिविन्ना–

जिसके बहुतसी स्त्रियां हों उनमें जो प्रथम व्याही गयी हो उसके नाम ३–

कृतसापत्निका १ अध्यूढा २ अधिविन्ना ३॥

–ऽथ स्वयंवरा। पतिंवरा च वर्या–

जो अपने आप स्वयंवरादिमें पतिकी इच्छा करे उस स्त्रीके नाम ३–स्वयंवरा १ पतिंवरा २ वर्या ३॥

–ऽथ कुलस्त्री कुलपालिका॥७॥

कुलवती स्त्रीके नाम २–कुलस्त्री १ कुलपालिका २॥७॥

कन्या कुमारी–

पांच वर्षकी कन्याके नाम २–कन्या १ कुमारी २॥

–गौरी तु नग्निकाऽनागतार्तवा।

दशवर्षकी कन्याके नाम ३–गौरी १ नग्निका २ अनागतार्तवा ३॥

स्यान्मध्यमा दृष्टरजा–

जिसको रजोधर्म्म हो जाय उस स्त्रीका नाम १–मध्यमा १॥

–स्तरुणी युवतिः समे॥८॥

युवा स्त्रीके नाम २–तरुणी १ युवती २॥८॥

समाः स्नुषाजनीवध्व–

बहू (पुत्रवधू) के नाम ३–स्नुषा १ जनी २ वधू ३॥

–श्चिरण्टी तु सुवासिनी।

जो कि किंचित् युवावस्थाको प्राप्त ब्याही हुई निज पिताके घरमें रहती हो उस स्त्रीके नाम २–चिरण्टी १ सुवासिनी २॥

इच्छावती कामुका स्या–

जो धनादिकी इच्छा करती हो उस स्त्रीके नाम २–इच्छावती १ कामुका २॥

–द्वृषस्यन्ती तु कामुकी॥९॥

मैथुनकी इच्छा करनेवाली स्त्रीके नाम २–वृषस्यन्ती १ कामुकी २॥९॥

कान्तार्थिनी तु या याति संकेतं साऽभिसारिका।

जो पतिकी इच्छा कर कामार्त्त हो संकेत स्थानको जावे उस स्त्रीका नाम १–अभिसारिका १॥

पुंश्चली धर्षिणी बन्धक्यसती कुलटेत्वरी॥१०॥ स्वैरिणी पांशुला च स्या–

व्यभिचारिणी स्त्रीके नाम ८–पुंश्चली १ धर्षिणी २ बन्धकी ३ असती ४ कुलटा ५ इत्वरी ६॥१०॥ स्वैरिणी ७ पांसुला ८॥

–दशिश्वी शिशुना विना।

विना पुत्रवाली स्त्रीका नाम १–अशिश्वी १॥

अवीरा निष्पतिसुता–

जिसके पति पुत्र न हों उस स्त्रीका नाम १–अवीरा १॥

–विश्वस्ताविधवे समे॥११॥

विधवा स्त्रीके नाम २–विश्वस्ता १ विधवा २॥११॥

आलिः सखी वयस्याथ–

सखी वा साथके खेलनेवाली स्त्रीके नाम ३–आलि १ सखी २ वयस्या ३॥

–पतिवत्नी सभर्तृका ।

जिस स्त्रीका पति जीता हो उसके नाम २–पतिवत्नी १ सभर्तृका २ ॥

वृद्धा पलिक्नी–

बूढ़ी स्त्रीके नाम २–वृद्धा १ पलिक्नी २ ॥

–प्राज्ञी तु प्रज्ञा–

कुछ–कुछ समझदार स्त्रीके नाम २–प्राज्ञी १ प्रज्ञा २ ॥

–प्राज्ञा तु धीमती ॥ १२ ॥

अति बुद्धिमती स्त्रीके नाम २–प्राज्ञा १ धीमती २ ॥ १२ ॥

शूद्री शूद्रस्य भार्या स्या–

चाहे अन्य जाति भी हो पर शूद्रकी स्त्री हो उस स्त्रीका नाम १ शूद्री १ ॥

–च्छूद्रा तज्जातिरेव च ॥

शूद्रजातिका नाम १–शूद्रा १ ॥

आभीरी तु महाशूद्री जाति-पुंयोगयोः समा ॥ १३ ॥

अहिरिनिके नाम २ आभीरी १ महाशूद्री २ ॥ १३ ॥

अर्याणी स्वयमर्या स्यात्–

बनैनीके नाम २–अर्याणी १ अर्या २ ॥

–क्षत्त्रिया,क्षत्त्रियाण्यपि ।

क्षत्रियानीके नाम २–क्षत्रिया १ क्षत्रियाणी २ ॥

उपाध्यायाप्युपाध्यायी–

पंडितानीके नाम २–उपाध्याया १ उपाध्यायी २ ॥

–स्यादाचार्यापि च स्वतः ॥ १४ ॥

जो अपने आप मंत्रोंके अर्थ कह सके उसका नाम १–आचार्य्या १ ॥ १४ ॥

आचार्यानी तु पुंयोगे–

चाहे मंत्रादिकी व्याख्या न करसके पर आचार्यकी स्त्री हो उसका नाम १–आचार्य्यानी १ ॥

–स्यादर्यी–

वैसे ही अर्य (वैश्य) की स्त्रीका नाम १–अर्यी १ ॥

–क्षत्त्रियी तथा ।

क्षत्रियकी स्त्रीका नाम १–क्षत्त्रियी १ ।

उपाध्यायान्युपाध्यायी–

पढ़ानेवालेकी स्त्रीके इसीप्रकारके नाम २–उपाध्यायानी १ उपाध्यायी २ ॥

–पोटा स्त्री पुंसलक्षणा ॥ १५ ॥

डाढ़ी मूछ आदियुक्त स्त्रीका नाम १-पोटा १ ॥ १५ ॥

वीरपत्नी वीरभार्या–

वीरकी स्त्रीके नाम २–वीरपत्नी १ वीरभार्या २ ॥

–वीरमाता तु वीरसूः ।

वीरकी माताके नाम २–वीरमातृ १ वीरसू २ ॥

जातापत्या प्रजाता च प्रसूता च प्रसूतिका ॥ १६ ॥

जिसके बालक पैदा हुआ हो उस स्त्रीके नाम ४–जातापत्या १ प्रजाता २ प्रसूता ३ प्रसूतिका ४ ॥ १६ ॥

स्त्री नग्निका कोटवी स्याद्–

नङ्गी स्त्रीके नाम २–नग्निका १ कोटवी २ ॥

–दूती सञ्चारिके समे ।

दूतीके नाम २–दूती १ संचारिका २ ॥

कात्यायन्यर्धवृद्धा या काषाय-वसनाऽधवा ॥ १७ ॥

गेरू आदिसे रँगे हुए वस्त्र पहरने-वाली कुछ वृद्ध विधवा स्त्रीका नाम १–कात्यायनी १ ॥ १७ ॥

सैरन्ध्री परवेश्मस्था स्ववशा शिल्पकारिका ॥

अपनी इच्छाके अनुसार पराये गृह-में रहकर शिल्पकार्य करनेवाली स्त्रीका नाम १–सैरन्ध्री १ ॥

असिक्नी स्यादवृद्धा या प्रेष्या-ऽन्तःपुरचारिणी ॥ १८ ॥

घरके भीतर सेवा आदि कार्य कर-नेवाली जवान स्त्रीका नाम १–असि-क्नी १ ॥ १८ ॥

वारस्त्री गणिका वेश्या रूपा-जीवा–

वेश्याके नाम ४–वारस्त्री १ गणिका २ वेश्या ३ रूपाजीवा ४ ॥

–ऽथ सा, जनैः । सत्कृता वारमुख्या स्यात्–

जिसका पुरुष अधिक सत्कार करे अर्थात् सबमें श्रेष्ठ वेश्याका नाम १–वारमुख्या १ ॥

–कुट्टनी शम्भली समे ॥ १९ ॥

कुटनीके नाम २–कुट्टनी १ शम्भली २ ॥ १९ ॥

विप्रश्निका त्वीक्षणिका दैवज्ञा-

सामुद्रिक आदि शास्त्रानुसार लक्षण जानकर शुभाशुभ फल कहनेवाली स्त्री-के नाम ३–विप्रश्निका १ ईक्षणिका २ दैवज्ञा ३ ॥

ऽथ रजस्वला ।

स्त्रीधर्मिण्यविरात्रेयी मलिनी पुष्पवत्यपि ॥ २० ॥ ऋतुमत्य-प्युदक्यापि–

रजस्वला स्त्रीके नाम ८–रजस्वला १ स्त्रीधर्मिणी २ अवि ३ आत्रेयी ४ मलिनी ५ पुष्पवती ६ ॥ २० ॥ ऋतुमती ७ उदक्या ८ ॥

–स्याद्रजः पुष्पमार्तवम् ।

स्त्रीके मासिक रजोधर्मके नाम ३–रजस् १ पुष्प २ आर्तव ३ ॥

श्रद्धालुर्दोहदवती-

गर्भके समय अनेक प्रकारकी इच्छा करनेवाली स्त्रीके नाम २-श्रद्धालु १ दोहदवती २ ॥

-निष्कला विगतार्तवा ॥ २१॥

रजोहीन स्त्रीके नाम २-निष्कला १ विगतार्तवा २ ॥ २१ ॥

आपन्नसत्त्वा स्याद्गुर्विण्यन्तर्वत्नी च गर्भिणी ।

गर्भवाली स्त्रीके नाम ४-आपन्नसत्त्वा १ गुर्विणी २ अन्तर्वत्नी ३ गर्भिणी ४ ॥

गणिकादेस्तु गाणिक्यं गार्भिणं यौवतं गणे ॥ २२ ॥

वेश्याओंके समूहका नाम १ गाणिक्य १ ॥ गर्भिणियोंके समूहका नाम १-गार्भिण १ ॥ युवतियोंके समूहका नाम १-यौवत १ ॥ २२ ॥

पुनर्भूर्दिधिषूरूढा द्वि-

जिस स्त्रीका विवाहसंस्कार द्वितीयवार हो उस स्त्रीके नाम २-पुनर्भू १ दिधिषू २ ॥

--स्तस्या दिधिषुः पतिः ।

उसके पतिका नाम १-दिधिषु १।

स तु द्विजोऽग्रेदिधिषूः सैव यस्य कुटुम्बिनी ॥ २३ ॥

जिसका द्वितीयवार विवाहसंस्कार हो वह स्त्री और उसका पति उन दोनोंसे उत्पन्न बालकका नाम १-अग्रेदिधिषू १ ॥ २३ ॥

कानीनः कन्यकाजातः सुतो-

कन्यासे उत्पन्न हुए पुत्रके नाम २-कानीन १ कन्यकाजात २ ॥

-ऽथ सुभगासुतः । सौभागिनेयः-

सौभाग्यवती स्त्रीके पुत्रके नाम २-सुभगासुत १ सौभागिनेय २ ॥

-स्यात्पारस्त्रैणेयस्तु परस्त्रियाः २४॥

परस्त्रीके पुत्रका नाम १-पारस्त्रैणेय १ ॥ २४ ॥

पैतृष्वसेयः स्यात्पैतृष्वस्त्रीयश्च पितृष्वसुः । सुतो-

पिताकी बहन अर्थात् बुवाके पुत्रके नाम २-पैतृष्वसेय १ पैतृष्वस्रीय २ ॥

-मातृष्वसुश्चैवं-

मौसीके पुत्रके नाम २-मातृष्वसेय १ मातृष्वस्रीय २ ॥

-वैमात्रेयो विमातृजः ॥ २५ ॥

सौतेले भाईके नाम २-वैमात्रेय १ विमातृज २ ॥ २५ ॥

अथ बान्धकिनेयः स्याद्बन्धुलश्चासतीसुतः । कौलटेरः कौलटेयो-

कुलटाके पुत्रके नाम ५–बान्धकिनेय १ बन्धुल २ असतीसुत ३ कौलटेर ४ कौलटेय ५॥

–भिक्षुकी तु सती यदि ॥२६॥
तदा कौलटिनेयोऽस्याः कौलटेयोऽपि चात्मजः ।

जो सती भिक्षाके निमित्त घरोंमें फिरे ॥ २६ ॥ उसके पुत्रके नाम २–कौलटिनेय १ कौलटेय २ ॥

आत्मजस्तनयः सूनुः सुतः पुत्रः–

पुत्रके नाम ५–आत्मज १ तनय२ सूनु ३ सुत ४ पुत्र ५ ॥

–स्त्रियां त्वमी ॥ २७ ॥ आहुर्दुहितरं सर्वे–

जो पुत्रके नाम स्त्रीलिंगमें हों तो पुत्रीके नाम हो जाते हैं ॥ २७ ॥

–ऽपत्यं तोकं तयोः समे ।

पुत्र,पुत्री, साधारणके नाम २–अपत्य १ तोक २ ॥

स्वजाते त्वौरसोरस्यौ–

सगे पुत्रके नाम २–औरस १ उरस्य २ ॥

–तातस्तु जनकः पिता ॥ २८॥

पिताके नाम ३–तात १ जनक २ पितृ ३॥ २८ ॥

जनयित्री प्रसूर्माता जननी--

माताके नाम ४–जनयित्री १ प्रसू २ मातृ ३ जननी ४ ॥

--भगिनी स्वसा ।

बहिनके नाम२–भगिनी१ स्वसृ२॥

ननान्दा तु स्वसा पत्यु–

ननन्दका नाम १–ननान्द १ ॥

नप्त्री पौत्री सुतात्मजा ॥२९॥

नातिनिके नाम ३–नप्त्री १ पौत्री २ सुतात्मजा ३ ॥ २९ ॥

भार्यास्तु भ्रातृवर्गस्य यातरः स्युः परस्परम् ।

आपसमें भ्रातृवर्गकी स्त्रियोंका नाम १–यातृ १ ॥

प्रजावती भ्रातृजाया--

भौजाईके नाम २–प्रजावती १ भ्रातृजाया २ ॥

--मातुलानी तु मातुली ॥३०॥

मामीके नाम २–मातुलानी १ मातुली २ ॥ ३० ॥

पतिपत्न्योः प्रसूः श्वश्रूः--

पति और स्त्रीकी माताका नाम१–श्वश्रू १ ॥

–श्वशुरस्तु पिता तयोः ।

पति और स्त्रीके पिताका नाम १–श्वशुर १ ॥

पितुर्भ्राता पितृव्यः स्या–

चाचा,या ताऊका नाम १–पितृव्य१॥

–न्मातुर्भ्राता च मातुलः ॥ ३१ ॥

मामाके नाम २—मातुर्भ्रातृ १ मातुल २ ॥ ३१ ॥

श्यालाः स्युर्भ्रातरः पत्न्याः—

शालेका नाम १—श्याल १—

—स्वामिनो देवृदेवरौ ।

देवरके नाम २—देवृ १ देवर २ ॥

स्वस्रीयो भागिनेयः स्या—

भानजेके नाम २—स्वस्रीय १ भागिनेय २ ॥

ज्जामाता दुहितुः पतिः, ॥३२॥

जमाईके नाम १—जामातृ १॥३२॥

पितामहः पितृपिता—

दादाके नाम २—पितामह १ पितृपितृ २ ॥

—तत्पिता प्रपितामहः ।

परदादाका नाम १—प्रपितामह १॥

मातुर्मातामहाद्येवं—

इस प्रकार (नानाका नाम) मातामह (परनानाका) प्रमातामह ॥

सपिण्डास्तु सनाभयः ॥ ३३ ॥

सपिण्डके नाम २—सपिण्ड १ सनाभि २ ॥ ३३ ॥

समानोदर्यसोदर्यसगर्भ्यसहजाः समाः ।

सगे भाईके नाम ४—समानोदर्य १ सोदर्य २ सगर्भ्य ३ सहज ४ ॥

सगोत्रबान्धवज्ञातिबन्धुस्वस्वजनाः समाः ॥ ३४ ॥

एक गोत्रवालोंके अर्थात् समगोत्रियोंके नाम ६—सगोत्र १ बान्धव २ ज्ञाति ३ बन्धु ४ स्व ५ स्वजन ६॥३४

ज्ञातेयं बन्धुता तेषां, क्रमाद्भावसमूहयोः ।

बिरादरीके भावका नाम १—ज्ञातेय १ ॥ परिवारके समूहका नाम १—बन्धुता १ ॥

धवः प्रियः पतिर्भर्ता—

पतिके नाम ४—धव १ प्रिय २ पति ४ भर्तृ ४ ॥

—जारस्तूपपतिः समौ ॥ ३५ ॥

जिसके साथ ब्याही हो उससे अतिरिक्त अन्यसे मैथुन करती हो तो उस पतिके नाम २—जार १ उपपति२॥३५

अमृते जारजः कुण्डो—

अपने पतिके जीते ही अन्य पतिसे जो पुत्र हो उसका नाम १—कुण्ड १ ॥

—मृते भर्तरि गोलकः ।

जो पतिके मरनेपर अन्य पतिसे उत्पन्न हो उसका नाम १—गोलक १ ॥

भ्रात्रीयो भ्रातृजो—

भतीजेके नाम २—भ्रात्रीय १ भ्रातृज २ ॥

—भ्रातृभगिन्यौ भ्रातरावुभौ ३६

बहिनभाईके नाम २–भ्रातृभगिनी (न्यौ) १ भ्रातृ (तरौ) २ ॥ ३६ ॥

मातापितरौ पितरौ मातरपितरौ प्रसूजनयितारौ ।

जहां मातापिताको साथ ही कहना हो उसके नाम ४–मातापितृ (तरौ) १ पितृ (तरौ) २ मातरपितृ (तरौ) ३ प्रसूजनयितृ (तारौ) ४ ॥

श्वश्रूश्वशुरौ श्वशुरौ–

ऐसे ही सासु ससुरके नाम २–श्वश्रूश्वशुर (रौ) १ श्वशुर (रौ) २ ।

–पुत्रौ पुत्रश्च दुहिता च ॥ ३७ ॥

इसी प्रकार कन्यापुत्रका नाम १ ॥ पुत्र (त्रौ) १ ॥ ३७ ॥

दंपती जंपती जायापती भार्यापती च तौ ।

स्त्रीपुरुषके इकठ्ठे नाम ४–दम्पति (ती) १ जम्पति (ती) २ जायापति (ती) ३ भार्यापति (ती) ४ ॥

गर्भाशयो जरायुः स्या–

गर्भस्थानके नाम २–गर्भाशय १ जरायु २ ॥

–दुल्बं च कललोऽस्त्रियाम् ३८

गर्भबन्धनके नाम २–उल्ब १ कलल २ ॥ ३८ ॥

सूतिमासो वैजननो–

गर्भ रहनेसे नवमें वा दशमें मासके नाम जिसमें बालक पैदा होता है २–सूतिमास १ वैजनन २ ॥

–गर्भो भ्रूण इमौ समौ ।

गर्भके नाम २–गर्भ १ भ्रूण २ ॥

तृतीयाप्रकृतिः षण्ढः क्लीबः पण्डो नपुंसके ॥ ३९ ॥

हीजडेके नाम ५–तृतीयाप्रकृति १ षण्ढ २ क्लीब ३ पण्ड ४ नपुंसक ५ ॥ ३९ ॥

शिशुत्वं शैशवं बाल्यं–

लड़कपनके नाम ३–शिशुत्व १ शैशव २ बाल्य ३ ॥

तारुण्यं यौवनं समे ।

यौवनके नाम २–तारुण्य १ यौवन २ ॥

स्यात्स्थाविरं तु वृद्धत्वं–

बुढापेके नाम २–स्थाविर १ वृद्धत्व २ ॥

वृद्धसंघेऽपि वार्धकम् ॥ ४० ॥

बूढोंके समूहका नाम १–वार्धक १ ॥ ४० ॥

पलितं जरसा शौक्ल्यं केशादौ–

अतिबुढ़ापेमें केश आदिकमें जरा करके जो सफेदी आती है उसका नाम १–पलित १ ॥

–विस्रसा जरा ।

बुढाईके नाम २–विस्रसा १ जरा २ ॥

स्यादुत्तानशया डिम्भा स्तनपा च स्तनन्धयी ॥ ४१ ॥

दूधपिई छोटी लड़कीके नाम ४–उत्तानशया १ डिम्भा २ स्तनपा ३ स्तनन्धयी ४ ॥ ४१ ॥

बालस्तु स्यान्माणवको–

सोलह वर्षपर्यन्त लड़केके नाम २–बाल १ माणवक २ ॥

–वयःस्थस्तरुणो युवा ।

जवान पुरुषके नाम ३–वयःस्थ १ तरुण २ युवन् ३ ॥

प्रवयाः स्थविरो वृद्धो जीनो जीर्णो जरन्नपि ॥ ४२ ॥

बूढ़ेके नाम ६–प्रवयस् १ स्थविर २ वृद्ध ३ जीन ४ जीर्ण ५ जरत् ६ ॥ ४२ ॥

वर्षीयान्दशमी ज्यायान्–

अतिबूढ़ेके नाम ३–वर्षीयस् १ दशमिन् २ ज्यायस् ३ ॥

–पूर्वजस्त्वग्रियोऽग्रजः ।

ज्येष्ठ भाईके नाम ३–पूर्वज १ अग्रिय २ अग्रज ३ ॥

जघन्यजे स्युः कनिष्ठयवीयोऽवरजानुजाः ॥ ४३ ॥

छोटे भाईके नाम ५–जघन्यज १ कनिष्ठ २ यवीयस् ३ अवरज ४ अनुज ५ ॥ ४३ ॥

अमांसो दुर्बलश्छातो–

दुबलेके नाम ३– अमांस १ दुर्बल २ छात ३ ॥

–बलवान्मांसलोंऽसलः ।

बलवान्के नाम ३–बलवत् १ मांसल २ अंसल ३ ॥

तुन्दिलस्तुन्दिभस्तुन्दी बृहत्कुक्षिः पिचण्डिलः ॥ ४४ ॥

बड़े पेटवालेके नाम ५–तुंदिल १ तुंदिभ २ तुन्दिन् ३ बृहत्कुक्षि ४ पिचण्डिल ॥ ४४ ॥

अवटीटोऽवनाटश्चावभ्रटो नतनासिके ।

चपटी नाकवालेके नाम ३–अवटीट १ अवनाट २ अवभ्रट ३ ॥

केशवः केशिकः केशी–

अच्छे बालवालोंके नाम ३–केशव १ केशिक २ केशिन् ३ ॥

–वलिनो वलिभः समौ ॥ ४५ ॥

जिसकी बुढ़ापेके मारे खाल सिकुड़ गयी हो उसके नाम २– वलिन १ वलिभ २ ॥ ४५ ॥

विकलांगस्त्वपोगण्डः–

जिसका अपनेहीसे कोई अंग अधिक वा कम हो उसके नाम २–विकलांग १ अपोगण्ड ॥ २ ॥

–खर्वो ह्रस्वश्च वामनः ।

बौनेके नाम ३–खर्व १ ह्रस्व २ वामन ३ ॥

खरणाः स्यात्खरणसो–

जिसकी तीखी नाक हो उसके नाम २--खरणस् १ खरणस २ ॥

--विग्रस्तु गतनासिकः ॥ ४६ ॥

नकटेके नाम २--विग्र १ गतनासिक २ ॥ ४६ ॥

खुरणाः स्यात्खुरणसः--

जिसकी पशुके खुरके सदृश नासिका हो उसके नाम २--खुरणस् १ खुरणस ॥ २ ॥

प्रज्ञुः प्रगतजानुकः ।

वातआदि रोगसे जिसके घुटने बहुत दूर दूर हो गये हों उसके नाम २--प्रज्ञु १ प्रगतजानुक २ ॥

--ऊर्ध्वज्ञुरूर्ध्वजानुः स्यात्--

जिसके घुटने ऊंचे हों उसके नाम २-ऊर्ध्वज्ञु १ ऊर्ध्वजानु २ ॥

--संज्ञुः संहतजानुकः ॥ ४७ ॥

जिसके घुटने मिले हुए हों उसके नाम २--संज्ञु १ संहतजानुक २॥४७॥

स्यादेडे बधिरः--

बहिरेके नाम २--एड १ बधिर २

--कुब्जे गडुलः--

कुबड़ेके नाम २--कुब्ज १ गडुल २॥

--कुकरे कुणिः ।

जिसके हाथमें रोगादिसे कुछ विकार हो उसके नाम २--कुकर १ कुणि २ ॥

पृश्निरल्पतनौ--

जिसका बहुत ही छोटा शरीर हो उसके नाम २--पृश्नि १ अल्पतनु २ ॥

--श्रोणः पंगौ--

लूलेके नाम २--श्रोण १ पंगु २ ॥

--मुण्डस्तु मुण्डिते ॥ ४८ ॥

जिसका शिर मूँड़ा हुआ हो उसके नाम २--मुण्ड १ मुण्डित २॥४८॥

बलिरः केकरे--

भेड़े (जिसके नेत्रकी पुतली फिरती हो) उसके नाम २--बलिर १ केकर २॥

--खोडे खञ्ज--

लँगड़ेके नाम २--खोड १ खञ्ज २॥

--खिषु जरावराः । जडुलः कालकः पिप्लु--

जिसके अंगमें लशुनाकारका चिह्न हो उसके नाम ३--जडुल १ कालक २ पिप्लु ३ ॥

--स्तिलकस्तिलकालकः ॥४९॥

देहके तिलके नाम २--तिलक १ तिलकालक २ ॥ ४९ ॥

अनामयं स्यादारोग्यं--

विना रोगके नाम २--अनामय १ आरोग्य २ ॥

--चिकित्सा रुक्प्रतिक्रिया ।

इलाज करनेके नाम २--चिकित्सा १ रुक्प्रतिक्रिया २ ॥

भेषजौषधभैषज्यान्यगदो जायुरित्यपि ॥ ५० ॥

औषधके नाम ५–भेषज १ औषध २ भैषज्य ३ अगद ४ जायु ॥५० ॥

स्त्री रुग्रुजा चोपतापरोगव्याधिगदामयाः ।

रोगके नाम ७–रुज् १ रुजा २ उपताप ३ रोग ४ व्याधि ५ गद ६ आमय ७ ॥

क्षयः शोषश्च यक्ष्मा च–

क्षय रोगके नाम ३–क्षय १ शोष २ यक्ष्मन् ३ ॥

–प्रतिश्यायस्तु पीनसः ॥५१॥

पीनसरोगके नाम २–प्रतिश्याय १ पीनस २ ॥ ५१ ॥

स्त्री क्षुत्क्षुतं क्षवः पुंसि–

छींकके नाम ३–क्षुत् १ क्षुत २ क्षव ३।

–कासस्तु क्षवथुः पुमान् ।

खांसीके नाम २–कास १ क्षवथु २।

शोफस्तु श्वयथुः शोथः–

सूजनके नाम ३–शोफ १ श्वयथु २ शोथ ३ ॥

--पादस्फोटो विपादिका ॥५२॥

बिवायी रोगके नाम २--पादस्फोट १ विपादिका २ ॥ ५२ ॥

किलाससिध्मे–

सेहुवां (सीप) के नाम २--किलास १ सिध्म २ ॥

--कच्छ्वां तु पामपामे विचर्चिका ।

खाजुरोगके नाम ४--कच्छू १ पामन् २ पामा ३ विचर्चिका ४ ॥

कण्डूः खर्जूश्च कण्डूया–

खुजलीके नाम ३--कण्डू १ खर्जू २ कण्डूया ३ ॥

--विस्फोटः पिटकोऽस्त्रियाम् ॥ ५३ ॥

फोड़ेके नाम २–विस्फोट १ पिटक २ ॥ ५३ ॥

व्रणोऽस्त्रियामीर्ममरुः क्लीबे–

घावके नाम ३-व्रण १ ईर्म २ अरुस् ३।

–नाडीव्रणः पुमान् ।

नासूरका नाम १–नाडीव्रण १ ॥

कोठो मण्डलकं–

जो गोल उज्ज्वल चन्दे पड़ जाते हैं उस कोढ़के नाम २–कोठ १ मण्डलक २ ॥

–कुष्ठश्वित्रे–

छाजनके नाम २–कुष्ठ १ श्वित्र २ ॥

–दुर्नामकार्शसी ॥ ५४ ॥

बवासीरके नाम २–दुर्नामक १ अर्शस् २ ॥ ५४ ॥

आनाहस्तु विबन्धः स्याद्–

कजई जिसमें मल मूत्र रुक जाय उस रोगके नाम २--आनाह १ विबन्ध २ ॥

--ग्रहणी रुक्प्रवाहिका ।

संग्रहणी रोगके नाम २--ग्रहणी १ प्रवाहिका २ ॥

प्रच्छर्दिका वमिश्च स्त्री पुमांस्तु वमथुः समाः ॥५९॥

उलटी अर्थात् वमनके नाम ३--प्रच्छर्दिका १ वमि २ वमथु ३ ॥५५॥

व्याधिभेदा विद्रधिः स्त्री ज्वर-मेहभगन्दराः ।

व्यराथिया (एक प्रकारका फोड़ा) का नाम १--विद्राधि १ । ज्वरका नाम १--ज्वर १ ॥ प्रमेहका नाम १ मेह १ । भगन्दर अर्थात् गुदसमीपके फोड़ेका नाम १--भगन्दर १ ॥

अश्मरी मूत्रकृच्छ्रं स्यात्--

कर्करोग अर्थात् पथरीरोगके नाम २--अश्मरी १ मूत्रकृच्छ्र २ ॥

--पूर्वे शुक्रादवधेस्त्रिषु ॥ ५६ ॥

यहांसे लेकर शुक्रशब्दके पहलेके शब्द तीनों लिङ्गोंमें होते हैं ॥ ५६ ॥

रोगहार्यगदंकारो भिषग्वैद्यो चिकित्सके ॥

वैद्यके नाम ५--रोगहारिन् १ अगदंकार २ भिषज् ३ वैद्य ४ चिकित्सक ५॥

वार्त्तो निरामयः कल्य उल्लाघो निर्गतो गदात् ॥ ५७ ॥

रोगरहितके नाम ४--वार्त १ निरामय २ कल्य ३ उल्लाघ ४ ॥ ५७ ॥

ग्लानग्लास्नू--

रोगवशसे क्षीण हो जानेवालेके नाम २--ग्लान १ ग्लास्नु २ ॥

--आमयावी विकृतो व्याधितोऽपटुः । आतुरोऽभ्यमितोऽभ्यान्तः--

रोगीके नाम ७--आमयाविन् १ विकृत २ व्याधित ३ अपटु ४ आतुर ५ अभ्यमित ७ अभ्यान्त ७ ॥

--समौ पामनकच्छुरौ ॥ ९८ ॥

खुजलीवालेके नाम २--पामन १ कच्छुर २ ॥ ५८ ॥

दद्रुणो दद्रुरोगी स्या--

दद्रुरोगीके नाम २--दद्रुण १ दद्रुरोगिन् २ ॥

--दर्शोरोगयुतोऽर्शसः ।

बवासीररोगीका नाम १--अर्शस १॥

वातकी वातरोगी स्यात्-

वातरोगीके नाम २--वातकिन् १ वातरोगिन् २ ॥

--सातिसारोऽतिसारकी ॥५९॥

जिसको बहुत दस्त हों उसके नाम २--सातिसार १ अतिसारकिन् २ ॥५९॥

स्युः क्लिन्नाक्षे चुल्लचिल्लपिल्लाः क्लिन्नेऽक्षिण चाप्यमी ।

चुन्धेके नाम ४—क्लिन्नाक्ष १ चुल्ल २ चिल्ल ३ पिल्ल ४ ॥

उन्मत्त उन्मादवति—

उन्मत्त अर्थात् बावलेके नाम २—उन्मत्त १ उन्मादवत् २ ॥

—श्लेष्मलः श्लेष्मणः कफी ॥ ६० ॥

कफरोगवालेके नाम ३—श्लेष्मल १ श्लेष्मण २ कफिन् ३ ॥ ६० ॥

न्युब्जो भुग्ने रुजा—

कुबड़ेका नाम १—न्युब्ज १ ॥

—वृद्धनाभौ तुन्दिलतुन्दिभौ ।

जिसकी वातरोगसे नाभि बढ़ जाय उसके नाम ३—वृद्धनाभि १ तुन्दिल २ तुन्दिभ ३ ॥

किलासी सिध्मलो—

किलास (सींप्) रोगीके नाम २—किलासिन् १ सिध्मल २ ॥

—ऽन्धोऽदृक्—

अन्धेके नाम २—अन्ध १ अदृश् २ ॥

—मूर्छाले मूर्तमूर्छितौ ॥ ६१ ॥

बेहोशवालेके नाम ३—मूर्च्छाल १ मूर्त २ मूर्छित ३ ॥ ६१ ॥

शुक्रं तेजोरेतसी च बीजवीर्येन्द्रियाणि च ।

धातुके नाम ६—शुक्र १ तेजस् २ रेतस् ३ बीज ४ वीर्य ५ इंद्रिय ६ ॥

मायुः पित्तं—

पित्तके नाम २—मायु १ पित्त २ ॥

—कफः श्लेष्मा—

कफके नाम २—कफ १ श्लेष्मन् २ ।

—स्त्रियां तु त्वगसृग्धरा ॥ ६२ ॥

खालके नाम २—त्वच् १ असृग्धरा २ ॥ ६२ ॥

पिशितं तरसं मांसं पललं क्रव्यमामिषम् ।

मांसके नाम ६—पिशित १ तरस २ मांस ३ पलल ४ क्रव्य ५ आमिष ६ ॥

उत्तप्तं शुष्कमांसं स्यात्तद्वल्लूरं त्रिलिङ्गकम् ॥ ६३ ॥

सूखे मांसके नाम ३—उत्तप्त १ शुष्कमांस २ वल्लूर ३ ॥ ६३ ॥

रुधिरेऽसृग्लोहितास्त्ररक्तक्षतजशोणितम् ।

रुधिरके नाम ७—रुधिर १ असृज् २ लोहित ३ अस्त्र ४ रक्त ५ क्षतज ६ शोणित ७ ॥

बुक्काग्रमांसं—

कलेजेके नाम २—बुक्का १ अग्रमांस ॥

—हृदयं हृ—

हृदयके नाम २—हृदय १ हृद् २ ॥

—न्मेदस्तु वपा वसा ॥ ६४ ॥

चरबीके नाम ३–मेदस् १ वपा २ वसा ३ ॥ ६४ ॥

पश्चाद्ग्रीवाशिरा मन्या–

गलेके पीछेकी नसका नाम १–मन्या १ ॥

–नाडी तु धमनिः शिरा ।

नोड़ीके नाम ३–नाडी १ धमनि २ शिरा ३ ॥

तिलकं क्लोम–

शरीरके तिलके नाम २–तिलक १ क्लोमन् २ ॥

–मस्तिष्कं गोर्दं–

गुर्देके नाम २–मस्तिष्क १ गोर्द २ ॥

–किट्टं मलोऽस्त्रियाम् ॥ ६५ ॥

मैलके नाम २–किट्ट १ मल २ ॥ ६५ ॥

अन्त्रं पुरीतद्–

आंतोंके नाम २–अन्त्र १ पुरीतत् २ ॥

–गुल्मस्तु प्लीहा पुं–

पलैया (तिली) रोगके नाम २–गुल्म १ प्लीहन् २ ॥

–स्यथ वस्नसा । स्नायुः स्त्रियां–

नसके नाम २–वस्नसा १ स्नायु २ ॥

–कालखण्ड यकृती तु समे इमे ॥ ६६ ॥

पेटमें जो दहिनी ओर बटिया हो उसके नाम २–कालखण्ड १ यकृत् २ ॥ ६६ ॥

सृणिका स्यन्दिनी लाला–

लारके नाम ३–सृणिका १ स्यन्दिनी २ लाला ३ ॥

दूषिका नेत्रयोर्मलम् ।

कीचड (गीड़) का नाम १–दूषिका १ ॥

मूत्रं प्रस्राव–

मूतके नाम २–मूत्र १ प्रस्राव २ ॥

–उच्चारावस्करौ शमलं शकृत् ॥ ६७ ॥ पुरीषं गूथवर्चस्कमस्त्री विष्ठाविशौ स्त्रियौ ।

विष्ठाके नाम ९–उच्चार १ अवस्कर २ शमल ३ शकृत् ४ ॥ ॥ ६७ ॥ पुरीष ५ गूथ ६ वर्चस्क ७ विष्ठा ८ विश् ९ ॥

स्यात्कर्परः कपालोऽस्त्री–

कपालके नाम २–कर्पर १ कपाल २ ॥

–कीकसं कुल्यमस्थि च ॥ ६८ ॥

हड्डीके नाम ३–कीकस १ कुल्य २ अस्थि ॥ ६८ ॥

स्याच्छरीरास्थि कंकालः–

खांकरका नाम १–कंकाल १ ॥

–पृष्ठास्थि तु कशेरुका ।

पीठकी हड्डीका नाम १–कशेरुका १ ॥

शिरोस्थनि करोटिः स्त्री–

खोपडीका नाम १–करोटि १ ॥

–पार्श्वास्थनि तु पर्शुका ॥ ६९ ॥

पँसलीका नाम १–पर्शुका १ ॥ ६९ ॥

अङ्गं प्रतीकोऽवयवोऽपघनो–

अङ्गके नाम ४—अंग १ प्रतीक २ अवयव ३ अपघन ४ ॥

-ऽथ कलेवरम् । गात्रं वपुः संहननं शरीरं वर्ष्म विग्रहः ॥७०॥ कायो देहः क्लीबपुंसोः स्त्रियां मूर्तिस्तनुस्तनूः ।

देहके नाम १२—कलेवर १ गात्र २ वपुष् ३ संहनन ४ शरीर ५ वर्ष्मन् ६ विग्रह ७ ॥ ७० ॥ काय ८ देह ९ मूर्ति १० तनु ११ तनू १२ ॥

पादाग्रं प्रपदं--

पांवके आगेके नाम २—पादाग्र १ प्रपद २ ॥

--पादः पदंघ्रिश्चरणोऽस्त्रियाम् ७१॥

पांवके नाम ४—पाद १ पद् २ अंघ्रि ३ चरण ४ ॥ ७१ ॥

तद्ग्रन्थी घुटिके गुल्फौ--

टांकनोंके नाम २--घुटिका १ गुल्फ २

—पुमान्पार्ष्णिस्तयोरधः ।

एड़ीका नाम १—पार्ष्णि १ ॥

जंघा तु प्रसृता—

जंघा (पींडी) के नाम २--जंघा १ प्रसृता २ ॥

--जानूरुपर्वाष्ठीवदस्त्रियाम् ।७२॥

जानुके नाम ३—जानु १ ऊरुपर्वन् २ अष्ठीवत् ३ ॥ ७२ ॥

सक्थि क्लीबे पुमानूरु—

निरोहके नाम २—सक्थि १ ऊरु २ ॥

—स्तत्सान्धिः पुंसि वंक्षणः ।

टिहुनीका नाम १—वंक्षण १ ॥

गुदं त्वपानं पायुर्ना—

गुदाके नाम ३—गुद १ अपान २ पायु ३ ॥

—बस्तिर्नाभेरधो द्वयोः ॥ ७३ ॥

जहां मूत्र रहता है अर्थात् पेड़ूका नाम १—बस्ति २ ॥ ७३ ॥

कटो ना श्रोणिफलकं—

कमरके दोनों बगलके नाम ३—कट १ श्रोणि २ फलक ३ ॥

—कटिः श्रोणिः ककुद्मती ।

कमरके नाम ३—कटि १ श्रोणि २ ककुद्मती ३ ॥

पश्चान्नितम्बः स्त्रीकट्याः—

स्त्रीके चूतड़का नाम १—नितम्ब १ ॥

—क्लीबे तु जघनं पुरः ॥ ७४ ॥

स्त्रीके जांघका नाम १—जघन १ ॥ ॥ ७४ ॥

—कूपकौ तु नितम्बस्थौ, द्वयहीने कुकुन्दरे ।

नितम्बमें जो दो गड्ढे होते हैं उनका नाम १—कुकुन्दर १ ॥

स्त्रियां स्फिचौ कटिप्रोथा—

कूलेके नाम २—स्फिच् १ कटिप्रोथ २ ॥

–वुपस्थो वक्ष्यमाणयोः ॥७५॥

लिंगयोनिका नाम १–उपस्थ१ ॥७५॥

भगं योनिर्द्वयोः–

योनिके नाम २–भग १ योनि२ ॥

–शिश्नो मेढ्रो मेहनशेफसी ।

लिंगके नाम ४–शिश्न १ मेढ्र २ मेहन ३ शेफस् ४ ॥

मुष्कोऽण्डकोशो वृषणः–

अण्डकोशके नाम ३–मुष्क १ अण्डकोश २ वृषण ३ ॥

–पृष्ठवंशाधरे त्रिकम् ॥ ७६ ॥

पीठके बांसके नीचे जहां तीन हाड़ मिले हैं उस जोड़का नाम १–त्रिक १ ॥ ७६ ॥

पिचण्डकुक्षी जठरोदरं तुन्दं–

पेटके नाम ५–पिचण्ड १ कुक्षि २ जठर ३ उदर ४ तुन्द ५ ॥

–स्तनौ कुचौ ।

कुचके नाम २–स्तन १ कुच२ ॥

चूचुकं तु कुचाग्रं स्या–

कुचके अग्रभागके नाम २–चूचुक १ कुचाग्र २ ॥

–न्न ना क्रोडं भुजान्तरम् ७७॥

गोदके नाम २–क्रोड १ भुजान्तर २ ॥ ७७ ॥

उरो वत्सं च वक्षश्च–

हृदयके नाम ३–उरस् १ वत्स २ वक्षस् ३ ॥

–पृष्ठं तु चरमं तनोः ।

पीठका नाम १–पृष्ठ १ ॥

स्कन्धो भुजशिरोंऽसोऽस्त्री–

कंधेके नाम ३–स्कन्ध १ भुजशिरस् २ अंस ३ ॥

–सन्धी तस्यैव जत्रुणी ॥ ७८ ॥

हँसलीका नाम १–जत्रु १॥ ७८॥

बाहुमूले उभे कक्षौ–

बगलोंका नाम १–कक्ष १ ॥

–पार्श्वमस्त्री तयोरधः ।

बगलके नीचेका नाम १–पार्श्व१॥

मध्यमं चावलग्नं च मध्योऽस्त्री--

पेटके नीचेका और हाथके ऊपरके भागके नाम ३–मध्यम १ अवलग्न २ मध्य ३ ॥

–द्वौ परौ द्वयोः ॥ ७९ ॥

भुजबाहू प्रवेष्टो दोः स्यात्–

बांहके नाम ४--॥ ७९ ॥ भुज १ बाहु २ प्रवेष्ट ३ दोस् ४ ॥

--कफोणिस्तु कूर्परः ।

कोनीके नाम २--कफोणि १ कूर्पर २ ॥

अस्योपरि प्रगण्डः स्यात्--

कोनीके ऊपरका नाम १–प्रगण्ड१॥

–प्रकोष्ठस्तस्य चाप्यधः ॥ ८० ॥

कोनीके नीचेका नाम १–प्रकोष्ठ १ ॥ ८० ॥

मणिबन्धादाकनिष्ठं करस्य करभो बहिः ।

मणिबन्धसे कनिष्ठांगुलीपर्यन्तका नाम १–करभ १ ॥

पञ्चशाखः शयः पाणि–

हाथके नाम ३–पञ्चशाख १ शय २ पाणि ३ ॥

–स्तर्जनी स्यात्प्रदेशिनी ॥ ८१ ॥

हाथके अँगूठेके पासकी अँगुलीके नाम २–तर्जनी १ प्रदेशिनी २ ॥ ८१ ॥

अंगुल्यः करशाखाः स्युः–

अँगुलियोंके नाम २–अंगुली १ करशाखा २ ॥

–पुंस्यंगुष्ठः–

अँगूठाका नाम १–अंगुष्ठ १ ॥

–प्रदेशिनी ।

अँगूठाके पासवाली अंगुलीका नाम १–प्रदेशिनी १ ॥

मध्यमाऽनामिका चापि कनिष्ठा चेति ताः क्रमात् ॥ ८२ ॥

बीचवाली अंगुलीका नाम १–मध्यमा १ ॥

बीचवाली और कनअंगुलीके बीचवालीका नाम १–अनामिका १ ॥

कनअंगुलीका नाम १–कनिष्ठा १ ॥ ८२ ॥

पुनर्भवः कररुहो नखोऽस्त्री नखरोऽस्त्रियाम् ।

नाखूनोंके नाम ४–पुनर्भव १ कररुह २ नख ३ नखर ४ ॥

प्रादेशतालगोकर्णास्तर्जन्यादियुते तते ॥ ८३ ॥

अंगुष्ठ तर्जनीतककी लम्बाईका नाम १–प्रादेश १ ॥

अंगुष्ठ और बीचवालीके फैलानेकी लंबाईका नाम १–ताल १ ॥

अंगुष्ठ अनामिकाके फैलानेकी लम्बाईका नाम १–गोकर्ण १ ॥ ८३ ॥

अंगुष्ठे सकनिष्ठे स्याद्वितस्तिर्द्वादशांगुलः ।

नापनेमें बिलस्तके नाम २–वितस्ति १ द्वादशांगुल २ ॥

पाणौ चपेटप्रतलप्रहस्ता विस्तृतांगुलौ ॥ ८४ ॥

थप्पड़के नाम ३–चपेट १ प्रतल २ प्रहस्त ३ ॥ ८४ ॥

द्वौ संहतौ संहतलप्रतलौ वामदक्षिणौ ।

दुहत्थड़के नाम २–संहतल १ प्रतल २ ॥

पाणिर्निकुब्जः प्रसृति–

चुल्लूका नाम १–प्रसृति १ ॥

–स्तौ युतावञ्जलिः पुमान् ॥ ८५ ॥

अंजलिका नाम १—अञ्जलि १॥८५॥

प्रकोष्ठे विस्तृतकरे हस्तो—

हाथका नाम १—हस्त १ ॥

—मुष्टया तु बद्धया । सरत्निः स्या-

मुट्ठी बांधे हाथका नाम १—(सरत्नि) रत्नि १ ॥

—दरत्निस्तु निष्कनिष्ठेन मुष्टिना ॥ ८६ ॥

कनअंगुलियाको छोड़के मुट्ठी बांधे हाथका नाम १—अरत्नि १ ॥ ८६ ॥

व्यामो बाह्वोः सकरयोस्ततयोः स्तिर्यगन्तरम् ।

हाथ फैलानेका नाम १ व्याम १ ॥

ऊर्ध्वविस्तृतदोः पाणिर्नृमाने पौरुषं त्रिषु ॥ ८७ ॥

ऊपरको हाथ उठाके मापनेका नाम १—पौरुष १ ॥ ८७ ॥

कण्ठो गलो—

गलेके नाम २—कण्ठ १ गल २ ॥

—ऽथ ग्रीवायां शिरोधिः कन्धरेत्यपि ।

गर्दनके नाम ३—ग्रीवा १ शिरोधि २ कन्धरा ३ ॥

कम्बुग्रीवा त्रिरेखा सा—

तीन रेखासे युक्त गर्दनका नाम १—कम्बुग्रीवा १ ॥

—ऽवटुर्घाटा कृकाटिका ॥८८॥

घांटीके नाम ३—अवटु १ घाटा २ कृकाटिका ३ ॥ ८८ ॥

वक्त्रास्ये वदनं तुण्डमाननं लपनं मुखम् ।

मुँहके नाम ७—वक्त्र १ आस्य २ वदन ३ तुण्ड ४ आनन ५ लपन ६ मुख ७ ॥

क्लीबे घ्राणं गन्धवहा घोणा नासा च नासिका ॥ ८९ ॥

नाकके नाम ५—घ्राण १ गन्धवहा २ घोणा ३ नासा ४ नासिका ५ ॥ ८९ ॥

ओष्ठाधरौ तु रदनच्छदौ दशनवाससी ।

होठके नाम ४—ओष्ठ १ अधर २ रदनच्छद ३ दशनवासस् ४ ॥

अधस्ताच्चिबुकं—

ठोड़ीका नाम १—चिबुक १ ॥

—गण्डौ कपोलौ—

गालके नाम २—गण्ड १ कपोल २॥

—तत्परा हनुः ॥ ९० ॥

कनपटीका नाम १—हनु १ ॥९०॥

रदना दशना दन्ता रदा—

दांतके नाम ४—रदन १ दशन २ दन्त ३ रद ४ ॥

—स्तालु तु काकुदम् ।

तालुएके नाम २—तालु १ काकुद २।

रसज्ञा रसना जिह्वा-

जीभके नाम ३-रसज्ञा १ रसना २ जिह्वा ३ ॥

-प्रान्तावोष्ठस्य सृक्किणी ॥९१॥

होंठोंके किनारोंका नाम १-सृक्किणी १ ॥ ९१ ॥

ललाटमलिकं गोधि-

लिलारके नाम ३-ललाट १ अलिक २ गोधि ३ ॥

-रूर्ध्वे दृग्भ्यां भ्रुवौ स्त्रियौ ॥

भौंहका नाम १-भ्रू १ ॥

कूर्चमस्त्री भ्रुवोर्मध्यं-

भौंहके बीचका नाम १-कूर्च १ ॥

-तारकाक्ष्णः कनीनिका ॥९२॥

आंखके तिलका नाम १-तारका १॥९२

लोचनं नयनं नेत्रमीक्षणं चक्षु-रक्षिणी । दृग्दृष्टी चा-

आंखके नाम ८-लोचन १ नयन २ नेत्र ३ ईक्षण ४ चक्षुष् ५ अक्षि ६ दृश् ७ दृष्टि ८ ॥

-ऽस्रु नेत्राम्बु रोदनं चास्र-मश्रु च ॥९३ ॥

आंसूके नाम ५-अस्रु १ नेत्राम्बु २ रोदन ३ अस्र ४ अश्रु ५ ॥ ९३ ॥

अपाङ्गौ नेत्रयोरन्तौ-

आंखके किनारोंका नाम १-अपांग १ ॥

-कटाक्षोऽपाङ्गदर्शने ।

अपांगसे देखनेका नाम १-कटाक्ष १

कर्णशब्दग्रहौ श्रोत्रं श्रुतिः स्त्री श्रवणं श्रवः ॥ ९४ ॥

कानके नाम ६-कर्ण १ शब्दग्रह २ श्रोत्र ३ श्रुति ४ श्रवण ५ श्रवस् ६॥९४॥

उत्तमांगं शिरः शीर्षं मूर्द्धा ना मस्तकोऽस्त्रियाम् ।

शिरके नाम ५-उत्तमांग १ शिरस् २ शीर्ष ३ मूर्धन् ४ मस्तक ५ ॥

चिकुरः कुन्तलो बालः कचः केशः शिरोरुहः ॥ ९५ ॥

बालके नाम ६-चिकुर १ कुन्तल २ बाल ३ कच ४ केश ५ शिरोरुह ६ ॥ ९५ ॥

तद्वृन्दे कैशिकं कैश्य-

बालोंके समूहके नाम २-कैशिक १ कैश्य २ ॥

-मलकाश्चूर्णकुन्तलाः ।

टेढ़े बालोंके नाम २-अलक १ चूर्णकुन्तल २ ॥

ते ललाटे भ्रमरकाः-

ललाटपर लटकते हुए बालोंका नाम १-भ्रमरक १ ॥

-काकपक्षः शिखण्डकः ॥९६॥

जुल्फोंके नाम २-काकपक्ष १ शिखण्डक २ ॥ ९६ ॥

कबरी केशवेशो-

मांगके नाम २-कबरी १ केशवेश २ ॥

-ऽथ धम्मिल्लः संयताः कचाः।

बँधे हुए बालोंका नाम १ धम्मिल्ल १ ॥

शिखा चूडा केशपाशी-

चोटीके नाम ३-शिखा १ चूडा २ केशपाशी ३ ॥

-व्रतिनस्तु सटा जटा ॥९७॥

जटाके नाम २-सटा १ जटा २ ॥९७॥

वेणिः प्रवेणी-

तैलादि न लगानेके हेतु लटरे बाल हो जानेके नाम २-वेणि १ प्रवेणी २ ॥

-शीर्षण्यशिरस्यौ विशदे कचे ॥

साफ बालोंके नाम २-शीर्षण्य १ शिरस्य २ ॥

पाशः पक्षश्च हस्तश्च कलापार्थाः कचात्परे ॥ ९८ ॥

केशसमूहके नाम ३-केशपाश १ केशपक्ष २ कुन्तलहस्त ३ इत्यादि ॥९८॥

तनूरुहं रोम लोम-

रोवेंके नाम ३-तनूरुह १ रोमन् २ लोमन् ३ ॥

-तद्वृद्धे श्मश्रु पुंमुखे।

डाढ़ी मूछका नाम १-श्मश्रु १ ॥

आकल्पवेषौ नेपथ्यं प्रतिकर्म प्रसाधनम् ॥ ९९ ॥

अलंकारकी शोभाके नाम ५-आकल्प १ वेष २ नेपथ्य ३ प्रतिकर्मन् ४ प्रसाधन ५ ॥ ९९ ॥

दशैते त्रि-

यह आगे कहे दश शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥

-ष्वलंकर्त्ताऽलंकरिष्णुश्च-

अलंकार करनेवालेके नाम २-अलंकर्तृ १ अलंकरिष्णु २ ॥

-मण्डितः॥प्रसाधितोऽलंकृतश्च भूषितश्च परिष्कृतः ॥ १०० ॥

अलंकारयुक्तके नाम ५-मण्डित १ प्रसाधित २ अलंकृत ३ भूषित ४ परिष्कृत ५ ॥ १०० ॥

विभ्राड् भ्राजिष्णुरोचिष्णू-

अलंकारादिसे अतिशोभित हुएके नाम ३-विभ्राज् १ भ्राजिष्णु २ रोचिष्णु ३ ॥

-भूषणं स्यादलंक्रिया।

सँवारने या सिंगारनेके नाम २-भूषण १ अलंक्रिया २ ॥

अलंकारस्त्वाभरणं परिष्कारो विभूषणम् ॥ १०१ ॥ मण्डनं चा-

गहने आदिके नाम ५-अलंकार १ आभरण २ परिष्कार ३ विभूषण ४ ॥ १०१ ॥ मण्डन ५ ॥

–ऽथ मुकुटं किरीटं पुन्नपुंसकम् ।

मुकुटके नाम २–मुकुट १ किरीट २ दोनों भी पुं० न० ॥

चूडामणिः शिरोरत्नं–

चोटीके मणिके नाम २–चूडामणि १ शिरोरत्न २ ॥

–तरलो हारमध्यगः ॥१०२॥

जो हारके बीचमें सबसे बड़ा मणि होता है उसका नाम १–तरल ॥१०२॥

वालपाश्या पारितथ्या–

चोटीके गहनेके नाम २–वालपाश्या १ पारितथ्या २ ॥

–पत्रपाश्या ललाटिका ।

बेंदी वा टिकेके नाम २–पत्रपाश्या १ ललाटिका २ ॥

कर्णिका तालपत्रं स्यात्–

बाली वा तरकीके नाम–२ कर्णिका १ तालपत्र २ ॥

–कुण्डलं कर्णवेष्टनम् ॥१०३॥

सुवर्णादिरचित बालीके नाम २–कुण्डल १ कर्णवेष्टन २ ॥ १०३ ॥

ग्रैवेयकं कण्ठभूषा–

कण्ठी वा कण्ठके नाम २–ग्रैवेयक १ कण्ठभूषा २ ॥

–लम्बनं स्याल्ललन्तिका ।

जो सूंडीतक लम्बी कण्ठी हो उस कण्ठीके नाम २–लम्बन १ ललंतिका २ ॥

स्वर्णैः प्रालम्बिका–

ऐसे ही यदि सोनेकी कण्ठी हो तो उस कण्ठीका नाम १–प्रालंबिका १ ॥

–थोरः सूत्रिका मौक्तिकैः कृता ॥ १०४ ॥

और वैसे ही मोतीसे गूथी हो तो उसका नाम १–उरस्सूत्रिका १ ॥ १०४ ॥

हारो मुक्तावली–

मोतीके हारके नाम २–हार १ मुक्तावली २ ॥

–देवच्छन्दोऽसौ शतयष्टिका ।

जो सौ लड़का हार हो उसका नाम १–देवच्छन्द १ ॥

हारभेदा यष्टिभेदा गुच्छगुच्छार्धगोस्तनाः ॥ १०५ ॥ अर्धहारो माणवक एकावल्येकयष्टिका । सैव नक्षत्रमाला स्यात्सप्तविंशतिमौक्तिकैः ॥ १०६ ॥

बत्तीस लड़का हार हो उसका नाम १–गुच्छ १ ॥ जो २४ लड़का हार हो उसका नाम १–गुच्छार्ध १॥ चार लड़का हार हो उसका नाम १-गोस्तन १ ॥१०५॥ बारह लड़का हार हो उसका नाम १–अर्द्धहार १ ॥ बीस लड़का हार हो उसका नाम १–माणवक १ ॥ एक लड़का हार हो उसका नाम १–एकावली १ ॥ वही

एक लड़ अगर सत्ताईस मोतियोंकी हो तो उसका नाम १–नक्षत्रमाला १ ॥ १०६ ॥

आवापकः पारिहार्यः कटको वलयोऽस्त्रियाम् ।

पहुँचीके नाम ४–आवापक १ पारिहार्य २ कटक ३ वलय ४ ॥

केयूरमङ्गदं तुल्ये–

बाजूबन्द आदि भुजाके गहनोंके नाम २–केयूर १ अङ्गद २ ॥

–अंगुलीयकमूर्मिका ॥ १०७ ॥

छल्ले अँगूठीके नाम २–अंगुलीयक १ ऊर्मिका २ ॥ १०७ ॥

साक्षरांगुलिमुद्रा स्यात्–

मोहर सहित अँगूठीका नाम १–अंगुलिमुद्रा १ ॥

–कंकणं करभूषणम् ।

कंकनाके नाम २–कंकण १ करभूषण २ ॥

स्त्रीकटयां मेखला काञ्ची सप्तकी रशना तथा ॥ १०८ ॥ क्लीबे सारसनं चा--

स्त्रीके कमरकी जंजीर अर्थात् मेखलाके नाम ५–मेखला १ काञ्ची २ सप्तकी ३ रशना ४॥१०८॥सारसन ५

–ऽथ पुंस्कटयां श्रृंखलं त्रिषु ॥

पुरुषके जंजीरका नाम १–श्रृंखल १॥

पादांगदं तुलाकोटिर्मञ्जीरो नूपुरोऽस्त्रियाम् ॥ १०९ ॥

पैंजण आदि स्त्रीके पांवके गहनेके नाम ४–पादाङ्गद १ तुलाकोटि २ मञ्जीर ३ नूपुर ४ ॥ १०९ ॥

हंसकः पादकटकः–

कड़ेके नाम २–हंसक १ पादकटक २

--किंकिणी क्षुद्रघण्टिका ।

घुँघुरूके नाम २–किंकिणी १ क्षुद्रघण्टिका २ ॥

त्वक्फलक्रिमिरोमाणि वस्त्रयोनि--

वृक्षोंकी छाल, फल और कीड़ोंके रोम वस्त्रके उत्पन्न होनेके स्थान हैं ॥

--दंश त्रिषु ॥ ११० ॥

यह दशों शब्द तीनों लिङ्गोंमें होते हैं ॥ ११० ॥

वाल्कं क्षौमादि--

वृक्ष आदिकी छालसे बने हुए वस्त्रोंके नाम २–वाल्क १ क्षौम २ इत्यादि ॥

--फालं तु कार्पासं बादरं च तत् ।

कपासके बने हुए वस्त्रोंके नाम ३--फाल १ कार्पास २ बादर ३ ॥

कौशेयं कृमिकोशोत्थं--

रेशमीवस्त्रोंका नाम १--कौशेय १॥

—राङ्कवं मृगरोमजम् ॥ १११ ॥

ऊनी वस्त्रोंका नाम १--राङ्कव १ ॥ १११ ॥

अनाहतं निष्प्रवाणि तन्त्रकं च नवाम्बरम् ।

कोरे वस्त्रके नाम ४—अनाहत १ निष्प्रवाणिन् २ तन्त्रक ३ नवाम्बर४॥

तत्स्यादुद्गमनीयं यद्धौतयोर्वस्त्रयोर्युगम् ॥ ११२ ॥

धुले हुए दो वस्त्रोंके जोड़ेका नाम १--उद्गमनीय १ ॥ ११२ ॥

पत्त्रोर्णं धौतकौशेयं—

धुले हुए रेशमी वस्त्रका नाम १—पत्त्रोर्ण १ ॥

--बहुमूल्यं महाधनम् ।

बड़े मोलके वस्त्रादिका नाम १—महाधन १ ॥

क्षौमं दुकूलं स्याद्--

दुपट्टेके नाम २—क्षौम १दुकूल २॥

--द्वे तु निवीतं प्रावृतं त्रिषु११३

कपड़ेके छोरेके नाम २—निवीत १ प्रावृत २ ॥ ११३ ॥

स्त्रियां बहुत्वे वस्त्रस्य दशाः स्युर्वस्तयोर्द्वयोः ।

छीराका नाम १—दशा १ ॥

दैर्घ्यमायाम आरोहः—

कपड़े आदिकी लम्बाईके नाम ३--दैर्घ्य १ आयाम २ आरोह ३ ॥

—परिणाहो विशालता ॥११४॥

कपड़े आदिकी चौड़ाईके नाम२--परिणाह १ विशालता २ ॥ ११४ ॥

पट्टच्चरं जीर्णवस्त्रं—

पुराने कपड़ेके नाम २--पटच्चर १ जीर्णवस्त्र २ ॥

—समौ नक्तककर्पटौ ।

फटे चीथरेके नाम २—नक्तक १ कर्पट २ ॥

वस्त्रमाच्छादनं वासश्चैलं वसनमंशुकम् ॥ ११५ ॥

कपड़ेमात्रके नाम ६—वस्त्र १ आच्छादन २ वासस् ३ चैल ४ वसन ५ अंशुक ६ ॥ ११५ ॥

सुचेलकः पटोऽस्त्री--

अच्छे वस्त्रके नाम २--सुचेलक१पट२॥

—स्याद्वराशिः स्थूलशाटकः ।

मोटे वस्त्रके नाम २—वराशि १ स्थूलशाटक २ ॥

निचोलः प्रच्छदपटः--

पालकी आदिके ढकनेके वस्त्रके नाम २—निचोल १ प्रच्छदपट २ ॥

--समौ रल्लककम्बलौ ॥११६॥

कम्बलके नाम २- रल्लक १ कम्बल २ ॥ ११६ ॥

अन्तरीयोपसंव्यानपरिधानान्यधोंऽशुके

धोतीके नाम ४—अन्तरीय १ उप-संव्यान २ परिधान ३ अधोंऽशुक ४ ॥

द्वौ प्रावारोत्तरासङ्गौ समौ बृहतिका तथा ॥ ११७ ॥ संव्यानमुत्तरीयं च--

अँगोछा(रुमाल आदि)के नाम५—प्रावार १ उत्तरासंग २ बृहतिका ३ ॥ ११७ ॥ संव्यान ४ उत्तरीय ५ ॥

--चोलः कूर्पासकोऽस्त्रियाम् ।

चोलीके नाम२--चोल १ कूर्पासक २॥

नीशारः स्यात्प्रावरणे हिमानिलनिवारणे ॥ ११८ ॥

रजाईका नाम १—नीशार१।११८।

अधोरुकं वरस्त्रीणां स्याच्चण्डातकमास्त्रियाम् ।

लहँगेका नाम १--चण्डातक १ ॥

स्यात्रिष्वाप्रपदीनं तत्प्राप्नोत्याप्रपदं हि यत् ॥ ११९ ॥

लंबे लहँगेका नाम १--आप्रपदीन १ ॥ ११९ ॥

अस्त्री वितानमुल्लोचो--

चंदोएके नाम २--वितान १ उल्लोच २ ॥

--दूष्याद्यं वस्त्रवेश्मनि ।

तम्बू वा डेराका नाम १--दूष्य १ ॥

प्रतिसीरा जवनिका स्यात्तिरस्करिणी च सा ॥ १२० ॥

कनातके नाम ३--प्रतिसीरा १ जवनिका २ तिरस्करिणी ३॥ १२० ॥

परिकर्माङ्गसंस्कारः—

स्नानादि अंगसंस्कारके नाम २--परिकर्मन् १ अंगसंस्कार २ ॥

--स्यान्मार्ष्टिर्मार्जना मृजा ।

पोंछनेके नाम ३--मार्ष्टि १मार्जना २ मृजा ३ ॥

उद्वर्तनोत्सादने द्वे समे--

उबटनके नाम २--उद्वर्त्तन १ उत्सादन २ ॥

--आप्लाव आप्लवः ॥ १२१ ॥ स्नानं--

नहानेके नाम३—आप्लाव १आप्लव २ ॥ १२१ ॥ स्नान ३ ॥

--चर्चा तु चार्चिक्यं स्थासको-

चन्दनादिसे देहके लेपके नाम ३—चर्चा १ चार्चिक्य २ स्थासक ३ ॥

--ऽथ प्रबोधनम् । अनुबोधः--

गन्धोमटनिके नाम २—प्रबोधन१ अनुबोध २ ॥

--पत्रलेखापत्रांगुलिरिमे समे॥१२२

स्त्रियोंके गाल स्तनादिपर कस्तूरी चन्दनसे की हुई चित्रकारीके नाम २—पत्रलेखा १ पत्रांगुलि २ ॥ १२२ ॥

तमालपत्रतिलकचित्रकाणि विशेषकम् । द्वितीयं च तुरीयं च न स्त्रिया—

मस्तकमें चन्दन कस्तूरी आदिसे टीका लगानेके नाम ४—तमालपत्र १ तिलक २ चित्रक ३ विशेषक ४ ॥

—मथ कुंकुमम् ॥ १२३ ॥ काश्मीरजन्माग्निशिखं वरं बाह्लीकपीतने । रक्तसंकोचपिशुनं धीरं लोहितचन्दनम् ॥ १२४ ॥

केशरके नाम ११—कुंकुम १ ॥ १२३ ॥ काश्मीरजन्मन् २ अग्निशिख ३ वर ४ बाह्लीक ५ पीतन ६ रक्तसंकोच ७ पिशुन ८ धीर ९ लोहित १० चन्दन ११ ॥ १२४ ॥

लाक्षा राक्षा जतु क्लीबे यावोऽलक्तो द्रुमामयः ।

महावरके नाम ६—लाक्षा १ राक्षा २ जतु ३ याव ४ अलक्त ५ द्रुमामय ६ ॥

लवङ्गं देवकुसुमं श्रीसंज्ञ—

लौंगके नाम ३—लवंग १ देवकुसुम २ श्रीसंज्ञ ३ ॥

—मथ जायकम् ॥ १२५ ॥ कालीयकं च कालानुसार्यं चा—

पीले चन्दनके नाम—३जायक १ ॥ १२५ ॥ कालीयक २ कालानुसार्य ३ ॥

—ऽथ समार्थकम् । वंशकागुरुराजार्हलोहंकृमिजजोङ्गकम् ॥ १२६ ॥

अगरके नाम ६—वंशक १ अगुरु २ राजार्ह ३ लोह ४ कृमिज ५ जोङ्गक ६ ॥ १२६ ॥

कालागुर्वगुरुः—

काले अगरके नाम २—कालागुरु १ अगुरु २ ॥

स्यात्तन्मंगल्या मल्लिगन्धि यत् ।

अगरका भेद १—मंगल्या १ ॥

यक्षधूपः सर्जरसो रालसर्वरसावपि ॥ १२७ ॥ बहुरूपो—

रालके नाम ५—यक्षधूप १ सर्जरस २ राल ३ सर्वरस ४ ॥ १२७ ॥ बहुरूप ५ ॥

—ऽप्यथ वृकधूपकृत्रिमधूपकौ ॥

कृत्रिम धूपके नाम २—वृकधूप १ कृत्रिमधूप २ ॥

तुरुष्कः पिण्डकः सिह्लो यावनो—

लोबानके नाम ४—तुरुष्क १ पिण्डक २ सिह्ल ३ यावन ४ ॥

ऽप्यथ पायसः ॥ १२८ ॥ श्रीवासो वृकधूपोऽपि श्रीवेष्टसरलद्रवौ ।

देवदारु धूपके नाम ५–पायस १ ॥ १२८ ॥ श्रीवास २ वृकधूप ३ श्रीवेष्ट ४ सरलद्रव ५ ॥

मृगनाभिर्मृगमदः कस्तूरी चा–

कस्तूरीके नाम ३–मृगनाभि १ मृगमद २ कस्तूरी ३ ॥

–ऽथ कोलकम् ॥ १२९ ॥ कंकोलकं कोशफल–

कंकोलके नाम ३–कोलक १ ॥ ॥ १२९ ॥ कंकोलक २ कोशफल ३॥

–मथ कर्पूरमस्त्रियाम् । घनसारश्चन्द्रसंज्ञः सिताभ्रो हिमवालुका ॥ १३० ॥

कर्पूरके नाम ५–कर्पूर १ घनसार २ चन्द्रसंज्ञ ३ सिताभ्र ४ हिमवालुका ५ ॥ १३० ॥

गन्धसारो मलयजो भद्रश्रीश्चंदनोऽस्त्रियाम् ।

मलयागिरि चन्दनके नाम ४–गन्धसार १ मलयज२भद्रश्री ३ चन्दन ४॥

तैलपर्णिकगोशीर्षे हरिचन्दनमस्त्रियाम् ॥ १३१ ॥

सफेद चन्दनका नाम १–तैलपर्णिक १॥ जिसमें कमलके समान गन्ध हो उस चन्दनका नाम १–गोशीर्ष १ ॥ कपिलवर्ण चन्दनका नाम १–हरिचन्दन १ ॥ १३१ ॥

तिलपर्णी तु पत्रांगं रञ्जनं रक्तचन्दनम् । कुचन्दनं चा–

लालचन्दनके नाम ५–तिलपर्णी १ पत्रांग २ रञ्जन ३ रक्तचन्दन ४ कुचन्दन ५ ॥

–ऽथ जातीकोशजातीफले समे ॥ १३२ ॥

जायफलके नाम २–जातीकोश १ जातीफल २ ॥ १३२ ॥

कर्पूरागरुकस्तूरीकंकोलैर्यक्षकर्दमः ।

कपूर अगर कस्तूरी और कंकोल इनको बराबर मिलानेसे जो लेपन बनता है उसका नाम १–यक्षकर्दम १॥

गात्रानुलेपनी वर्तिर्वर्णकं स्याद्विलेपनम् ॥ १३३ ॥

पिसी हुई लेपन वस्तुके नाम २–गात्रानुलेपनी १ वर्ति २ ॥ घिसी (रगड़ी) हुई लेपन वस्तुके नाम २–वर्णक १ विलेपन २ ॥ १३३ ॥

चूर्णानि वासयोगाः स्यु–

कपड़छान करके जो वस्तु घोली जाय उसके नाम २-चूर्ण १वासयोग २॥

–र्भावितं वासितं त्रिषु ।

पुष्प इत्यादिसे बसायी हुई वस्तुके नाम २–भावित १ वासित २ ॥

संस्कारो गंधमाल्याद्यैर्यः स्या-
त्तदधिवासनम् ॥ १३४ ॥

सुगंध पुष्पादिसे संस्कार करनेका नाम १—अधिवासन १ ॥ १३४ ॥

माल्यं मालास्रजौ मूर्ध्नि—

सिरपर धारण करने योग्य मालाके नाम ३—माल्य १ माला २ स्रज् ३ ॥

—केशमध्ये तु गर्भकः ।

बालोंके बीचमें धारण की हुई मालाका नाम १—गर्भक १ ॥

प्रभ्रष्टकं शिखालम्बि—

चोटीमें गुँधी हुई माला हो उसका नाम १—प्रभ्रष्टक १ ॥

—पुरो न्यस्तं ललामकम् ॥ १३५ ॥

जो शिखासे लिलारतक लपेटी माला हो उसका नाम १—ललामक १ ॥ १३५ ॥

प्रालम्बमृजुलम्बि स्यात्कण्ठा—

कंठमें पहनी हुई मालाका नाम १—प्रालम्ब १ ॥

द्वैकक्षिकं तु तत् । यत्तिर्यक्
क्षिप्तमुरसि—

जो यज्ञोपवीतके तुल्य पहनी जाय उस मालाका नाम १—वैकक्षिक १ ॥

—शिखास्वापीडशेखरौ ॥ १३६ ॥

जो शिखामें पहनी जाय उस मालाके नाम २—आपीड १ शेखर २ ॥ १३६ ॥

रचना स्यात्परिस्पन्द—

माला आदिके बनानेके नाम २—रचना १ परिस्पन्द २ ॥

—आभोगः परिपूर्णता ।

सर्व सामग्रीके पूरे होनेके नाम २—आभोग १ परिपूर्णता २ ॥

उपधानं तूपबर्हः—

तकियेके नाम २—उपधान १ उपबर्ह २ ।

—शय्यायां शयनीयवत् ॥ १३७ ॥
शयनं—

बिछौनेके नाम ३—शय्या १ शयनीय २ ॥ १३७ ॥ शयन ३ ॥

—मञ्चपर्यंकपल्यंकाःखट्वया समाः ।

पलँग वा खाटके नाम ४—मंच १ पर्यंक २ पल्यंक ३ खट्वा ४ ॥

गेन्दुकः कन्दुको—

गेंदके नाम २—गेन्दुक १ कन्दुक २ ॥

—दीपः प्रदीपः—

दियाके नाम २—दीप १ प्रदीप २ ॥

—पीठमासनम् ॥ १३८ ॥

पीढ़ाके नाम २—पीठ १ आसन २ ॥ १३८ ॥

समुद्गकः सम्पुटकः—

डिब्बाके नाम २—समुद्गक १ संपुटक २ ॥

—प्रतिग्राहः पतद्ग्रहः ।

पीकदानके नाम २–प्रतिग्राह १ पतद्ग्रह २ ॥

प्रसाधनी कंकतिका–

कंघीके नाम २–प्रसाधनी १ कंकतिका २ ॥

–पिष्टातः पटवासकः ।

बुक्काके नाम २–पिष्टात १ पटवासक २ ॥

दर्प्पणे मुकुरादर्शौ–

दर्पण (सीसे) के नाम ३–दर्प्पण १ मुकुर २ आदर्श ३ ॥

–व्यजनं तालवृन्तकम् ॥ १३९ ॥

पंखेके नाम २–व्यजन १ तालवृन्तक २ ॥ १३९ ॥

इति मनुष्यवर्गः ॥ ६ ॥

अथ ब्रह्मवर्गः ७.

संततिर्गोत्रजननकुलान्यभिजनान्वयौ । वंशोऽन्ववायः सन्तानो–

वंशके नाम ९–सन्तति १ गोत्र २ जनन ३ कुल ४ अभिजन ५ अन्वय २ ६ वंश ७ अन्ववाय ८ सन्तान ९ ॥

–वर्णाः स्युर्ब्राह्मणादयः ॥ १ ॥

ब्राह्मण आदिका नाम १–वर्ण १ ॥ १ ॥

विप्रक्षत्रियविट्छूद्राश्चातुर्वर्ण्यमिति स्मृतम् ।

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र इन चारोंका इकट्ठा नाम १–चातुर्वर्ण्य १ ॥

राजबीजी राजवंश्यो–

राजाके वंशवालोंके नाम २–राजबीजिन् १ राजवंश्य २ ॥

–बीज्यस्तु कुलसंभवः ॥ २ ॥

कुलीनके नाम २–बीज्य १ कुलसंभव २ ॥ २ ॥

महाकुलकुलीनार्यसभ्यसज्जनसाधवः ।

सज्जनके नाम ६–महाकुल १ कुलीन २ आर्य्य ३ सभ्य ४ सज्जन ५ साधु ६ ॥

ब्रह्मचारी गृही वानप्रस्थो भिक्षुश्चतुष्टये ॥ ३ ॥ आश्रमोऽस्त्री–

ब्रह्मचारी, गृही, वानप्रस्थ, यति इन चारोंका इकट्ठा नाम १–॥ ३ ॥ आश्रम १ ॥

–द्विजात्यग्रजन्मभूदेववाडवाः । विप्रश्च ब्राह्मणो–

ब्राह्मणके नाम ६–द्विजाति १ अग्रजन्मन् २ भूदेव ३ वाडव ४ विप्र ५ ब्राह्मण ६ ॥

–ऽसौ षट्कर्मा यागादिभिर्वृतः ॥ ४ ॥

इज्या, अध्ययन, दान, याजन, अध्यापन, प्रतिग्रह इन षट् कर्मोंकरके युक्त विप्रका नाम १–षट्कर्मन् १ ॥ ४ ॥

विद्वान्विपश्चिद्दोषज्ञः सन्सुधीः कोविदो बुधः । धीरो मनीषी ज्ञः प्राज्ञः संख्यावान्पण्डितः कविः ॥ ५ ॥ धीमान्सूरिः कृती कृष्टिर्लब्धवर्णो विचक्षणः । दूरदर्शी दीर्घदर्शी—

पंडितके नाम २२—विद्वस् १ विपश्चित् २ दोषज्ञ ३ सत् ४ सुधी ५ कोविद ६ बुध ७ धीर ८ मनीषिन् ९ ज्ञ १० प्राज्ञ ११ संख्यावत् १२ पंडित १३ कवि १४ ॥५॥ धीमत् १५ सूरि १६ कृतिन् १७ कृष्टि १८ लब्धवर्ण १९ विचक्षण २० दूरदर्शिन् २१ दीर्घदर्शिन् २२ ॥

—श्रोत्रियच्छान्दसौ समौ ॥ ६ ॥

वेदपाठीके नाम २—श्रोत्रिय १ छान्दस २ ॥ ६ ॥

उपाध्यायोऽध्यापको—

जो पढ़ाता हो उस पंडितके नाम २—उपाध्याय १ अध्यापक २ ॥

—ऽथ स्यान्निषेकादिकृद् गुरुः ।

गर्भाधानादि कर्म्म करानेवालेका नाम १—गुरु १ ॥

मन्त्रव्याख्याकृदाचार्य—

मन्त्रकी व्याख्या करनेवालेका नाम १—आचार्य १ ॥

—आदेष्टा त्वध्वरे—

यज्ञमें सब ऋत्विजोंमें सिखानेवालेका नाम १—आदेष्टृ १ ॥

—व्रती ॥ ७ ॥ यष्टा च यजमानश्च—

यजमानके नाम ३—व्रतिन् १ ॥७॥ यष्टृ २ यजमान ३ ॥

—स सोमवति दीक्षितः ।

सोमयज्ञके यजमानका नाम १—दीक्षित १ ॥

इज्याशीलो यायजूको—

वारंवार यज्ञ करनेवालेके नाम २—इज्याशील १ यायजूक २ ॥

—यज्वा तु विधिनेष्टवान् ॥ ८ ॥

जो विधिसे यज्ञ करे उसका नाम १—यज्वन् १ ॥ ८ ॥

स गीष्पतीष्ट्या स्थपतिः—

बृहस्पति यज्ञ करनेवालेका नाम १—स्थपति १ ॥

सोमपीथी तु सोमपाः ।

सोमवल्लीका रस पीनेवालेके नाम २—सोमपीथिन् १ सोमपा २ ॥

सर्ववेदाः स येनेष्टो यागः सर्वस्वदक्षिणः ॥ ९ ॥

जो यज्ञमें अपना सब धन दे डाले उसका नाम १—सर्ववेदस् १ ॥ ९ ॥

अनूचानः प्रवचने साङ्गेऽधीती—

सांगोपांग वेद पढ़नेवालेका नाम १–अनूचान १ ॥

–गुरोस्तु यः । लब्धानुज्ञः समावृत्तः–

वही अनूचान गुरुकी गृहस्थाश्रमादिमें प्राप्त होनेकी आज्ञा पावे तो उसका नाम १–समावृत्त १ ॥

–सुत्वा त्वभिषवे कृते ॥१०॥

अभिषव स्नान करे उसका नाम १–सुत्वन् १ ॥ १० ॥

छात्रान्ते वासिनौ शिष्ये–

विद्यार्थीके नाम ३–छात्र १ अन्तेवासिन् २ शिष्य ३ ॥

–शैक्षाः प्राथमकल्पिकाः ।

छोटे (नये) विद्यार्थीके नाम २–शैक्ष १ प्राथमकल्पिक २ ॥

एकब्रह्मव्रताचारा मिथः सब्रह्मचारिणः ॥ ११ ॥

सहपाठी अर्थात् एक साथ एक ही वस्तु पढ़नेवालेका नाम १–सब्रह्मचारिन् १ ॥ ११ ॥

–सतीर्थ्यास्त्वेकगुरव–

जितने एक गुरुसे पढ़ते हों उनका नाम १–सतीर्थ्य १ ॥

–श्चितवानग्निमग्निचित् ।

जो अग्निको बटोरता है उसका नाम १–अग्निचित् १ ॥

पारम्पर्योपदेशे स्यादैतिह्यमितिहाव्ययम् ॥ १२ ॥

परम्परा उपदेशके नाम २–ऐतिह्य १ इतिहा २ ॥ १२ ॥

–उपज्ञा ज्ञानमाद्यं स्या–

प्रथम ज्ञानका नाम १–उपज्ञा १ ॥

–ज्ज्ञात्वारम्भ उपक्रमः ।

समझके ग्रन्थके प्रारम्भ करनेका नाम १–उपक्रम १ ॥

यज्ञः सवोऽध्वरो यागः सप्ततन्तुर्मखः क्रतुः ॥ १३ ॥

यज्ञके नाम ७–यज्ञ १ सव २ अध्वर ३ याग ४ सप्ततन्तु ५ मख ६ क्रतु ७ ॥ १३ ॥

पाठो होमश्चातिथीनां सपर्या तर्पणं बलिः । एते पञ्च महायज्ञा ब्रह्मयज्ञादिनामकाः ॥ १४ ॥

महायज्ञके नाम ५–पाठ १होम २ अतिथिपूजा ३ तर्पण४बलि ५॥१४॥

समज्या परिषद्गोष्ठी सभासमितिसंसदः । आस्थानी क्लीबमास्थानं स्त्रीनपुंसकयोः सदः ॥ १५ ॥

सभाके नाम९–समज्या १ परिषद् २ गोष्ठी ३ सभा ४ समिति ५ संसद् ६ आस्थानी ७ आस्थान ८ सदस् ९ ॥ १५ ॥

प्राग्वंशः प्राग्घविर्गेहात्--

सदस्योंके गृहका नाम १—प्राग्वंश१ ॥

--सदस्या विधिदर्शिनः ।

सभामें विचार करनेवालोंका नाम १--सदस्य १ ॥

सभासदः सभास्तारः सभ्याः सामाजिकाश्च ते ॥ १६ ॥

सभामें बैठनेवालोंके नाम ४—सभासद १ सभास्तार २ सभ्य ३ सामाजिक ४ ॥ १६ ॥

अध्वर्यूद्गातृहोतारो यजुःसामर्ग्विदः क्रमात् ।

यजुर्वेद जाननेवालेका नाम १—अध्वर्यु१॥ सामवेदीका नाम १—उद्गातृ १॥ ऋग्वेदीका नाम १—होतृ १ ॥

आग्नीध्राद्या धनैर्वार्या ऋत्विजो याजकाश्च ते ॥ १७ ॥

जिनको धनआदि देकर यज्ञमें वरण किया जाय उस आग्नीध्र आदि सोलहके नाम २—ऋत्विज् १याजक२॥१७॥

वेदिः परिष्कृता भूमिः—

वेदीका नाम १—वेदि १ ॥

—समे स्थण्डिलचत्वरे ।

यज्ञार्थ चबूतराके नाम २— स्थण्डिल १ चत्वर २ ॥

चषालो यूपकटकः—

खम्भाके ऊपर जो कंकणाकार काष्ठका रहता है उसके नाम २—चषाल १ यूपकटक २ ॥

—कुम्बा सुगहना वृतिः ॥ १८॥

यज्ञोंको अन्यजाति न देखनेके निमित्त जो टट्टी आदि लगाई जाती है उसका नाम १—कुम्बा १ ॥ १८ ॥

यूपाग्रं तर्म—

यज्ञस्तम्भके आगेके नाम २—यूपाग्र १ तर्मन् २ ॥

—निर्मन्थ्यदारुणि त्वरणिर्द्वयोः ।

जिस लकड़ीको मथके अग्नि निकालते हैं उसका नाम १—अरणि १ ॥

दक्षिणाग्निर्गार्हपत्याहवनीयौ त्रयोऽग्नयः ॥ १९ ॥

यज्ञकी अग्निके नाम ३—दक्षिणाग्नि १ गार्हपत्य २ आहवनीय ३ ॥ १९॥

अग्नित्रयमिदं त्रेता—

इन तीनों अग्नियोंका नाम १—त्रेता१॥

—प्रणीतः संस्कृतोऽनलः ।

संस्कारित अग्निका नाम १—प्रणीत १ ॥

समूह्यः परिचाय्योपचाय्यावग्नौ प्रयोगिणः ॥ २० ॥

यज्ञाग्निके नाम ३—समूह्य १ परिचाय्य २ उपचाय्य ३ ॥ २० ॥

यो गार्हपत्यादानीय दक्षिणाग्निः प्रणीयते । तस्मिन्नानाय्यो—

गार्हपत्याग्निसे लेकर जो दक्षिणाग्नि प्रवेश कराया जाय उसका नाम १—आनाय्य १ ॥

—ऽथाग्नायी स्वाहा च हुतभुक्प्रिया ॥ २१ ॥

स्वाहा अर्थात् अग्निकी स्त्रीके नाम ३—अग्नायी १ स्वाहा २ हुतभुक्प्रिया ३ ॥ २१ ॥

ऋक्सामिधेनी धाय्या च या स्यादग्निसमिन्धने ।

अग्नि बालनेके अर्थ जो ऋचा पढ़ी जाय उसके नाम २—सामिधेनी १ धाय्या २ ॥

गायत्रीप्रमुखं छन्दो—

गायत्री, उष्णिह, अनुष्टुभ् इत्यादिका नाम १—छन्दस् १ ॥

—हव्यपाके चरुः पुमान् ॥२२॥

अग्निमें छोड़ने योग्य साकल्यका नाम १—चरु १ ॥ २२ ॥

आमिक्षा सा शृतोष्णे या क्षीरे स्याद्दधियोगतः ।

गरम पके दूधमें दही डालनेसे जो बनता है उसका नाम १—आमिक्षा १॥

धवित्रं व्यजनं तद्यद्रचितं मृगचर्मणा ॥ २३ ॥

मृगचर्मसे बने हुए बीजनेका नाम १—धवित्र १ ॥ २३ ॥

पृषदाज्यं सदध्याज्ये—

दही घी मिले हुएका नाम १—पृषदाज्य १ ॥

—परमान्नं तु पायसम् ।

खीरके नाम२—परमान्न १पायस२॥

हव्यकव्ये दैवपित्र्ये अन्ने—

देवताके अर्थकी खीरका नाम १—हव्य १ । पितरोंकी खीरका नाम १—कव्य १ ॥

—पात्रं स्रुवादिकम् ॥ २४ ॥

स्रुवा आदिका नाम १—पात्र १॥२४॥

ध्रुवोपभृज्जुहूर्ना तु स्रुवो भेदाः स्रुचः स्त्रियः ।

स्रुवाके भेद ५—ध्रुवा १ उपभृत् २ जुहू ३ स्रुव ४ स्रुच् ५ ॥

उपाकृतः पशुरसौ योऽभिमन्त्र्य क्रतौ हतः ॥ २५ ॥

यज्ञके पशुका नाम १—उपाकृत१॥ ॥ २५ ॥

परम्पराकं शमनं प्रोक्षणं च वधार्थकम् ।

यज्ञके अर्थ पशु मारनेके नाम ३—परम्पराक १ शमन २ प्रोक्षण ३ ॥

वाच्यलिंगाः प्रमीतोपसंपन्नप्रोक्षिता हते ॥ २६ ॥

यज्ञमें मारे हुए पशुके नाम ३—प्रमीत१उपसम्पन्न २प्रोक्षित ३ ॥२६॥

सान्नाय्यं हवि—

साकल्यके नाम २—सान्नाय्य १ हविष् २ ॥

—रग्नौ तु हुतं त्रिषु वषट्कृतम् ।

अग्निमें जो हुना जावे उसका नाम १—वषट्कृत १ ॥

दीक्षान्तोऽवभृथो यज्ञ—

यज्ञान्तस्नानका नाम १—अवभृथ १ ॥

—स्तत्कर्मार्हं तु यज्ञियम् । ॥ २७ ॥ त्रि—

यज्ञयोग्यवस्तुका नाम १—यज्ञिय १ ॥ २७ ॥

—ष्वथ क्रतुकर्मेष्टं—

यज्ञमें कर्मका नाम १—इष्ट १ ॥

—पूर्तं खातादि कर्म यत् ।

बावडी तालाब आदि खुदानेका नाम १—पूर्त्त १ ॥

अमृतं विघसो यज्ञशेषभोजनशेषयोः ॥ २८ ॥

यज्ञसे बची हुई जाऊरि आदिका नाम १—अमृत १॥ और भोजनसे बची हुई वस्तुका नाम १—विघस १ ॥२८॥

त्यागो विहापितं दानमुत्सर्जनविसर्जने । विश्राणनं वितरणं स्पर्शनं प्रतिपादनम् ॥ २९ ॥ प्रादेशनं निर्वपणमपवर्जनमंहतिः ।

दानके नाम १३—त्याग १ विहापित२दान २ उत्सर्जन ४ विसर्ज्जन ५ विश्राणन ६ वितरण ७ स्पर्शन ८ प्रतिपादन ९ ॥२९॥ प्रादेशन १० निर्वपण ११ अपवर्जन १२ अंहति १३ ॥

मृतार्थं तदहे दानं त्रिषु स्यादौर्ध्वदेहिकम् ॥ ३० ॥

मृतकके अर्थ जो दश दिनके बीचमें पिंडादि दिये जाते हैं उनका नाम १—और्ध्वदेहिक १ ॥ ३० ॥

पितृदानं निवापः स्या—

पितरोंके देनेके निमित्त जो दान दिया जावे उसके नाम २—पितृदान १ निवाप २ ॥

—च्छ्राद्धं तत्कर्म शास्त्रतः ।

पितरोंके देनेके निमित्तके कर्मका नाम १—श्राद्ध १ ॥

अन्वाहार्यं मासिके—

अमावस्याके श्राद्धके नाम २—अन्वाहार्य १ मासिक २ ॥

—ऽशोऽष्टमोऽह्नः कुतपोऽस्त्रियाम् ॥ ३१ ॥

दिनके आठवें हिस्सेका नाम १—कुतप १ ॥ ३१ ॥

पर्येषणा परीष्टिश्चान्वेषणा च गवेषणा ।

श्राद्धमें ब्राह्मणकी भक्ति और सेवा

करनेके नाम २—पर्येषणा १ परीष्टि २ ॥ धर्म आदिके खोजनेके नाम —२ अन्वेषणा १ गवेषणा २ ॥ अथवा ये चारों नाम धर्म आदिके खोजनेके ही जानने ॥

सनिस्त्वध्येषणा—

विनतीके नाम २—सनि १ अध्येषणा २

—याच्ञाऽभिशस्तिर्याचनार्थना ॥ ३२ ॥

मांगनेके नाम ४—याच्ञा १ अभिशस्ति २ याचना ३ अर्थना ४ ॥३२॥

—षट् तु त्रि—

यह छः शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥

—ष्वर्घ्यमर्घार्थे पाद्यं पादाय वारिणि ।

पूजार्थ पानी छोड़नेका नाम १—अर्घ्य १॥ पांव धोनेको छोड़ने योग्य पानीका नाम १—पाद्य १ ॥

क्रमादातिथ्यातिथेये अतिथ्यर्थेऽत्रसाधुनि ॥ ३३ ॥

अतिथिके अर्थ जो कर्म उसका नाम १—आतिथ्य १॥ अतिथिके निमित्त जो सिद्ध हो वह १-आतिथेय १ ॥ ३३ ॥

स्युरावेशिक आगन्तुरतिथिर्ना गृहागते ।

महिमानके नाम ४—आवेशिक १ आगन्तु २ अतिथि ३ गृहागत ४ ॥

पूजा नमस्याऽपचितिः सपर्य्यार्चार्हणाः समाः ॥ ३४ ॥

पूजाके नाम ६—पूजा १ नमस्या २ अपचिति ३ सपर्या ४ अर्चा ५ अर्हणा ६ ॥ ३४ ॥

वरिवस्या तु शुश्रूषा परिचर्याप्युपासना ।

उपासनाके नाम ४—वरिवस्या १ शुश्रूषा २ परिचर्या ३ उपासना ४ ॥

व्रज्याऽटाट्या पर्यटनं—

विदेशमें भ्रमण करनेके नाम ३—व्रज्या १ अटाट्या २ पर्यटन ३ —

—चर्या त्वीर्यापथे स्थितिः॥ ३५॥

योगमार्गमें स्थितिका नाम १—चर्या १ ॥ ३५ ॥

उपस्पर्शस्त्वाचमन—

आचमनके नाम २—उपस्पर्श १ आचमन २ ॥

—मथ मौनमभाषणम् ।

चुप रहनेके नाम २—मौन १ अभाषण २ ॥

आनुपूर्वी स्त्रियां वाऽऽवृत्परिपाटी अनुक्रमः ॥ ३६॥ पर्यायश्चा-

अनुक्रमके नाम ५—आनुपूर्वी १ आवृत् २ परिपाटी ३ अनुक्रम ४ ॥ ३६ ॥ पर्य्याय ॥ ५ ॥

-ऽतिपातस्तु स्यात्पर्य्यय उपात्ययः ।

अतिक्रमके नाम ३–अतिपात १ पर्य्यय २ उपात्यय ३ ॥

नियमो व्रतमस्त्री-

व्रतके नाम २–नियम १ व्रत २ ॥

-तच्चोपवासादि पुण्यकम् ॥ ३७ ॥

चान्द्रायणादि व्रतका नाम १–पुण्यक १ ॥ ३७ ॥

औपवस्तं तूपवासो-

उपवासके नाम २–औपवस्त १ उपवास २ ॥

-विवेकः पृथगात्मता ।

प्रकृतिपुरुषके भेद जाननेके विचारके नाम २–विवेक १ पृथगात्मता २ ॥

स्याद्ब्रह्मवर्चसं वृत्ताध्ययनर्द्धि-

सदाचारपालन और वेदाभ्यास करनेसे जो तेज होता है उसका नाम १–ब्रह्मवर्चस १ ॥

-रथाञ्जलिः ॥ ३८ ॥ पाठे ब्रह्माञ्जलिः-

वेद पढ़नेके समयकी अंजलिका नाम १–ब्रह्माञ्जलि १ ॥ ३८ ॥

-पाठे विप्रुषो ब्रह्मबिन्दवः ॥

वेद पढ़नेके समय जो मुखसे जल चूता है उसका नाम १–ब्रह्मबिंदु १ ॥

ध्यानयोगासने ब्रह्मासनं-

ध्यान और योगके आसनका नाम १–ब्रह्मासन १ ॥

-कल्पे विधिक्रमौ ॥ ३९ ॥

नियोगशास्त्रके नाम ३–कल्प १ विधि २ क्रम ३ ॥ ३९ ॥

मुख्यः स्यात्प्रथमः कल्पो-

प्रथम विधिका नाम १–मुख्य १ ॥

-ऽनुकल्पस्तु ततोऽधमः ।

द्वितीय विधिका नाम १–अनुकल्प १ ॥

संस्कारपूर्वं ग्रहणं स्यादुपाकरणं श्रुतेः ॥ ४० ॥

संस्कारपूर्वक वेदके सुननेका नाम १–उपाकरण १ ॥ ४० ॥

समे तु पादग्रहणमभिवादनमित्युभे ।

नामगोत्रादिपूर्वक प्रणाम करनेके नाम २–पादग्रहण १ अभिवादन २ ॥

भिक्षुः परिव्राट् कर्मन्दी पाराशर्यपि मस्करी ॥ ४१ ॥

संन्यासीके नाम ५–भिक्षु १ परिव्राज् २ कर्मन्दिन् ३ पाराशरिन् ४ मस्करिन् ॥ ५ ॥ ४१ ॥

तपस्वी तापसः पारिकांक्षी-

तपस्वीके नाम ३–तपस्विन् १ तापस २ पारिकांक्षिन् ३ ॥

—वाचंयमो मुनिः।

मुनिके नाम २—वाचंयम १ मुनि २ ॥

तपःक्लेशसहो दान्तो—

तपस्याके क्लेशके सहनेवालेका नाम १—दान्त १ ॥

—वर्णिनो ब्रह्मचारिणः॥ ४२ ॥

ब्रह्मचारीके नाम २—वर्णिन् १ ब्रह्मचारिन् २ ॥ ४२ ॥

—ऋषयः सत्यवचसः—

ऋषिके नाम २—ऋषि १ सत्यवचस् २ ॥

—स्नातकस्त्वाप्लुतो व्रती।

जो वेदव्रत धारण किये हुए गुरुकी आज्ञासे स्नान करे उसका नाम १—स्नातक १ ॥

ये निर्जितेन्द्रियग्रामा यतिनो यतयश्च ते॥ ४३ ॥

जितेंद्रियके नाम २—यतिन् १ यति २ ॥ ४३ ॥

यः स्थण्डिले व्रतवशाच्छेते स्थण्डिलशाय्यसौ। स्थाण्डिलश्चा—

जो व्रतवश हो पृथिवीपर चबूतरा बना उसपर सोवे उसके नाम २—स्थण्डिलशायिन् १ स्थांडिल २ ॥

—ऽथ विरजस्तमसः स्युर्द्वयातिगः॥ ४४ ॥

रजोगुण तमोगुण रहित व्यासादि मुनिके नाम २—विरजस्तमस् १ द्वयातिग २ ॥ ४४ ॥

पवित्रः प्रयतः पूतः—

पवित्रके नाम ३—पवित्र १ प्रयत २ पूत ३ ॥

—पाखण्डाः सर्वलिङ्गिनः।

बौद्धक्षपणकादि दुष्ट शास्त्रवर्तियोंके नाम २—पाखण्ड १ सर्वलिंगिन् २ ॥

पालाशो दण्ड आषाढो व्रते—

ब्रह्मचर्यमें पलाशके दण्डका नाम १—आषाढ १ ॥

—राम्भस्तु वैणवः ॥ ४५ ॥

यदि वह दण्ड बांसका हो तो उसके नाम २—राम्भ १ वैणव २ ॥ ४५ ॥

अस्त्री कमण्डलुः कुण्डी—

व्रतियोंके लोटेके नाम २—कमण्डलु १ कुण्डी २ ॥

—व्रतिनामासनं बृसी।

और उनके आसनका नाम १—बृसी १ ॥

अजिनं चर्म कृत्तिः स्त्री—

मृगादिके चर्मके नाम ३—अजिन १ चर्मन् २ कृत्ति ३ ॥

—भैक्षं भिक्षाकदम्बकम्॥ ४६ ॥

भिक्षाके ढेरका नाम १—भैक्ष १॥ ४६ ॥

स्वाध्यायः स्याज्जपः-

वेदके अभ्यासके नाम २-स्वाध्याय १ जप २ ॥

-सुत्याऽभिषवः सवनं च सा ।

यज्ञौषधिके कूटनेके नाम ३-सुत्या १ अभिषव २ सवन ३ ॥

सर्वैनसामपध्वंसि जप्यं त्रिष्वघमर्षणम् ॥ ४७ ॥

सब पापके नाश करनेवाले मंत्रका नाम १-अघमर्षण १ ॥ ४७ ॥

दर्शश्च पौर्णमासश्च यागौ पक्षान्तयोः पृथक् ।

अमावसके दिनके यज्ञका नाम १-दर्श १ ॥ पौर्णमासीके दिनके यज्ञका नाम १-पौर्णमास ॥ १ ॥

शरीरसाधनापेक्षं नित्यं यत्कर्म तद्यमः ॥ ४८ ॥

अहिंसा, सत्य, चोरी न करना, ब्रह्मचर्य्य, अपरिग्रह (दान न लेना) इन नित्यकर्मका नाम १-यम १ ॥ ४८ ॥

नियमस्तु सं यत्कर्म नित्यमागन्तुसाधनम् ।

शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वरप्रणिधान इन आगन्तु कर्मसाधनका नाम १-नियम १ ॥

उपवीतं ब्रह्मसूत्रं प्रोद्धृते दक्षिणे करे ॥ ४९ ॥

बांये कांधेके जनेऊके नाम २-उपवीत १ ब्रह्मसूत्र २ ॥ ४९ ॥

प्राचीनावीतमन्यस्मिन्-

दहने कांधेपर रहनेवाले जनेऊका नाम १-प्राचीनावीत १ ॥

-निवीतं कण्ठलम्बितम् ।

मालाकार यज्ञोपवीत पहिरनेका नाम १-निवीत १ ॥

अंगुल्यग्रे तीर्थं दैवं-

अँगुलियोंका अग्रभाग देवताओंका तीर्थ कहाता है ॥

-स्वल्पांगुल्योर्मूले कायम् ॥ ५० ॥

कन-अंगुलियोंके मूलका नाम प्रजापति तीर्थ है ॥ ५० ॥

मध्येऽङ्गुष्ठांगुल्योः पित्र्यं-

अंगुष्ठ और तर्जनी अँगुलीके मध्यमें पितृतीर्थ कहाता है ॥

-मूले त्वंगुष्ठस्य ब्राह्मम् ।

अंगुष्ठके मूलमें ब्राह्मतीर्थ कहाता है ॥

स्याद्ब्रह्मभूयं ब्रह्मत्वं ब्रह्मसायुज्यमित्यपि ॥ ५१ ॥

ब्रह्ममें मिल जानेके नाम ३-ब्रह्मभूय १ ब्रह्मत्व २ ब्रह्मसायुज्य ३ ॥ ५१ ॥

देवभूयादिकं तद्वत्-

देवमें मिलजानेके नाम ३-देवभूय १ देवत्व २ देवसायुज्य ३ ॥

-कृच्छ्रं सान्तपनादिकम् ।

गोमूत्र,गोबर, दूध,दही, घी, कुशोदक इनका भक्षण करने और एकरात्रिके उपवासका नाम १-कृच्छ्र १ ॥

संन्यासवत्यनशने पुमान्प्रायो-

संन्यासपूर्वक भोजनत्यागका नाम १-प्राय १ ॥

-ऽथ वीरहा ॥५२ ॥ नष्टाग्निः-

जिस तपस्वीकी अग्नि बुझ गयी हो उस तपस्वीके नाम २-वीरहन् १ ॥५२॥ नष्टाग्नि २ ॥

-कुहना लोभान्मिथ्येर्यापथकल्पना ।

दम्भसे ध्यानादि करनेका नाम १--कुहना १ ॥

व्रात्यः संस्कारहीनः स्या-

जिस ब्राह्मणका गौणकालमें भी यज्ञोपबीत न हुआ हो उसका नाम १-व्रात्य १ ॥

-दस्वाध्यायो निराकृतिः ॥ ५३ ॥

वेदाभ्यासरहितका नाम १-निराकृति १ ॥ ५३ ॥

धर्मध्वजी लिङ्गवृत्ति-

बहुरूपिया ब्राह्मणके नाम २-धर्मध्वजिन् १ लिंगवृत्ति ॥ २ ॥

-रवकीर्णी क्षतव्रतः ।

जिसका ब्रह्मचर्य नष्ट हो गया हो उसके नाम २-अवकीर्णिन् १ क्षतव्रत २॥

सुप्ते यस्मिन्नस्तमेति सुप्ते यस्मिन्नुदेति च ॥ ५४ ॥ अंशुमानभिनिर्मुक्ताभ्युदितौ च यथाक्रमम्।

सायंसंध्यामें सोनेवालेका नाम १-अभिनिर्मुक्त १॥ प्रातःकालकी संध्यामें सोनेवालेका नाम १--अभ्युदित १॥५४॥

परिवेत्ताऽनुजोऽनूढे ज्येष्ठे दारपरिग्रहात् ॥ ५५ ॥

जिसका बड़ा भाई न ब्याहा गया हो प्रथम छोटा ब्याहा जाय तो उस छोटेका नाम १-परिवेत्तृ ॥ ५५ ॥

परिवित्तिस्तु तज्ज्यायान्-

उसके बड़े भाईका नाम १-परिवित्ति १ ॥

-विवाहोपयमौ समौ । तथा परिणयोद्वाहोपयामाः पाणिपीडनम् ॥ ५६ ॥

विवाहके नाम ६-विवाह १ उपयम २ परिणय २ उद्वाह ४ उपयाम५ पाणिपीडन ६ ॥ ५६ ॥

व्यवायो ग्राम्यधर्मो मैथुनं निधुवनं रतम् ।

मैथुनके नाम५-व्यवाय १ ग्राम्यधर्म २ मैथुन ३ निधुवन ४ रत ५ ॥

त्रिवर्गो धर्मकामार्थै-

वेदविहितयज्ञादि विधि, स्त्रीसेवन, न्यायसे धनोपार्जन इनका नाम १-त्रिवर्ग १ ॥

-श्चतुर्वर्गः समोक्षकैः ॥ ५७ ॥

और मोक्षकरके युक्त धर्म, अर्थ, काम हों तो उसका नाम १-चतुर्वर्ग १॥५७॥

सबलैस्तैश्चतुर्भद्रं-

और वेद धर्मादि सबल हों तो उनका नाम १-चतुर्भद्रं १ ॥

-जन्याः स्निग्धा वरस्य ये५८॥

बराती अर्थात् वरके पक्षवालेंका नाम १-जन्य १ ॥ ५८ ॥

इति ब्रह्मवर्गः ॥ ७ ॥

अथ क्षत्रियवर्गः ८.

मूर्धाभिषिक्तो राजन्यो बाहुजः क्षत्त्रियो विराट् ।

क्षत्रियके नाम ५-मूर्द्धाभिषिक्त १ राजन्य २ बाहुज ३ क्षत्त्रिय ४ विराज्५॥

राजा राट् पार्थिवक्ष्माभृन्नृपभूपमहीक्षितः ॥ १ ॥

राजाके नाम ७-राजन् १ राज् २ पार्थिव ३ क्ष्माभृत् ४ नृप ५ भूप ६ महीक्षित् ७ ॥ १ ॥

राजा तु प्रणताशेषसामन्तः स्यादधीश्वरः ।

जो बहुत राजाओंका मालिक हो उसका नाम १-अधीश्वर १॥

चक्रवर्ती सार्वभौमो-

समुद्रपर्यन्त पृथ्वीका जिसका राज्य हो उसके नाम २-चक्रवर्तिन् १ सार्वभौम २ ॥

-नृपोऽन्यो मण्डलेश्वरः ॥ २ ॥

चारहजार ४००० कोशके भूमंडलके राजाका नाम १-मण्डलेश्वर १॥ २ ॥

येनेष्टं राजसूयेन मण्डलस्येश्वरश्च यः । शास्ति यश्चाज्ञया राज्ञः स सम्राट्-

वही मण्डलेश्वर राजसूय यज्ञ किये हो और सब राजाओंका शिक्षक हो तो उसका नाम १-सम्राज् १ ॥

-डथ राजकम् ॥ ३ ॥ राजन्यकं च नृपतिक्षत्त्रियाणां गणे क्रमात् ।

राजाओंके गणका नाम १-राजक १॥३॥ और क्षत्त्रियोंके गणका नाम १-राजन्यक १ ॥

मन्त्री धीसचिवोऽमात्यो-

मंत्रीके नाम ३-मन्त्रिन् १ धीसचिव २ अमात्य ३ ॥

-ऽन्ये कर्मसचिवास्ततः ॥ ४ ॥

मन्त्रीसे छोटे अन्य मुसाहिबोंका नाम १-कर्मसचिव १ ॥ ४ ॥

महामात्राः प्रधानानि-

मुख्यमंत्रीके नाम २-महामात्र १ प्रधान २ ॥

पुरोधास्तु पुरोहितः ।

पुरोहितके नाम २-पुरोधस् १ पुरोहित २ ॥

द्रष्टरि व्यवहाराणां प्राड्विवाकाक्षदर्शकौ ॥ ५ ॥

पंच अर्थात् न्यायाधीशके नाम २-प्राड्विवाक १ अक्षदर्शक २ ॥ ५ ॥

प्रतीहारो द्वारपालद्वाःस्थद्वाःस्थितदर्शकाः ।

द्वारपालके नाम ५-प्रतीहार १ द्वारपाल २ द्वाःस्थ ३ द्वाःस्थित ४ दर्शक ५ ॥

रक्षिवर्गस्त्वनीकस्थो-

रखवालेके नाम २-रक्षिवर्ग १ अनीकस्थ २ ॥

-ऽथाध्यक्षाधिकृतौ समौ ॥६॥

अधिकारीके नाम २-अध्यक्ष १ अधिकृत २ ॥ ६ ॥

स्थायुकोऽधिकृतो ग्रामे-

एक ग्रामके ठेकेदारका नाम १-स्थायुक १ ॥

-गोपो ग्रामेषु भूरिषु ।

बहुत ग्रामोंके ठेकेदारका नाम १-गोप १ ॥

भौरिकः कनकाध्यक्षो-

सोनेके अधिकारीके नाम २-भौरिक १ कनकाध्यक्ष २ ॥

-रूप्याध्यक्षस्तु नैष्किकः ॥७॥

खजानचीके नाम २-रूप्याध्यक्ष १ नैष्किक २ ॥ ७ ॥

अन्तःपुरे त्वधिकृतः स्यादन्तर्वंशिको जनः ।

जो जनानेकी वस्तुओंका अधिकारी हो उसका नाम १-अन्तर्वंशिक १ ॥

सौविदल्लाः कञ्चुकिनः स्थापत्याः सौविदाश्च ते ॥ ८ ॥

राजा वा राजस्त्रियोंके निकट जो बेंत लिये हुए खड़े रहते हैं उनके नाम ४-सौविदल्ल १ कञ्चुकिन् २ स्थापत्य ३ सौविद ४ ॥ ८ ॥

षण्ढो वर्षवरस्तुल्यौ-

खोजोंके नाम २-षण्ढ १ वर्षवर २ ॥

-सेवकार्थ्यनुजीविनः ।

सेवक वा नौकरके नाम ३-सेवक १ अर्थिन् २ अनुजीविन् ३ ॥

विषयानन्तरो राजा शत्रु-

राजाके देशके पासके राजाका नाम १-शत्रु १ ॥

-र्मित्रमतः परम् ॥ ९ ॥

उसके अन्य राजाका नाम १-मित्र १ ॥ ९ ॥

उदासीनः परतरः--

इन शत्रु मित्रोंसे पर (अन्य) राजाओंका नाम १--उदासीन १ ॥

--पार्ष्णिग्राहस्तु पृष्ठतः ।

अपने राज्यके पीछे राजा जो हो उसका नाम १--पार्ष्णिग्राह १ ॥

रिपौ वैरिसपत्नारिद्विषद्द्वेषणदुर्हृदः ॥१०॥ द्विड्विपक्षाहितामित्रदस्युशात्रवशत्रवः ॥ अभिघातिपरारातिप्रत्यर्थिपरिपंथिनः ॥ ११ ॥

दुश्मनके नाम १९--रिपु १ वैरिन् २ सपत्न ३ अरि ४ द्विषत् ५ द्वेषण ६ दुर्हृद् ७ ॥१०॥ द्विष् ८ विपक्ष ९ अहित १० अमित्र ११ दस्यु १२ शात्रव १३ शत्रु १४ अभिघातिन् १५ पर १६ अराति १७ प्रत्यर्थिन् १८ परिपंथिन् १९ ॥ ११ ॥

वयस्यः स्निग्धः सवया--

हमजोलीके नाम ३--वयस्य १ स्निग्ध २ सवयस् ३ ॥

--अथ मित्रं सखा सुहृत् ।

मित्रके नाम ३--मित्र १ सखि २ सुहृद् ३

सख्यं साप्तपदीनं स्या--

मित्रताके नाम २--सख्य १ साप्तपदीन २ ॥

दनुरोधोऽनुवर्तनम् ॥ १२ ॥

भला मनाने (मुलाहिजे) के नाम २--अनुरोध १ अनुवर्त्तन २ ॥ १२ ॥

यथार्हवर्णः प्रणिधिरपसर्पश्चरः स्पशः । चारश्च गूढपुरुष--

जासूस वा हलकारेके नाम ७--यथार्हवर्ण १ प्रणिधि २ अपसर्प ३ चर ४ स्पश ५ चार ६ गूढपुरुष ७ ॥

--श्चाप्तप्रत्ययितौ समौ ॥ १३ ॥

विश्वासीके नाम २--आप्त १ प्रत्यायित २ ॥ १३ ॥

सांवत्सरो ज्योतिषिको दैवज्ञगणकावपि । स्युर्मौहूर्तिकमौहूर्तज्ञानिकार्तान्तिका अपि ॥ १४ ॥

ज्योतिषी पण्डितके नाम ८--सांवत्सर १ ज्योतिषिक २ दैवज्ञ ३ गणक ४ मौहूर्त्तिक ५ मौहूर्त्त ६ ज्ञानिन् ७ कार्तान्तिक ८ ॥ १४ ॥

तान्त्रिको ज्ञातसिद्धान्तः--

शास्त्रीके नाम २--तान्त्रिक १ ज्ञातसिद्धान्त २ ॥

--सत्री गृहपतिः समौ ।

मोदीके नाम २--सत्रिन् १ गृहपति २ ॥

लिपिकरोऽक्षरचणोऽक्षरचुञ्चुश्च लेखके ॥ १५ ॥

लेखकके नाम ४--लिपिकर १ अक्षरचण २ अक्षरचुञ्चु ३ लेखक ४ ॥ १५ ॥

लिखिताक्षरविन्यासे लिपिर्लिबिरुभे स्त्रियौ ।

लिखे हुए लेखके नाम४—लिखित १ अक्षरविन्यास २ लिपि ३ लिबि ४ ॥

स्यात्संदेशहरो दूतो—

दूतके नाम २—संदेशहर १दूत२॥

—दूत्यं तद्भावकर्मणि ॥ १६ ॥

दूतपनका नाम १—दूत्य १॥१६॥

अध्वनीनोऽध्वगोऽध्वन्यः पान्थः पथिक इत्यपि ।

रस्तेगीरके नाम ५—अध्वनीन १ अध्वग २अध्वन्य ३ पान्थ ४ पथिक५॥

स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्रदुर्गबलानि च ॥ १७ ॥ राज्याङ्गानि प्रकृतयः पौराणां श्रेणयोऽपि च ।

स्वामी(राजा)अमात्य (मन्त्री) सुहृद् (मित्र) कोश (खजाना) राष्ट्र (देशकी भूमि) दुर्ग (किला) बल (फौज) ॥ १७ ॥ पुरवासी और शिल्पी इन सबके नाम २—राज्याङ्ग १प्रकृति २॥

संधिर्ना विग्रहो यानमासनं द्वैधमाश्रयः ॥ १८ ॥ षड्गुणाः—

सुवर्णादि देके शत्रुके मिलानेका नाम१—सन्धि१॥शत्रुके साथ बिगड़नेका नाम १—विग्रह १॥ शत्रुपर चढ़ाई करनेका नाम १—यान१ ॥ अपने स्थानपर तैयार हो रहनेका नाम १—आसन१ ॥ शत्रुके अधिकारियोंमें फूट करानेका नाम १—द्वैध १ ॥ दूसरेका आसरा लेनेका नाम १—आश्रय १ ॥१८॥ ये छः गुण कहलाते हैं ॥

—शक्तयस्तिस्रः प्रभावोत्साहमन्त्रजाः ।

राजाकी शक्तियोंके नाम ३—प्रभावज १ उत्साहज २ मन्त्रज ३ ॥

क्षयः स्थानं च वृद्धिश्च त्रिवर्गो नीतिवेदिनाम् ॥ १९ ॥

नीतिशास्त्रोक्त क्षय स्थान वृद्धिका नाम १—त्रिवर्ग १ ॥ १९ ॥

स प्रतापः प्रभावश्च यत्तेजः कोशदण्डजम् ।

खजाना और दंडके प्रभावके नाम २—प्रताप १ प्रभाव २ ॥

सामदाने भेददण्डावित्युपायचतुष्टयम् ॥ २० ॥

राजाके चारों उपायोंके नाम ४—सामन् १ दान २ भेद३दण्ड४ ॥२०॥

साहसं तु दमो दण्डः—

दण्ड देनेके नाम ३—साहस १ दम २ दण्ड ३ ॥

—साम सान्त्व—

सलूक करनेके नाम २—सामन् १ सान्त्व २ ॥

–मथो समौ ॥ भेदोपजापा–

फरक डालनेके नाम २–भेद १ उपजाप २ ॥

उपधा धर्माद्यैर्यत्परीक्षणम् २१

धर्म अर्थ काम और भयसे मन्त्री इत्यादिकोंकी परीक्षा करनेका नाम १–उपधा १ ॥ २१ ॥

पञ्च त्रि–

अषडक्षीण आदि निःशलाक पर्य्यन्त पांच शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥

ष्वषडक्षीणो यस्तृतीयाद्यगोचरः ।

दो जनोंकी ही सलाहका नाम १–अषडक्षीण १ ॥

विविक्तविजनच्छन्ननिःशलाका-स्तथा रहः ॥ २२ ॥ रहश्चोपांशु चालिंगे–

एकान्तके नाम ७–विविक्त १ विजन २ छन्न ३ निश्शलाक ४ रहस् ॥ २२ ॥ रह ६ उपांशु ७ ॥

–रहस्यं तद्भवे त्रिषु ।

एकान्तकी बात वा कामका नाम १–रहस्य १ ।

समौ विस्रम्भविश्वासौ–

विश्वासके नाम २–विस्रम्भ १ विश्वास २ ॥

–भ्रेषो भ्रंशो यथोचितात्॥२३॥

अन्यायका नाम १–भ्रेष १॥२३॥

अभ्रेषन्यायकल्पास्तु देशरूपं समञ्जसम् ।

न्यायके नाम ५–अभ्रेष १ न्याय २ कल्प ३ देशरूप ४ समञ्जस ५ ॥

युक्तमौपयिकं लभ्यं भजमा-नाभिनीतवत् ॥ २४ ॥ न्याय्यं च त्रिषु षट्–

न्यायसे जो वस्तु ली जावे उसके नाम ६–युक्त १ औपयिक २ लभ्य ३ भज-मान ४–अभिनीत ५ ॥ २४ ॥ न्याय्य ६–ये छः शब्द त्रिलिंग हैं ॥

–संप्रधारणा तु समर्थनम् ।

यही उचित है ऐसे निश्चय करनेके नाम २–सम्प्रधारणा १ समर्थन २ ॥

अववादस्तु निर्देशो निदेशः शासनं च सः ॥ २५ ॥ शिष्टि-श्चाज्ञा च–

आज्ञाके नाम ६–अववाद १ निर्देशः २ निदेश ३ शासन ४ ॥ २५॥ शिष्टि ५ आज्ञा ६ ॥

–संस्था तु मर्यादा धारणा स्थितिः ।

मर्यादाके नाम ४–संस्था–१ मर्यादा २ धारणा ३ स्थिति ४ ॥

आगोऽपराधो मन्तुश्च-

अपराधके नाम ३—आगस् १ अपराध २ मन्तु ३ ॥

-समे तूद्दानबन्धने ॥ २६ ॥

बन्धनके नाम २—उद्दान १ बन्धन २ ॥ २६ ॥

द्विपाद्यो द्विगुणो दण्डो-

दूने दण्डका नाम १—द्विपाद्य १ ॥

भागधेयः करो बलिः ।

करके नाम ३—भागधेय १ कर २ बलि ३ ॥

घट्टादिदेयं शुल्कोऽस्त्री-

घाटी वगैरहमें देने योग्य महसूलके नाम १—शुल्क ॥

-प्राभृतं तु प्रदेशनम् ॥ २७ ॥

मित्रादिकोंको भेंट वा नजर देनेके नाम २—प्राभृत १ प्रदेशन २ ॥२७ ॥

उपायनमुपग्राह्यमुपहारस्तथोपदा ।

राजाको भेंट वा नजर देनेके नाम४-उपायन१उपग्राह्य२उपहार ३ उपदा ४ ॥

यौतकादि तु यद्देयं सुदायो हरणं च तत् ॥ २८ ॥

दहेज वा भाई बन्धुओंके देनेकी वस्तुके नाम२—सुदाय१ हरण २॥२८॥

तत्कालस्तु तदात्वं स्या-

वर्तमानसमयके नाम २—तत्काल १ तदात्व २ ॥

-दुत्तरः काल आयतिः ।

आनेवाले समयका नाम १—आयति १ ॥

सांदृष्टिकं फलं सद्य-

तुरन्तके फलका नाम१—सांदृष्टिक१।

-उदर्कः फलमुत्तरम् ॥ २९ ॥

आगेके होनेवालेका नाम १-उदर्क १ ॥ २९ ॥

अदृष्टं वह्नितोयादि-

आग लगने और अतिवृष्टि होने आदि उत्पातका नाम १—अदृष्ट १ ॥

-दृष्टं स्वपरचक्रजम् ।

अपने या पराये राज्यसे चौरादिक भयका नाम १—दृष्ट १ ॥

महीभुजामहिभयं स्वपक्षप्रभवं भयम् ॥ ३० ॥

अपने सहायकसे भयका नाम १—अहिभय १ ॥ ३० ॥

प्रक्रिया त्वधिकारः स्या-

कानून चलानेके नाम२—प्रक्रिया १ अधिकार २ ॥

-च्चामरं तु प्रकीर्णकम् ।

चँवरके नाम २—चामर१प्रकीर्णक२।

नृपासनं यत्तद्भद्रासनं-

मणि आदिसे बनी हुई राजगद्दीके नाम २—नृपासन १ भद्रासन २ ॥

-सिंहासनं तु तत् ॥ ३१ ॥
हैमं-

कदाचित् वही राजाके बैठनेका स्थान सोनेसे बना हो तो उसका नाम १-सिंहासन १ ॥ ३१ ॥

-छत्रं त्वातपत्रं-

छतुरीके नाम २-छत्र १ आतपत्र २।

-राज्ञस्तु नृपलक्ष्म तत् ।

राजाके छत्रका नाम १-नृपलक्ष्मन् १॥

भद्रकुम्भः पूर्णकुम्भो-

भरे घड़ेके नाम २-भद्रकुम्भ १ पूर्णकुम्भ २ ॥

-भृङ्गारः कनकालुका ॥ ३२॥

झारी या गडुवेके नाम २-भृंगार १ कनकालुका २ ॥ ३२ ॥

निवेशः शिबिरं षण्डे-

डेराके नाम २-निवेश १ शिबिर २ ॥

-सज्जनं तूपरक्षणम् ।

पहरेके नाम २-सज्जन १ उपरक्षण २॥

हस्त्यश्वरथपादातं सेनाङ्गं स्याच्चतुष्टयम् ॥ ३३ ॥

हाथी,घोड़ा, रथ, सिपाही इन सबका नाम १-सेनाङ्ग १ ॥ ३३ ॥

दन्ती दन्तावलो हस्ती द्विरदोऽनेकपो द्विपः । मतंगजो गजो नागः कुञ्जरो वारणः करी ॥ ३४॥
इभः स्तम्बेरमः पद्मी-

हाथीके नाम १५-दन्तिन् १ दन्तावल २ हस्तिन् ३ द्विरद ४ अनेकप ५ द्विप ६ मतंगज ७ गज ८ नाग ९ कुञ्जर १० वारण ११ करिन् १२॥३४॥ इभ १३ स्तम्बेरम १४ पद्मिन् १५ ॥

-यूथनाथस्तु यूथपः ।

हाथियोंके सरदार हाथीके नाम २-यूथनाथ १ यूथप २ ॥

मदोत्कटो मदकलः-

मदान्ध हाथीके नाम २-मदोत्कट १ मदकल २ ॥

कलभः करिशावकः ॥ ३५ ॥

हाथीके बच्चोंके नाम २-कलभ १ करिशावक २ ॥ ३५ ॥

प्रभिन्नो गर्जितो मत्तः-

जिसके मद बहता हो उसके नाम ३-प्रभिन्न १ गर्जित २ मत्त ३ ॥

-समावुद्वान्तनिर्मदौ ।

बेमदवालेके नाम २-उद्वान्त १ निर्मद २ ॥

हास्तिकं गजता वृन्दे-

हाथियोंके समूहके नाम २-हास्तिक १ गजता २ ॥

-करिणी धेनुका वशा ॥३६ ॥

हथिनीके नाम ३-करिणी १ धेनुका २ वशा ३ ॥ ३६ ॥

गण्डः कटो-

हाथीके गालके नाम २-गण्ड १ कट २ ॥

मदो दानं-

हाथीके मदके नाम २-मद १ दान २ ॥

-वमथुः करशीकरः।

हाथीकी सूँड़से पानी निकलनेके नाम २-वमथु १ करशीकर २ ॥

कुम्भौ तु पिण्डौ शिरस-

हाथीके मस्तकके मांसका नाम १-कुम्भ १ ॥

-स्तयोर्मध्ये विदुः पुमान्॥३७॥

दोनों कुम्भोंके मध्यमें जो खाली रहता है उसका नाम १-विदु १॥३७॥

-अवग्रहो ललाटं स्या-

हाथीके लिलारका नाम १-अवग्रह १ ॥

-ईषिका त्वक्षिकूटकम्।

उसके नेत्रोंकी गोलाईके नाम २-ईषिका १ अक्षिकूटक २ ॥

अपांगदेशो निर्याणं-

उसके निहारनेका नाम १-निर्याण १

-कर्णमूलं तु चूलिका ॥ ३८ ॥

हाथीके जहांसे कान जमते हैं उस जगहका नाम १-चूलिका १ ॥३८ ॥

अधः कुम्भस्य वाहित्थं-

हाथीके लिलारके नीचेका नाम १-वाहित्थ १ ॥

प्रतिमानमधोऽस्य यत्।

वाहित्थके नीचेका नाम १-प्रतिमान १ ॥

आसनं स्कन्धदेशः स्यात्-

हाथीके कन्धेका नाम १-आसन १॥

-पद्मकं बिन्दुकालकम् ॥३९॥

हाथीके बिंदुओंका नाम १-पद्मक १ ॥ ३९ ॥

पार्श्वभागः पक्षभागो-

हाथीकी बगलके नाम २-पार्श्वभाग १ पक्षभाग २ ॥

-दन्तभागस्तु योऽग्रतः।

हाथीके आगेके भागका नाम १-दन्तभाग १ ॥

द्वौ पूर्वपश्चाज्जंघादिदेशौ गात्रावरे क्रमात् ॥ ४० ॥

हाथीके आगेके जंघादि भागका नाम १-गात्र १ ॥ हाथीके पीछेके भागका नाम १-अवर १ ॥ ४० ॥

तोत्रं वैणुकं-

चाबुककी डण्डीके नाम २-तोत्र १ वैणुक २ ॥

-मालानं बन्धस्तम्भे-

हाथीके खूटेका नाम १-आलान १ ॥

-ऽथ शृंखले । अन्दुको निगडोऽस्त्री स्या-

हाथीकी जंजीरके नाम ३-शृंखल १ अन्दुक २ निगड ३ ॥

दंकुशोऽस्त्री सृणिः स्त्रियाम् ॥४१॥

अंकुशके नाम २-अंकुश १ सृणि २ ॥ ४१ ॥

दूष्या कक्ष्या वरत्रा च-

हाथीकी कमर बांधनेकी रस्सीके नाम ३-दूष्या १ कक्ष्या २ वरत्रा ३ ॥

-कल्पना सज्जना समे ।

मालिकके चढ़नेके वास्ते हाथीको तैयार करनेके नाम २-कल्पना १ सज्जना २ ॥

प्रवेण्यास्तरणं वर्णः परिस्तोमः कुथो द्वयोः ॥ ४२ ॥

गद्दी वा झूलके नाम ५-प्रवेणी १ आस्तरण २ वर्ण ३ परिस्तोम ४ कुथ ५ ॥ ४२ ॥

-वीतं त्वसारं हस्त्यश्वं-

युद्धादि करनेमें असमर्थ हाथी घोड़ेका नाम १-वीत १ ॥

-वारी तु गजबन्धनी ।

जिस भूमिमें हाथी बांधे जायँ उसका नाम १-वारी १ ॥

घोटके वीतितुरगतुरङ्गाश्वतुरङ्गमाः ॥ ४३ ॥ वाजिवाहार्वगन्धर्वहयसैंधवसप्तयः ।

घोड़ेके नाम १३-घोटक १ वीति २ तुरग ३ तुरङ्ग ४ अश्व ५ तुरङ्गम ६ ॥ ४३ ॥ वाजिन् ७ वाह ८ अर्वन् ९ गन्धर्व १० हय ११ सैन्धव १२ सप्ति १३ ॥

आजानेयाः कुलीनाः स्यु-

कुलीन घोड़ेका नाम १-आजानेय १॥

-र्विनीताः साधुवाहिनः ॥४४॥

सीखे हुए घोड़ेका नाम १-विनीत १ ॥ ४४ ॥

वनायुजाः पारसीकाः काम्बोजा बाह्लिका हयाः ।

वनायु देशमें पैदा हुए घोड़ेका नाम १-वनायुज १ ॥ पारसदेशोत्पन्न घोड़ेका नाम १ पारसीक १ ॥ काबुली घोड़ेका नाम १-बाह्लिक १ ॥

ययुरश्वोऽश्वमेधीयो-

अश्वमेधके श्यामकर्णवाले घोड़ेके नाम १-ययु १ ॥

-जवनस्तु जवाधिकः ॥ ४५ ॥

जल्दी चलनेवाले घोड़ेका नाम १-जवन १ ॥ ४५ ॥

पृष्ठ्यः स्थौरी-

लदनेवाले घोड़के नाम २-पृष्ठ्य १ स्थौरिन् २ ॥

–सितः कर्को–

उजले घोड़ेका नाम १–कर्क १ ॥

रथ्यो वोढा रथस्य यः ।

रथके घोड़ेका नाम १–रथ्य १ ॥

बालः किशोरो–

घोड़ेके बच्चेका नाम १–किशोर १॥

वाम्यश्वा वडवा–

घोड़ीके नाम ३–वामी १ अश्वा २ वडवा ३ ॥

–वाडवं गणे ॥ ४६ ॥

घोड़ीके समूहका नाम १–वाडव १ ॥ ४६ ॥

त्रिष्वाश्वीनं यदश्वेन दिनेनैकेन गम्यते ।

घोड़ेके एक दिन चलने योग्य मार्गका नाम १–आश्वीन १ ॥

कश्यं तु मध्यमाश्वानां–

घोड़ेके मध्यभागका नाम १-कश्य १॥

–हेषा ह्रेषा च निःस्वनः ॥४७॥

घोड़ेके शब्दके नाम २–हेषा १ ह्रेषा २ ॥ ४७ ॥

निगालस्तु गलोद्देशे–

घोड़ेके गलेका नाम १–निगाल १॥

–वृन्दे त्वश्वीयमाश्ववत् ।

घोड़ोंके समूहके नाम २–अश्वीय १ आश्व २ ॥

आस्कन्दितं धौरितकं रेचितं वल्गितं प्लुतम् ॥ ४८ ॥ गतयोऽमूः पञ्च धारा–

घोड़ेके पांच प्रकारकी चालोंके नाम ५–आस्कन्दित १ धौरितक २ रेचित ३ वल्गित ४ प्लुत ५ ॥ ४८ ॥

घोणा तु प्रोथमस्त्रियाम् ।

घोड़ेकी नाकका नाम १–प्रोथ १॥

कविका तु खलीनोऽस्त्री–

घोड़ेकी लगामके नाम २–कविका १ खलीन २ ॥

–शफं क्लीबे खुरः पुमान् ॥ ४९ ॥

घोड़ेके खुरके नाम २–शफ १ खुर २ (क्षुर) ॥ ४९ ॥

पुच्छोऽस्त्री लूमलांगूले–

पूँछके नाम ३–पुच्छ १ लूम २ लांगूल ३॥

–वालहस्तश्च वालधिः ।

वालसहित पूँछके नाम २–वालहस्त १ वालधि २ ॥

त्रिषूपावृत्तलुठितौ परावृत्ते मुहुर्भुवि ॥ ५० ॥

पृथ्वीमें लोटनेके नाम २–उपावृत्त १ लुठित २ ॥ ५० ॥

याने चक्रिणि युद्धार्थे शतांगः स्यन्दनो रथः ।

युद्धके रथके नाम ३–शतांग १ स्यन्दन २ रथ ३ ॥

असौ पुष्यरथश्चक्रयानं न समराय यत् ॥ ५१ ॥

सामान्य रथका नाम १–पुष्यरथ १ ॥ ५१ ॥

कर्णीरथः प्रवहणं डयनं च समं त्रयम् ।

स्त्रियोंकी गाड़ीके नाम ३–कर्णीरथ १ प्रवहण २ डयन ३ ॥

क्लीबेऽनः शकटोऽस्त्री स्या–

छकड़ेके नाम २–अनस् १ शकट २ ॥

–द्गन्त्री कम्बलिवाह्यकम् ॥ ५२ ॥

गाड़ीके नाम २–गन्त्री १ (गान्त्री) कम्बलिवाह्यक २ ॥ ५२ ॥

शिबिका याप्ययानं स्या–

पालकीके नाम २–शिबिका १ याप्ययान २ ॥

–द्दोला प्रेंखादिका स्त्रियाम् ।

दोली वा हिंडोलेके नाम २–दोला १ प्रेंखा २ ॥

उभौ तु द्वैपवैयाघ्रौ द्वीपिचर्मावृते रथे ॥ ५३ ॥

जिसमें बघेरके चमड़ेका परदा हो उसके नाम २–द्वैप १ वैयाघ्र २ ॥ ५३ ॥

पाण्डुकम्बलसंवीतः स्यन्दनः पाण्डुकम्बली ।

पीले रंगवाले परदेके रथका नाम १–पाण्डुकम्बली १ ॥

रथे काम्बलवास्त्राद्याः कम्बलादिभिरावृते ॥ ५४ ॥

कम्बल आदि परदेवाले रथके नाम २–काम्बल १ वास्त्र २ आदि ॥ ५४ ॥

त्रिषु द्वैपादयो–

द्वैप आदि शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥

–रथ्या रथकट्या रथव्रजे ।

रथके समूहके नाम २–रथ्या १ रथकट्या २ ॥

धूः स्त्री क्लीबे यानमुखं–

धूरीके नाम २–धुर् १ यानमुख २ ॥

–स्याद्रथाङ्गमपस्करः ॥ ५५ ॥

तांगेके नाम २–रथांग १ अपस्कर २ ॥ ५५ ॥

चक्रं रथाङ्गं–

पहियेके नाम २–चक्र १ रथाङ्ग २ ॥

–तस्यान्ते नेमिः स्त्री स्यात्प्रधिः पुमान् ।

रथकी नेमिके नाम २–नेमि १ प्रधि २ ॥

पिण्डिका नाभि–

पुढ़ीके नाम २–पिण्डिका १ नाभि २ ॥

–रक्षाग्रकीलके तु द्वयोराणिः ५६

कुलावेका नाम १–अणि १ ॥ ५६ ॥

रथगुप्तिर्वरूथो ना–

लोहे जड़े रथके आवरणके नाम २–रथगुप्ति १ वरूथ २ ॥

–कूबरस्तु युगंधरः ।

काठके जुए बांधनेके स्थानके नाम २–कूबर १ युगंधर २ ॥

अनुकर्षो दार्वधःस्थं–

सुगनका नाम १–अनुकर्ष १ ॥

–प्रासङ्गो ना युगाद्युगः॥५७॥

जुएके नाम २–प्रासंग १ युग २ ॥ ५७॥

सर्वं स्याद्वाहनं यानं युग्यं पत्रं च धोरणम् ॥

सवारीके नाम ५–वाहन १ यान २ युग्य ३ पत्र ४ धोरण ५ ॥

परम्परावाहनं यत्तद्वैनीतकमस्त्रियाम् ॥ ५८ ॥

कहार आदि वाहनोंका नाम १–वैनीतक १ ॥ ५८ ॥

आधोरणा हस्तिपका हस्त्यारोहा निषादिनः ।

हाथीवानके नाम ४–आधोरण १ हस्तिपक २ हस्त्यारोह ३ निषादिन् ४॥

नियंता प्राजिता यन्ता सूतः क्षत्ता च सारथिः ॥५९ ॥ सव्येष्ठदक्षिणस्थौ च संज्ञा रथकुटुम्बिनः ।

रथादिके हांकनेवालके नाम ८–नियन्तृ १ प्राजितृ २ यन्तृ ३ सूत ४ क्षत्तृ ५ सारथि ६ ॥ ५९ ॥ सव्येष्ठ ७ दक्षिणस्थ ८ ॥

रथिनः स्यन्दनारोहा–

रथके ऊपर चढ़के लड़नेवालोंके नाम २–रथिन् १ स्यन्दनारोह २ ॥

–अश्वारोहास्तु सादिनः ॥६०॥

घुड़सवारोंके नाम २–अश्वारोह १ सादिन् २ ॥ ६० ॥

भटा योधाश्च योद्धारः–

लड़नेवालेके नाम ३–भट १ योध २ योद्धृ ३ ॥

–सेनारक्षास्तु सैनिकाः ।

पहरा देनेवालेके नाम २–सेनारक्ष १ सैनिक २ ॥

सेनायां समवेता ये सैन्यास्ते सैनिकाश्च ते ॥ ६१ ॥

सम्पूर्ण सेनाके नाम २–सैन्य १ सैनिक २ ॥ ६१ ॥

बलिनो ये सहस्रेण साहस्रास्ते सहास्रिणः ॥

हजार सिपाहियोंके मालिकके नाम २–साहस्र १ सहस्रिन् २ ॥

परिधिस्थः परिचरः–

जो फौज रखानेके अर्थ चारों तरफ घूमता है उसके नाम २–परिधिस्थ १ परिचर २ ॥

सेनानीर्वाहिनीपतिः ॥ ६२ ॥

सेनाके मालिकके नाम २--सेनानी १ वाहिनीपति २ ॥ ६२ ॥

कञ्चुको वारबाणोऽस्त्री-

योद्धाओंको युद्धके समय पहरनेके वस्त्रके नाम २--कञ्चुक १ वारबाण २॥

-यत्तु मध्ये सकञ्चुकाः । बध्नंति तत्सारसनमधिकाङ्गो-

इसे पहनकर जो योद्धा पट्टी बांधते हैं उसके नाम २--सारसन १ अधिकांग २ ॥

-थ शीर्षकम् ॥ ६३ ॥ शीर्षण्यं च शिरस्त्रे-

टोपके नाम ३--शीर्षक १ ॥ ६३ ॥ शीर्षण्य २ शिरस्त्र ३ ॥

-ऽथ तनुत्रं वर्म दंशनम् । उरश्छदः कङ्कटको जगरः कवचोऽस्त्रियाम् ॥ ६४ ॥

कवचके नाम ७--तनुत्र १ वर्मन् २ दंशन ३ उरश्छद ४ कंकटक ५ जगर ६ कवच ७ ॥ ६४ ॥

आमुक्तः प्रतिमुक्तश्च पिनद्धश्चापिनद्धवत् ।

पहिरे हुए कवचके नाम ४--आमुक्त १ प्रतिमुक्त २ पिनद्ध ३ अपिनद्ध ४॥

संनद्धो वर्मितः सज्जो दंशितो व्यूढकङ्कटः ॥ ६५ ॥

मंत्रादि कवच धारण किये हुएके नाम ५--संनद्ध १ वर्मित २ सज्ज ३ दंशित ४ व्यूढकंकट ५ ॥ ६५ ॥

त्रिष्वामुक्तादयो-

आमुक्त आदि शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ।

-वर्मभृतां कावचिकं गणे ।

कवच धारण करनेवालोंके समूहका नाम १--कावचिक १ ॥

पदातिपत्तिपदगपादातिकपदाजयः ॥ ६६ ॥ पद्गश्च पदिकश्चा-

पैदलके नाम ७--पदाति १ पत्ति २ पदग ३ पादातिक ४ पदाजि ५ ॥ ६६ ॥ पद्ग ६ पदिक ७ ॥

-थ पादातं पत्तिसंहतिः ॥

पैदलसमूहके नाम २--पादात १ पत्तिसंहति २ ॥

शस्त्राजीवे काण्डपृष्ठायुधीयायुधिकाः समाः ॥ ६७ ॥

जो हथियार बांधकर जीविका करते हैं उनके नाम ४--शस्त्राजीव १ काण्डपृष्ठ २ आयुधीय ३ आयुधिक४॥६७॥

कृतहस्तः सुप्रयोगविशिखः कृतपुंखवत् ॥

तीरन्दाजके नाम ३--कृतहस्त १ सुप्रयोगविशिख २ कृतपुंख ३ ॥

अपराद्धपृषत्कोऽसौ लक्ष्याद्यश्च्युतसायकः ॥ ६८ ॥

जिसका तीर निशानसे चूक जाय उसका नाम १—अपराद्धपृषत्क१॥६८॥

धन्वी धनुष्मान्धानुष्को निषङ्ग्यस्त्री धनुर्धरः ।

धनुष वा बाण बांधनेवालेके नाम ६—धन्विन् १ धनुष्मत् २ धानुष्क ३ निषंगिन् ४ अस्त्रिन् ५ धनुर्धर ६ ॥

स्यात्काण्डवांस्तु काण्डीरः—

केवल बाण बांधनेवालेके नाम २—काण्डवत् १ काण्डीर २ ॥

—शाक्तीकः शक्तिहेतिकः॥६९॥

शक्ति आदि शस्त्रधारीके नाम २—शाक्तीक १ शक्तिहेतिक २ ॥ ६९ ॥

याष्टीकपारश्वधिकौ यष्टिपार्श्वधहेतिकौ ।

लठिया रखनेवालेका नाम १—याष्टीक १ ॥ फरसा बांधनेवालेका नाम १—पारश्वधिक १ ॥

नैस्त्रिंशिकोऽसिहेतिः स्या—

तरवार बांधे हुएके नाम २—नैस्त्रिंशिक १ असिहेति २ ॥

—त्समौ प्रासिककौन्तिकौ ७०॥

बल्लमके बांधनेवालेका नाम १—प्रासिक १ ॥ भालेवालेका नाम १ कौन्तिक १ ॥ ७० ॥

चर्मी फलकपाणिः स्या—

ढाल बांधनेवालेके नाम २—चर्मिन् १ फलकपाणि २ ॥

—त्पताकी वैजयन्तिकः ।

निशान बांधनेवालेका नाम २—पताकिन् १ वैजयंतिक २ ॥

अनुप्लवः सहायश्चानुचरोऽभिचरः समाः ॥ ७१ ॥

सहायके नाम ४—अनुप्लव १ सहाय २ अनुचर ३ अभिचर ४॥७१॥

पुरोगाग्रेसरप्रष्ठाग्रतःसरपुरःसराः । पुरोगमः पुरोगामी—

अग्रगामीके नाम ७—पुरोग १ अग्रेसर २ प्रष्ठ ३ अग्रतस्सर ४ पुरस्सर ४ पुरोगम ६ पुरोगामिन् ॥ ७ ॥

—मन्दगामी तु मन्थरः ॥ ७२ ॥

धीरे चलनेवालेके नाम २—मन्दगामिन् १ मन्थर २ ॥ ७२ ॥

जंघालोऽतिजवस्तुल्यो—

जादे चलनेवालेके नाम २—जंघाल १ अतिजव २ ॥

—जंघाकरिकजांघिकौ ।

जो जंघाके बलसे जीता है उसके नाम २—जंघाकरिक १ जांघिक २ ॥

तरस्वी त्वरितो वेगी प्रजवी ज़वनो जवः ॥ ७३ ॥

वेगसे चलनेवालेके नाम६—तरस्विन् १ त्वरित २ वेगिन् ३ प्रजविन् ४ जवन ५ जव ६ ॥ ७३ ॥

जय्यो यः शक्यते जेतुं—

जिसे जीत सके उसका नाम१—जय्य १ ॥

—जेयो जेतव्यमात्रके ।

जीतने लायकका नाम १—जेय१ ॥

जैत्रस्तु जेता—

जो जीत सके उसके नाम२—जैत्र१ जेतृ २ ॥

—यो गच्छत्यलं विद्विषतः प्रति ॥ ७४ ॥ सोऽभ्यमित्र्योऽभ्यमित्रीयोऽप्यभ्यमित्रीण इत्यपि ।

सामर्थ्यसे शत्रुओंके संमुख जानेवालेके नाम ३—॥ ७४ ॥ अभ्यमित्र्य १ अभ्यमित्रीय २ अभ्यमित्रीण ३ ॥

ऊर्जस्वलः स्यादूर्जस्वी य ऊर्जातिशयान्वितः ॥ ७५ ॥

पहलवानके नाम ३—ऊर्जस्वल १ ऊर्जस्विन् २ ऊर्जातिशय ३ ॥ ७५ ॥

स्यादुरस्वानुरसिलो—

बड़ी छातीवालेके नाम २—उरस्वत् १ उरसिल २ ॥

—रथिनो रथिको रथी ।

रथके स्वामीके नाम३—रथिन १ रथिक २ रथिन् ३ ॥

कामङ्गाम्यनुकामीनो—

जो अपने मनसे चलता हो उसका नाम १—अनुकामीन १ ॥

—ह्यत्यन्तीनस्तथा भृशम् ॥७६॥

वारंवार चलनेवालेका नाम १—अत्यन्तीन १ ॥ ७६ ॥

शूरो वीरश्च विक्रान्तो—

शूरके नाम ३—शूर १ वीर २ विक्रांत ३ ॥

—जेता जिष्णुश्च जित्वरः ।

जीतनेवालेके नाम ३—जेतृ १ जिष्णु२ जित्वर ३ ॥

सांयुगीनो रणे साधुः—

युद्धकुशलका नाम १—सांयुगीन १॥

—शस्त्राजीवादयस्त्रिषु ॥ ७७ ॥

शस्त्राजीव आदि शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥ ७७ ॥

ध्वजिनी वाहिनी सेना पृतनानीकिनी चमूः । वरूथिनी बलं सैन्यं चक्रं चानीकमस्त्रियाम् ॥७८॥

सेनाके नाम ११—ध्वजिनी १ वाहिनी २सेना ३ पृतना ४ अनीकिनी५ चमू ६ वरूथिनी ७ बल ८ सैन्य ९ चक्र १० अनीक ११ ॥ ७८ ॥

व्यूहस्तु बलविन्यासो—

सेनाकी रचनाके नाम २–व्यूह १ बलविन्यास २ ॥

–भेदा दण्डादयो युधि ।

सेनाकी रचनाके अनेक भेद दण्ड इत्यादि १ ॥ (ये चक्र, मयूर, कमल आदिक व्यूह हैं ॥)

प्रत्यासारो व्यूहपार्ष्णिः–

व्यूहके पीछेके नाम २–प्रत्यासार १ व्यूहपार्ष्णि २ ॥

सैन्यपृष्ठे प्रतिग्रहः ॥ ७९ ॥

फौजके पीछेके नाम २–सैन्यपृष्ठ १ प्रतिग्रह २ ॥ ७९ ॥

क्रमसे तिगुने पत्ति (पैदलों) के नाम ७–॥ ८० ॥ तीन पत्ति (पैदलों) का नाम–सेनामुख १ ॥ तीन सेनामुखका नाम–गुल्म १ ॥ तीन गुल्मका नाम–गण १ ॥ तीन गणका नाम–वाहिनी १ ॥ तीन वाहिनीका नाम–पृतना १ ॥ तीन पृतनाका नाम–चमू १ ॥ तीन चमूका नाम–अनीकिनी १ ॥

–दशानीकिन्यक्षौहि–

दश अनीकिनीका नाम १–अक्षौहिणी १ ॥

अक्षौहिणी आदि सेनाका प्रमाण ।

सेना	पैदल (पत्ति)	सेना-मुख	गुल्म	गण	वाहि-नी	पृतना	चमू	अनी-किनी	अक्षौ-हिणी
हाथी, रथ	१	३	९	२७	८१	२४३	७२९	२१८७	२१८७०
घोड़े	३	९	२७	८१	२४३	७२९	२१८७	६५६१	६५६१०
पैदल	५	१५	४५	१३५	४०५	१२५५	३६४५	१०९३५	१०९३५०

एकेभैकरथा त्र्यश्वा पत्तिः पञ्च पदातिका ।

जिसमें हाथी १ रथ १ घोड़े ३ पैदल ५ हों उस सेनाका नाम–पत्ति १ ॥

पत्त्यङ्गैस्त्रिगुणैः सर्वैः क्रमादाख्या यथोत्तरम् ॥ ८० ॥ सेनामुखं गुल्मगणौ वाहिनी पृतना चमूः । अनीकिनी–

–व्यथ संपादि ॥ ८१ ॥ संपत्तिः श्रीश्च लक्ष्मीश्च–

सम्पत्तिके नाम ४–संपद् १ ॥ ८१ ॥ संपत्ति २ श्री ३ लक्ष्मी ४ ॥

–विपत्त्यां विपदापदौ ॥

विपत्तिके नाम ३–विपत्ति १ विपद् २ आपद् ३ ॥

आयुधं तु प्रहरणं शस्त्रमस्त्र–

हथियारके नाम ४—आयुध १ प्रहरण २ शस्त्र ३ अस्त्र ४ ॥

—मथास्त्रियौ ॥ ८२ ॥ धनुश्चापौ धन्वशरासनकोदण्डकार्मुकम् । इष्वासोऽ—

धनुषके नाम ७ ॥ ८२ ॥ धनुष् १ चाप २ धन्वन् ३ शरासन ४ कोदण्ड ५ कार्मुक ६ इष्वास ७।

—प्यथ कर्णस्य कालपृष्ठं शरासनम् ॥ ८३ ॥

राजा कर्णके धनुषका नाम १—कालपृष्ठ १ ॥ ८३ ॥

कपिध्वजस्य गाण्डीवगाण्डिवौ पुंनपुंसकौ ।

अर्जुनके धनुषके नाम २—गाण्डीव १ गाण्डिव २ ॥

कोटिरस्याटनी—

धनुषके दोनों कोनोंके नाम २—कोटि १ अटनी २ ॥

—गोधातलेज्याघातवारणे॥८४॥

चमड़ेके दस्तानोंके नाम २—गोधा १ तल २॥ ८४ ॥

लस्तकस्तु धनुर्मध्यं—

धनुषके मध्यभागका नाम १—लस्तक १ ॥

—मौर्वी ज्या शिञ्जिनी गुणः ।

धनुषकी प्रत्यञ्चाके नाम ४—मौर्वी १ ज्या २ शिञ्जिनी ३ गुण ४ ॥

स्यात्प्रत्यालीढमालिढमित्यादि स्थानपञ्चकम् ॥ ८५ ॥

धनुषधारियोंके आसनविशेषके नाम २—प्रत्यालीढ १ आलीढ २ इत्यादि पांच स्थान ॥ ८५ ॥

लक्षं लक्ष्यं शरव्यं च—

निशानेके नाम ३—लक्ष १ लक्ष्य २ शरव्य ३ ॥

—शराभ्यास उपासनम् ।

बाण छोड़नेके अभ्यासके नाम २—शराभ्यास १ उपासन २ ॥

पृषत्कबाणविशिखा अजिह्मगखगाशुगाः ॥ ८६ ॥ कलम्बमार्गणशराः पत्री रोप इषुर्द्वयोः ।

बाणके नाम १२—पृषत्क १ बाण २ विशिख ३ अजिह्मग ४ खग ५ आशुग ६ ॥ ८६ ॥ कलम्ब ७ मार्गण ८ शर ९ पत्रिन् १० रोप ११ इषु ॥ १२ ॥

प्रक्ष्वेडनास्तु नाराचाः—

लोहेके तीरके नाम २—प्रक्ष्वेडन १ नाराच २ ॥

—पक्षो वाज—

बाणके पक्षके नाम २—पक्ष १ वाज २॥

—स्त्रिपूत्तरे ॥ ८७ ॥

लिप्तकपर्यंत सब शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥ ८७ ॥

निरस्तः प्रहिते बाणे-

छोड़े हुए बाणका नाम १—निरस्त १॥

-विषाक्ते दिग्धलिप्तकौ ।

विषयुक्त बाणके नाम ३—विषाक्त १ दिग्ध २ लिप्तक ३ ॥

तूणोपासंगतूणीरनिषंगा इषुधिर्द्वयोः ॥ ८८ ॥ तूण्यां-

तरकसके नाम ६—तूण १ उपासङ्ग २ तूणीर ३ निषङ्ग ४ इषुधि ५॥८८॥ तूणी ६ ॥

-खड्गे तु निस्त्रिंशचन्द्रहासासिरिष्टयः । कौक्षेयको मण्डलाग्रः करवालः कृपाणवत् ॥ ८९ ॥

तलवारके नाम ९—खड्ग १ निस्त्रिंश २ चन्द्रहास ३ असि ४ रिष्टि ५ कौक्षेयक ६ मण्डलाग्र ७ करवाल ८ कृपाण ९ ॥ ८९ ॥

त्सरुः खड्गादिमुष्टौ स्या-

तलवार आदिकी मूठका नाम १—त्सरु १॥

न्मेखला तन्निबन्धनम् ।

तलवारके म्यानका नाम १—मेखला १॥

फलकोऽस्त्री फलं चर्म-

ढालके नाम ३—फलक १ फल २ चर्मन् ३ ॥

-संग्राहो मुष्टिरस्य यः ॥ ९० ॥

ढालकी मूठका नाम १—संग्राह १ ॥ ९० ॥

द्रुघणो मुद्गरघनौ-

मुद्गरके नाम ३—द्रुघण १ मुद्गर २ घन ३॥

स्यादीली करवालिका ।

गुप्तिके नाम २—ईली १ करवालिका २॥

भिन्दिपालः सृगस्तुल्यौ-

तोफनके नाम २—भिन्दिपाल १ सृग २॥

-परिघः परिघातिनः ॥ ९१ ॥

परिघके नाम २—परिघ १ परिघातिन् २ ॥ ९१ ॥

द्वयोः कुठारः स्वधितिः परशुश्च परश्वधः ।

कुल्हाड़ीके नाम ४—कुठार १ स्वधिति २ परशु ३ परश्वध ४ ॥

स्याच्छस्त्री चासिपुत्री च छुरिका चासिधेनुका ॥ ९२ ॥

छूरीके नाम ४—शस्त्री १ असिपुत्री २ छुरिका ३ असिधेनुका ४ ॥ ९२ ॥

वा पुंसि शल्यं शंकुर्ना ।

बर्छीके नाम २—शल्य १ शंकु २ ॥

-सर्वला तोमरोऽस्त्रियाम्-

गँड़ासके नाम २—सर्वला १ तोमर २॥

प्रासस्तु कुन्तः-

भालेके नाम २—प्रास १ कुन्त २ ॥

-कोणस्तु स्त्रियः पाल्यश्रिकोटयः ॥ ९३ ॥

खड्गादिकी नोंकके नाम ४—कोण १ पालि २ अश्रि ३ कोटि ४ ॥ ९३ ॥

सर्वाभिसारः सर्वौघः सर्वसन्नहनार्थकः ।

सेनाकी तैयारीके नाम ३—सर्वाभिसार १ सर्वौघ २ सर्वसंनहन ३ ॥

लोहाभिसारोऽस्त्रभृतां राज्ञां नीराजनाविधिः ॥ ९४ ॥

महानवमीके पहिले लड़ाईके निमित्त राजाओंका शस्त्र पूजनेका नाम १—लोहाभिसार १ ॥ ९४ ॥

यत्सेनयाभिगमनमरौ तदभिषेणनम् ॥

शत्रुके ऊपर सेना चढ़नेका नाम १—अभिषेणन १ ॥

यात्रा व्रज्याऽभिनिर्याणं प्रस्थानं गमनं गमः ॥ ९५ ॥

चलनेके नाम ६—यात्रा १ व्रज्या २ अभिनिर्याण ३ प्रस्थान ४ गमन ५ गम ६ ॥ ९५ ॥

स्यादासारः प्रसरणं—

सेनाके फैलनेके नाम २—आसार १ प्रसरण २ ॥

—प्रचक्रं चलितार्थकम् ।

चली हुई सेनाके नाम २—प्रचक्र १ चलित २ ॥

अहितान्प्रत्यभीतस्य रणे यानमभिक्रमः ॥ ९६ ॥

निडर होकर शत्रुपर चढ़ाईका नाम १—अभिक्रम १ ॥ ९६ ॥

वैतालिका बोधकरा—

प्रातःकालके राजाके जगानेवालोंके नाम २—वैतालिक १ बोधकर २ ॥

—श्चाक्रिका घाण्टिकार्थकाः ।

घड़ियालीके नाम २—चाक्रिक १ घाण्टिक २ ॥

स्युर्मागधास्तु मगधा—

राजाका वंश वर्णन करनेवालेके नाम २—मागध १ मगध २ ॥

—बन्दिनः स्तुतिपाठकाः ॥ ९७ ॥

भाटके नाम २—बन्दिन् १ स्तुतिपाठक २ ॥ ९७ ॥

संशप्तकास्तु समयात्संग्रामादनिवर्तिनः ।

शपथ खाकर युद्धमें पीठ न देनेवालेका नाम १—संशप्तक १ ॥

रेणुर्द्वयोः स्त्रियां धूलिः पांसुर्ना न द्वयो रजः ॥ ९८ ॥

धूलिके नाम ४—रेणु १ धूलि २ पांसु ३ रजस् ४ ॥ ९८ ॥

चूर्णे क्षोदः—

चूनके नाम २—चूर्ण १ क्षोद २ ॥

—समुत्पिञ्जपिञ्जलौ भृशमाकुले।

अकुलानेके नाम २—समुत्पिञ्ज १ पिञ्जल २ ॥

पताका वैजयन्ती स्यात्केतनं ध्वजमस्त्रियाम् ॥ ९९ ॥

झंडेके नाम ४—पताका १ वैजयन्ती २ केतन ३ ध्वज ४ ॥ ९९ ॥

सा वीराशंसनं युद्धभूमिर्याऽतिभयप्रदा ।

भयंकर युद्धभूमिके स्थानका नाम —१ वीराशंसन १ ॥

अहं पूर्वमहं पूर्वमित्यहंपूर्विका स्त्रियाम् ॥ १०० ॥

जिसमें वीर कहें कि हम पहले लड़ेंगे, हम पहले लड़ेंगे उस लड़ाईका नाम १—अहंपूर्विका १ ॥ १०० ॥

आहोपुरुषिका दर्पाद्या स्यात्संभावनात्मनि ।

जिसमें कहें कि हम पुरुष हैं हम ही लड़ेंगे उसका नाम १—आहोपुरुषिका १ ॥

अहमहमिका तु सा स्यात्परस्परं यो भवत्यहंकारः ॥ १०१ ॥

आपसके इस कहनेको कि हम शक्त हैं हम लड़ सकते हैं उसका नाम १—अहमहमिका १ ॥ १०१ ॥

द्रविणं तरः सहोबलशौर्याणि स्थाम शुष्मं च । शक्तिः पराक्रमः प्राणो—

पराक्रमके नाम १०—द्रविण १ तरस् २ सहस् ३ बल ४ शौर्य ५ स्थामन् ६ शुष्म ७ शक्ति ८ पराक्रम ९ प्राण १० ॥

—विक्रमस्त्वतिशक्तिता ॥ १०२ ॥

अतिपराक्रमके नाम २—विक्रम १ अतिशक्तिता २ ॥ १०२ ॥

वीरपानं तु यत्पानं वृत्ते भाविनि वा रणे ।

लड़नेके निमित्त पहले या पीछे नसा खाने पीनेका नाम १—वीरपान १ ॥

युद्धमायोधनं जन्यं प्रधनं प्रविदारणम् ॥ १०३ ॥ मृधमास्कन्दनं संख्यं समीकं साम्परायिकम् । अस्त्रियां समरानीकरणाः कलहविग्रहौ ॥ १०४ ॥ संप्रहाराभिसंपातकलिसंस्फोटसंयुगाः । अभ्यामर्दसमाघातसंग्रामाभ्यागमाहवाः ॥ १०५ ॥ समुदायः स्त्रियः संयत्समित्याजिसमिद्युधः ।

युद्धके नाम ३१—युद्ध १ आयोधन २ जन्य ३ प्रधन ४ प्रविदारण ५ ॥ १०३ ॥ मृध ३ आस्कन्दन ७ संख्य ८ समीक ९

सांपरायिक १० समर ११ अनीक १२ रण १३ कलह १४ विग्रह १५ ॥ १०४ ॥ संप्रहार १६ अभिसम्पात १७ कलि १८ संस्फोट १९ संयुग २० अभ्यामर्द २१ समाघात २२ संग्राम २३ अभ्यागम २४ आहव २५॥१०५॥ समुदाय २६ संयत् २७ समिति २८ आजि २९ समित् ३० युध् ३१ ॥

नियुद्धं बाहुयुद्धे स्यात्-

भुजाके युद्धके नाम २-नियुद्ध १ बाहुयुद्ध २ ॥

-तुमुलं रणसंकुले ॥ १०६ ॥

घोर संग्रामका नाम १-तुमुल १ ॥ १०६ ॥

क्ष्वेडा तु सिंहनादः स्यात्-

वीरोंके गर्जनेके नाम २-क्ष्वेडा १ सिंहनाद २ ॥

-करिणां घटना घटा ।

हाथियोंके समूहके नाम २-घटना १ घटा २ ॥

क्रन्दनं योधसंरावो-

युद्धके शब्दका नाम १-क्रन्दन १॥

-बृंहितं करिगर्जितम् ॥१०७॥

हाथीके शब्दका नाम १-बृंहित १ ॥ १०७ ॥

विस्फारो धनुषः स्वानः-

धनुषके शब्दका नाम१-विस्फार १॥

-पटहाडम्बरौ समौ ।

नगाड़ेके शब्दके नाम २-पटह १ आडंबर २ ॥

प्रसभं तु बलात्कारो हठो-

हठके नाम ३-प्रसभ १ बलात्कार २ हठ ३ ॥

ऽथ स्खलितं छलम् ॥ १०८ ॥

धोखा देनेके नाम २-स्खलित १ छल २ ॥ १०८ ॥

अजन्यं क्लीबमुत्पात उपसर्गः समं त्रयम् ।

उत्पातके नाम ३-अजन्य १ उत्पात २ उपसर्ग ३ ॥

मूर्च्छा तु कश्मलं मोहो-

मूर्च्छाके नाम ३-मूर्च्छा १ कश्मल २ मोह ३ ॥

-ऽप्यवमर्दस्तु पीडनम् ॥१०९॥

देशादिको उपद्रव देनेके नाम २-अवमर्द १ पीडन २ ॥ १०९ ॥

अभ्यवस्कन्दनं त्वभ्यासादनं-

धोखेसे दबा लेनेके नाम२-अभ्यवस्कन्दन १ अभ्यासादन २ ॥

-विजयो जयः ।

जीतके नाम २-विजय १ जय २॥

वैरशुद्धिः प्रतीकारो वैरनिर्यातनं च सा ॥ ११० ॥

वैर दूर करनेके नाम ३—वैरशुद्धि १ प्रतीकार २ वैरनिर्यातन ३ ॥ ११० ॥

प्रद्रावोद्रावसन्द्रावसन्दावा विद्रवो द्रवः । अपक्रमोऽपयानं च—

पलायन (भागने) के नाम ८— प्रद्राव १ उद्राव २ संद्राव ३ संदाव ४ विद्रव ५ द्रव ६ अपक्रम ७ अपयान ८॥

—रणेभङ्गः पराजयः ॥ १११ ॥

हारके नाम २—रणेभङ्ग १ पराजय २ ॥ १११ ॥

पराजितपराभूतौ—

हारे हुएके नाम २—पराजित १ पराभूत २ ॥

—त्रिषु नष्टतिरोहितौ ।

छिपे हुएके नाम २—नष्ट १ तिरोहित २ ॥

प्रमापणं निबर्हणं निकारणं विशारणम् ॥ ११२ ॥ प्रवासनं परासनं निषूदनं निहिंसनम् । निर्वासनं संज्ञपनं निर्ग्रन्थनमपासनम् ॥ ११३ ॥ निस्तर्हणं निहननं क्षणनं परिवर्जनम् । निर्वापणं विशसनं मारणं प्रतिघातनम् ॥ ११४॥ उद्वासनप्रमथनक्रथनोज्जासनानि च। आलम्भपिञ्जविशरघातोन्माथवधा अपि ॥ ११५ ॥

मारनेके नाम ३०—प्रमापण १ निबर्हण २ निकारण ३ विशारण ४ ॥ ११२ ॥ प्रवासन ५ परासन ६ निषूदन ७ निहिंसन ८ निर्वासन ९ संज्ञपन १० निर्ग्रन्थन ११ अपासन १२ ॥ ११३ ॥ निस्तर्हण १३ निहनन १४ क्षणन १५ परिवर्जन १६ निर्वापण १७ विशसन १८ मारण १९ प्रतिघातन २० ॥ ११४ ॥ उद्वासन २१ प्रमथन २२ क्रथन २३ उज्जासन २४ आलम्भ २५ पिञ्ज २६ विशर २७ ॥ घात २८ उन्माथ २९ वध ३० ॥ ११५ ॥

स्यात्पञ्चता कालधर्मो दिष्टान्तः प्रलयोऽत्ययः । अन्तो नाशो द्वयोर्मृत्युर्मरणं निधनोऽस्त्रियाम् ॥ ११६॥

मृत्युके नाम १०—पञ्चता १ कालधर्म २ दिष्टान्त ३ प्रलय ४ अत्यय ५ अन्त ६ नाश ७ मृत्यु ८ मरण ९ निधन १ ॥ ११६ ॥

परासुप्राप्तपञ्चत्वपरेतप्रेतसंस्थिताः । मृतप्रमीतौ त्रिष्वेते—

मृत्युको प्राप्त हुएके नाम ७—परासु १ प्राप्तपञ्चत्व २ परेत ३ प्रेत ४ संस्थित ५ मृत ६ प्रमीत ७ ॥

–चिता चित्या चितिः स्त्रियाम् ॥ ११७ ॥

चिताके नाम ३–चिता १ चित्या २ चिति ३ ॥ ११७ ॥

कबन्धोऽस्त्री क्रियायुक्तमपमूर्धकलेवरम् ।

शिररहित चेष्टा करनेवाले शरीरका नाम १–कबन्ध १ ॥

श्मशानं स्यात्पितृवनं–

श्मशानके नाम २–श्मशान १ पितृवन २ ॥

–कुणपः शवमस्त्रियाम्॥११८॥

मुर्देके नाम २–कुणप १ शव २ ॥ ११८ ॥

प्रग्रहोपग्रहौ बन्द्यां–

कैदके नाम ३–प्रग्रह १ उपग्रह २ बन्दी ३ ॥

–कारा स्याद्बन्धनालये ।

जेहलखानेका नाम १–कारा १ ॥

पुंसि भूम्न्यसवः प्राणाश्चैवं–

प्राणके नाम २–असु १ प्राण २॥

–जीवोऽसुधारणम् ॥ ११९ ॥

जीवके नाम २–जीव १ असुधारण २ ॥ ११९ ॥

आयुर्जीवितकालो–

आयुका नाम १–आयुष् १ ॥

–ना जीवातुर्जीवनौषधम् ।

मृतसंजीवनी बूटीके नाम २–जीवातु १ जीवनौषध २ ॥

इति क्षत्रियवर्गः ॥ ८ ॥

अथ वैश्यवर्गः ९.

ऊरव्या ऊरुजा अर्या वैश्या भूमिस्पृशो विशः ।

वैश्यके नाम ६–ऊरव्य १ ऊरुज २ अर्य ३ वैश्य ४ भूमिस्पृक् ५ विश् ६ ॥

आजीवो जीविका वार्ता वृत्तिर्वर्तनजीवने ॥ १ ॥

जीविकाके नाम ६–आजीव १ जीविका २ वार्त्ता ३ वृत्ति ४ वर्त्तन ५ जीवन ६ ॥ १ ॥

स्त्रियां कृषिः पाशुपाल्यं वाणिज्यं चेति वृत्तयः ।

जीविकाके भेद ३–खेती करनेका नाम–कृषि १ ॥ पशुपालनका नाम–पाशुपाल्य २ ॥ व्यापारका नाम–वाणिज्य ३ ॥ ये तीनों वैश्यवृत्ति हैं ॥

सेवा श्ववृत्ति–

परसेवाके नाम २–सेवा १ श्ववृत्ति २ ॥

–रनृतं कृषि–

खेतीके नाम २–अनृत १कृषि २॥

–रुञ्छशिलं त्वृतम् ॥ २ ॥

उञ्छवृत्तिके नाम ३–उञ्छ १ शिल २ ऋत ३ ॥ २ ॥

द्वे याचितायाचितयोर्यथासंख्यं मृतामृते।

मांगनेसे प्राप्त हुई वस्तुका नाम १–मृत १ ॥ विना मांगे प्राप्त हुई वस्तुका नाम १–अमृत १ ॥

सत्यानृतं वणिग्भावः स्या–

व्यापारके नाम २–सत्यानृत १ वणिग्भाव २ ॥

–दृणं पर्युदञ्चनम् ॥ ३ ॥ उद्धारो–

कर्जके नाम ३–ऋण १ पर्युदञ्चन २ ॥ ३ ॥ उद्धार ३ ॥

–ऽर्थप्रयोगस्तु कुसीदं वृद्धिजीविका।

ब्याजके नाम ३–अर्थप्रयोग १ कुसीद २ वृद्धिजीविका ३ ॥

याच्ञयाप्तं याचितकं–

मांगनेकी वस्तुका नाम १–याचितक १ ॥

–निमयादापमित्यकम् ॥ ४ ॥

वायदेपर ली हुई वस्तुका नाम १–आपमित्यक १ ॥ ४ ॥

उत्तमर्णाधमर्णौ द्वौ प्रयोक्तृग्राहकौ क्रमात्।

ऋण देनेवालेका नाम १–उत्तमर्ण १॥ ऋणके लेनेवालेका नाम १–अधमर्ण १

कुसीदिको वार्धुषिको वृद्धयाजीवश्च वार्धुषिः ॥ ५ ॥

ब्याजसे जीनेवालेके नाम ४–कुसीदिक १ वार्धुषिक २ वृद्धयाजीव ३ वार्धुषि ४ ॥ ५ ॥

क्षेत्राजीवः कर्षकश्च कृषिकश्च कृषीवलः।

किसानके नाम ४–क्षेत्राजीव १ कर्षक २ कृषिक ३ कृषीवल ४ ॥

क्षेत्रं व्रैहेयशालेयं व्रीहिशाल्युद्भवोचितम् ॥ ६ ॥

व्रीहि होनेके योग्य खेतका नाम १–व्रैहेय १ ॥ धानके खेतका नाम १–शालेय १ ॥ ६ ॥

यव्यं यवक्यं षष्टिक्यं यवादिभवनं हि यत्।

जौके खेतका नाम १–यव्य १॥ छोटे जौके खेतका नाम १–यवक्य १ ॥ साठीके खेतका नाम १–षष्टिक्य १ ॥

तिल्यं तैलीनवन्माषोमाणुभंगाद्द्विरूपता ॥ ७ ॥

तिलके खेतके नाम २–तिल्य १ तैलीन २ ॥ उरद होनेवालेके नाम २–माष्य १ माषीण २॥ अलसी होनेवालेके

नाम २–उम्य १ औमीन २ ॥ अणुके होनेवालेके नाम २–अणव्य १ आणवीन २ ॥ भंग (भांग) होनेवालेके नाम–२भंग्य १ भंगीन २ ॥ ७ ॥

मौद्गीनकौद्रवीणादिशेषधान्योद्भवक्षमम् ।

मूंग होनेवालेका नाम १–मौद्गीन १॥ कोदों होनेवाले खेतका नाम १–कौद्रवीण १ ॥ चणे होनेवाले खेतका नाम १–चाणकीन १ ॥ गेहूं होनेवालेका नाम १–गौधूमीन १ इत्यादि ॥

बीजाकृतं तूप्तकृष्टे–

बीज बोनेका नाम १–बीजाकृत १॥

–सीत्यं कृष्टं च हल्यवत् ॥ ८ ॥

जोते हुए खेतके नाम ३–सीत्य १ कृष्ट २ हल्य ३ ॥ ८ ॥

त्रिगुणाकृतं तृतीयाकृतं त्रिहल्यं त्रिसीत्यमपि तस्मिन् ।

तीन वार जुते हुए खेतके नाम ४–त्रिगुणाकृत १ तृतीयाकृत २ त्रिहल्य ३ त्रिसीत्य ४ ॥

द्विगुणाकृते तु सर्वं पूर्वं शम्बाकृतमपीह ॥ ९ ॥

दो बार जुते हुएके नाम ४–द्विगुणाकृत १ द्वितीयाकृत २ द्विहल्य ३ द्विसीत्य ४ ॥ ९ ॥

द्रोणाढकादिवापादौ द्रौणिकाढकिकादयः ।

जिसमें द्रोण (१०२४) तोला धान आदि बोया जाय उस खेतका नाम १–द्रौणिक १॥ आढक (२५६) तोलाभरवालेका नाम १–आढकिक १ ॥ आदि ॥

खारीवापस्तु खारीक–

जिसमें खारी (४ द्रोण अर्थात् ४०९६) तोलाभर अन्न बोया जाय उसका नाम १–खारीक १ ॥

–उत्तमर्णादयस्त्रिषु ॥ १० ॥

उत्तमर्णादि शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥ १० ॥

पुंनपुंसकयोर्वप्रः केदारः क्षेत्र–

खेतके नाम ३–वप्र १ केदार २ क्षेत्र ३॥

–मस्य तु । केदारकं स्यात्कैदार्यं क्षेत्रं कैदारिकं गणे ॥ ११ ॥

खेतके समूहके नाम–४कैदारक १ कैदार्य २ क्षेत्र ३ कैदारिक ४ ॥११॥

लोष्टानि लेष्टवः पुंसि–

ढेलेके नाम २–लोष्ट १ लेष्टु ॥

–कोटिशो लोष्टभेदनः ।

मूगरीके नाम २–कोटिश १ लोष्टभेदन २ ॥

प्राजनं तोदनं तोत्रं–

पैने (लाठी, चाबुक आदि) के नाम ३–प्राजन १ तोदन २ तोत्र ३॥

-खनित्रमवदारणे ॥ १२ ॥

कुदालके नाम २-खनित्र १ अवदारण २ ॥ १२ ॥

दात्रं लवित्र-

खुरपा फावड़ा आदिके नाम २-दात्र १ लवित्र २ ॥

-माबन्धो योत्रं योक्त्र-

नाथके नाम ३-आबन्ध १ योत्र २ योक्त्र ३ ॥

-मथो फलम् । निरीशं कुटकं फालः कृषको-

फाल अर्थात् हलके नीचे लगे हुए लोहेके नाम ५-फल १ निरीश २ कुटक ३ फाल ४ कृषक ५ ॥

लांगलं हलम् ॥ १३ ॥ गोदारणं च सीरो-

हलके नाम ४-लाङ्गल १ हल २ ॥ १३ ॥ गोदारण ३ सीर ४ ॥

-ऽथ शम्या स्त्री युगकीलकः ।

सैले (सिमल) के नाम २-शम्या १ युगकीलक २ ॥

ईषा लाङ्गलदण्डः स्यात्-

हलस (हाल) के नाम २-ईषा १ लाङ्गलदण्ड २ ॥

-सीता लाङ्गलपद्धतिः ॥ १४ ॥

हलकी रेखा (खूड) के नाम २-सीता १ लाङ्गलपद्धति २ ॥ १४ ॥

पुंसि मेधिः खलेदारु न्यस्तं यत्पशुबन्धने ।

जो धान्यमर्दन करनेके स्थान अर्थात् पैरमें गाड़े हुए पशु बांधनेके खूंटे (मेढ़) के नाम २-मेधि १ खलेदारु २ ॥

आशुर्व्रीहिः पाटलः स्या-

साठी (धान) के नाम ३-आशु १ व्रीहि २ पाटल ३ ॥

च्छितशूकयवौ समौ ॥ १५ ॥

जौके नाम २-शितशूक १ यव २ ॥ १५ ॥

तोक्मस्तु तत्र हरिते-

हरे जौका नाम १-तोक्म १ ॥

-कलायस्तु सतीनकः । हरेणुखण्डिकौ चास्मिन्-

मटरके नाम ४-कलाय १ सतीनक २ हरेणु ३ खण्डिक ४ ॥

-कोरदूषस्तु कोद्रवः ॥ १६ ॥

कोदोंके नाम २-कोरदूष १ कोद्रव २ ॥ १६ ॥

मङ्गल्यको मसूरो-

मसूरके नाम २-मङ्गल्यक १ मसूर २ ॥

-ऽथ मकुष्ठकमयुष्ठकौ । वनमुद्गे-

मोठके नाम ३-मकुष्ठक १ मयुष्ठक २ वनमुद्ग ३ ॥

–सर्षपे तु द्वौ तंतुभकदम्बकौ ॥ १७ ॥

सरसोंके नाम ३–सर्षप १ तन्तुभ २ कदम्बक ३ ॥ १७ ॥

सिद्धार्थस्त्वेष धवलो–

सफेद सरसोंका नाम १–सिद्धार्थ १

–गोधूमः सुमनः समौ ।

गेहूंके नाम २–गोधूम १ सुमन २ ॥

स्याद्यावकस्तु कुल्माष–

कुलथीके नाम २–यावक १ कुल्माष २॥

–श्चणको हरिमन्थकः ॥ १८ ॥

अरहरे (चने) के नाम २–चणक १ हरिमन्थक २ ॥ १८ ॥

द्वौ तिले तिलपेजश्च तिलपिञ्जश्च निष्फले ।

'फलहीन' 'बांझतिल' 'रानतिल' के नाम २–तिलपेज १ तिलपिंज २ ॥

क्षवः क्षुताभिजननो राजिका कृष्णिकाऽऽसुरी ॥ १९ ॥

राईके नाम ५–क्षव १ क्षुताभिजनन २ राजिका ३ कृष्णिका ४ आसुरी ५ ॥ १९ ॥

स्त्रियौ कङ्गुप्रियंगू द्वे–

कङ्गनीके नाम २–कंगु १ प्रियंगु २॥

–अतसी स्यादुमा क्षुमा ।

अलसीके नाम ३– अतसी १ उमा २ क्षुमा ३ ॥

मातुलानी तु भंगायाम्–

भङ्गके नाम २–मातुलानी १ भंगा २ ॥

–व्रीहिभेदस्त्वणुः पुमान् ॥ २० ॥

चीना धान्यका नाम १-अणु १॥२०॥

किंशारुः सस्यशूकं स्यात्–

जौ इत्यादिके तीखे अग्रभाग (सीकुर) के नाम २–किंशारु १ सस्यशूक २ ॥

–कणिशं सस्यमञ्जरी ।

धान्यकी बालीके नाम २–कणिश १ सस्यमञ्जरी २ ॥

धान्यं व्रीहिः स्तम्बकरिः–

धान्यमात्रके नाम ३–धान्य १ व्रीहि २ स्तम्बकरि ३ ॥

–स्तम्बोगुच्छस्तृणादिनः ॥ २१ ॥

यव आदिकी जड़के नाम २–स्तम्ब १ गुच्छ २ ॥ २१ ॥

नाडी नालं च काण्डोऽस्य–

नलुआके नाम २–नाडी १ नाल २॥

--पलालोऽस्त्री स निष्फलः ।

पयालका नाम १–पलाल १ ॥

कडङ्गरो बुसं क्लीबे–

मोटे भुसके नाम २–कडङ्गर १ बुस २॥

धान्यत्वचि तुषः पुमान् ॥ २२ ॥

भूसीका नाम १–तुष १ ॥ २२ ॥

शूकोऽस्त्री श्लक्ष्णतीक्ष्णाग्रे-

यव आदिके चिकने और तीखे अग्रभागके नाम २-शूक १ श्लक्ष्ण-तीक्ष्णाग्र २ ॥

-शमी शिम्बा-

मटर आदिकी फलीके नाम २-शमी १ शिम्बा २ ॥

-त्रिषूत्तरे ।

आगे कहे हुए सब शब्द तीनों लिंगोंमें होंगे ॥

ऋद्धमावसितं धान्यं-

तृण दूर करके पैरेमें इकट्ठे करने योग्य धान्यके नाम २-ऋद्ध १ आवसित २ ॥

-पूतं तु बहुलीकृतम् ॥ २३ ॥

साफ करके इकट्ठे किये हुए धान्यके नाम २-पूत १ बहुलीकृत २ ॥ २३॥

माषादयः शमीधान्ये-

फलीके भीतर होनेवाले धान्य माष आदि हैं ॥

-शूकधान्ये यवादयः ।

अव आदि शूकधान्य अर्थात् बालीसे पैदा होनेवाले हैं ॥

शालयः कलमाद्याश्च षष्टिकाद्याश्च-

यव आदि और साठी आदि शालिधान्य कहलाते हैं ॥

-पुंस्यमी ॥ २४ ॥

माष आदि शब्द पुँल्लिङ्गमें होते हैं ॥ २४ ॥

तृणधान्यानि नीवाराः-

पशाई आदि मुनियोंके धान्यका नाम १-नीवार १॥

-स्त्री गवेधुर्गवेधुका ।

जिसको कोकणदेशमें कसाड़ (कसा) कहते हैं उस मुनिअन्नके नाम २-गवेधु १ गवेधुका २ ॥

अयोग्रं मुसलोऽस्त्री स्या-

मूसलके नाम २-अयोग्र १ मुसल २ ॥

-दुदूखलमुलूखलम् ॥ २५ ॥

ओखलीके नाम २-उदूखल २ उलूखल २ ॥ २५ ॥

प्रस्फोटनं शूर्पमस्त्री-

छाजके नाम २-प्रस्फोटन १ शूर्प २ ॥

-चालनी तितउः पुमान् ।

चलनीके नाम २-चालनी १ तितउ ॥ २

स्यूतप्रसेवौ-

सण आदिसे बने हुए वस्त्रके थैलेके नाम २-स्यूत १ प्रसेव २ ॥

-कण्डोलपिटौ-

टोकरीके नाम २-कण्डोल १ पिट २॥

—कटकिलिञ्जकौ ॥ २६ ॥

चटाईके नाम २—कट १ किलिंजक ॥ २६ ॥

·समानौ—

यह समानलिङ्ग हैं ॥

—रसवत्यां तु पाकस्थानमहानसे ।

रसोईके स्थानके नाम ३—रसवती १ पाकस्थान २ महानस ३ ॥

पौरोगवस्तदध्यक्षः—

रसोईके अधिकारीके नाम २—पौरोगव १ तदध्यक्ष (महानसाध्यक्ष)२ ॥

—सूपकारास्तु बल्लवाः ॥ २७ ॥ आरालिका आन्धसिकाः सूदा औदनिका गुणाः ।

रसोइयोंके नाम ७—सूपकार १ बल्लव २ ॥ २७ ॥ आरालिक ३ आन्धसिक ४ सूद ५ औदनिक ६ गुण ७॥

आपूपिकः कान्दविको भक्ष्यकार इमे त्रिषु ॥ २८ ॥

पुआ आदि बनानेवालेके नाम ३ - आपूपिक १ कान्दविक २ भक्ष्यकार ३॥ ये शब्द तीनों लिङ्गोमें होते हैं ॥२८॥

अश्मन्तमुद्धानमधिश्रयणी चुलिरन्तिका ।

चूल्हेके नाम ५—अश्मन्त १ उद्धान २ अधिश्रयणी ३ चुलिल ४ अन्तिका ५॥

अंगारधानिकाऽङ्गारशकटचपि हसन्त्यपि ॥ २९ ॥ हसन्य—

बरोसी (सिगड़ीके) नाम ४—अंगारधानिका १ अङ्गारशकटी २ हसन्ती ३ ॥ २९ ॥ हसनी ४ ॥

—प्यथ न स्त्री स्यादंगारो—

अंगारेका नाम १—अंगार १ ॥

—ऽलातमुल्मुकम् ।

जलते हुए काष्ठके नाम २—अलात १ उल्मुक २ ॥

क्लीबेऽम्बरीषं भ्राष्ट्रो—

भाड़के नाम २—अम्बरीष १ भ्राष्ट्र २॥

—ना कन्दुर्वा स्वेदनी स्त्रियाम् ॥ ३० ॥

कढ़ाईके नाम २—कन्दु १ स्वेदनी २ ॥ ३० ॥

आलिञ्जरः स्यान्मणिकः—

माठ (बड़ा घड़ा) के नाम २—आलिञ्जर १ मणिक २ ॥

—कर्कर्यालुर्गलन्तिका ।

कठौतीके नाम ३—कर्करी १ आलु २ गलन्तिका ३ ॥

पिठरः स्थाल्युखा कुण्डं—

बटलोईके नाम ४—पिठर १ स्थाली २ उखा ३ कुण्ड ४ ॥

—कलशस्तु त्रिषु द्वयोः ॥ ३१ ॥

घटः कुटनिपा-

घड़ेके नाम ४-कलश १ ॥ ॥ ३१ ॥ घट २ कुट ३ निप ४ ॥

-वस्त्री शरावो वर्धमानकः ।

सरावेके नाम २-शराव १ वर्धमानक २ ॥

ऋजीषं पिष्टपचनं-

तवेके नाम २-ऋजीष १ पिष्टपचन २ ॥

-कंसोऽस्त्री पानभाजनम्॥३२॥

कटोरीके नाम २-कंस १ पानभाजन २ ॥ ३२ ॥

कुतूः कृत्तेः स्नेहपात्रं-

कुप्पेका नाम १-कुतू १ ॥

सैवाल्पा कुतुपः पुमान् ।

कुप्पीका नाम १-कुतुप १ ॥

सर्वमावपनं भाण्डं पात्रामत्रं च भाजनम् ॥ ३३ ॥

बरतनके नाम ५-आवपन १ भाण्ड२पात्र३अमत्र ४ भाजन ५॥३३॥

दर्विः कम्बिः खजाका च-

कछैलीके नाम ३-दर्वि १ काम्बि २ खजाका ३ ॥

-स्यात्तर्दूर्दारुहस्तकः ।

डोईके नाम२-तर्दू१दारुहस्तक२ ॥

अस्त्री शाकं हरितकं शिग्रु--

शाकके नाम ३-शाक १ हरितक २ शिग्रु ३ ॥

-रस्य तु नाडिका ॥ ३४॥ कलम्बश्च कडम्बश्च-

शाककी डंकीके नाम ३-नाडिका १ ॥ ३४ ॥ कलम्ब २ कडम्ब ३ ॥

-वेसवार उपस्करः ।

मसालेके नाम २-वेसवार १ उपस्कर २ ॥

तिन्तिडीकं च चुक्रं च वृक्षाम्ल-

चूख (अमचूरआदि) के नाम३-तिंतिडीक १ चुक्र २ वृक्षाम्ल ३ ॥

-मथ वेल्लजम् ॥ ३५ ॥ मरीचं कोलकं कृष्णमूषणं धर्मपत्तनम् ।

मिर्चके नाम ६-वेल्लज १॥३५॥ मरीच २ कोलक ३ कृष्ण ४ ऊषण ५ धर्मपत्तन ६ ॥

जीरको जरणोऽजाजी कणा-

जीरेके नाम ४-जीरक १ जरण २ अजाजी ३ कणा ४ ॥

-कृष्णे तु जीरके ॥ ३६ ॥ सुषवी कारवी पृथ्वी पृथुः कालोपकुञ्चिका ।

काले जीरेके नाम ६-॥ ३६ ॥

सुषवी १ कारवी २ पृथ्वी ३ पृथु ४ काला ५ उपकुञ्चिका ६ ॥

आर्द्रकं शृङ्गबेरं स्या-

अदरखके नाम २—आर्द्रक १ शृङ्गबेर २॥

-दथ च्छत्रा वितुन्नकम्॥ ३७ ॥ कुस्तुम्बुरु च धान्याक-

धनियेके नाम ४—छत्रा १ वितुन्नक २ ॥ ३७ ॥ कुस्तुम्बुरु ३ धान्याक ४ ॥

-मथ शुण्ठी महौषधम् । स्त्रीनपुंसकयोर्विश्वं नागरं विश्वभेषजम् ॥ ३८ ॥

सोंठके नाम ५—शुण्ठी १ महौषध २ विश्व ३ नागर ४ विश्वभेषज ५॥ ३८॥

आरनालकसौवीरकुल्माषाभिषुतानि च । अवन्तिसोमधान्याम्लकुञ्जलानि च काञ्जिके ॥ ३९ ॥

कांजीके नाम ७—आरनालक १ सौवीर २ कुल्माषाभिषुत ३ अवन्तिसोम ४ धान्याम्ल ५ कुञ्जल ६ कांजिक ७॥ ३९ ॥

सहस्रवेधि जतुकं बाह्लीकं हिंगु रामठम् ।

हींगके नाम ५—सहस्रवेधिन् १ जतुक २ बाह्लीक ३ हिंगु ४ रामठ ५ ॥

तत्पत्री कारवी पृथ्वी बाष्पिका कबरी पृथुः ॥ ४० ॥

हींगके वृक्षके पत्तेके नाम ५—कारवी १ पृथ्वी २ बाष्पिका ३ कबरी ४ पृथु ५ ॥ ४० ॥

निशाख्या काञ्चनी पीता हरिद्रा वरवर्णिनी ।

हलदीके नाम ५—निशा १ कांचनी २ पीता ३ हरिद्रा ४ वरवर्णिनी ५ ॥

सामुद्रं यत्तु लवणमक्षीवं वशिरं च तत् ॥ ४१ ॥

समुद्रझागके नाम २—अक्षीव १ वशिर २ ॥ ४१ ॥

सैन्धवोऽस्त्री शीतशिवं माणिमन्थञ्च सिन्धुजे ।

सैंधव नमकके नाम ४—सैन्धव १ शीतशिव २ माणिमन्थ ३ सिन्धुज ४ ॥

रौमकं वसुकं-

सांभरके नाम २—रौमक १ वसुक २।

-पाक्यं बिडं च कृतके द्वयम् ॥ ४२ ॥

खारीके नाम २—पाक्य १ बिड २ ॥ ४२ ॥

सौवर्चलेऽक्षरुचके-

संचलखारके नाम ३—सौवर्चल १ अक्ष २ रुचक ३ ॥

-तिलकं तत्र मेचके ।

काले संचलखारके नाम २—तिलक १ मेचक २ ॥

मत्स्यण्डी फाणितं खण्डविकारे

राबके नाम २—मत्स्यंडी १ फाणित २ ॥

—शर्करा सिता ॥ ४३ ॥

मिश्रीके नाम २—शर्करा १ सिता २ ॥ ४३ ॥

कूर्चिका क्षीरविकृतिः स्या—

मावेके नाम २—कूर्चिका १ क्षीर-विकृति २ ॥

—द्रसाला तु मार्जिता ।

श्रीखण्डके नाम २—रसाला १ मार्जिता २ ॥

स्यात्तेमनं तु निष्ठानं—

कढ़ीके नाम २—तेमन १ निष्ठान २॥

—त्रिलिङ्गा वासितावधेः ४४ ॥

वासितपर्य्यन्त शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥ ४४ ॥

शूलाकृतं भटित्रं च शूल्य—

लोहशलाकासे पकाये हुए मांस—के नाम ३-शूलाकृत १ भटित्र २ शूल्य ३॥

—मुख्यं तु पैठरम् ।

बटलोईमें पकाये हुए अन्नादिके नाम २—उख्य १ पैठर २ ॥

प्रणीतमुपसंपन्नं—

पकी हुई रसोईके नाम २—प्रणीत १ उपसम्पन्न २ ॥

—प्रयस्तं स्यात्सुसंस्कृतम् ॥४५॥

घृत तैलादिसे बनी हुई रसोईके नाम २—प्रयस्त १ सुसंस्कृत २ ॥ ४५ ॥

स्यात्पिच्छिलं तु विजिलं—

पनीले भोजनके नाम २—पिच्छिल १ विजिल २ ॥

—संमृष्टं शोधितं समे ।

बीने हुए अन्नके नाम २—सम्मृष्ट १ शोधित २ ॥

चिक्कणं मसृणं स्निग्धं—

चिकनेके नाम ३—चिक्कण १ मसृण २ स्निग्ध ३ ॥

—तुल्ये भावितवासिते ॥ ४६ ॥

छौंकी हुई वस्तुके नाम २—भावित १ वासित २ ॥ ४६ ॥

आपक्वं पौलिरभ्यूषो—

घृत आदिमें भुनी हुई वस्तुके नाम ३—आपक्व १ पौलि २ अभ्यूष ३ ॥

—लाजाः पुंभूम्नि चाक्षताः ।

खीलोंका नाम १—लाज १ ॥

पृथुकः स्याच्चिपिटको—

परमलके नाम २—पृथुक १ चिपि-टक २ ॥

—धाना भृष्टयवे स्त्रियः ॥ ४७ ॥

भुने हुए जौके नाम २—धाना १ भृष्टयव २ ॥ ४७ ॥

पूपोऽपूपः पिष्टकः स्यात्—

पुएके नाम ३—पूप १ अपूप २ पिष्टक ३॥

–करम्भो दधिसक्तवः ।

दधियुक्त सत्तुओंके नाम २– करम्भ १ दधिसक्तु २ ॥

भिस्सा स्त्री भक्तमन्धोऽन्नमोदनोऽस्त्री स दीदिविः ॥ ४८ ॥

भातके नाम ६–भिस्सा १ भक्त २ अन्धस् ३ अन्न ४ ओदन ५ दीदिवि ६ ॥ ४८ ॥

भिस्सटा दग्धिका–

जले अन्नके नाम २–भिस्सटा १ दग्धिका २ ॥

–सर्वरसाग्रे मण्डमास्त्रियाम् ।

मांड़का नाम १–मण्ड १ ॥

मासराचामनिस्रावा मण्डे भक्तसमुद्भवे ॥ ४९ ॥

केवल भातके मांड़के नाम ३–मासरा १ आचाम २ निस्राव ३ ॥ ४९ ॥

यवागूरुष्णिका श्राणा विलेपी तरला च सा ।

पतले भातके नाम ५–यवागू १ उष्णिका २ श्राणा ३ विलेपी ४ तरला५॥

गव्यं त्रिषु गवां सर्वं–

गायसे उत्पन्नवस्तुका नाम १–गव्य १॥

–गोविट् गोमयमास्त्रियाम्॥५०॥

गौके गोबरके नाम २–गोविश् १ गोमय २ ॥ ५० ॥

तत्तु शुष्कं करीषोऽस्त्री–

सूखे हुए गोबरका नाम १–करीष १॥

–दुग्धं क्षीरं पयः समम् ।

दूधके नाम ३–दुग्ध १ क्षीर २ पयस् ३॥

पयस्यमाज्यदध्यादि–

घृत दही आदिका नाम १–पयस्य १॥

–द्रप्सं दधि घनेतरत् ॥ ५१ ॥

पतले दहीका नाम १–द्रप्स १॥५१॥

घृतमाज्यं हविः सर्पिः–

घीके नाम ४–घृत १ आज्य २ हविष् ३ सर्पिष् ४ ॥

–नवनीतं नवोद्धृतम् ।

मक्खनके नाम २–नवनीत १ नवोद्धृत २ ॥

तत्तु हैयङ्गवीनं यद्ध्योगोदोहोद्भवं घृतम् ॥ ५२ ॥

नौनींघीका नाम १–हैयङ्गवीन १ ॥ ५२ ॥

दण्डाहतं कालशेयमरिष्टमपि गोरसः ।

मट्ठेके नाम ४–दण्डाहत १ कालशेय २ अरिष्ट ३ गोरस ४ ॥

तक्रं ह्युदश्विन्मथितं पादाम्ब्वर्धाम्बु निर्जलम् ॥ ५३ ॥

मट्ठेके भेद ३–तक्र १ उदश्वित २ मथित ३ ॥ ५३ ॥

मण्डं दधिभवं मस्तु–

दहीके पानीका नाम १—मस्तु १ ॥

—पीयूषोऽभिनवं पयः ।

खीसका नाम १—पीयूष १ ॥

अशनाया बुभुक्षा क्षुद्-

भूखके नाम ३—अशनाया १ बुभुक्षा २ क्षुध् ३ ॥

—ग्रासस्तु कवलः पुमान् ॥५४॥

ग्रासके नाम २—ग्रास १ कवल २ ॥ ५४ ॥

सपीतिः स्त्री तुल्यपानं—

साथ पीनेके नाम २—सपीति १ तुल्यपान २ ॥

—सग्धिः स्त्री सहभोजनम् ।

एकसाथ भोजन करनेके नाम २—सग्धि १ सहभोजन २ ॥

उदन्या तु पिपासा तृट् तर्षो—

प्यासके नाम ४—उदन्या १ पिपासा २ तृष् ३ तर्ष ४ ॥

—जग्धिस्तु भोजनम् ॥ ५५ ॥ जेमनं लेह आहारो निघासो न्याद इत्यपि ॥

भोजनके नाम ७—जग्धि १ भोजन २ ॥ ५५ ॥ जेमन ३ लेह ४ आहार ५ निघास ६ न्याद ७ ॥

सौहित्यं तर्पणं तृप्तिः—

तृप्तिके नाम ३—सौहित्य १ तर्पण २ तृप्ति ३ ॥

—फेला भुक्तसमुज्झितम् ॥५६॥

भोजन करके त्यागी हुई वस्तुका नाम १—फेला १ ॥ ५६ ॥

कामं प्रकामं पर्याप्तं निकामेष्टं यथेप्सितम् ।

इच्छाके नाम ६—काम १ प्रकाम २ पर्याप्त ३ निकाम ४ इष्ट ५ यथेप्सित ६ ॥

गोपगोपालगोसंख्यगोधुगाभीरवल्लवाः ॥ ५७ ॥

अहीरके नाम ६—गोप १ गोपाल २ गोसंख्य ३ गोदुह् ४ आभीर ५ बल्लव ६ ॥ ५७ ॥

गोमहिष्यादिकं पादबन्धनं—

घरमें बांधने लायक गाय भैंस आदिका नाम १—पादबन्धन १ ॥

—द्वौ गवीश्वरे । गोमान्गोमी—

गायके मालिकके नाम ३—गवीश्वर १ गोमत् २ गोमिन् ३ ॥

गोकुलं तु गोधनं स्याद्गवां व्रजे ॥ ५८ ॥

गायोंके समूहके नाम २—गोकुल १ गोधन २ ॥ ५८ ॥

त्रिष्वाशितं गवीनं तद्गावो यत्राशिताः पुरा ।

जहां गैयाँ आदिको पहिले खिलाया

गया हो उस स्थानका नाम १—आसितंगवीन १ ॥

उक्षा भद्रो बलीवर्द ऋषभो वृषभो वृषः ॥ ५९ ॥ अनड्वान्सौरभेयो गौ—

बैलके नाम ९—उक्षन् १ भद्र २ बलीवर्द ३ ऋषभ ४ वृषभ ५ वृष ६ ॥५९॥अनडुह् ७ सौरभेय ८ गो ९ ॥

—रुक्षणां संहतिरौक्षकम् ।

बैलोंके समूहका नाम १—औक्षक १॥

गव्या गोत्रा गवाम्—

गावोंके समूहके नाम २—गव्या १ गोत्रा २ ॥

—वत्सधेन्वोर्वात्सकधैनुके ॥६०॥

बछड़ोंके समूहका नाम १—वात्सक १ ॥ धेनुओंके समूहका नाम १—धैनुक १ ॥ ६० ॥

वृषो महान्महोक्षः स्याद्—

बड़े बैलका नाम १—महोक्ष १ ॥

—वृद्धोक्षस्तु जरद्गवः ।

बूढ़े बैलके नाम २—वृद्धोक्ष १ जरद्गव २ ॥

उत्पन्न उक्षा जातोक्षः—

जवान बैलका नाम १—जातोक्ष १॥

—सद्योजातस्तु तर्णकः ॥ ६१ ॥

छोटे बछरेका नाम १—तर्णक १ ॥ ॥ ६१ ॥

शकृत्करिस्तु वत्सः स्याद्—

बछड़ेमात्रके नाम २—शकृत्करि १ वत्स २ ॥

—दम्यवत्सतरौ समौ ।

थोड़े जवान बछड़ेके नाम २—दम्य १ वत्सतर २ ॥

आर्षभ्यः षण्डतायोग्यः—

बधिया करने लायकका नाम १—आर्षभ्य १ ॥

—षण्डो गोपतिरिट्चरः ॥६२॥

सांड़के नाम ३—षण्ड १ गोपति २ इट्चर ३ ॥ ६२ ॥

स्कन्धदेशे त्वस्य वहः—

बैलके कन्धेका नाम १—वह १॥

—सास्ना तु गलकम्बलः ।

गैयोंके गलेमें जो मांस लटकता है उस मांसके नाम २—सास्ना १ गलकम्बल २ ॥

स्यान्नस्तितस्तु नस्योतः—

नाथवाले बैलके नाम २—नस्तित १ नस्योत २ ॥

—प्रष्ठवाड् युगपार्श्वगः ॥६३॥

जिससे गाड़ीमें जोतनेके अर्थ बैल सधाये जायँ उस काष्ठके नाम २—प्रष्ठवाड् १ युगपार्श्वग २ ॥ ६३ ॥

युगादीनां तु वोढारो युग्यमासंग्यशाकटाः ।

जुएके उठानेवालेका नाम १—युग्य १ ॥ जोड़के उठानेवालेका नाम १—प्रासङ्ग्य १ ॥ छकड़ेके उठानेवाले बैलका नाम १—शाकट १ ॥

खनति तेन तद्वोढाऽस्येदं हालिकसैरिकौ ॥ ६४ ॥

हलमें चलनेवालेके नाम २—हालिक १ सैरिक २ ॥ ६४ ॥

धूर्वहे धुर्यधौरेयधुरीणाः सधुरंधराः ।

बोझा ढोनेवाले बैलके नाम ५—धूर्वह १ धुर्य्य २ धौरेय ३ धुरीण ४ धुरन्धर ५ ॥

उभावेकधुरीणैकधुरावेकधुरावहे ॥ ६५ ॥

एक बोझेके ढोनेवालेके नाम ३—एकधुरीण १ एकधुर २ एकधुरावह ३ ॥ ६५ ॥

स तु सर्वधुरीणः स्याद्यो वै सर्वधुरावहः ।

जो सब बोझा ले चले उसके नाम २—सर्वधुरीण १ सर्वधुरावह २ ॥

माहेयी सौरभेयी गौरुस्रा माता च शृंगिणी ॥ ६६ ॥ अर्जुन्यघ्न्या रोहिणी स्यात्—

गायके नाम ९—माहेयी १ सौरभेयी २ गो ३ उस्रा ४ माता ५ शृंगिणी ६ ॥ ६६ ॥ अर्जुनी ७ अघ्न्या ८ रोहिणी ९ ॥

—उत्तमा गोषु नैचिकी ।

अच्छी गायका नाम १—नैचिकी ।

वर्णादिभेदात्संज्ञाः स्युः शबलीधवलादयः ॥ ६७ ॥

चितकबरीका नाम १—शबली १ ॥ सफेदका नाम १—धवला १ ॥ ६७ ॥

द्विहायनी द्विवर्षा गौ—

दो वर्षकी गायके नाम २—द्विहायनी १ द्विवर्षा २ ॥

—रेकाब्दा त्वेकहायनी ।

एकवर्षवालीके नाम २—एकाब्दा १ एकहायनी २ ॥

चतुरब्दा चतुर्हाय—

चार वर्षकीके नाम २—चतुरब्दा १ चतुर्हायणी २ ॥

—ण्येवं त्र्यब्दा त्रिहायणी ॥ ६८ ॥

तीन वर्षकी गौके नाम २—त्र्यब्दा १ त्रिहायणी २ ॥ ६८ ॥

वशा वन्ध्या—

बांझके नाम २—वशा १ वन्ध्या १ ॥

—ऽवतोका तु स्रवद्गर्भा—

जिसका अकस्मात् गर्भ गिर गया हो उस गायके नाम २—अवतोका १ स्रवद्गर्भा १ ॥

–थ सन्धिनी । आक्रान्ता वृषभेणा–

बैलके साथ लगाई हुई गायका नाम १–सन्धिनी १ ॥

–थ वेहद्गर्भोपघातिनी ॥ ६९ ॥

बैलके संयोगसे गर्भको गिरा देनेवाली गायके नाम २–वेहत् १ गर्भोपघातिनी ॥ २ ॥ ६९ ॥

काल्योपसर्या प्रजने–

जिसको गर्भ धारण करनेका समय हो उसका नाम १–उपसर्य्या १ ॥

–प्रष्ठौही बालगर्भिणी ।

पहलौनका नाम १–प्रष्ठौही १ ॥

स्यादचण्डी तु सुकरा–

सूधी गौके नाम २–अचण्डी १ सुकरा २ ॥

–बहुसूतिः परेष्टुका ॥ ७० ॥

बहुत दफे ब्याई हुईके नाम २–बहुसूति १ परेष्टुका २ ॥ ७० ॥

चिरप्रसूता बष्कयिणी–

बकेन (बहुत दिनोंमें ब्यानेवाली) गायके नाम २–चिरप्रसूता १ बष्कयिणी २ ॥

–धेनुः स्यान्नवसूतिका ॥

नयी ब्याई हुईके नाम २–धेनु १ नवसूतिका २ ॥

सुव्रता सुखसन्दोह्या–

जो सरलतासे दुही जाय उस गायके नाम २–सुव्रता १ सुखसन्दोह्या २ ॥

पीनोध्नी पीवरस्तनी ॥ ७१ ॥

बड़े आयनवालीके नाम २–पीनोध्नी १ पीवरस्तनी २ ॥ ७१ ॥

द्रोणक्षीरा द्रोणदुग्धा–

द्रोण (१२ सेर) दूध देनेवालीके नाम २–द्रोणक्षीरा १ द्रोणदुग्धा २ ॥

–धेनुष्या बन्धके स्थिता ।

गिरबी रक्खी हुईका नाम १–धेनुष्या १ ॥

समांसमीना सा यैव प्रतिवर्षं प्रसूयते ॥ ७२ ॥

प्रतिवर्ष ब्यानेवाली गौका नाम १–समांसमीना १ ॥ ७२ ॥

ऊधस्तु क्लीबमापीनं–

आयन (औहडी) के नाम २–ऊधस् १ आपीन २ ॥

–समौ शिवककीलकौ ।

खूंटेके नाम २–शिवक १ कीलक २ ॥

न पुंसि दाम सन्दानं–

दुहनेके समय पांव बांधनेकी रस्सीके नाम २–दामन् १ सन्दान २ ॥

–पशुरज्जुस्तु दामनी ॥ ७३ ॥

पशु बांधनेकी रस्सीके नाम २–पशुरज्जु १ दामनी २ ॥ ७३ ॥

वैशाखमन्थमन्थानमन्थानो मन्थदण्डके ।

मथनेका दंडा अर्थात् रईके नाम ५–वैशाख १ मन्थ २ मन्थान ३ मथिन् ४ मन्थदण्डक ५ ॥

कुठरो दण्डविष्कम्भो–

जिसमें रई बांधी जाय उस काष्ठके नाम २– कुठर १ दण्डविष्कम्भ २ ॥

–मन्थनी गर्गरी समे ॥ ७४ ॥

मथनेके पात्रके नाम २--मन्थनी १ गर्गरी २ ॥ ७४ ॥

उष्ट्रे क्रमेलकमयमहांगाः–

ऊँटके नाम ४–उष्ट्र १ क्रमेलक २ मय ३ महांग ४ ॥

–करभः शिशुः ।

ऊँटके बच्चेके नाम २--करभ १ शिशु २ ॥

करभाः स्युः शृंखलका दारवैः पादबंधनैः ॥ ७५ ॥

काठसे पैर बँधे हुए बच्चेका नाम १–शृंखलक १ ॥ ७५ ॥

अजा छागी–

बकरीके नाम २–अजा१छागी २॥

शुभ्छागबस्तच्छगलका अजे ।

बकरेके नाम ५--शुभ १ छाग २ वस्त ३ छगलक ४ अज ५ ॥

मेढ्रोरभ्रोरणोर्णायुमेषवृष्णय एडके ॥ ७६ ॥

मेढ़ेके नाम ७–मेढ्र १ उरभ्र २ उरण ३ ऊर्णायु ४ मेष ५ वृष्णि ६ एडक ॥ ७ ॥ ७६ ॥

उष्ट्रोरभ्राजवृन्दे स्यादौष्ट्रकौरभ्रकाजकम् ।

ऊँटोंके समूहका नाम १–औष्ट्रक १ ॥ मेढ़ोंके समूहका नाम १–औरभ्रक १॥अजों (बकरों) के समूहका नाम१– आजक १ ॥

चक्रीवन्तस्तु बालेया रासभा गर्दभाः खराः ॥७७ ॥

गधेके नाम ५–चक्रीवत् १ वालेय २ रासभ ३ गर्दभ ४ खर ५ ॥७७॥

वैदेहकः सार्थवाहो नैगमो वाणिजो वणिक् । पण्याजीवो ह्यापणिकः क्रयविक्रयिकश्च सः॥ ७८ ॥

व्यापारीके नाम८–वैदेहक १ सार्थवाह२नैगम ३ वाणिज ४ वणिज् ५ पण्याजीव ६ आपणिक ७ क्रयविक्रयिक ८ ॥ ७८ ॥

विक्रेता स्याद्विक्रयिकः–

बेचनेवालेके नाम २–विक्रेतृ १ विक्रयिक २ ॥

–क्रायिकक्रयिकौ समौ ।

मोल लेनेवालेके नाम २–क्रायिक १ क्रयिक २ ॥

वाणिज्यं तु वणिज्या स्या–

व्यापारके नाम २–वाणिज्य १ वणिज्या २ ॥

–न्मूल्यं वस्नोऽप्यवक्रयः ॥७९॥

मोलके नाम ३–मूल्य १ वस्न २ अवक्रय ३ ॥ ७९ ॥

नीवी परिपणो मूलधनं–

मूलधनके नाम ३–नीवी १ परिपण २ मूलधन ३ ॥

–लाभोऽधिकं फलम् ।

नफेके नाम ३–लाभ १ अधिक २ फल ३ ॥

परिदानं परीवर्तो नैमेयानिमयावपि ॥ ८० ॥

अदले बदलेके नाम ४–परिदान १ परीवर्त्त २ नैमेय ३ निमय ४ ॥८०॥

पुमानुपनिधिर्न्यासः–

धरोहरके नाम २–उपनिधि १ न्यास २

–प्रतिदानं तदर्पणम् ।

धरोहर लौटा देनेके नाम २–प्रतिदान १ तदर्पण २ ॥

क्रये प्रसारितं क्रय्यं–

बेचनेके अर्थ दुकानमें रक्खी हुई वस्तुका नाम १–क्रय्य १ ॥

–क्रेयं क्रेतव्यमात्रके ॥ ८१ ॥

दूकानपर रखने योग्य वस्तुका नाम १–क्रेय १ ॥ ८१ ॥

विक्रेयं पणितव्यं च पण्यं–

बेचने योग्य वस्तुके नाम ३–विक्रेय १ पणितव्य २ पण्य ३ ॥

–क्रय्यादयस्त्रिषु ।

क्रय्य आदि शब्द तीनों लिङ्गोंमें होते हैं ॥

क्लीबे सत्यापनं सत्यङ्कारः सत्याकृतिः स्त्रियाम् ॥ ८२ ॥

साई अर्थात् बयानेके नाम ३–सत्यापन १ सत्यङ्कार २ सत्याकृति ३ ॥ ८२ ॥

विपणो विक्रयः–

बेचनेके नाम २–विपण १ विक्रय २।

–संख्याः संख्येये ह्यादश त्रिषु ।

एकसे अष्टादश पर्यंत संख्या गिनने योग्य वस्तुमें रहती है और वह संख्या शब्द संख्येय शब्दवत् तीनों लिङ्गोंमें होती है ॥

विंशत्याद्याः सदैकत्वे सर्वाः संख्येयसंख्ययोः ॥ ८३ ॥

विंशति (बीस) आदि संपूर्ण संख्या (गिनती) और संख्येय अर्थात् गिनने योग्य वस्तुमें रहती है और विंशति आदि शब्द सदा एकवचन होते हैं ॥ ८३ ॥

संख्यार्थे द्विबहुत्वे स्त–

केवल गिनती अर्थवाले विंशति आदि शब्द द्विवचन और बहुवचनमें होते हैं।

-स्तासु चानवतेः स्त्रियः ।

विंशति आदि नवतिपर्यंत शब्द स्त्रीलिंग होते हैं ॥

पंक्तेः शतसहस्रादि क्रमाद्दशगुणोत्तरम् ॥ ८४ ॥

दश संख्याका क्रमसे उत्तरोत्तर दश गुण शत सहस्र आदि संख्याएँ होती हैं ॥ ८४ ॥

यौतवं द्रुवयं पाय्यमिति मानार्थकं त्रयम् ।

तोलके नाम ३—यौतव १ द्रुवय २ पाय्य ३ ॥

मानं तुलाऽङ्गुलिप्रस्थै-

(तोल तीन प्रकारकी है) तुलामान १ अंगुलिमान २ प्रस्थमान ३ ॥

-र्गुञ्जाः पञ्चाद्यमाषकः ॥८५॥

पांच रतीका शास्त्रोक्त माषा (मासा) होता है ॥ ८५ ॥

ते षोडशाक्षः कर्षोऽस्त्री-

सोलह मासेका एक अक्ष होता है उसको ही कर्ष कहते हैं ॥

-पलं कर्षचतुष्टयम् ।

चार कर्षका एक पल होता है ॥

सुवर्णबिस्तौ हेम्नोऽक्षे-

कर्षभर सुवर्णके नाम २—सुवर्ण १ बिस्त २ ॥

-कुरुबिस्तस्तु तत्पले ॥ ८६ ॥

पलभर सुवर्णका नाम १—कुरुबिस्त १ ॥ ८६ ॥

तुला स्त्रियां पलशतं-

सौ पलका नाम १—तुला १ ॥

-भारः स्याद्विंशतिस्तुलाः ।

बीस तुलाका नाम १—भार १ ॥

आचितो दश भाराः स्युः-

दशभारका नाम १—आचित १ ॥

-शाकटो भार आचितः ॥८७॥

शकटभर भारका नाम १—आचित ॥ ८७ ॥

कार्षापणः कार्षिकः स्यात्-

चांदीके रुपयेके नाम २—कार्षापण १ कार्षिक २ ॥

-कार्षिके ताम्रिके पणः ।

तामेका कार्षापण अर्थात् पैसेका नाम १—पण १ ॥

अस्त्रियामाढकद्रोणौ खारी वाहो निकुञ्चकः ॥ ८८ ॥ कुडवः प्रस्थ इत्याद्याः परिमाणार्थकाः पृथक् ।

चार सेरका नाम—आढक १ ॥ आठ आढकका नाम—द्रोण १ ॥

तीन द्रोणका नाम—खारी १ ॥ आठ द्रोणका नाम—वाह १ ॥ मुट्ठीभरका नाम—निकुंचक १ ॥ ८८ ॥ पावभरका नाम—कुडव १ ॥ सेरभरका नाम—प्रस्थ १॥ इत्यादि अलग अलग तोलके नाम हैं ॥

पादस्तुरीयो भागः —

चौथे भागका नाम १—पाद १ ॥

—ंशभागौ तु वण्टके ॥ ८९ ॥

बाट अर्थात् भागके नाम ३—अंश १ भाग २ वंटक ३ ॥ ८९ ॥

द्रव्यं वित्तं स्वापतेयं रिक्थमृक्थं धनं वसु । हिरण्यं द्रविणं द्युम्नमर्थ-रैविभवा अपि ॥ ९० ॥

धनके नाम १३—द्रव्य १ वित्त २ स्वापतेय ३ रिक्थ ४ ऋक्थ ५धन६ वसु ७ हिरण्य ८ द्रविण ९ द्युम्न १०अर्थ ११ रै १२ विभव १३ ॥ ९० ॥

स्यात्कोषश्च हिरण्यं च हेमरूप्ये कृताकृते ।

गड़े वा नहीं गड़े हुए सोने वा चांदीके नाम २—हिरण्य १ कोष २ ॥

ताभ्यां यदन्यत्तत्कुप्यं—

सोने चांदीसे अन्य ताम्रादि धातु-का नाम १—कुप्य १ ॥

—रूप्यं तद्द्वयमाहतम् ॥ ९१ ॥

तांबा और चांदीके मिलाये हुएका नाम १—रूप्य १ ॥ ९१ ॥

गारुत्मतं मरकतमश्मगर्भो हरि-न्मणिः ।

मरकतमणिके नाम ४—गारुत्मत १ मरकत २ अश्मगर्भ ३ हरिन्मणि ४॥

शोणरत्नं लोहितकः पद्मरागो—

पद्मरागमणिके नाम ३—शोणरत्न १ लोहितक २ पद्मराग ३ ॥

—ऽथ मौक्तिकम् ॥ ९२ ॥ मुक्ता—

मोतीके नाम २—मौक्तिक १॥९२॥ मुक्ता २ ॥

—ऽथ विद्रुमः पुंसि प्रवालं पुंन-पुंसकम् ।

मूंगेके नाम २—विद्रुम१ प्रवाल१॥

रत्नं मणिर्द्वयोरश्मजातौ मुक्ता-दिकेऽपि च ॥ ९३ ॥

पद्मराग आदि पाषाण जाति और मुक्ताफल आदिके नाम २—रत्न १ मणि २ ॥ ९३ ॥

स्वर्णं सुवर्णं कनकं हिरण्यं हेम हाटकम् । तपनीयं शातकुम्भं गांगेयं भर्म कर्बुरम् ॥ ९४ ॥ चामीकरं जातरूपं महारजत-काञ्चने । रुक्मं कार्तस्वरं जाम्बून-

दमष्टापदोऽस्त्रियाम् ॥ ९९ ॥

सुवर्णके नाम १९–स्वर्ण १सुवर्ण२ कनक ३ हिरण्य ४ हेमन् ५हाटक६तप- नीय ७ शातकुम्भ ८गांगेय९भर्म्मन्१० कर्बुर ११ ॥ ९४ ॥ चामीकर १२ जातरूप १३ महारजत१४ कांचन१५ रुक्म १६ कार्त्तस्वर १७ जांबूनद १८ अष्टापद १९ ॥ ९५ ॥

अलंकारसुवर्णं यच्छृङ्गीकनक- मित्यदः ।

सुवर्णके गहनेका नाम १–श्रृगीकनक १

दुर्वर्णं रजतं रूप्यं खर्जूरं श्वेत- मित्यपि ॥ ९६ ॥

चांदीके नाम ५–दुर्वर्ण १रजत २ रूप्य ३ खर्जूर ४ श्वेत ५ ॥ ९६ ॥

रीतिः स्त्रियामारकूटो न स्त्रिया–

पीतलके नाम २–रीति १ आरकूट२॥

–मथ ताम्रकम् । शुल्वं म्लेच्छ- मुखं द्व्यष्टवरिष्टोदुम्बराणि च ॥ ९७ ॥

तांबेके नाम ६–ताम्रक १ शुल्व२ म्लेच्छमुख ३ द्व्यष्ट ४ वरिष्ट ५ उदुं- बर ६ ॥ ९७ ॥

लोहोऽस्त्री शस्त्रकं तीक्ष्णं पिण्डं कालायसायसी । अश्मसारो–

लोहेके नाम ७–लोह १ शस्त्रक २ तीक्ष्ण ३ पिण्ड ४ कालायस५ अयस्६ अश्मसार ७ ॥

–थ मण्डूरं सिंहाणमपि तन्मले ॥ ९८ ॥

लोहेके मल अर्थात् मंडूरके नाम२– मण्डूर १ सिंहाण २ ॥ ९८ ॥

सर्वं च तैजसं लोहं–

चांदी सोना लोहादि सर्व धातुओंका नाम १–लोह ॥

विकारस्त्वयसः कुशी ।

लोहेके फालका नाम १–कुशी १॥

क्षारः काचो–

कांचके नाम २–क्षार १ काच २॥

–ऽथ चपलो रसः सूतश्च पारदे ॥ ९९ ॥

पारेके नाम ४–चपल १ रस २ सूत ३ पारद ४ ॥ ९९ ॥

गवलं माहिषं शृंग–

भैंसेके सींगका नाम १–गवल१ ॥

–मभ्रकं गिरिजामले ।

अबरखके नाम ३–अभ्रक १ गिरिज २ अमल ३ ॥

स्रोतोऽञ्जनं तु सौवीरं कापोता- ञ्जनयामुने ॥ १०० ॥

सुर्माके नाम ४–स्रोतोंऽजन१ सौवीर २कापोतांजन ३ यामुन ४ ॥ १०० ॥

तुत्थाञ्जनं शिखिग्रीवं वितुन्नकमयूरके ।

तूतिया (नीलाथोथा) के नाम ४—तुत्थाञ्जन १ शिखिग्रीव २ वितुन्नक ३ मयूरक ४ ॥

कर्परी दार्विका क्वाथोद्भवं तुत्थं-

तूतियाके भेद ३—कर्परी १ दार्विका २ तुत्थ ३ ॥

—रसाञ्जनम् ॥ १०१ ॥ रसगर्भं तार्क्ष्यशैलं—

रसोतके नाम ३—रसाञ्जन १ ॥ १०१ ॥ रसगर्भ २ तार्क्ष्यशैल ३ ॥

—गन्धाश्मनि तु गन्धिकः । सौगन्धिकश्च—

गन्धकके नाम ३—गन्धाश्मन् १ गन्धिक २ सौगन्धिक ३ ॥

—चक्षुष्याकुलाल्यौ तु कुलत्थिका ॥ १०२ ॥

काले सुर्मेके नाम ३—चक्षुष्या १ कुलाली २ कुलत्थिका ३ ॥ १०२ ॥

रीतिपुष्पं पुष्पकेतु पौष्पकं कुसुमाञ्जनम् ।

पीतलको तपाके घिसनेसे जो अंजन बने उसके नाम ४—रीतिपुष्प १ पुष्पकेतु २ पौष्पक ३ कुसुमांजन ४ ॥

पिञ्जरं पीतनं तालमालं च हरितालके ॥ १०३ ॥

हरितालके नाम ५—पिञ्जर १ पीतन २ ताल ३ आल ४ हरितालक ५ ॥ १०३ ॥

गैरेयमर्थ्यं गिरिजमश्मजं च शिलाजतु ।

शिलाजीतके नाम५—गैरेय १ अर्थ्य २ गिरिज ३ अश्मज ४ शिलाजतु५ ॥

बोलगन्धरसप्राणपिंडगोपरसाः समाः ॥ १०४ ॥

गन्धरसके नाम ५—बोल१गन्धरस २प्राण३पिण्ड ४ गोपरस५ ॥ १०४॥

डिण्डीरोऽब्धिकफः फेनः—

समुद्रके झागके नाम ३—डिंडीर १ अब्धिकफ २ फेन ३ ॥

सिन्दूरं नागसंभवम् ।

सिंदूरके नाम २—सिंदूर १ नागसम्भव २ ॥

नागसीसकयोगेष्टवप्राणि—

सीसेके नाम ४—नाग १ सीसक२ योगेष्ट ३ वप्र ४ ॥

—त्रपु पिच्चटम् ॥ १०५ ॥ रङ्गवङ्गे—

रांगके नाम ४—त्रपु १ पिच्चट २ ॥ १०५ ॥ रंग ३ वंग ४ ॥

—अथ पिचुस्तूलो—

रुईके नाम २–पिचु १ तूल २ ॥

–ऽथ कमलोत्तरम् । स्यात्कुसुम्भं वह्निशिखं महारजनमित्यपि ॥ १०६ ॥

कुसुम्भके नाम ४–कमलोत्तर १ कुसुम्भ २ वह्निशिख ३ महारजन ४ ॥ १०६ ॥

मेषकम्बल ऊर्णायुः–

ऊनी कम्बलके नाम २–मेषकम्बल १ ऊर्णायु २ ॥

–शशोर्णं शशलोमनि ।

खरगोशकी ऊनके नाम २–शशोर्ण १ शशलोमन् २ ॥

मधु क्षौद्रं माक्षिकादि–

शहदके नाम ३–मधु १ क्षौद्र २ माक्षिक ३ ॥

–मधूच्छिष्टं तु सिक्थकम् १०७॥

मोमके नाम २–मधूच्छिष्ट १ सिक्थक २ ॥ १०७ ॥

मनःशिला मनोगुप्ता मनोह्वा नागजिह्विका । नैपाली कुनटी गोला–

मैनशिलके नाम ७–मनःशिला १ मनोगुप्ता २ मनोह्वा ३ नागजिह्विका ४ नैपाली ५ कुनटी ६ गोला ७ ॥

–यवक्षारो यवाग्रजः ॥ १०८ ॥ पाक्यो–

जवाखारके नाम ३–यवक्षार १ यवाग्रज २– ॥ १०८ ॥ पाक्य ३ ॥

–ऽथ सर्जिकाक्षारः कापोतः सुखवर्चकः । सौवर्चलं स्याद्रुचकं–

सज्जीके नाम ५–सर्जिकाक्षार १ कापोत २ सुखवर्चक ३ सौवर्चल ४ रुचक २ ॥

–त्वक्क्षीरी वंशरोचना ॥ १०९॥

वंशलोचनके नाम २–त्वक्क्षीरी १ वंशरोचना २ ॥ १०९ ॥

शिग्रुजं श्वेतमरिचं–

सफेद मिर्चके नाम २–शिग्रुज १ श्वेतमरिच २ ॥

–मोरटं मूलमैक्षवम् ।

ईखकी जड़का नाम १–मोरट १ ॥

ग्रन्थिकं पिप्पलीमूलं चटकाशिर इत्यपि ॥ ११० ॥

पीपलामूलके नाम ३–ग्रंथिक १ पिप्पलीमूल २–चटकाशिरस् ३॥ ११० ॥

गोलोमी भूतकेशो ना–

जटामांसीके नाम २–गोलोमी १ भूतकेश २ ॥

–पत्राङ्गं रक्तचन्दनम् ।

पतंगके नाम २–पत्रांग १ रक्तचन्दन २ ॥

त्रिकटु त्र्यूषणं व्योषं–

सोंठि, पीपल, मिर्च इन तीनोंके समूहके नाम ३—त्रिकटु १ त्र्यूषण २ व्योष ३॥

—त्रिफला तु फलत्रिकम्॥१११॥

आंवला, हरड़, बहेडा इन तीनोंके समूहके नाम २—त्रिफला १ फलत्रिक २ ॥ १११ ॥

इति वैश्यवर्गः ॥ ९ ॥

अथ शूद्रवर्गः १०.

शूद्राश्चावरवर्णाश्च वृषलाश्च जघन्यजाः ।

शूद्रके नाम ४—शूद्र १ अवरवर्ण २ वृषल ३ जघन्यज ॥ ४ ॥

आचण्डालात्तु सङ्कीर्णा अम्बष्ठकरणादयः ॥ १ ॥

ब्राह्मणीमें शूद्रसे उत्पन्न हो उसका नाम—चण्डाल ॥ चण्डालसे लेकर अम्बष्ठ करण आदिकोंका नाम १—संकीर्ण १ ॥ १ ॥

शूद्राविशोस्तु करणो—

शूद्रामें वैश्यसे उत्पन्न हुएका नाम १—करण १ ॥

—ऽम्बष्ठो वैश्याद्विजन्मनोः ।

बनैनीमें ब्राह्मणसे उत्पन्न हो उसका नाम १—अम्बष्ठ १ ॥

शूद्राक्षत्त्रिययोरुग्रो—

शूद्रामें क्षत्रियसे उत्पन्न हुएका नाम १ उग्र १ ॥

—मागधः क्षत्रियाविशोः ॥ २ ॥

क्षत्रियाणीमें वैश्यसे उत्पन्न हुएका नाम १—मागध १ ॥ २ ॥

माहिष्योऽर्याक्षत्त्रिययोः—

बनैनीमें क्षत्रियसे उत्पन्न हुएका नाम १—माहिष्य १ ॥

—क्षत्ताऽर्याशूद्रयोः सुतः ।

बनैनीमें शूद्रसे उत्पन्न हुएका नाम १—क्षत्तृ १ ॥

ब्राह्मण्यां क्षत्रियात्सूत—

ब्राह्मणीमें क्षत्रियसे उत्पन्न हुएका नाम १—सूत १ ॥

—स्तस्यां वैदेहको विशः ॥ ३ ॥

ब्राह्मणीमें वैश्यसे उत्पन्न हुएका नाम १—वैदेहक १ ॥ ३ ॥

रथकारस्तु माहिष्यात्करण्यां यस्य संभवः ।

करणीमें माहिष्यसे उत्पन्न हुएका नाम १—रथकार १ ।

स्याच्चण्डालस्तु जनितो ब्राह्मण्यां वृषलेन यः ॥ ४ ॥

ब्राह्मणीमें शूद्रसे उत्पन्न हुएका नाम १—चण्डाल १ ॥ ४ ॥

कारुः शिल्पी—

कारीगरोंके नाम २—कारु १ शिल्पिन् २ ॥

-संहतैस्तैर्द्वयोः श्रेणिः सजातिभिः।

कारीगरोंके समूहका नाम १-श्रेणि १॥

कुलकः स्यात्कुलश्रेष्ठी-

कारीगरोंके अफसर अर्थात् मिस्तरीके नाम २-कुलक १ कुलश्रेष्ठी २॥

-मालाकारस्तु मालिकः ॥ ५॥

मालीके नाम २-मालाकार १ मालिक २ ॥ ५ ॥

कुम्भकारः कुलालः स्यात्-

कुम्हारके नाम २-कुम्भकार १ कुलाल २ ॥ ५ ॥

-पलगण्डस्तु लेपकः।

कमंगरके नाम २-पलगण्ड १ लेपक २ ॥

तन्तुवायः कुविन्दः स्यात्-

जुलाहेके नाम २-तन्तुवाय १ कुविन्द २ ॥

-तुन्नवायस्तु सौचिकः ॥ ६ ॥

दरजीके नाम २-तुन्नवाय १ सौचिक २ ॥ ६ ॥

रंगाजीवश्चित्रकरः-

चित्रकारके नाम २-रङ्गाजीव १ चित्रकर २ ॥

-शस्त्रमार्जोऽसिधावकः ॥

शिकिलीगरके नाम २-शस्त्रमार्ज १ असिधावक २ ॥

पादूकृच्चर्मकारः स्या-

चमारके नाम २-पादूकृत् १ चर्मकार २ ॥

-द्व्योकारो लोहकारकः ॥ ७ ॥

लोहारके नाम २-व्योकार १ लोहकारक २ ॥ ७ ॥

नाडिन्धमः स्वर्णकारः कलादो रुक्मकारकः।

सुनारके नाम ४-नाडिन्धम १ स्वर्णकार ३ कलाद ३ रुक्मकारक ४ ॥

स्याच्छाङ्खिकः काम्बविकः-

मनिहारके नाम २-शाङ्खिक १ काम्बविक २ ॥

-शौल्विकस्ताम्रकुट्टकः ॥ ८ ॥

ठठेरेके नाम २-शौल्विक १ ताम्रकुट्टक २ ॥ ८ ॥

-तक्षा तु वर्धकिस्त्वष्टा रथकारस्तु काष्ठतट्।

बढ़ईके नाम-५ तक्षन् १ वर्धकी २ त्वष्टृ ३ रथकार ४ काष्ठतक्ष् ५ ॥

ग्रामाधीनो ग्रामतक्षः-

गांवके बढ़ईके नाम २-ग्रामाधीन १ ग्रामतक्ष २ ॥

-कौटतक्षोऽनधीनकः ॥ ९ ॥

स्वतन्त्र बढ़ईका नाम १-कौटतक्ष १ ॥ ९ ॥

क्षुरी मुण्डी दिवाकीर्तिनापितान्तावसायिनः।

नाईके नाम ५–क्षुरिन् १मुंडिन् २ दिवाकीर्ति ३नापित४अन्तावसायिन् ५।

निर्णेजकः स्याद्रजकः–

धोबीके नाम २–निर्णेजक १ रजक २ ॥

–शौण्डिको मण्डहारकः ॥१०॥

कलालके नाम २–शौण्डिक १ मण्डहारक २ ॥ १० ॥

जाबालः स्यादजाजीवो–

गढ़रियेके नाम २–जाबाल १ अजाजीव २ ॥

–देवाजीवस्तु देवलः ।

पण्डाके नाम २–देवाजीव १ देवल २ ॥

स्यान्माया शाम्बरी–

इन्द्रजालके नाम २–माया १ शांबरी २ ॥

–मायाकारस्तु प्रतिहारकः ॥११॥

इन्द्रजाली अर्थात् बाजीगरके नाम२–मायाकार १ प्रतिहारक २ ॥ ११ ॥

शैलालिनस्तु शैलूषा जायाजीवाः कृशाश्विनः । भरता इत्यपि नटा–

नटके नाम ६–शैलालिन् १ शैलूष २ जायाजीव ३ कृशाश्विन् ४ भरत ५ नट ६ ॥

–श्चारणास्तु कुशीलवाः ॥१२॥

कत्थकके नाम २–चारण १ कुशीलव २ ॥ १२ ॥

मार्दंगिका मौरजिकाः–

मृदंगके बजानेवालेके नाम २–मार्दंगिक १ मौरजिक २ ॥

–पाणिवादास्तु पाणिघाः ।

ताली बजानेवालेके नाम २–पाणिवाद १ पाणिघ २ ॥

वेणुध्माः स्युर्वैणविका–

बांसुरी बजानेवालेके नाम २–वेणुध्म १ वैणविक २ ॥

–वीणावादास्तु वैणिकाः ॥१३॥

वीणा बजानेवालेके नाम २–वीणावाद १ वैणिक २ ॥ १३ ॥

जीवान्तकः शाकुनिको–

चिड़ीमारके नाम २–जीवान्तक १ शाकुनिक २ ॥

–द्वौ वागुरिकजालिकौ ।

व्याधके नाम २–वागुरिक १ जालिक २ ॥

वैतंसिकः कौटिकश्च मांसिकश्च समं त्रयम् ॥ १४ ॥

कसाईके नाम ३–वैतंसिक १ कौटिक २ मांसिक ३ ॥ १४ ॥

भृतको भृतिभुक्कर्मकरो वैतनिकोऽपि सः ।

मजूरके नाम ४—भृतक १ भृतिभुज् २ कर्मकर ३ वैतनिक ४ ॥

वार्तावहो वैवधिको—

दूतके नाम २—वार्तावह १ वैवधिक २ ॥

—भारवाहस्तु भारिकः ॥ १५ ॥

बोझा ढोनेवालेके नाम २—भारवाह १ भारिक २ ॥ १५ ॥

विवर्णः पामरो नीचः प्राकृतस्तु पृथग्जनः । निहीनोऽपसदो जाल्मः क्षुल्लकश्चेतरश्च सः ॥ १६ ॥

नीचके नाम १०—विवर्ण १ पामर २ नीच ३ प्राकृत ४ पृथग्जन ५ निहीन ६ अपसद ७ जाल्म ८ क्षुल्लक ९ इतर १० ॥ १६ ॥

भृत्ये दासेरदासेयदासगोप्यकचेटकाः । नियोज्यकिंकरप्रैष्यभुजिष्यपरिचारकाः ॥ १७ ॥

दास वा टहलुएके नाम ११—भृत्य १ दासेर २ दासेय ३ दास ४ गोप्यक ५ चेटक ६ नियोज्य ७ किंकर ८ प्रैष्य ९ भुजिष्य १० परिचारक ११ ॥ १७ ॥

पराचितपरिस्कंदपरजातपरैधिताः ।

जो दूसरेसे पाला जाय उसके अर्थात् रहुआके नाम ४—पराचित १ परिस्कन्द २ परजात ३ परैधित ४ ॥

मंदस्तुंदपरिमृज आलस्यः शीतकोऽलसोऽनुष्णः ॥ १८ ॥

आलसीके नाम ६—मन्द १ तुन्दपरिमृज २ आलस्य ३ शीतक ४ अलस ५ अनुष्ण ६ ॥ १८ ॥

दक्षे तु चतुरपेशलपटवः सूत्थान उष्णश्च ।

चतुरके नाम ६—दक्ष १ चतुर २ पेशल ३ पटु ४ सूत्थान ५ उष्ण ६ ॥

चण्डालप्लवमातंगदिवाकीर्तिजनंगमाः ॥ १९ ॥ निषादश्वपचावंतेवासिचाण्डालपुक्कसाः ।

चाण्डालके नाम १०—चण्डाल १ प्लव २ मातङ्ग ३ दिवाकीर्ति ४ जनंगम ५ ॥ १९ ॥ निषाद ६ श्वपच ७ अन्तेवासिन् ८ चाण्डाल ९ पुक्कस १० ॥

भेदाः किरातशबरपुलिंदा म्लेच्छजातयः ॥ २० ॥

म्लेच्छजातिके भेद जंगली गोमांस खानेवाले हेबूढे आदिके नाम ३—किरात १ शबर २ पुलिन्द ॥ २० ॥

व्याधो मृगवधाजीवो मृगयुर्लुब्धकोऽपि सः ।

मृग पकड़नेवालेके नाम ४—व्याध १ मृगवधाजीव २ मृगयु ३ लुब्धक ४ ॥

कौलेयकः सारमेयः कुक्कुरो मृगदंशकः ॥ २१ ॥ शुनको भषकः श्वा स्या-

कुत्तेके नाम ७—कौलेयक १ सारमेय२ कुक्कुर ३मृगदंशक ४॥२१॥ शुनक ५ भषक ६ श्वन् ७ ॥

—दलर्कस्तु स योगितः ।

प्रयोगसे उन्मत्त हुए कुत्तेका नाम १—अलर्क १ ॥

श्वा विश्वकद्रुर्मृगयाकुशलः-

शिकारी कुत्तेका नाम १—विश्वकद्रु १ ॥

—सरमा शुनी ॥ २२ ॥

कुतियाके नाम २—सरमा १ शुनी २ ॥ २२ ॥

विट्चरः सूकरो ग्राम्यो-

गांवके सूकरका नाम १—विट्चर १॥

—वर्करस्तरुणः पशुः ।

तरुणपशुका नाम १—वर्कर १ ॥

आच्छोदनं मृगव्यं स्यादाखेटो मृगया स्त्रियाम् ॥ २३ ॥

शिकारके नाम ४—आच्छोदन १ मृगव्य २ आखेट ३ मृगया४॥ २३ ॥

दक्षिणारुर्लुब्धयोगाद्दक्षिणेर्मा कुरङ्गकः ।

व्याधने जिस मृगके दहिने अंगमें मारा हो उसका नाम१-दक्षिणेर्मन् १॥

चौरैकागारिकस्तेनदस्युतस्कर-मोषकाः ॥ २४ ॥ प्रतिरोधिपरास्कन्दिपाटच्चरमलिम्लुचाः ।

चोरके नाम १०—चौर १ ऐकागारिक २ स्तेन ३ दस्यु ४ तस्कर ५ मोषक ६ ॥ २४॥ प्रतिरोधिन् ७ परास्कन्दिन् ८ पाटच्चर९ मलिम्लुच १०॥

चौरिका स्तैन्यचौर्ये च स्तेयं-

चोरीके नाम ४—चौरिका १ स्तैन्य २ चौर्य ३ स्तेय ४ ॥

—लोप्त्रं तु तद्धने ॥ २५ ॥

चोरीके मालका नाम १—लोप्त्र १ ॥ २५ ॥

वीतंसस्तूपकरणं बन्धने मृग-पक्षिणाम् ।

पक्षी वा मृगोंके पकड़नेकी सामग्री अर्थात् जालादिका नाम १—वीतंस१ ॥

उन्माथः कूटयन्त्रं स्या-

काबकपींजरे आदिके नाम २—उन्माथ १ कूटयन्त्र २ ॥

—द्वागुरा मृगबन्धनी ॥ २६ ॥

जालके नाम २—वागुरा १ मृगबन्धनी २ ॥ २६ ॥

शुल्बं वराटकं स्त्री तु रज्जुस्त्रिषु वटी गुणः ।

रस्सीके नाम ५–शुल्व १ वराटक २ रज्जु ३ वटी ४ गुण ५ ॥

उद्घाघटनं घटीयन्त्रं सलिलोद्वाहनं प्रहेः ॥ २७ ॥

अरहटके नाम २–उद्घाटन १ घटीयन्त्र २ ॥ २७ ॥

पुंसि वेमा वायदण्डः–

जुलाहेके कपड़ा बुननेके औजारके नाम २–वेमन् १ वायदण्ड २ ॥

सूत्राणि नरि तन्तवः ।

सूतके नाम २–सूत्र १ तन्तु २ ॥

वाणिर्व्यूतिः स्त्रियौ तुल्ये–

कपड़े आदिके बुननेके नाम २–वाणि १ व्यूति २ ॥

–पुस्तं लेप्यादिकर्मणि ॥२८॥

मिट्टी आदिसे लीपने पोतनेका नाम १–पुस्त १ ॥ २८ ॥

पाञ्चालिका पुत्रिका स्याद्वस्त्रदन्तादिभिः कृता ।

गुड़िया अर्थात् वस्त्रकी बनाई हुई पुतलीके नाम २–पांचालिका १ पुत्रिका १ ॥

जतुत्रपुविकारे तु जातुषं त्रापुषं त्रिषु ।

लाखके विकारका नाम १–जातुष १॥ वंगके विकारका नाम १–त्रापुष १ ॥

पिटकः पेटकः पेटा मंजूषा–

पिटारेके नाम ४–पिटक १ पेटक २ पेटा ३ मंजूषा ४ ॥

–ऽथ विहङ्गिका ॥ २९ ॥ भारयष्टि–

बहँगी (खूँटी) के नाम २–विहंगिका १ ॥ २९ ॥ भारयष्टि २ ॥

–स्तदालंबि शिक्यं काचो–

बहँगीके छीकेके नाम २–शिक्य १ काच २ ॥

–ऽथ पादुका । पादूरुपानत्स्त्री–

जूतेके नाम ३–पादुका १ पादू २ उपानत् ३ ॥

–सैवानुपदीना पदायता ॥३०॥

मोजेका नाम १–अनुपदीना १ ॥ ३० ॥

नध्री वध्री वरत्रा स्या–

चमड़ेकी रस्सीके नाम ३–नध्री १ वध्री २ वरत्रा ३ ॥

–दश्वादेस्ताडनी कशा ।

कोड़ेका नाम १–कशा १ ॥

चाण्डालिका तु कण्डोलवीणा चण्डालवल्लकी ॥ ३१ ॥

किंगरीबाजोंके नाम ३–चाण्डालिका १ कण्डोलवीणा २ चण्डालवल्लकी ३ ॥ ३१ ॥

नाराची स्यादेषणिका–

कांटा अर्थात् सोना आदि तोलनेकी तराजूके नाम २–नाराची १ एषणिका २ ॥

–शाणस्तु निकषः कषः ।

कसोटीके नाम ३–शाण १ निकष २ कष ३ ॥

व्रश्चनः पत्रपरशु–

रेतीके नाम २–व्रश्चन १ पत्रपरशु २ ॥

–ईषिका तूलिका समे ॥ ३२ ॥

सलाईके नाम २–ईषिका १ तूलिका २ ॥ ३२ ॥

तैजसा वर्तनी मूषा–

सुवर्ण इत्यादि धातु गलानेकी धरियाके नाम ३–तैजसा १ वर्तनी २ मूषा ३ ॥

–भस्त्रा चर्मप्रसेविका ।

फूँकनीके नाम २–भस्त्रा १ चर्मप्रसेविका २ ॥

आस्फोटनी वेधनिका–

बर्मेके नाम २–आस्फोटनी १ वेधनिका २ ॥

–कृपाणी कर्तरी समे ॥ ३३ ॥

एक प्रकारकी कैंचीके नाम २–कृपाणी १ कर्तरी २ ॥ ३३ ॥

वृक्षादनी वृक्षभेदी–

बसूले आदिके नाम २–वृक्षादनी १ वृक्षभेदी २ ॥

–टंकः पाषाणदारणः ।

टांकी अर्थात् पत्थर फोड़नेके हथियारके नाम २–टंक १ पाषाणदारण २ ॥

क्रकचोऽस्त्री करपत्र–

आरेके नाम २–क्रकच १ करपत्र २ ॥

–मारा चर्मप्रभेदिका ॥ ३४ ॥

आरीके नाम २–आरा १ चर्मप्रभेदिका २ ॥

सूर्मी स्थूणाऽयःप्रतिमा–

लोहेकी मूर्त्तिके नाम ३–सूर्मी १ स्थूणा २ अयःप्रतिमा ३ ॥

–शिल्पं कर्म कलादिकम् ॥ ३४ ॥

कारीगरीका नाम १–शिल्प १ ॥ ३४ ॥

प्रतिमानं प्रतिबिम्बं प्रतिमा प्रतियातना प्रतिच्छाया । प्रतिकृतिरर्चा पुंसि प्रतिनिधि–

प्रतिमा अर्थात् तसबीरके नाम ८–प्रतिमान १ प्रतिबिम्ब २ प्रतिमा ३ प्रतियातना ४ प्रतिच्छाया ५ प्रतिकृति ६ अर्चा ७ प्रतिनिधि ८ ॥

–रुपमोपमानं स्यात् ॥ ३५ ॥

मिसाल और जिसकी मिसाल दी जाय उसके नाम २–उपमा १ उपमान २ ॥ ३५ ॥

वाच्यलिंगाः समस्तुल्यः सदृक्षः सदृशः सदृक् ॥ ३६ ॥ साधारणः समानश्च–

बराबरके नाम ७–सम १ तुल्य २

सदृक्ष ३ सदृश ४ सदृग् ५ ॥ ३६ ॥ साधारण ६ समान ७ ॥

–स्युरुत्तरपदे त्वमी । निभ-संकाशनीकाशप्रतीकाशोपमादयः ॥ ३७ ॥

समानके नाम५–निभ१संकाश २ नीकाश३प्रतीकाश ४ उपमा ५॥ ३७॥

कर्मण्या तु विधा भृत्या भृतयो भर्म वेतनम् । भरण्यं भरणं मूल्यं निर्वेशः पण इत्यपि ॥ ३८ ॥

मजूरीके नाम ११–कर्मण्या १ विधा २ भृत्या ३भृति ४ भर्मन्५वेतन ६ भरण्य ७ भरण ८ मूल्य ९ निर्वेश १० पण ११ ॥ ३८ ॥

सुरा हलिप्रिया हाला परिस्रुद्वरुणात्मजा । गन्धोत्तमा प्रसन्नेरा कादम्बर्यः परिस्रुता ॥ ३९ ॥ मदिरा कश्यमद्ये चा–

मदिरा अर्थात् शराबके नाम १३–सुरा १ हलिप्रिया २ हाला ३परिस्रुत्४ वरुणात्मजा ५ गन्धोत्तमा ६ प्रसन्ना ७ इरा ८ कादम्बरी९परिस्रुता १०॥ ३९॥ मदिरा ११ कश्य १२ मद्य १३ ॥

–प्यवदंशस्तु भक्षणम् ।

मद्यपानकी रुचि उत्पन्न करनेके लिये भूंजा चना इत्यादि खानेका नाम १–अवदंश १ ॥

शुण्डापानं मदस्थानं–

मदिरा पीनेके स्थानके नाम २–शुण्डापान १ मदस्थान २ ॥

–मधुवारा मधुक्रमाः ॥ ४० ॥

मदिरा पीनेके समयके नाम२–मधुवार १ मधुक्रम २ ॥ ४० ॥

मध्वासवो माधवको मधु माध्वीकमद्वयोः ।

महुवासे उत्पन्न मदिराके नाम ४–मध्वासव १ माधवक२मधु३माध्वीक ४

मैरेयमासवः सीधु–

गुड़सिराकी मदिराके नाम ३–मैरेय १ आसव २ सीधु ३ ॥

–र्मेदको जगलः समौ ॥ ४१ ॥

मदिराके फोकसके नाम २–मेदक१ जगल २ ॥ ४१ ॥

संधानं स्यादभिषवः–

मदिरा करनेके नाम २–संधान १ अभिषव २ ॥

–किण्वं पुंसि तु नग्नहूः ।

तंदुलादि द्रव्यसे बने हुए मद्यके नाम २–किण्व १ नग्नहू २ ॥

कारोत्तरः सुरामण्ड–

मदिराके मण्डके नाम २–कारोत्तर १ सुरामण्ड २ ॥

आपानं पानगोष्ठिका ॥ ४२ ॥

दारू पीनेकी सभाके नाम२–आपान १ पानगोष्ठिका २ ॥ ४२ ॥

चषकोऽस्त्री पानपात्रं-

दारू पीनेके बर्त्तन (प्याले) के नाम २–चषक १ पानपात्र २ ॥

–सरकोऽप्यनुतर्षणम् ।

मदिरा पीनेके नाम २–सरक १ अनुतर्षण २ ॥

धूर्त्तोऽक्षदेवी कितवोऽक्षधूर्तो द्यूतकृत्समाः ॥ ४३ ॥

जुआरीके नाम५–धूर्त १ अक्षदेविन् २ कितव ३ अक्षधूर्त्त ४ द्यूतकृत्५॥४३॥

स्युर्लग्नकाः प्रतिभुवः-

जामिनके नाम२–लग्नक१प्रतिभू२॥

–सभिका द्यूतकारकाः ।

जुवा खिलानेवालेके नाम२–सभिक १ द्यूतकारक २ ॥

द्यूतोऽस्त्रियामक्षवती कैतवं पण इत्यपि ॥ ४४ ॥

जूएके नाम ४–द्यूत १ अक्षवती २ कैतव ३ पण ४ ॥ ४४ ॥

पणोऽक्षेषु ग्लहो-

बाजी लगानेके नाम२-पण१ग्लह२॥

–ऽक्षास्तु देवनाः पाशकाश्च ते ।

पासेके नाम ३–अक्ष १ देवन २ पाशक ३ ॥

परिणायस्तु शारीणां समन्तान्नयनेऽस्त्रियाम् ॥ ४५ ॥

सारक इधर उधर फेरनेवालेका नाम १–परिणाय १ ॥ ४५ ॥

अष्टापदं शारिफलं-

बिसायती (चौपड़) के नाम २–अष्टापद १ शारिफल २ ॥

–प्राणिद्यूतं समाह्वयः ।

मुरगा आदि जीवोंकी लड़ाईरूप द्यूतके नाम २–प्राणिद्यूत १ समाह्वय२॥

उक्ता भूरिप्रयोगत्वादेकस्मिन्नेव यौगिकाः ॥ ४६ ॥ ताद्धर्म्यादन्यतो वृत्तावूह्या लिङ्गान्तरेऽपि ते ।

इस वर्गमें जो यौगिक मालाकार मार्दंगिक वैणविक आदि शब्द काव्यादिकोंके अधिक प्रयोगके अनुसार केवल पुँल्लिंगमें ही कहे हैं वे शब्द व्याकरणके नियमानुसार स्त्रीलिंग नपुंसकलिंगमें भी होते हैं, जैसे मालाकारकी स्त्री मालाकारी और मालाकारका कुल मालाकार इसी प्रकार सर्वत्र जानना ॥ ४६ ॥

इत्यमरसिंहकृतौ नामलिंगानुशासने । भूम्यादिकाण्डो द्वितीयः सांग एव समर्थितः ॥ ४७ ॥

इति श्रीमदमरसिंहविरचितामरकोशे ज्वालाप्रसादकृतभाषाटीकायां द्वितीयः काण्डः समाप्तः ॥ २ ॥

इति द्वितीयः काण्डः ॥ २ ॥

श्रीः।

अथ तृतीयः काण्डः।

अथ विशेष्यनिघ्नवर्गः १.

विशेष्यनिघ्नैः संकीर्णैर्नानार्थैरव्ययैरपि ॥ लिंगादिसंग्रहैर्वर्गाः सामान्ये वर्गसंश्रयाः ॥१॥

इस सामान्य तृतीयकाण्डमें स्वर्गादि वर्गोंके आश्रित शब्द विशेष्यनिघ्नवर्ग, संकीर्णवर्ग, नानार्थवर्ग, अव्ययवर्ग, और लिंगादिसंग्रहवर्गके द्वारा कहेंगे॥१॥

स्त्रीदाराद्यैर्यद्विशेष्यं यादृशैः प्रस्तुतं पदैः। गुणद्रव्यक्रियाशब्दास्तथा स्युस्तस्य भेदकाः ॥ २ ॥

स्त्री दार आदि विशेष्यभूत पदोंमें जो लिङ्ग और संख्या हो वही लिङ्ग और संख्या गुण और द्रव्य तथा क्रिया वाचकशब्दोंमें होनेसे दार स्त्री आदि शब्दोंके गुण द्रव्य क्रियावाचक शब्द विशेषण हो सकते हैं. जैसे—सुकृतिनी स्त्री, सुकृतिनो दाराः, सुकृति कलत्रम्। दण्डिनी स्त्री, दण्डिनो दाराः, दण्डि कलत्रम्। पाचिका स्त्री, पाचका दाराः, पाचकं कलत्रम् ॥ २ ॥

सुकृती पुण्यवान् धन्यो—

भाग्यवान् पुरुषके नाम ३—सुकृतिन् १ पुण्यवत् २ धन्य ३ ॥

—महेच्छस्तु महाशयः।

उदारचित्त पुरुषके नाम २—महेच्छ १ महाशय २ ॥

हृदयालुः सुहृदयो—

शुद्धचित्त पुरुषके नाम २—हृदयालु १ सुहृदय २ ॥

—महोत्साहो महोद्यमः ॥ ३ ॥

बहुत उद्यम करनेवाले पुरुषके नाम २—महोत्साह १ महोद्यम २ ॥ ३ ॥

प्रवीणे निपुणाभिज्ञविज्ञनिष्णातशिक्षिताः। वैज्ञानिकः कृतमुखः कृती कुशल इत्यपि ॥ ४ ॥

चतुर पुरुषके नाम १०—प्रवीण १ निपुण २ अभिज्ञ ३ विज्ञ ४ निष्णात ५ शिक्षित ६ वैज्ञानिक ७ कृतमुख ८ कृतिन् ९ कुशल १० ॥ ४ ॥

पूज्यः प्रतीक्ष्यः—

मान्य पुरुषके नाम २—पूज्य १ प्रतीक्ष्य ॥ २ ॥

–सांशयिकः संशयापन्नमानसः।

संशय करानेवाली वस्तुके नाम २–सांशयिक १ संशयापन्नमानस २ ॥

दक्षिणीयो दक्षिणार्हस्तत्र दक्षिण्य इत्यपि ॥ ५ ॥

दक्षिणाके योग्य पुरुषके नाम ३–दक्षिणीय १दक्षिणार्ह २ दक्षिण्य३॥५॥

स्युर्वदान्यस्थूललक्ष्यदानशौण्डा बहुप्रदे ।

अतिदानी पुरुषके नाम ४–वदान्य १स्थूललक्ष्य २दानशौण्ड ३वहुप्रद ४॥

जैवातृकः स्यादायुष्मा–

दीर्घायु पुरुषके नाम २–जैवातुक१ आयुष्मत् १ ॥

–नन्तर्वाणिस्तु शास्त्रवित् ॥६॥

शास्त्रीके नाम २–अन्तर्वाणि १ शास्त्रविद् २ ॥ ६ ॥

परीक्षकः कारणिको–

परीक्षकके नाम २–परीक्षक १ कारणिक २ ॥

–वरदस्तु समर्धकः ।

वरदान देनेवालेके नाम २–वरद१ समर्धक २ ॥

हर्षमाणो विकुर्वाणः प्रमना हृष्टमानसः ॥ ७ ॥

प्रसन्नके नाम ४–हर्षमाण१विकुर्वाण२ प्रमनस् ३ हृष्टमानस ४ ॥ ७॥

दुर्मना विमना अन्तर्मनाः–

उदास पुरुषके नाम ३–दुर्मनस् १ विमनस् २ अन्तर्मनस् ३ ॥

–स्यादुत्क उन्मनाः ।

उत्कण्ठायुक्त पुरुषके नाम २–उत्क १ उन्मनस् २ ॥

दक्षिणे सरलोदारौ–

सीधे पुरुषके नाम ३–दक्षिण १ सरल २ उदार ३ ॥

–सुकलो दातृभोक्तरि ॥ ८ ॥

दानी और भोगी पुरुषका नाम १–सुकल १ ॥ ८ ॥

तत्परे प्रसितासक्ता–

कार्य्यविशेषमें चित्त लगानेवाले पुरुषके नाम ३–तत्पर १प्रसित २आसक्त ३ ॥

–विष्टार्थोद्युक्त उत्सुकः ।

अभीष्ट वस्तुके प्राप्त करनेमें तत्पर पुरुषके नाम २–इष्टार्थोद्युक्त१उत्सुक२॥

प्रतीते प्रथितख्यातवित्तविज्ञातविश्रुताः ॥ ९ ॥

प्रसिद्ध पुरुषके नाम ६–प्रतीत १ प्रथित २ ख्यात ३ वित्त ४ विज्ञात५ विश्रुत ६ ॥ ९ ॥

गुणैः प्रतीते तु कृतलक्षणाहितलक्षणौ ।

गुणोंसे प्रसिद्ध पुरुषके नाम २–कृतलक्षण १ आहितलक्षण २ ॥

इभ्य आढ्यो धनी-

धनी पुरुषके नाम ३-इभ्य १ आढ्य २ धनिन् ३ ॥

-स्वामी त्वीश्वरः पतिरीशिता ॥१०॥ अधिभूर्नायको नेता प्रभुः परिवृढोऽधिपः ।

स्वामीके नाम १०-स्वामिन् १ ईश्वर २ पति३ ईशितृ४॥१०॥अधिभू ५ नायक ६ नेतृ ७ प्रभु ८ परिवृढ ९ अधिप १० ॥

अधिकर्द्धिः समृद्धः स्यात्-

सम्पत्तिमान् पुरुषके नाम २-अधिकर्धि १ समृद्ध २।

-कुटुम्बव्यापृतस्तु यः ॥११॥ स्यादभ्यागारिकस्तस्मिन्नुपाधिश्च पुमानयम् ।

कुटुम्बके पालन करनेमें तत्पर पुरुषके नाम ३-कुटुम्बव्यापृत १ ॥११॥ अभ्यागारिक २ उपाधि ३ ॥

वारांगरूपोपेतो यः सिंहसंहननो हि सः ॥ १२ ॥

अंग और रूपसे अतिश्रेष्ठ पुरुषका नाम १-सिंहसंहनन १ ॥ १२ ॥

निर्वार्यः कार्यकर्ता यः सम्पन्नः सत्त्वसम्पदा ।

जो दुःखमें भी प्रसन्नताके साथ कार्य किया करता है उस पुरुषका नाम १-निर्वार्य १ ॥

अवाचि मूको-

गूँगे पुरुषके नाम २-अवाच् १ मूक २॥

-ऽथ मनोजवसः पितृसन्निभः ॥ १३ ॥

जो पुरुष पिताके समान माना जाय उस पुरुषके नाम २-मनोजवस् १ पितृसन्निभ २ ॥ १३ ॥

सत्कृत्यालंकृतां कन्यां यो ददाति स कूकुदः ।

जो वरको आदरपूर्वक वस्त्र भूषण सहित कन्यादान दे उस पुरुषका नाम १-कूकुद १॥

लक्ष्मीवाँल्लक्ष्मणः श्रीलः श्रीमान्-

शोभावान्के नाम ४-लक्ष्मीवत् १ लक्ष्मण २ श्रील ३ श्रीमत् ४ ॥

-स्निग्धस्तु वत्सलः ॥ १४ ॥

स्नेही पुरुषके नाम २-स्निग्ध १ वत्सल २ ॥ १४ ॥

स्याद्दयालुः कारुणिकः कृपालुः सूरतः समाः ।

दयावान् पुरुषके नाम ४-दयालु १ कारुणिक २ कृपालु ३ सूरत ॥ ४ ॥

स्वतन्त्रोऽपावृतः स्वैरी स्वच्छन्दो निरवग्रहः ॥ १५ ॥

स्वतन्त्र पुरुषके नाम ५–स्वतन्त्र १ अपावृत २ स्वैरिन् ३ स्वच्छन्द ४ निरवग्रह ५ ॥ १५ ॥

परतन्त्रः पराधीनः परवान्नाथवानपि ।

पराधीन पुरुषके नाम ४–परतन्त्र १ पराधीन २ परवत् ३ नाथवत् ४ ॥

अधीनो निघ्न आयत्तोऽस्वच्छन्दो गृह्यकोऽप्यसौ ॥ १६ ॥

अधीनके नाम५–अधीन १ निघ्न२ आयत्त३अस्वच्छन्द४गृह्यक५ ॥ १६ ॥

खलपूः स्याद्बहुकरो–

बुहारने झारनेवाले मनुष्यके नाम २–खलपू १ बहुकर २ ॥

–दीर्घसूत्रश्चिरक्रियः ।

दीर्घसूत्र (थोड़ी देरके कामको बहुत देरमें करनेवालों) के नाम २–दीर्घसूत्र १ चिरक्रिय २ ॥

जाल्मोऽसमीक्ष्यकारी स्यात्–

विना विचारे कार्य करनेवाले पुरुषके नाम२–जाल्म १ असमीक्ष्यकारिन् २ ॥

–कुण्ठो मन्दः क्रियासु यः॥ १७॥

आलसी वा मूढ पुरुषका नाम १–कुण्ठ १ ॥ १७ ॥

कर्मक्षमोऽलंकर्मीणः–

कार्य्य करनेमें समर्थ पुरुषके नाम २–कर्मक्षम १ अलंकर्मीण २ ॥

–क्रियावान्कर्मसूद्यतः ।

कार्य करनेमें तत्पर पुरुषका नाम १–क्रियावत् १ ॥

स कार्मः कर्मशीलो यः–

जो नित्य काममें लगा रहे उस पुरुषके नाम २–कार्म १ कर्मशील २ ॥

–कर्मशूरस्तु कर्मठः ॥ १८ ॥

प्रयत्नपूर्वक जो कार्यको समाप्त करे उस पुरुषके नाम २–कर्मशूर १ कर्मठ २ ॥ १८ ॥

–भरण्यभुक्कर्मकरः–

मजदूरके नाम २–भरण्यभुज् १ कर्मकर २ ॥

–कर्मकारस्तु तत्क्रियः ।

विना मजूरीके भी जो कार्य कर दे उस पुरुषका नाम १–कर्मकार १ ॥

अपस्नातो मृतस्नात–

किसीके मरनेके अनन्तर स्नान किये हुए पुरुषके नाम २–अपस्नात १ मृतस्नात २ ॥

आमिषाशी तु शौष्कुलः॥१९॥

मांस खानेवाले पुरुषके नाम २–आमिषाशिन् १ शौष्कुल २ ॥ १९ ॥

बुभुक्षितः स्यात्क्षुधितो जिघत्सुरशनायितः ।

भूखे पुरुषके नाम ४–बुभुक्षित १ क्षुधित २ जिघत्सु ३ अशनायित ४ ॥

परान्नः परपिण्डादो–

जो पराये ही अन्नसे जीता हो उस पुरुषके नाम २–परान्न १ परपिण्डाद २ ॥

–भक्षको घस्मरोऽद्मरः ॥ २० ॥

खानेवालेके नाम ३–भक्षक १ घस्मर २ अद्मर ३ ॥ २० ॥

आद्यूनः स्यादौदरिको विजिगीषाविवर्जिते ॥

अत्यन्त ही भूखे पुरुषके नाम २–आद्यून १ औदरिक २ ॥

उभौ त्वात्मंभरिः कुक्षिंभरिः स्वोदरपूरके ॥ २१ ॥

पेटको ही भरनेवाले पुरुषके नाम २–आत्मम्भरि १ कुक्षिम्भरि २ ॥२१॥

सर्वान्नीनस्तु सर्वान्नभोजी–

जो सब वर्णोंका अन्न भोजन कर लेता हो उस पुरुषके नाम २–सर्वान्नीन १ सर्वान्नभोजिन् २ ॥

–गृध्नस्तु गर्धनः । लुब्धोऽभिलाषुकस्तृष्णक्–

लोभी पुरुषके नाम ५–गृध्न १ गर्धन २ लुब्ध ३ अभिलाषुक ४ तृष्णज् ५ ॥

–समौ लोलुपलोलुभौ ॥ २२ ॥

अतिलोभीके नाम २–लोलुप १ लोलुभ २ ॥ २२ ॥

सोन्मादस्तून्मदिष्णुः स्या–

उन्मत्तपुरुषके नाम २–सोन्माद १ उन्मदिष्णु २ ॥

–दविनीतः समुद्धतः ।

अन्यायी पुरुषके नाम २–अविनीत १ समुद्धत २ ॥

मत्ते शौण्डोत्कटक्षीबाः–

मतवालेके नाम ४–मत्त १ शौण्ड २ उत्कट ३ क्षीब ४ ॥

–कामुके कमिताऽनुकः ॥ २३ ॥

कम्रः कामयिताभीकः कमनः कामनोऽभिकः ।

कामीके नाम ९–कामुक १ कमितृ २ अनुक ३ ॥ २३ ॥ कम्र ४ कामयितृ ५ अभीक ६ कमन ७ कामन ८ अभिक ९ ॥

विधेयो विनयग्राही वचनेस्थित आश्रवः ॥ २४ ॥

वचन ग्रहण करनेवाले पुरुषके नाम ४–विधेय १ विनयग्राहिन् २ वचनेस्थित ३ आश्रव ४ ॥ २४ ॥

वश्यः प्रणेयो–

वशीभूतके नाम २–वश्य १ प्रणेय २ ॥

–निभृतविनीतप्रश्रिताः समाः ।

नम्र पुरुषके नाम ३–निभृत १ विनीत २ प्रश्रित ३ ॥

धृष्टे धृष्णग्वियातश्च–

धीठ पुरुषके नाम ३–धृष्ट १ धृष्णज् २ वियात ३ ॥

प्रगल्भः प्रतिभान्विते ॥ २५ ॥

अति धीठ निर्भर पुरुषके नाम २–प्रगल्भ १ प्रतिभान्वित २ ॥ २५ ॥

स्यादधृष्टे तु शालीनो–

लज्जावान् पुरुषके नाम २–अधृष्ट १ शालीन २ ॥

विलक्षो विस्मयान्विते ।

अचम्भेमें पड़े हुए पुरुषके नाम२–विलक्ष १ विस्मयान्वित २ ॥

अधीरे कातर–

व्याकुल हुए पुरुषके नाम२–अधीर १ कातर १ ॥

–स्त्रस्ते भीरुभीरुकभीलुकाः॥२६॥

डरपोकके नाम ४–त्रस्त १ भीरु२ भीरुक ३ भीलुक ४ ॥ २६ ॥

आशंसुराशंसितरि–

इष्ट अर्थप्राप्तिकी इच्छावाले पुरुषके नाम २–आशंसु १ आशंसितृ २ ॥

–गृहयालुर्ग्रहीतरि ।

लेनेके स्वभाववाले पुरुषके नाम२–गृहयालु १ ग्रहीतृ २ ॥

श्रद्धालुः श्रद्धया युक्ते–

श्रद्धायुक्त स्वभाववाले पुरुषका नाम १–श्रद्धालु १ ॥

–पतयालुस्तु पातुके ॥ २७ ॥

गिरनेके स्वभाववाले पुरुषके नाम २–पतयालु १ पातुक २ ॥ २७ ॥

लज्जाशीलेऽपत्रपिष्णु–

लज्जाशील पुरुषके नाम २–लज्जाशील १ अपत्रपिष्णु २ ॥

–वन्दारुरभिवादके ।

वन्दना करनेके स्वभाववाले पुरुषके नाम२–वन्दारु १ अभिवादक २ ॥

शरारुर्घातुको हिंस्रः–

हिंसा करनेके स्वभाववाले पुरुषके नाम ३–शरारु १ घातुक २ हिंस्र ३॥

–स्याद्वर्द्धिष्णुस्तु वर्धनः ॥२८॥

बढ़नेके स्वभाववाले पुरुषके नाम२–वार्द्धिष्णु १ वर्धन २ ॥ २८ ॥

उत्पतिष्णुस्तूत्पतिता–

कूदनेके स्वभाववालेके नाम २–उत्पतिष्णु १ उत्पतितृ २ ॥

–ऽलंकरिष्णुस्तु मण्डनः ।

भूषण आदि पहरनेके स्वभाववालेके नाम २–अलंकरिष्णु १ मंडन २ ॥

भूष्णुर्भविष्णुर्भविता–

होनेके स्वभाववालेके नाम ३–भूष्णु १ भविष्णु २ भवितृ ३ ॥

वर्तिष्णुर्वर्तनः समौ ॥ २९ ॥

बर्त्ताव करनेके स्वभाववालेके नाम २–वर्तिष्णु १ वर्त्तन २ ॥ २९ ॥

निराकरिष्णुः क्षिप्नुः स्यात्–

तिरस्कार करनेके स्वभाववालेके नाम २–निराकरिष्णु १ क्षिप्नु २ ॥

–सान्द्रस्निग्धस्तु मेदुरः ।

सघन और चिकनेका नाम १–मेदुर १ ॥ १ ॥

ज्ञाता तु विदुरो विन्दु–

जाननेके स्वभाववालेके नाम ३–ज्ञातृ १ विदुर २ विन्दु ३ ॥

विकासी तु विकस्वरः ॥ ३० ॥

खिलनेके स्वभाववालेके नाम २–विकासिन् १ विकस्वर २ ॥ ३० ॥

विसृत्वरो विसृमरः प्रसारी च विसारिणि ।

फलनेके स्वभाववालेके नाम ४–विसृत्वर १ विसृमर २ प्रसारिन् ३ विसारिन् ४ ॥

सहिष्णुः सहनः क्षन्ता तितिक्षुः क्षमिता क्षमी ॥ ३१ ॥

सहनशीलवालेके नाम ६–सहिष्णु १ सहन २ क्षन्तृ ३ तितिक्षु ४ क्षमितृ ५ क्षमिन् ६ ॥ ३१ ॥

क्रोधनोऽमर्षणः कोपी–

क्रोधके स्वभाववालेके नाम ३–क्रोधन १ अमर्षण २ कोपिन् ३ ॥

–चण्डस्त्वत्यन्तकोपनः ।

अत्यन्त क्रोधके स्वभाववालेके नाम २–चण्ड १ अत्यन्तकोपन २ ॥

जागरूको जागरिता–

जागनेके स्वभाववालेके नाम २–जागरूक १ जागरितृ २ ॥

–घूर्णितः प्रचलायितः ॥ ३२॥

घूरनेवालेके नाम २–घूर्णित १ प्रचलायित २ ॥ ३२ ॥

स्वप्नक्छयालुर्निद्रालु–

निद्रालुके नाम ३–स्वप्नज् १ शयालु २ निद्रालु ३ ॥

–निद्राणशयितौ समौ ।

शयन करनेवालेके नाम २–निद्राण १ शयित २ ॥

पराङ्मुखः पराचीनः–

विमुखके नाम २–पराङ्मुख १ पराचीन २ ॥

–स्यादवाङप्यधोमुखः ॥ ३३ ॥

नीचेको मुख करनेवालेके नाम २–अवाच् १ अधोमुख २ ॥ ३३ ॥

देवानञ्चति देवद्र्यङ्–

देवताओंकी पूजा करनेवालेका नाम १–देवद्र्यच् १ ॥

–विष्वद्र्यङ् विष्वगञ्चति ।

सब ओर जानेवालेका नाम १–विष्वद्र्यच् १ ॥

यः सहाञ्चति सध्र्यङ् सः–

साथ रहनेवालेका नाम १–सध्र्यच् १॥

–स तिर्यङ् यस्तिरोऽञ्चति ॥३४॥

टेढ़े चलनेवालेका नाम १–तिर्यच् १ ॥ ३४ ॥

वदो वदावदो वक्ता–

वक्ताके नाम ३–वद १ वदावद २ वक्तृ ३ ॥

–वागीशो वाक्पतिः समौ ।

चातुर्ययुक्त बोलनेवालेके नाम २–वागीश १ वाक्पति २ ॥

वाचोयुक्तिपटुर्वाग्मी वावदूकोऽतिवक्तरि ॥ ३५ ॥

शास्त्रानुसार अत्यन्त बोलनेवालेके नाम ४–वाचोयुक्तिपटु १ वाग्मिन् २ वावदूक ३ अतिवक्तृ ४ ॥ ३५ ॥

स्याज्जल्पाकस्तु वाचालो वाचाटो बहुगर्ह्यवाक् ।

अतिनिन्दित भाषण करनेवालेके नाम ४–जल्पाक १ वाचाल २ वाचाट ३ बहुगर्ह्यवाच् ४ ॥

दुर्मुखे मुखराबद्धमुखौ–

अप्रिय बोलनेवालेके नाम ३–दुर्मुख १ मुखर २ अबद्धमुख ३ ॥

शक्लः प्रियंवदे ॥ ३६ ॥

प्रिय बोलनेवालेके नाम २–शक्ल १ प्रियंवद २ ॥ ३६ ॥

लोहलः स्यादस्फुटवा–

जो स्फुट न बोलता हो उस पुरुषके नाम २–लोहल १ अस्फुटवाच् २ ॥

–ग्गर्ह्यवादी तु कद्वदः ।

निन्दित वाक्य बोलनेवाले पुरुषके नाम २–गर्ह्यवादिन् १ कद्वद २ ॥

समौ कुवादकुचरौ–

बुराई कहनेवालेके नाम २-कुवाद १ कुचर २ ॥

–स्यादसौम्यस्वरोऽस्वरः ॥३७॥

रूखे स्वरवालेके नाम २–असौम्यस्वर १ अस्वर २ ॥ ३७ ॥

रवणः शब्दनो–

चिल्लानेवालेके नाम २–रवण १ शब्दन २ ॥

–नान्दीवादी नान्दीकरः समौ ।

नान्दीवादी अर्थात् नाटकके आरम्भमें स्तुतिविशेष करनेवालेके नाम २–नान्दीवादिन् १ नान्दीकर २ ॥

जडोऽज्ञ–

महामूर्खके नाम २–जड १ अज्ञ २ ॥

–एडमूकस्तु वक्तुं श्रोतुमशिक्षिते ॥ ३८ ॥

जो गूंगा बहिरा दोनों हो उसका नाम १—एडमूक १ ॥ ३८ ॥

तूष्णींशीलस्तु तूष्णीको—

मौन रहनेवाले पुरुषके नाम २—तूष्णींशील १ तूष्णीक २ ॥

—नग्नोऽवासा दिगम्बरे ।

नग्न पुरुषके नाम ३—नग्न १ अवासस् २ दिगम्बर ३ ॥

निष्कासितोऽवकृष्टः स्या—

निकाले हुएके नाम २—निष्कासित १ अवकृष्ट २ ॥

—दपध्वस्तस्तुधिक्कृतः ॥ ३९ ॥

धिक्कार दिये हुए पुरुषके नाम २—अपध्वस्त १ धिक्कृत २ ॥ ३९ ॥

आत्तगर्वोऽभिभूतः स्या—

तिरस्कारको प्राप्त हुए पुरुषके नाम२—आत्तगर्व १ अभिभूत २ ॥

—द्दापितः साधितः समौ ।

धनादि दिलाकर वशमें किये हुए पुरुषके नाम२—दापित १ साधित २ ॥

प्रत्यादिष्टो निरस्तः स्यात्प्रत्याख्यातो निराकृतः ॥ ४० ॥

निरादरको प्राप्त हुए पुरुषके नाम ४—प्रत्यादिष्ट १ निरस्त २ प्रत्याख्यात ३ निराकृत ४ ॥ ४० ॥

निकृतः स्याद्विप्रकृतो—

बुरे रूपवालेके नाम २—निकृत १ विप्रकृत २ ॥

—विप्रलब्धस्तु वञ्चितः ।

ठगे हुए पुरुषके नाम२—विप्रलब्ध १ वञ्चित २ ॥

मनोहतः प्रतिहतः प्रतिबद्धो हतश्च सः ॥ ४१ ॥

मनोहत पुरुषके नाम४—मनोहत १ प्रतिहत २ प्रतिबद्ध ३ हत४ ॥ ४१ ॥

अधिक्षिप्तः प्रतिक्षिप्तो—

जिसके ऊपर आक्षेप किया गया हो उस पुरुषके नाम २—अधिक्षिप्त १ प्रतिक्षिप्त २ ॥

—बद्धे कीलितसयंतौ ।

बांधे हुएके नाम ३—बद्ध१कीलित२ संयत ३ ॥

आपन्न आपत्प्राप्तः स्यात्—

आपत्तिको प्राप्त हुए पुरुषके नाम २—आपन्न १ आपत्प्राप्त २ ॥

कांदिशीको भयद्रुतः ॥ ४२ ॥

भयसे भागे हुएके नाम २—कांदिशीक १ भयद्रुत २ ॥ ४२ ॥

आक्षारितः क्षारितोऽभिशस्ते—

मैथुनके निमित्त वृथा दोष लगाये हुए पुरुषके नाम ३—आक्षारित १ क्षारित २ अभिशस्त ३ ॥

–संकसुकोऽस्थिरे ।

चंचल स्वभाववाले पुरुषके नाम२–संकसुक १ अस्थिर २ ॥

व्यसनार्तोपरक्तौ द्वौ–

दैवी और मानुषी पीड़ासे युक्त पुरुषके नाम २–व्यसनार्त्त १ उपरक्त २ ॥

–विहस्तव्याकुलौ समौ ॥४३॥

शोकादिसे व्याकुल पुरुषके नाम २–विहस्त १ व्याकुल २ ॥ ४३ ॥

विक्लवो विह्वलः–

विकल पुरुषके नाम २–विक्लव १ विह्वल २

–स्यात्तु विवशोऽरिष्टदुष्टधीः ।

मरणके समीप आनेसे जिसकी बुद्धि विपरीत हो जाय उस पुरुषके नाम २–विवश १ अरिष्टदुष्टधी ॥२॥

कश्यः कशार्हे–

बेत मारने योग्यके नाम २–कश्य १ कशार्ह २ ॥

–सन्नद्धे त्वाततायी वधोद्यते४४

मारनेको उद्यतका नाम १–आततायिन् १ ॥ ४४ ॥

द्वेष्ये त्वक्षिगतो–

द्वेष करने लायकके नाम २–द्वेष्य १ आक्षिगत २ ॥

–वध्यः शीर्षच्छेद्य इमौ समौ ॥

शिर काटने योग्यके नाम २–वध्य १ शीर्षच्छेद्य २ ॥

विष्यो विषेण यो वध्यो–

विषकरके मारने योग्यका नाम १–विष्य १ ॥

–मुसल्यो मुसलेन यः॥ ४५ ॥

मुसलसे मारने योग्यका नाम १–मुसल्य १ ॥ ४५ ॥

शिशिवदानोऽकृष्णकर्मा–

पापकर्म न करनेवाले पुरुषके नाम २–शिशिवदान १ अकृष्णकर्मन् २ ॥

–चपलश्चिकुरः समौ ।

विना दोष विचारे मारनेवालेके नाम २–चपल १ चिकुर २ ॥

दोषैकदृक्पुरोभागी–

केवल दोषकी ही दृष्टि करनेवालेके नाम २–दोषैकदृश् १ पुरोभागिन् २॥

–निकृतस्त्वनृजुः शठः॥ ४६ ॥

कुटिलहृदयके नाम ३–निकृत १ अनृजु २ शठ ३ ॥ ४६ ॥

कर्णेजपः सूचकः स्यात्–

चुगलखोरके नाम २–कर्णेजप १ सूचक २ ॥

–पिशुनो दुर्जनः खलः ।

आपसमें भेद करानेवालेके नाम ३–पिशुन १ दुर्जन २ खल ३ ॥

नृशंसो घातुकः क्रूरः पापो–

घातक अथवा कठोर पुरुषके नाम ४-नृशंस १ घातुक २ क्रूर ३ पाप ४ ॥

–धूर्तस्तु वञ्चकः ॥ ४७ ॥

ठगके नाम २-धूर्त १ वञ्चक २॥४७॥

अज्ञे मूढयथाजातमूर्खवैधेयबालिशाः ।

मूर्खके नाम ६–अज्ञ १ मूढ २ यथाजात ३ मूर्ख ४ वैधेय ५ बालिश ६ ॥

कदर्ये कृपणक्षुद्रकिंपचानमितंपचाः ॥ ४८ ॥

कृपणके नाम ५–कदर्य १ कृपण २ क्षुद्र ३ किंपचान ४ मितम्पच ५॥४८॥

निःस्वस्तु दुर्विधो दीनो दरिद्रो दुर्गतोऽपि सः ।

दरिद्र पुरुषके नाम ५–निःस्व १ दुर्विध २ दीन ३ दरिद्र ४ दुर्गत ५ ॥

वनीयको याचनको मार्गणो याचकार्थिनौ ॥ ४९ ॥

मांगनेवालेके नाम ५–वनीयक १ याचनक २ मार्गण ३ याचक ४ अर्थिन् ५ ॥ ४९ ॥

अहंकारवानहंयुः–

अहंकारयुक्त पुरुषके नाम २–अहंकारवत् १ अहंयु २ ॥

–शुभंयुस्तु शुभान्वितः ।

शुभयुक्त पुरुषके नाम २–शुभंयु १ शुभान्वित २ ॥

दिव्योपपादुका देवा–

देवताओंका नाम १–दिव्योपपादुक १ ॥

–नृगवाद्या जरायुजाः ॥ ५० ॥

मनुष्य, गौ आदि 'जरायुज' कहलाते हैं ॥ ५० ॥

स्वेदजाः कृमिदंशाद्याः–

कीडा और डांस आदि 'स्वेदज' कहलाते हैं ॥

–पक्षिसर्पाद्योऽण्डजाः ।

पक्षी, सर्पादि 'अण्डज' कहलाते हैं ॥

(इति प्राणिवर्गः)

उद्भिदस्तरुगुल्माद्या–

वृक्ष, वेल, घास आदि 'उद्भिद्' कहलाते हैं ॥

उद्भिदुद्भिज्जमुद्भिदम् ॥ ५१ ॥

उद्भिद्के नाम ३–उद्भिद् १ उद्भिज्ज २ उद्भिद ३ ॥ ५१ ॥

सुन्दरं रुचिरं चारु सुषमं साधु शोभनम् । कांतं मनोरमं रुच्यं मनोज्ञं मञ्जु मञ्जुलम् ॥ ५२ ॥

सुन्दरके नाम १२–सुन्दर १ रुचिर २

चारु ३ सुषम ४ साधु ५ शोभन ६ कान्त ७ मनोरम ८ रुच्य ९ मनोज्ञ १० मञ्जु ११ मंजुल १२ ॥ ५२ ॥

तदासेचनकं तृप्तेर्नास्त्यन्तो यस्य दर्शनात् ।

जिसके देखनेसे तृप्तिके अन्तको प्राप्त न हो उसका नाम १—आसेचनक १ ॥

अभीष्टेऽभीप्सितं हृद्यं दयितं वल्लभं प्रियम् ॥ ५३ ॥

प्रियके नाम ६—अभीष्ट १ अभीप्सित २ हृद्य ३ दयित ४ वल्लभ ५ प्रिय ६ ॥ ५३ ॥

निकृष्टप्रतिकृष्टार्वरेफयाप्यावमाधमाः । कुपूयकुत्सितावद्यखेटगर्ह्याणकाः समाः ॥ ५४ ॥

अधमके नाम १३—निकृष्ट १ प्रतिकृष्ट २ अर्वन् ३ रेफ ४ याप्य ५ अवम ६ अधम ७ कुपूय ८ कुत्सित ९ अवद्य १० खेट ११ गर्ह्य १२ अणक १३॥५४॥

मलीमसं तु मलिनं कच्चरं मलदूषितम् ।

मलिनके नाम ४—मलीमस १ मलिन २ कच्चर ३ मलदूषित ४ ॥

पूतं पवित्रं मेध्यं च—

पवित्रके नाम ३—पूत १ पवित्र २ मेध्य ॥ ३ ॥

—वीध्रं तु विमलार्थकम् ॥५५॥

स्वभावसे निर्मलके नाम २—वीध्र १ विमलार्थक २ ॥ ५५ ॥

निर्णिक्तं शोधितं मृष्टं निःशोध्यमनवस्करम् ।

शुद्ध किये हुएके नाम ५—निर्णिक्त १ शोधित २ मृष्ट ३ निःशोध्य ४ अनवस्कर ५ ॥

—असारं फल्गु—

असार वस्तुके नाम २—असार १ फल्गु २ ॥

—शून्यं तु वशिकं तुच्छरिक्तके ॥ ५६ ॥

शून्यके नाम ४—शून्य १ वशिक २ तुच्छ ३ रिक्तक ४ ॥ ५६ ॥

क्लीबे प्रधानं प्रमुखप्रवेकानुत्तमोत्तमाः । मुख्यवर्यवरेण्याश्च प्रवर्होऽनवरार्ध्यवत् ॥ ५७ ॥ परार्ध्याग्रप्राग्रहरप्राग्र्याग्र्याग्रीयमग्रियम् ।

प्रधानके नाम १७—प्रधान १ प्रमुख २ प्रवेक ३ अनुत्तम ४ उत्तम ५ मुख्य ६ वर्य्य ७ वरेण्य ८ प्रवर्ह ९ अनवरार्ध्य १० ॥ ५७ ॥ परार्ध्य ११ अग्र १२ प्राग्रहर १३ प्राग्र्य १४ अग्र्य १५ अग्रीय १६ अग्रिय १७ ॥ ५७ ॥

श्रेयान् श्रेष्ठः पुष्कलः स्यात्सत्तमश्चातिशोभने ॥ ५८ ॥

अति सुन्दरके नाम ५ श्रेयस् १–श्रेष्ठ २ पुष्कल ३ सत्तम ४ अतिशोभन ५ ॥ ५८ ॥

स्युरुत्तरपदे व्याघ्रपुंगवर्षभकुञ्जराः । सिंहशार्दूलनागाद्याः पुंसि श्रेष्ठार्थगोचराः ॥ ५९ ॥

व्याघ्र, पुंगव, ऋषभ, कुञ्जर, सिंह, शार्दूल, नागादि शब्दोंके उत्तर आनेसे श्रेष्ठ अर्थके वाचक होते हैं जैसे पुरुषव्याघ्र, द्विजपुङ्गव इत्यादि ॥ ५९ ॥

अप्राग्र्यं द्वयहीने द्वे अप्रधानोपसर्जने ।

अप्रधानके नाम ३–अप्राग्र्य १ अप्रधान २ उपसर्जन ३ ॥

विशङ्कटं पृथु बृहद्विशालं पृथुलं महत् ॥ ६० ॥ वड्रोरुविपुलं–

चौड़ेके नाम ९–विशङ्कट १ पृथु २ बृहत् ३ विशाल ४ पृथुल ५ महत् ६ ॥ ६० ॥ वड्र ७ उरु ८ विपुल ९ ॥

–पीनपीव्नी तु स्थूलपीवरे ।

मोटेके नाम ४–पीन १ पीवन् २ स्थूल ३ पीवर ४ ॥

स्तोकाल्पक्षुल्लकाः सूक्ष्मं श्लक्ष्णं दभ्रं कृशं तनु ॥ ६१ ॥ स्त्रियां मात्रा त्रुटिः पुंसि लवलेशकणाणवः ।

थोड़ेके नाम १४–स्तोक १ अल्प २ क्षुल्लक ३ सूक्ष्म ४ श्लक्ष्ण ५ दभ्र ६ कृश ७ तनु ८ ॥ ६१ ॥ मात्रा ९ त्रुटि १० लव ११ लेश १२ कण १३ अणु १४ ॥

अत्यल्पेऽल्पिष्ठमल्पीयः कनीयोऽणीय इत्यपि ॥ ६२ ॥

अति अल्पके नाम ४–अल्पिष्ठ १ अल्पीयस् २ कनीयस् ३ अणीयस् ४ ॥ ६२ ॥

प्रभूतं प्रचुरं प्राज्यमदभ्रं बहुलं बहु । पुरुहूः पुरु भूयिष्ठं स्फारं भूयश्च भूरि च ॥ ६३ ॥

बहुतके नाम १२–प्रभूत १ प्रचुर २ प्राज्य ३ अदभ्र ४ बहुल ५ बहु ६ पुरुहू ७ पुरु ८ भूयिष्ठ ९ स्फार १० भूयस् ११ भूरि १२ ॥ ६३ ॥

परःशताद्यास्ते येषां परा संख्या शतादिकात् ।

जिनकी संख्या शतसे अर्थात् सहस्रादिसे अधिक हो वह परःशत आदि कहलाते हैं ।

गणनीये तु गणेयं–

गिननेयोग्य वस्तुके नाम २–गणनीय १ गणेय २ ॥

–संख्याते गणित–

गिने हुएके नाम २–संख्यात १ गणित २ ॥

-मथ समं सर्वम् ॥ ६४ ॥ विश्वमशेषं कृत्स्नं समस्तनिखिलाखिलानि निःशेषम् । समग्रं सकलं पूर्णमखण्डं स्यादनूनके ॥ ६५ ॥

सम्पूर्णके नाम १४–सम १ सर्व २ ॥६४॥ विश्व ३ अशेष ४ कृत्स्न ५ समस्त ६ निखिल ७ अखिल ८ निःशेष ९ समग्र १० सकल ११ पूर्ण १२ अखण्ड १३ अनूनक १४ ॥ ६५ ॥

घनं निरन्तरं सान्द्रं-

घनेके नाम ३–घन १ निरन्तर २ सान्द्र ३ ॥

-पेलवं विरलं तनु ।

–छितरे (छीदे) के नाम ३–पेलव १ विरल २ तनु ३ ॥

समीपे निकटासन्नसन्निकृष्ट-सनीडवत् ॥ ६६ ॥ सदेशाभ्याशसविधसमर्यादसवेशवत् । उपकण्ठान्तिकाभ्यर्णाभ्यग्रा अप्यभितोऽव्ययम् ॥ ६७ ॥

समीपके नाम १५–समीप १ निकट २ आसन्न ३ सन्निकृष्ट ४सनीड ५॥६६॥ सदेश ६ अभ्याश ७ सविध ८ समर्याद ९ सवेश १० उपकण्ठ११ अन्तिक१२ अभ्यर्ण १३ अभ्यग्र १४ अभितः १५ ॥ ६७ ॥

संसक्ते त्वव्यवहितमपदान्तरमित्यपि ।

मिले हुएके नाम ३–संसक्त१अव्यवहित २ अपदान्तर ३ ॥

नेदिष्ठमन्तिकतमं-

अतिसमीपके नाम २–नेदिष्ठ १ अन्तिकतम २ ॥

–स्याद्दूरं विप्रकृष्टकम् ॥६८॥

दूरके नाम २–दूर१विप्रकृष्ट२॥६८॥

दवीयश्च दविष्ठं च सुदूरं-

अत्यन्त दूरके नाम २–दवीयस् १ दविष्ठ २ सुदूर ३ ॥

–दीर्घमायतम् ।

लम्बेके नाम २–दीर्घ १आयत २॥

वर्तुलं निस्तलं वृत्तं-

गोलके नाम ३–वर्तुल १ निस्तल२ वृत्त ३ ॥

बन्धुरं तून्नतानतम् ॥ ६९ ॥

ऊँचेनीचेके नाम २–बन्धुर १ उन्नतानत २ ॥ ६९ ॥

उच्चप्रांशून्नतोदग्रोच्छ्रितास्तुङ्गे-

ऊंचेके नाम ६–उच्च १ प्रांशु२ उन्नत ३ उदग्र ४ उच्छ्रित ५तुङ्ग ६॥

–ऽथ वामने । न्यङ्नीचखर्वह्रस्वाः स्यु-

बौने पुरुषके नाम ५–वामन १ न्यक् २ नीच ३ खर्व ४ ह्रस्व ५ ॥

खाग्रेऽवनतानतम् ॥ ७० ॥

नमे हुएके नाम ३—अवाग्र १ अवनत २ आनत ३ ॥ ७० ॥

अरालं वृजिनं जिह्ममूर्मिमत्कुञ्चितं नतम् । आविद्धं कुटिलं भुग्नं वेल्लितं वक्रमित्यपि ॥ ७१ ॥

टेढ़ेके नाम ११—अराल १ वृजिन २ जिह्म ३ ऊर्मिमत् ४ कुञ्चित ५ नत ६ आविद्ध ७ कुटिल ८ भुग्न ९ वेल्लित १० वक्र ११ ॥ ७१ ॥

ऋजावजिह्मप्रगुणौ—

सीधेके नाम ३—ऋजु १ अजिह्म २ प्रगुण ३ ॥

—व्यस्ते त्वप्रगुणाकुलौ ।

व्याकुलके नाम ३—व्यस्त १ अप्रगुण २ आकुल ३ ॥

शाश्वतस्तु ध्रुवो नित्यसदातनसनातनाः ॥ ७२ ॥

नित्यके नाम ५—शाश्वत १ ध्रुव २ नित्य ३ सदातन ४ सनातन ५ ॥७२॥

स्थास्नुः स्थिरतरः स्थेया—

अतिस्थिरके नाम ३—स्थास्नु १ स्थिरतर २ स्थेयस् ३ ॥

—नेकरूपतया तु यः । कालव्यापी स कूटस्थः—

निश्चल रहनेवालेका नाम १—कूटस्थ १ ॥

—स्थावरो जङ्गमेतरः ॥ ७३ ॥

वृक्षादिकोंके नाम २—स्थावर १ जंगमेतर २ ॥ ७३ ॥

चरिष्णु जंगमचरं त्रसमिङ्गं चराचरम् ।

चलनेवालेके नाम ६—चरिष्णु १ जंगम २ चर ३ त्रस ४ इंग ५ चराचर ६ ॥

चलनं कम्पनं कम्प्रं चलं लोलं चलाचलम् ॥ ७४ ॥ चञ्चलं तरलं चैव पारिप्लवपरिप्लवे ।

कांपनेके नाम १०—चलन १ कंपन २ कम्प्र ३ चल ४ लोल ५ चलाचल ६ ॥ ७४ ॥ चञ्चल ७ तरल ८ पारिप्लव ९ परिप्लव १० ॥

अतिरिक्तः समधिको—

अधिकके नाम २—अतिरिक्त १ समधिक २ ॥

—दृढसंधिस्तु संहतः ॥७५॥

मिलापके नाम २—दृढसंधि १ संहत २ ॥ ७५ ॥

कर्कशं कठिनं क्रूरं कठोरं निष्ठुरं दृढम् ॥ जठरं मूर्तिमन्मूर्त—

कठिनके नाम ९—कर्कश १ कठिन २ क्रूर ३ कठोर ४ निष्ठुर ५ दृढ ६ जठर ७ मूर्तिमत् ८ मूर्त्त ९ ॥

—प्रवृद्धं प्रौढमेधितम् ॥ ७६ ॥

बढ़े हुएके नाम ३—प्रवृद्ध १ प्रौढ २ एधित ३ ॥ ७६ ॥

पुराणे प्रतनप्रत्नपुरातनचिरंतनाः ।

पुरानेके नाम ५—पुराण १ प्रतन २ प्रत्न ३ पुरातन ४ चिरन्तन ५ ॥

प्रत्यग्रोऽभिनवो नव्यो नवीनो नूतनो नवः ॥ ७७ ॥ नूत्नश्च—

नयेके नाम ७—प्रत्यग्र १ अभिनव २ नव्य ३ नवीन ४ नूतन ५ नव ६ ॥ ७७ ॥ नूत्न ७ ॥

सुकुमारं तु कोमलं मृदुलं मृदु ।

सुकुमारके नाम ४—सुकुमार १ कोमल २ मृदुल ३ मृदु ४ ॥

अन्वगन्वक्षमनुगेऽनुपदं क्लीबमव्ययम् ॥ ७८ ॥

पछिके नाम ४—अन्वक् १ अन्वक्ष २ अनुग ३ अनुपद ४ ॥ ७८ ॥

प्रत्यक्षं स्यादैन्द्रियक—

प्रत्यक्षके नाम २—प्रत्यक्ष १ ऐन्द्रियक २ ॥

—मप्रत्यक्षमतीन्द्रियम् ।

जो न दीखे उसके नाम २—अप्रत्यक्ष १ अतीन्द्रिय २ ॥

एकतानोऽनन्यवृत्तिरेकाग्रैकायनावपि ॥ ७९ ॥ अप्येकसर्गएकाग्र्याऽप्येकायनगतोऽपि सः॥

एकाग्रके नाम ७—एकतान १ अनन्यवृत्ति २ एकाग्र ३ एकायन ४ ॥ ७९ ॥ एकसर्ग ५ एकाग्र्य ६ एकायनगत ७ ॥

पुंस्यादिः पूर्वपौरस्त्यप्रथमाद्या—

पहिलेके नाम ५—आदि १ पूर्व २ पौरस्त्य ३ प्रथम ४ आद्य ५ ॥

—अथास्त्रियाम् ॥ ८० ॥ अन्तो जघन्यं चरममन्त्यपाश्चात्त्यपश्चिमाः ।

पिछलेके नाम ६—॥ ८० ॥ अन्त १ जघन्य २ चरम ३ अंत्य ४ पाश्चात्त्य ५ पश्चिम ६ ॥

मोघं निरर्थकं—

व्यर्थके नाम २—मोघ १ निरर्थक २ ॥

—स्पष्टं स्फुटं प्रव्यक्तमुल्बणम् ॥ ८१ ॥

स्पष्टके नाम ४—स्पष्ट १ स्फुट २ प्रव्यक्त ३ उल्बण ४ ॥ ८१ ॥

साधारणं तु सामान्य—

सामान्यके नाम २—साधारण १ सामान्य २ ॥

—मेकाकी त्वेक एककः ।

अकेलेके नाम ३—एकाकिन् १ एक २ एकक ३ ॥

भिन्नार्थका अन्यतर एकस्त्वो-ऽन्येतरावपि ॥ ८२ ॥

अन्यके नाम ६—भिन्न १ अन्यतर २ एक ३ त्व ४ अन्य ५ इतर६॥८२॥

उच्चावचं नैकभेद-

अनेक प्रकारके नाम२—उच्चावच१ नैकभेद २ ॥

-मुच्चण्डमविलम्बितम् ।

शीघ्रके नाम २—उच्चण्ड १ अवि-लंबित २ ॥

अरुंतुदस्तु मर्मस्पृ-

मर्मभेदके नाम २—अरुन्तुद १ मर्मस्पृश् २ ॥

-गबाधं तु निरर्गलम् ॥ ८३ ॥

जिसके कोई बाधा न हो उसके नाम २—अबाध १ निरर्गल २ ॥८३॥

प्रसव्यं प्रतिकूलं स्यादपसव्यम-पष्ठु च ।

विपरीतके नाम ४—प्रसव्य १ प्रति-कूल २ अपसव्य ३ अपष्ठु ४ ॥

वामं शरीरं सव्यं स्या-

बांये अंगका नाम १—सव्य १ ॥

-दपसव्यं तु दक्षिणम् ॥ ८४ ॥

दाहिने अंगका नाम १—अपसव्य १ ॥ ८४ ॥

संकटं ना तु संबाधः-

संकट (भीड़ मार्गआदि) के नाम २—संकट १ संबाध २ ॥

-कलिलं गहनं समे ।

जो बड़े ही दुःखसे प्राप्त होनेके योग्य हो उसके नाम २—कलिल१गहन२ ॥

संकीर्णे संकुलाकीर्णे-

नाना जातिके लोगोंके एकत्र बै-ठनेके नाम ३—संकीर्ण १ संकुल २ आकीर्ण ३ ॥

-मुण्डितं परिवापितम् ॥ ८५ ॥

मुण्डे हुएके नाम२—मुण्डित१ परि-वापित २ ॥ ८५ ॥

ग्रन्थितं सन्दितं दृब्धं-

गण्ठे हुएके नाम ३—ग्रन्थित १ संदित २ दृब्ध ३ ॥

-विसृतं विस्तृतं ततम् ।

फैले हुएके नाम ३—विसृत १ विस्तृत २ तत ३ ॥

अन्तर्गतं विस्मृतं स्यात्-

भूले हुएके नाम २—अंतर्गत १ विस्मृत २ ॥

-प्राप्तप्रणिहिते समे ॥ ८६ ॥

रक्खे हुएके नाम२—प्राप्त १ प्रणि-हित २ ॥ ८६ ॥

वेल्लितप्रेंखिताधूतचलिताकम्पि-ताधुते ।

थोड़ा कांपते हुएके नाम६—वेल्लित१

प्रेंखित २ आधूत ३ चलित ४ आकंपित ५ धुत ६ ॥

नुत्तनुन्नास्तनिष्ठ्यूताविद्धाक्षिप्तेरिताः समाः ॥ ८७ ॥

प्रेरितके नाम ७–नुत्त १ नुन्न २ अस्त ३ निष्ठ्यूत ४ आविद्ध ५ क्षिप्त ६ ईरित ॥ ७ ॥ ८७ ॥

परिक्षिप्तं तु निवृतं–

घेरे हुएके नाम २–परिक्षिप्त १ निवृत २ ॥

–मूषितं मुषितार्थकम् ।

चुराये हुएके नाम २–मूषित १ मुषित २ ॥

प्रवृद्धप्रसृते–

फैलनेके नाम २–प्रवृद्ध १ प्रसृत २ ॥

–न्यस्तनिसृष्टे–

फेंके हुएक नाम २–न्यस्त १ निसृष्ट २ ॥

–गुणिताहते ॥ ८८ ॥

गुणे हुएके नाम २–गुणित १ आहत २ ॥ ८८ ॥

निदिग्धोपचिते–

बढ़े हुएके नाम २–निदिग्ध १ उपचित २ ॥

–गूढगुप्ते–

छिपे हुएके नाम २–गूढ १ गुप्त २ ॥

–गुण्ठितरूषिते ।

धूलिसे सने हुएके नाम २–गुण्ठित १ रूषित २ ॥

द्रुतावदीर्णे–

द्रवीभूतके नाम २–द्रुत १ अवदीर्ण २ ॥

–उद्गूर्णोद्यते–

मारनेको उठाये हुए शस्त्रादिके नाम २–उद्गूर्ण १ उद्यत २ ॥

–काचितशिक्यिते ॥ ८९ ॥

छीकेपर धरी हुई वस्तुके नाम २–काचित १ शिक्यित २ ॥ ८९ ॥

–घ्राणघ्राते–

सूंघे हुएके नाम २–घ्राण १ घ्रात २ ॥

–दिग्धलिप्ते–

लीपे हुएके नाम २–दिग्ध १ लिप्त २ ॥

–समुदक्तोद्धृते–

कूपादिसे निकाले हुए जलादिके नाम २–समुदक्त १ उद्धृत २ ॥

–समे ।

उपरोक्त शब्द समानलिंग होते हैं ।

वेष्टितं स्याद्वलयितं संवीतं रुद्धमावृतम् ॥ ९० ॥

नदी आदिसे घेरे हुएके नाम ५–वेष्टित १ वलयित २ संवीत ३ रुद्ध ४ आवृत ५ ॥ ९० ॥

रुग्णं भुग्न-

टूटे हुएके नाम २--रुग्ण १ भुग्न २॥

--ऽथ निशितक्ष्णुतशाताानि तेजिते ।

तेज किये हुएके नाम ४--निशित १ क्ष्णुत २ शात ३ तेजित ४ ॥

स्याद्विनाशोन्मुखं पक्वं-

पके हुए मरने वा काटनेके योग्य वस्तुके नाम २--विनाशोन्मुख १ पक्व २॥

--ह्रीणह्रीतौ तु लज्जिते ॥ ९१ ॥

लज्जायुक्तके नाम ३--ह्रीण १ ह्रीत २ लज्जित ३ ॥ ९१ ॥

वृत्ते तु वृतव्यावृत्तौ-

वरण किये हुएके नाम ३--वृत्त १ वृत २ व्यावृत्त ३ ॥

--संयोजित उपाहितः ।

मिलाये हुएके नाम २--संयोजित १ उपाहित २ ॥

प्राप्यं गम्यं समासाद्यं-

प्राप्त करने योग्यके नाम ३--प्राप्य १ गम्य २ समासाद्य ३ ॥

--स्यन्नं रीणं स्नुतं स्रुतम् ॥ ९२ ॥

बहते हुएके नाम ४--स्यन्न १ रीण २ स्नुत ३ स्रुत ४ ॥ ९२ ॥

संगूढं स्यात्संकलितो-

जोड़े हुए अंकादिके नाम २--संगूढ १ संकलित २ ॥

--ऽवगीतः ख्यातगर्हणः ।

निन्दितके नाम २--अवगीत १ ख्यातगर्हण २ ॥

विविधः स्याद्बहुविधो नानारूपः पृथग्विधः ॥ ९३ ॥

विविध प्रकारके नाम ४--विविध १ बहुविध २ नानारूप ३ पृथग्विध ४ ॥ ९३ ॥

अवरीणो धिक्कृतश्चा-

धिक्कारे हुएके नाम २--अवरीण १ धिक्कृत २ ॥

--प्यवध्वस्तोऽवचूर्णितः ।

चूर्ण किये हुएके नाम २--अवध्वस्त १ अवचूर्णित २ ॥

अनायासकृतं फाण्टं-

अनायाससे किये क्वाथका नाम १--फाण्ट १ ॥

--स्वनितं ध्वनितं समे ॥ ९४ ॥

जिसने शब्द किया हो उसके नाम २--स्वनित १ ध्वनित २ ॥ ९४ ॥

बद्धे सन्दानितं मूतमुद्दितं संदितं सितम् ।

बँधे हुएके नाम ६--बद्ध १ सन्दानित २ मूत ३ मुद्दित ४ संदित ५ सित ६ ॥

निष्पक्वे क्वथितं-

अच्छी तरह पकाये हुए काढ़े आदिके नाम २--निष्पक्व १ क्वथित २ ॥

—पाके क्षीराज्यहविषां शृतम् ॥ ९५ ॥

पके हुए घृत, दुग्धादिका नाम १—शृत १ ॥ ९५ ॥

निर्वाणो मुनिवह्न्यादौ—

मुनि अग्नि आदिके मुक्त होनेका नाम १—निर्वाण १ ॥

—निर्वातस्तु गतेऽनिले ।

जब वायु न चलता हो उस समयका नाम १—निर्वात १ ॥

पक्कं परिणते—

पके हुएके नाम २—पक्क १ परिणत २ ॥

—गूनं हन्ने—

हगे हुएके नाम २—गून १ हन्न ॥

—मीढं तु मूत्रिते ॥ ९६ ॥

मूते हुएके नाम २—मीढ १ मूत्रित २ ॥ ९६ ॥

पुष्टं तु पुषितं—

पोषण किये हुएके नाम २—पुष्ट १ पुषित २ ॥

—सोढे क्षान्त—

सहे हुएके नाम २—सोढ १ क्षान्त २ ॥

—मुद्वान्तमुद्गते ।

·डाके हुए अन्नादिके नाम २—उद्वान्त १ उद्गत २ ॥

दान्तस्तु दमिते—

दमन किये वृषभ आदिके नाम २—दान्त १ दमित २ ॥

—शान्तः शमिते—

शमनको प्राप्त हुएके नाम २—शांत १ शमित २ ॥

—प्रार्थितेऽर्दितः ॥ ९७ ॥

मांगे हुएके नाम २—प्रार्थित १ अर्दित २ ॥ ९७ ॥

ज्ञप्तस्तु ज्ञपिते—

जाने हुएके नाम २—ज्ञप्त १ ज्ञपित २ ॥

—छन्नश्छादिते—

छायेके नाम २—छन्न १ छादित २ ॥

—पूजितेऽञ्चितः ।

पूजा किये गयेके नाम २—पूजित १ अञ्चित २ ॥

पूर्णस्तु पूरिते—

पूरेके नाम २—पूर्ण १ पूरित २ ॥

—क्लिष्टः क्लिशिते—

क्लेशितके नाम २—क्लिष्ट १ क्लिशित २ ॥

—ऽवसिते सितः ॥ ९८ ॥

समाप्तके नाम २—अवसित १ सित २ ॥ ९८ ॥

प्रुष्टप्लुष्टोषिता दग्धे—

जले हुएके नाम ४—प्रुष्ट १ प्लुष्ट २ उषित ३ दग्ध ४ ॥

—तष्टत्वष्टौ तनूकृते ।

सूक्ष्म किये गयेके नाम ३—तष्ट १ त्वष्ट २ तनूकृत ३ ॥

वेधितच्छिद्रितौ विद्धे-

छेदे हुएके नाम ३—वेधित १ छिद्रित २ विद्ध ३ ॥

-विन्नवित्तौ विचारिते ॥९९ ॥

विचारे हुएके नाम ३—विन्न १ वित्त २ विचारित ३ ॥ ९९ ॥

निष्प्रभे विगतारोकौ-

तेजरहितके नाम ३—निष्प्रभ १ विगत २ अरोक ३ ॥

-विलीने विद्रुतद्रुतौ ।

पिघल जानेके नाम ३—विलीन १ विद्रुत २ द्रुत ३ ॥

सिद्धे निर्वृत्तनिष्पन्नौ-

सिद्धके नाम ३—सिद्ध १ निर्वृत्त २ निष्पन्न ३ ॥

-दारिते भिन्नभेदितौ ॥१००॥

चीरे हुएके नाम ३—दारित १ भिन्न २ भेदित ३ ॥ १०० ॥

ऊतं स्यूतमुतं चेति त्रितयं तन्तुसंतते: ।

तंतुके विस्तारके नाम ३—ऊत १ स्यूत २ उत ३ ॥

स्यादर्हिते नमस्यितं नमसितमपचायितार्चितापचितम् ॥ १०१ ॥

पूजितके नाम ६—अर्हित १ नमस्यित २ नमसित ३ अपचायित ४ अर्चित ५ अपचित ६ ॥ १०१ ॥

वरिवसिते वरिवस्यितमुपासितं चोपचरितं च ।

सेवा किये गयेके नाम ४—वरिवसित १ वरिवस्यित २ उपासित ३ उपचरित ४ ॥

संतापितसंतप्तौ धूपितधूपायितौ च दूनश्च ॥ १०२ ॥

तपाये हुएके नाम ५—सन्तापित १ सन्तप्त २ धूपित ३ धूपायित ४ दून ५ ॥ १०२

हृष्टे मत्तस्तृप्तः प्रह्लन्नः प्रमुदितः प्रीतः ।

हर्षितके नाम ६—हृष्ट १ मत्त २ तृप्त ३ प्रह्लन्न ४ प्रमुदित ५ प्रीत ६॥

छिन्नं छातं लूनं कृत्तं दातं दितं छितं वृक्णम् ॥ १०३ ॥

काटे हुएके नाम ८—छिन्न १ छात २ लून ३ कृत्त ४ दात ५ दित ६ छित ७ वृक्ण ८ ॥ १०३ ॥

स्रस्तं ध्वस्तं भ्रष्टं स्कन्नं पन्नं च्युतं गलितम् ।

चुये हुएके नाम ७—स्रस्त १ ध्वस्त २ भ्रष्ट ३ स्कन्न ४ पन्न ५ च्युत ६ गलित ७॥

लब्धं प्राप्तं विन्नं भावितमासादितं च भूतं च ॥ १०४ ॥

पाये हुएके नाम ६--लब्ध १ प्राप्त २ विन्न ३ भावित ४ आसादित ५ भूत ६ ॥ १०४ ॥

अन्वेषितं गवेषितमन्विष्टं मार्गितं मृगितम् ।

ढूँढे हुएके नाम ५—अन्वेषित १ गवेषित २ अन्विष्ट ३ मार्गित ४ मृगित ५ ॥

आर्द्रं सार्द्रं क्लिन्नं तिमितं स्तिमितं समुन्नमुत्तं च ॥ १०५ ॥

भीजे हुएके नाम ७—आर्द्र १ सार्द्र २ क्लिन्न ३ तिमित ४ स्तिमित५ समुन्न ६ उत्त ७ ॥ १०५ ॥

त्रातं त्राणं रक्षितमवितं गोपायितं च गुप्तं च ।

रक्षा किये गयेके नाम ६—त्रात १ त्राण २ रक्षित ३ अवित ४ गोपायित ५ गुप्त ६ ॥

अवगणितमवमतावज्ञातेऽवमानितं च परिभूते ॥ १०६ ॥

अपमान किये गयेके नाम५—अवगणित १ अवमत २ अवज्ञात ३ अवमानित ४ परिभूत ५ ॥ १०६ ॥

त्यक्तं हीनं विधुतं समुज्झितं धूतमुत्सृष्टे ।

त्यागे हुएके नाम६—त्यक्त१ हीन २ विधुत ३ समुज्झित४धूत ५ उत्सृष्ट ६॥

उक्तं भाषितमुदितं जल्पितमाख्यातमभिहितं लपितम् ॥ १०७ ॥

कहे हुएके नाम ७—उक्त १ भाषित २ उदित ३ जल्पित ४ आख्यात ५ अभिहित ६ लपित ७ ॥ १०७ ॥

बुद्धं बुधितं मनितं विदितं प्रतिपन्नमवसितावगते ।

जाने गयेके नाम ७--बुद्ध १ बुधित २ मनित ३ विदित ४ प्रतिपन्न ५ अवसित ६ अवगत ७ ॥

ऊरीकृतमुररीकृतमंगीकृतमाश्रुतं प्रतिज्ञातम् ॥ १०८ ॥ संगीर्णविदितसंश्रुतसमाहितोपश्रुतोपगतम् ।

अंगकिार किये हुएके नाम ११—ऊरीकृत १ उररीकृत २ अंगीकृत ३ आश्रुत ४ प्रतिज्ञात ५ ॥ १०८ ॥ संगीर्ण ६ विदित ७ संश्रुत ८ समाहित ९ उपश्रुत १० उपगत ११ ॥

ईलितशस्तपणायितपनायितप्रणुतपणितपनितानि ॥ १०९ ॥ अवगीर्णवर्णिताभिष्टुतेडितानि स्तुतार्थानि ।

स्तुति किये गयेके नाम १२—ईलित १ शस्त २ पणायित ३ पनायित ४ प्रणुत ५ पणित ६ पनित ७॥ १०९॥ अवगीर्ण ८ वर्णित ९ अभिष्टुत १० ईडित ११ स्तुत १२ ॥

भक्षितचर्वितलीढप्रत्यवसित-गिलितखादितप्सातम् ॥ ११० ॥ अभ्यवहृतान्नजग्धग्रस्तग्लस्ताशितं भुक्ते ।

खाये गयेके नाम १४–भक्षित १ चर्वित २ लीढ ३ प्रत्यवसित ४ गिलित ५ खादित ६ प्सात ७ ॥ ११० ॥ अभ्यवहृत ८ अन्न ९ जग्ध १० ग्रस्त ११ ग्लस्त १२ अशित १३ भुक्त १४॥

क्षेपिष्ठक्षोदिष्ठप्रेष्ठवरिष्ठस्थविष्ठबंहिष्ठाः ॥ १११ ॥ क्षिप्रक्षुद्राभीप्सित-पृथुपीवरबहुलप्रकर्षार्थाः ।

अतिशय करके त्वरितका नाम–क्षेपिष्ठ १ ॥ अतिशय क्षुद्रका नाम–क्षोदिष्ठ १ ॥ अतिशय अभीप्सितका नाम–प्रेष्ठ १ ॥ अतिशय पृथुका नाम–वरिष्ठ १॥ अतिशय स्थूलका नाम–स्थविष्ठ १॥ अतिशय बहुलका नाम–बंहिष्ठ १ ॥ १११ ॥

साधिष्ठद्राघिष्ठस्फेष्ठगरिष्ठह्रसिष्ठ-वृन्दिष्ठाः ॥ ११२ ॥ बाढव्यायतबहुगुरुवामनवृन्दारकातिशये ।

अतिशय बाढका नाम–साधिष्ठ १॥ अतिशय दीर्घका नाम–द्राघिष्ठ १॥ अतिशय प्रचुरका नाम–स्फेष्ठ १॥ अतिशय गुरुका नाम–गरिष्ठ १॥ अतिशय ह्रस्वका नाम–ह्रसिष्ठ १॥ अतिशय वृन्दारकका नाम–वृन्दिष्ठ १ ॥ ११२ ॥

इति विशेष्यनिघ्नवर्गः ॥ १ ॥

अथ संकीर्णवर्गः २.

प्रकृतिप्रत्ययार्थाद्यैः संकीर्णे लिङ्गमुन्नयेत् ।

–प्रकृतिप्रत्यय आदिके अर्थोंके द्वारा संकीर्णवर्गमें लिंग जानने ॥

कर्म क्रिया–

क्रियाके नाम २–कर्मन् १ क्रिया २ ॥

–तत्सातत्ये गम्ये स्युरपरस्पराः ॥ १ ॥

अपरस्परोंके निरन्तर चलनेका नाम १–अपरस्पर १ ॥ १ ॥

साकल्यासंगवचने पारायणपरायणे ।

साकल्यके वचनका नाम १–पारायण १॥ आसंगके वचनका नाम १–परायण १ ॥

यदृच्छा स्वैरिता–

स्वतन्त्रताके नाम २–यदृच्छा १ स्वैरिता २ ॥

हेतुशून्या त्वास्या विलक्षणम् ॥ २ ॥

विना कारणकी स्थितिका नाम १—विलक्षण १ ॥ २ ॥

शमथस्तु शमः शान्ति—

शांतिके नाम ३—शमथ १ शम २ शांति ३ ॥

—र्दान्तिस्तु दमथो दमः ।

इंद्रियोंके रोकनेके नाम ३—दांति १ दमथ २ दम ३ ॥

अवदानं कर्मवृत्तं—

अच्छे कर्मके नाम २—अवदान १ कर्मवृत्त २ —

—काम्यदानं प्रवारणम् ॥ ३ ॥

कामना करके दान देनेके नाम २—काम्यदान १ प्रवारण २ ॥ ३ ॥

वशक्रिया संवननं—

वशीकरणके नाम २—वशक्रिया १ संवनन २ ॥

—मूलकर्म तु कार्मणम् ।

ओषधीकी जड़ आदिसे उच्चाटनके नाम २—मूलकर्म १ कार्मण २ ॥

विधूननं विधुवनं—

कांपनेके नाम २—विधूनन १ विधुवन २ ॥

—तर्पणं प्रीणनावनम् ॥ ४ ॥

तृप्तिके नाम ३—तर्पण १ प्रीणन २ अवन ३ ॥ ४ ॥

पर्याप्तिः स्यात्परित्राणं हस्तधारणमित्यपि ।

कोई किसीको मारता हो उसके रोक लेनेके अर्थ हाथ पकड़ लेनेके नाम ३—पर्याप्ति १ परित्राण २ हस्तधारण ३ ॥

सेवनं सीवनं स्यूति—

सीनेके नाम ३—सेवन १ सीवन २ स्यूति ३ ॥

विंदरः स्फुटनं भिदा ॥ ५ ॥

फूटनेके नाम ३—विदर १ स्फुटन २ भिदा ३ ॥ ५ ॥

आक्रोशनमभीषङ्गः—

गरियानेके नाम २—आक्रोशन १ अभीषङ्ग २ ॥

—संवेदो वेदना न ना ।

अनुभवज्ञानके नाम २—संवेद १ वेदना २ ॥

सम्मूर्च्छनमभिव्याप्ति—

सब ओरसे व्याप्तिके नाम २—सम्मूर्च्छन १ अभिव्याप्ति २ ॥

—र्याच्ञा भिक्षाऽर्थनार्दना ॥६॥

भीखके नाम ४—याच्ञा १ भिक्षा २ अर्थना ३ अर्दना ४ ॥ ६ ॥

वर्धनं छेदने—

काटनेके नाम २—वर्धन १ छेदन २ ॥

—ऽथ द्वे आनन्दनसभाजने । आप्रच्छन्न—

कुशल प्रश्न पूछनेसे उत्पन्न हुए आनन्दके नाम ३—आनन्दन १ सभाजन २ आप्रच्छन्न ३ ॥

—मथाम्नायः संप्रदायः—

गुरुके उत्तम परम्परा उपदेश करनेके नाम २—आम्नाय १ सम्प्रदाय २ ॥

—क्षये क्षिया ॥ ७ ॥

क्षय होनेके नाम २—क्षय १ क्षिया २ ॥ ७ ॥

ग्रहे ग्राहो—

लेनेके नाम २—ग्रह १ ग्राह २ ॥

—वशः कान्तौ—

इच्छाके नाम २—वश १ कांति २॥

—रक्षणस्त्राणे—

रक्षाके नाम २—रक्षण १ त्राण २ ॥

रणः क्वणे ।

शब्द करनेके नाम २—रण १ क्वण २ ॥

व्यधो वेधे—

छेदनेके नाम २—व्यध १ वेध २॥

—पचा पाके—

अन्नादि पकानेके नाम २—पचा १ पाक २ ॥

—हवो हूतौ—

बुलानेके नाम२—हव १ हूति २ ॥

—वरो वृतौ ॥ ८ ॥

वरदानके नाम२—वर१वृति २॥८॥

ओषः प्लोषे—

जलानेके नाम २—ओष १प्लोष२॥

—नयो नाये—

नीतिके नाम २—नय १नाय २ ॥

—ज्यानिर्जीर्णौ—

जीर्णताके नाम २—ज्यानि १ जीर्ण २ ॥

—भ्रमो भ्रमौ ।

भ्रमके नाम २—भ्रम १ भ्रमि २ ॥

स्फातिर्वृद्धौ—

बढ़तीके नाम२—स्फाति१वृद्धि २ ॥

—प्रथा ख्यातौ—

प्रसिद्धताके नाम २—प्रथा १ ख्याति २ ॥

—स्पृष्टिः पृक्तौ—

छूनेके नाम २—स्पृष्टि १ पृक्ति २॥

—स्नवः स्रवे ॥ ९ ॥

झरनेके नाम—२ स्नव १ स्रव२॥९॥

एधा समृद्धौ—

वृद्धिके नाम २—एधा १ समृद्धि२॥

—स्फुरणे स्फुरणा—

फड़कनेके नाम २—स्फुरण १ स्फुरणा २ ॥

—प्रमितौ प्रमा ।

यथार्थज्ञानके नाम २—प्रमिति १ प्रमा २ ॥

प्रसूतिः प्रसवे-

जन्म होनेके नाम २-प्रसूति १ प्रसव २ ॥

-च्योते प्राघारः-

घृतादिके चुअनेके नाम२-च्योत १ प्राघार २ ॥

-क्लमथः क्लमे ॥ १० ॥

ग्लानिके नाम २-क्लमथ १ क्लम २ ॥ १० ॥

उत्कर्षोऽतिशये-

प्रकर्षके नाम २-उत्कर्ष १ अतिशय २ ॥

-संधिः श्लेषे-

मिलापके नाम २-संधि १ श्लेष २

-विषय आश्रये।

आश्रयके नाम २-विषय १ आश्रय २ ।

क्षिपायां क्षेपणं-

फेंकने (प्रेरणे)के नाम २-क्षिपा १ क्षेपण २ ॥

-गीर्णिगिरौ-

लीलने (निगलने) के नाम२-गीर्णि १ गिरि २ ॥

-गुरणमुद्यमे ॥ ११ ॥

उद्यमके नाम २-गुरण १ उद्यम २ ॥ ११ ॥

उन्नाय उन्नये-

ऊपरको ले जानेके नाम २-उन्नाय १ उन्नय २ ॥

-श्रायः श्रयणे-

सेवाके नाम२-श्राय १ श्रयण २॥

-जयने जयः।

जीतके नाम२-जयन १ जय २ ॥

निगादो निगदे-

कहनेके नाम२-निगाद१निगद२॥

-मादो मद-

हर्षके नाम २-माद १ मद २ ॥

-उद्वेग उद्भ्रमे ॥ १२ ॥

घबड़ानेके नाम २-उद्वेग १ उद्भ्रम २ ॥ १२ ॥

विमर्दनं परिमले-

कुंकुम आदि मर्दनके नाम२-विमर्दन १ परिमल २ ॥

-ऽभ्युपपत्तिरनुग्रहः।

हित करने, अहित हटानेकी प्रवृत्तिके नाम २-अभ्युपपत्ति ? अनुग्रह २ ॥

निग्रहस्तद्विरुद्धः स्या-

अनुग्रहसे विपरीतका नाम १-निग्रह १ ॥

-दभियोगस्त्वभिग्रहः ॥ १३ ॥

लड़ाईमें ललकारनेके नाम २-अभियोग १ आभिग्रह २ ॥ १३ ॥

मुष्टिबन्धस्तु संग्राहो-

मूठीसे दृढ़ पकड़नेके नाम २-मुष्टिबन्ध १ संग्राह २ ॥

-डिम्बे डमरविप्लवौ ।

मनुष्योंके लूटनेके नाम ३-डिम्ब १ डमर २ विप्लव ३ ॥

बन्धनं प्रसितिश्चारः-

बांधनेके नाम ३-बन्धन १ प्रसिति २ चार ३ ॥

-स्पर्शः स्प्रष्टोपतप्तरि ॥ १४ ॥

सन्तापको प्राप्त हुए पुरुषके नाम ३-स्पर्श १ स्पष्ट २ उपतप्तृ ३ ॥ १४ ॥

निकारो विप्रकारः स्या-

अपकारके नाम २-निकार १ विप्रकार २ ॥

-दाकारस्त्विंग इंगितम् ।

अभिप्रायके अनुसार चेष्टाके नाम ३-आकार १ इङ्ग २ इंगित ३ ॥

परिणामो विकारो द्वे समे विकृतिविक्रिये ॥ १५ ॥

प्रकृति बदल जानेके नाम ४-परिणाम १ विकार २ विकृति ३ विक्रिया ४ ॥ १५ ॥

अपहारस्त्वपचयः-

अपहरणके नाम २ -अपहार १ अपचय २ ॥

-समाहारः समुच्चयः ।

बटोरनेके नाम २-समाहार १ समुच्चय २ ॥

प्रत्याहार उपादानं-

इंन्द्रियोंके खींचनेके नाम २-प्रत्याहार १ उपादान २ ॥

-विहारस्तु परिक्रमः ॥ १६ ॥

खेलनेमें पैदल चलनेके नाम २-विहार १ परिक्रम २ ॥ १६ ॥

अभिहारोऽभिग्रहणं-

चोरी करनेके नाम २-अभिहार १ अभिग्रहण २ ॥

-निर्हारोऽभ्यवकर्षणम् ।

युक्तिपूर्वक शस्त्रादि निकालनेके नाम २-निर्हार १ अभ्यवकर्षण २ ॥

अनुहारोऽनुकारः स्या-

बिडम्बना अर्थात नकल करनेके नाम २-अनुहार १ अनुकार २ ॥

-दर्थस्यापगमे व्ययः ॥ १७ ॥

खर्च करनेका नाम १-व्यय १ ॥ १७ ॥

प्रवाहस्तु प्रवृत्तिः स्यात्-

जलआदिकी निरन्तर गतिके नाम २-प्रवाह १ प्रवृत्ति २ ॥

-प्रवहो गमनं बहिः ।

बाहर जानेका नाम १-प्रवह १ ॥

वियामो वियमो यामो यमः संयामसंयमौ ॥ १८ ॥

संयमके नाम ६–वियाम १ वियम २ याम ३ यम ४ संयाम ५ संयम ६ ॥ १८ ॥

हिंसाकर्माभिचारः स्या–

मार डालनेके नाम २–हिंसाकर्म १ अभिचार २ ॥

जागर्या जागरा द्वयोः ।

जागनेके नाम २–जागर्या १ जागरा २ ।

विघ्नोऽन्तरायः प्रत्यूहः–

विघ्नके नाम ३–विघ्न १ अन्तराय २ प्रत्यूह ३ ॥

–स्यादुपघ्नोऽन्तिकाश्रये ॥ १९ ॥

समीपके आश्रयके नाम २–उपघ्न १ अन्तिकाश्रय २ ॥ १९ ॥

निर्वेश उपभोगः स्या–

उपभोगके नाम २–निर्वेश १ उपभोग २ ॥

–त्परिसर्पः परिक्रिया ।

परिवारके घेरनेके नाम २–परिसर्प १ परिक्रिया २ ॥

विधुरं तु प्रविश्लेषो–

अत्यन्त वियोगके नाम २–विधुर १ प्रविश्लेष २ ॥

–ऽभिप्रायश्छन्द आशयः ॥ २० ॥

अभिप्राय अर्थात् मनकी बातके नाम ३–अभिप्राय १ छन्द २ आशय ३ ॥ २० ॥

संक्षेपणं समसनं–

संक्षेपके नाम २–संक्षेपण १ समसन २ ॥

–पर्यवस्था विरोधनम् ।

विरोधके नाम २–पर्यवस्था १ विरोधन २ ॥

परिसर्या परीसारः–

सब ओर गमन करनेके नाम २–परिसर्या १ परीसार २ ॥

स्यादास्या त्वासना स्थितिः ॥ २१ ॥

आसनस्थितिके नाम ३–आस्या १ आसना २ स्थिति ३ ॥ २१ ॥

विस्तारो विग्रहो व्यासः–

विस्तारके नाम ३–विस्तार १ विग्रह २ व्यास ३ ॥

स च शब्दस्य विस्तरः ।

शब्दके विस्तारका नाम १–विस्तर १ ॥

संवाहनं मर्दनं–

पांव आदिके दाबनेके नाम २–संवाहन १ मर्दन २ ॥

–स्याद्विनाशः स्याददर्शनम् ॥ २२ ॥

न देख पड़नेके नाम २–विनाश १ अदर्शन २ ॥ २२ ॥

संस्तवः स्यात्परिचयः–

जान पहिचानके नाम २–संस्तव १ परिचय २ ॥

–प्रसरस्तु विसर्पणम् ।

फँसनेके नाम २–प्रसर १ विसर्पण २ ॥

नीवाकस्तु प्रयामः स्यात्–

धन धान्यादिके बटोरनेके नाम २–नीवाक १ प्रयाम २ ॥

–संनिधिः संनिकर्षणम् ॥२३॥

पडोस (निकट) के नाम २–संनिधि १ संनिकर्षण २ ॥ २३ ॥

लवोऽभिलावो लवने–

काटनेके नाम ३–लव १ अभिलाव २ लवन ३ ॥

–निष्पावः पवने पवः ।

अन्नादि पछोरने (बरसाने) आदिके नाम ३–निष्पाव १ पवन २ पव ३॥

प्रस्तावः स्यादवसर–

प्रसंगके नाम २–प्रस्ताव १अवसर२

–स्त्रसरः सूत्रवेष्टनम् ॥ २४ ॥

जुलाहे लोग जिस तरह सूत्रको लटते हैं उस क्रियाके नाम २–त्रसर १ सूत्रवेष्टन २ ॥ २४ ॥

प्रजनः स्यादुपसरः–

गर्भिणी होनेके नाम २–प्रजन १ उपसर २ ॥

–प्रश्रयप्रणयौ समौ।

प्रेमके नाम २–प्रश्रय १प्रणय २ ॥

धीशक्तिर्निष्क्रमो–

धी (बुद्धि) शक्तिके नाम २–धीशक्ति १ निष्क्रम २ ॥

–ऽस्त्री तु संक्रमो दुर्गसंचरः ॥ २५ ॥

कठिन रास्तेके नाम २–संक्रम १ दुर्गसंचर २ ॥ २५ ॥

प्रत्युत्क्रमः प्रयोगार्थः–

युद्धके अर्थ तैयारी करनेके नाम २–प्रत्युत्क्रम १ प्रयोगार्थ २ ॥

–प्रक्रमः स्यादुपक्रमः । स्यादभ्यादानमुद्घात आरम्भः–

आरम्भमात्रके नाम ५–प्रक्रम १ उपक्रम २ अभ्यादान ३ उद्घात ४ आरम्भ ५ ॥

–संभ्रमस्त्वरा ॥ २६ ॥

वेगके नाम २–संभ्रम १ त्वरा २ ॥ २६ ॥

प्रतिबन्धः प्रतिष्टम्भो–

कार्य रुक जानेके नाम २–प्रतिबन्ध १ प्रतिष्टम्भ २ ॥

–ऽवनायस्तु निपातनम् ।

गिरनेके नाम २–अवनाय १ निपातन २ ॥

उपलम्भस्त्वनुभवः–

साक्षात् करनेके नाम२–उपलम्भ १ अनुभव २ ॥

-समालम्भो विलेपनम् ॥२७॥

चन्दनादिके लेपनके नाम २-समालम्भ १ विलेपन २ ॥ २७ ॥

विप्रलम्भो विप्रयोगो-

वियोगके नाम २-विप्रलम्भ १ विप्रयोग २ ॥

-विलम्भस्त्वतिसर्जनम् ।

दानके नाम २-विलम्भ १ अतिसर्जन २ ॥

विश्रावस्तु प्रतिख्याति-

अतिप्रसिद्धिके नाम २-विश्राव १ प्रतिख्याति २ ॥

-रवेक्षा प्रतिजागरः ॥ २८ ॥

वस्तुओंके देखनेके नाम २-अवेक्षा १ प्रतिजागर २ ॥ २८ ॥

निपाठनिपठौ पाठे-

पढ़नेके नाम ३-निपाठ १ निपठ २ पाठ ३ ॥

-तेमस्तेमौ समुन्दने ।

गीला होनेके नाम ३-तेम १ स्तेम २ समुन्दन ३ ॥

आदीनवास्रवौ क्लेशे-

क्लेशके नाम ३-आदीनव १ आस्रव २ क्लेश ३ ॥

-मेलके सङ्गसङ्गमौ ॥ २९ ॥

मेलके नाम ३-मेलक १ संग २ संगम ३ ॥ २९ ॥

संवीक्षणं विचयनं मार्गणं मृगणा मृगः ।

अच्छेप्रकार ढूंढ़नेके नाम ५-संवीक्षण १ विचयन २ मार्गण ३ मृगणा ४ मृग ५ ॥

परिरम्भः परिष्वंगः संश्लेष उपगूहनम् ॥ ३० ॥

प्रेमपूर्वक लिपट जानेके नाम ४-परिरम्भ १ परिष्वंग २ संश्लेष ३ उपगूहन ४ ॥ ३० ॥

निर्वर्णनं तु निध्यानं दर्शनालोकनेक्षणम् ।

देखनेके नाम ५-निर्वर्णन १ निध्यान २ दर्शन ३ आलोकन ४ ईक्षण ५ ॥

प्रत्याख्यानं निरसनं प्रत्यादेशो निराकृतिः ॥ ३१ ॥

निराकरणके नाम ४-प्रत्याख्यान १ निरसन २ प्रत्यादेश ३ निराकृति ४ ॥ ३१ ॥

उपशायो विशायश्च पर्यायशयनार्थकौ ।

अनुक्रमसे पहरेपर जागने सोनेवालेके नाम २-उपशाय १ विशाय २ ॥

अर्तनं च ऋतीया च हृणीया च घृणार्थकाः ॥ ३२ ॥

करुणा वा घिनानेके नाम ४-अर्तन १ ऋतीया, हृणीया ३ घृणा ४ ॥ ३२ ॥

स्याद्व्यत्यासो विपर्यासो व्यत्ययश्च विपर्यये ।

विपरीतके नाम ४—व्यत्यास १ विपर्यास २ व्यत्यय ३ विपर्यय ४ ॥

पर्ययोऽतिक्रमस्तस्मिन्नतिपात उपात्ययः ॥ ३३ ॥

किञ्चित् विपरीतके नाम ४—पर्यय १ अतिक्रम २ अतिपात ३ उपात्यय ४ ॥ ॥ ३३ ॥

प्रेषणं यत्समाहूय तत्र स्यात्प्रतिशासनम् ।

टहलू आदिको बुलाकर भेजनेका नाम १—प्रतिशासन १ ॥

स संस्तावः क्रतुषु या स्तुतिभूमिर्द्विजन्मनाम् ॥ ३४ ॥

यज्ञमें ब्राह्मणोंके स्तवनभूमिका नाम १—संस्ताव १ ॥ ३४ ॥

निधाय तक्ष्यते यत्र काष्ठे काष्ठं स उद्घनः ।

बहंटन बठिहा(जिसके ऊपर काष्ठ धरा जाता है) का नाम १—उद्घन १ ॥

स्तम्बघ्नस्तु स्तम्बघनः स्तम्बो येन निहन्यते ॥ ३५ ॥

खुरपा आदिके नाम २—स्तम्बघ्न १ स्तम्बघन २ ॥ ३५ ॥

आविधो विध्यते येन—

बरमेका नाम १—आविध १ ॥

—तत्र विष्वक्समे निघः ।

बराबर जमे हुए वृक्षादिकोंका नाम १—निघ १ ॥

उत्कारश्च निकारश्च द्वौ धान्योत्क्षेपणार्थकौ ॥ ३६ ॥

अनाज आदि निकालनेके नाम २—उत्कार १ निकार २ ॥ ३६ ॥

निगारोद्गारविक्षावोद्ग्राहास्तु गरणादिषु ।

खानेका नाम—निगार १ ॥
उलटी करनेका नाम—उद्गार १ ॥
छींकनेका नाम—विक्षाव १ ॥
डकारका नाम—उद्ग्राह १ ॥

आरत्यवरतिविरतय उपरामे—

उपरामके नाम ४—आरति १ अवरति २ विरति ३ उपराम ४ ॥

—ऽथास्त्रियां तु निष्ठेवः ॥ ३७ ॥ निष्ठ्यूतिर्निष्ठेवनं निष्ठीवनमित्यभिन्नानि ।

थूकनेके नाम ४—निष्ठेव १ ॥ ३७ ॥ निष्ठ्यूति २ निष्ठेवन ३ निष्ठीवन ४ ॥

जवने जूतिः—

वेगके नाम २—जवन १ जूति २ ॥

—सातिस्त्ववसाने स्या—

अन्तके नाम २—साति १ अवसान २ ॥

—दथ ज्वरे जूर्तिः ॥ ३८ ॥

ज्वरके नाम २—ज्वर १ जूर्ति २॥ ॥ ३८ ॥

उद्जस्तु पशुप्रेरण—

पशुओंके हांकनेका नाम १—उदज १॥

—मकरणिरित्यादयः शापे ।

शापका नाम १—अकराणि १ इत्यादि ।

गोत्रान्तेभ्यस्तस्य वृन्दमित्यौपगवकादिकम् ॥ ३९ ॥

जिसके समीप गाये हों उसके समूहका नाम १—औपगवक १॥३९॥

आपूपिकं शाष्कुलिकमेवमाद्यमचेतसाम् ।

पूओंके समूहका नाम—आपूपिक १॥ पूरियोंके समूहका नाम—शाष्कुलिक १ आदि ॥

माणवानां तु माणव्यं—

लड़कोंके समूहका नाम १—माणव्य १॥

सहायानां सहायता ॥ ४० ॥

मित्रोंके समूहका नाम १—सहायता १ ॥ ४० ॥

हल्या हलानां—

हलोंके समूहका नाम १—हल्या १॥

—ब्राह्मण्यवाडव्ये तु द्विजन्मनाम् ।

ब्राह्मणोंके समूहके नाम २—ब्राह्मण्य १ वाडव्य २ ॥

द्वे पर्शुकानां पृष्ठानां पार्श्वं पृष्ठ्यमनुक्रमात् ॥ ४१ ॥

पांसलियोंके समूहका नाम १—पार्श्व १ ॥ पीठके समूहका नाम १—पृष्ठ्य १ ॥ ४१ ॥

खलानां खलिनी खल्या—

खलोंके समूहका नाम २—खलिनी १ खल्या २ ॥

—ऽप्यथ मानुष्यकं नृणाम् ।

मनुष्योंके समूहका नाम १—मानुष्यक १ ॥

ग्रामता जनता धूम्या पाश्या गल्या पृथक्पृथक् ॥

ग्रामोंके समूहका नाम—ग्रामता १॥ जनोंके समूहका नाम—जनता १ ॥ धूमके समूहका नाम—धूम्या १ ॥ फांसियोंके समूहका नाम—पाश्या १ ॥ बडेकाशोंके स० ना०—गल्या १॥

अपि साहस्रकारीषवार्मणाथर्वणादिकम् ॥ ४२ ॥

सहस्रके समूहका नाम—साहस्र १॥ करसीके समूहका नाम—कारीष १॥ कवचोंके समूहका नाम—वार्मण १॥ चमडोंके समूहका नाम—चार्मण १॥ अथर्वणोंके समूहका नाम—आथर्वण १ ॥४२॥

॥ इति संकीर्णवर्गः ॥ २ ॥

अथ नानार्थवर्गः ३.

नानार्थाः केऽपि कान्तादिवर्गेष्वेवात्र कीर्तिताः । भूरिप्रयोगा ये येषु पर्यायेष्वपि तेषु ते ॥ १ ॥

कोई ककारान्तादि नानार्थके शब्द पूर्वोक्तवर्गोंमें कह चुके हैं, परन्तु उनका पूर्वोक्तवर्गोंमें जो प्रयोग किया है सो जिस अर्थमें जो शब्द अधिक आता है उस एक ही अर्थमें कहा है, अब उन्हीं पूर्वोक्त वर्गोंमें कहे हुए शब्दोंके यहां अनेक अर्थ वर्णन करते हैं ॥१ ॥

आकाशे त्रिदिवे नाको-

नाक—आकाश तथा स्वर्ग ॥

लोकस्तु भुवने जने ।

लोक—स्वर्गादि लोक तथा जन ॥

पद्ये यशसि च श्लोकः-

श्लोक—अनुष्टुबादि पद्य तथा कीर्ति ॥

-शरे खड्गे च सायकः ॥ २ ॥

सायक—तीर तथा तलवार ॥ २ ॥

जम्बुकौ क्रोष्टुवरुणौ-

ज़म्बुक—शृगाल तथा वरुण ॥

-पृथुकौ चिपिटार्भकौ ।

पृथुक—चिवड़ा तथा बालक ॥

आलोकौ दर्शनद्योतौ-

आलोक—दर्शन तथा प्रकाश ॥

-भेरी पटहमानकौ ॥ ३ ॥

आनक—भेरी तथा नगाड़ा ॥ ३ ॥

उत्सङ्गचिह्नयोरङ्कः-

अंक-गोदी तथा चिह्न ॥

-कलंकोऽङ्कापवादयोः ।

कलंक—चिह्न तथा लांछन ॥

तक्षको नागवर्धक्यो-

तक्षक—सर्प तथा बढ़ई ॥

-रर्कः स्फटिकसूर्ययोः ॥ ४ ॥

अर्क—स्फटिक मणि तथा सूर्य ॥४॥

मारुते वेधसि ब्रध्ने पुंसि कः कं शिरोऽम्बुनोः ॥

क—(पुँल्लिङ्ग) वायु, ब्रह्मा, सूर्य ।
क—(नपुं.) शिर तथा जल ॥

स्यात्पुलाकस्तुच्छधान्ये संक्षेपे भक्तसिक्थके ॥ ५ ॥

पुलाक—धानकी भूसी, संक्षेप तथा भातका सीत ॥ ५ ॥

उलूके करिणः पुच्छमूलोपान्ते च पेचकः ।

पेचक—उल्लूपक्षी तथा हाथीके पुरीषद्वारका आच्छादक मांस ॥

कमण्डलौ च करकः-

करक—बनौरी (ओला) जो कभी कभी पानीके संग बरसती है तथा अनारफल ।

-सुगते च विनायकः ॥ ६ ॥

विनायक—बुद्ध, गणेश तथा गरुड ॥ ६ ॥

किष्कुर्हस्ते वितस्तौ च-

किष्कु-हाथ तथा वितस्ति ॥

-शूककीटे च वृश्चिकः ॥

वृश्चिक-विच्छू तथा आठवीं राशि ॥

प्रतिकूले प्रतीकस्त्रिष्वेकदेशे तु पुंस्ययस् ॥ ७ ॥

प्रतीक-प्रतिकूल ॥ ७ ॥

स्याद्भूतिकं तु भूनिम्बे कत्तृणे भूस्तृणेऽपि च ।

भूतिक-चिरायता (ओषधि) और गन्ध (तृणविशेष) ॥

ज्योत्स्निकायां च घोषे च कोशातक्य-

कोशातकी-एक प्रकारका फल परवर, तरकारी तथा चिचिड़ा वृक्ष ॥

-थ कट्फले ॥ ८ ॥ सिते च खदिरे सोमवल्कः स्या-

सोमवल्क-सफेद खैर तथा कायफल औषध ॥ ८ ॥

-द्थ सिह्लके । तिलकल्के च पिण्याको-

पिण्याक-सिल्क तथा तिलकी खरी ॥

-बाह्लीकं रामठेऽपि च ॥ ९ ॥

वाह्लीक-रामठहींग तथा बाह्लीकदेशमें होनेवाला अश्व ॥ ९ ॥

महेन्द्रगुग्गुलूलूकव्यालग्राहिषु कौशिकः ।

कौशिक-इन्द्र, गुग्गुल, उल्लू पक्षी तथा सांपका पकड़नेवाला ॥

रुक्तापशङ्कास्वातंकः-

आतंक-रोग, ताप तथा शंका ॥

-स्वल्पेऽपि क्षुल्लकस्त्रिषु ॥ १० ॥

क्षुल्लक-छोटा तथा बीच, कनिष्ठ और दरिद्र ॥ १० ॥

जैवातृकः शशांकेऽपि-

जैवातृक-चन्द्रमा तथा दीर्घायु पुरुष ॥

-खुरेऽप्यश्वस्य वर्तकः ।

वर्तक-घोड़ेके खुर तथा पक्षी ॥

व्याघ्रेऽपि पुण्डरीको ना-

पुण्डरीक-व्याघ्र, दिग्गज तथा श्वेत कमल ॥

-यवान्यामपि दीपकः ॥ ११ ॥

दीपक-दीया तथा मोरकी चोटी ॥ ११ ॥

शालावृकाः कपिक्रोष्टुश्वानः-

शालावृक-कुत्ता, बन्दर तथा सियार ॥

-स्वर्णेऽपि गैरिकम् ।

गैरिक-गेरू धातु तथा सोना ॥

पीडार्थेऽपि व्यलीकं स्या-

व्यलीक-पीडा तथा झूंठ ॥

-दलीकं त्वप्रियेऽनृते ॥ १२ ॥

अलीक-अप्रिय तथा झूठा ॥ १२ ॥

शीलान्वयावनूके-

अनूक-स्वभाव तथा वंश ॥

-द्वे शल्के शकलवल्कले ।

शल्क-टुकड़ा तथा बकला ॥

साष्टे शते सुवर्णानां हेम्न्युरोभूषणे पले ॥ १३ ॥ दीनारेऽपि च निष्कोऽस्त्री-

निष्क-सोना एक प्रकारका गलेका भूषण तथा असर्फी ॥ १३ ॥

-कल्कोऽस्त्री शमलैनसोः । दम्भे-

कल्क-मलिन तथा पाप और पाखण्ड ॥

-प्यथ पिनाकोऽस्त्री शूलशंकरधन्वनोः ॥ १४ ॥

पिनाक-शूल तथा महादेवका धनुष ॥ १४ ॥

धेनुका तु करेण्वां च-

धेनुका-हथिनी तथा नई ब्याई हुई गौ ॥

-मेघजाले च कालिका ।

कालिका-मेघका समूह तथा देवी ॥

कारिका यातनावृत्त्योः-

कारिका-नरकपीडा तथा करना ॥

कर्णिका कर्णभूषणे ॥ १५ ॥ करिहस्तेऽङ्गुलौ पद्मबीजकोश्यां-

कर्णिका-कानका भूषण ॥ १५ ॥ हाथीकी सूंडका अग्रभाग तथा कमलके बीज रहनेका कमलका भाग ॥

-त्रिषूत्तरे ।

आगे जो शब्द कहे जायँगे वे तीनों लिङ्गोंमें होते हैं ॥

वृन्दारकौ रूपमुख्या-

वृन्दारक-देवता, सुन्दर तथा मुख्य ॥

-वेके मुख्यान्यकेवलाः ॥१६॥

एक-मुख्य,अन्य तथा केवल ॥१६॥

स्याद्दाम्भिकः कौक्कुटिको यश्चादूरेरितेक्षणः ।

कौक्कुटिक-माया करनेवाला तथा समीपसे ही देखनेवाला ॥

लालाटिकः प्रभोर्भालदर्शी कार्याक्षमश्च यः ॥ १७ ॥

लालाटिक-जो कार्य करनेमें असमर्थ हो और स्वामीका मुख देखे ॥ १७ ॥

॥ इति कान्ताः ॥

मयूखस्त्विट्करज्वाला-

मयूख-कान्ति, किरण तथा ज्वाला ॥

-स्वलिबाणौ शिलीमुखौ ।

शिलीमुख-भ्रमर तथा बाण ॥

शंखो निधौ ललाटास्थ्नि कम्बौ न स्त्री-

शंख-एकनिधि, ललाटकी हड्डी और शङ्ख ॥

-न्द्रियेऽपि खम् ॥ १८ ॥

ख-शून्य तथा इन्द्रिय ॥ १८ ॥

घृणिज्वाले अपि शिखे-

शिखा-किरण, ज्वाला तथा चोटी॥

॥ इति खान्ताः ॥

-शैलवृक्षौ नगावगौ ।

नग-अग-पर्वत और वृक्ष ॥

आशुगौ वायुविशिखौ-

आशुग-वायु तथा बाण ॥

-शरार्कविहगाः खगाः ॥ १९ ॥

खग-बाण, सूर्यादि ग्रह तथा पक्षी ॥ १९ ॥

पतंगौ पक्षिसूर्यौ च-

पतंग-सूर्य तथा पक्षी ॥

-पूगः क्रमुकवृन्दयोः ।

पूग-सुपारी तथा समूह ॥

पशवोऽपि मृगा-

मृग-हरिण, ढूंढना, पशु ॥

-वेगः प्रवाहजवयोरपि ॥२०॥

वेग-प्रवाह तथा जोरसे चलना॥२०॥

परागः कौसुमे रेणौ स्नानीयादौ रजस्यपि ।

पाराग-पुष्पधूलि, स्नान करनेके योग्य मसाला तथा धूलि ॥

गजेऽपि नागमातंगा-

नाग-मातङ्ग-हाथी तथा चाण्डाल वा डोम ॥

-वपांगास्तिलकेऽपि च ॥ २१ ॥

अपांग-नेत्रोंके कोने, अंगहीन तथा तिलक ॥ २१ ॥

सर्गः स्वभावनिर्मोक्षनिश्चयाध्यायसृष्टिषु ।

सर्ग-स्वभाव, त्याग, निश्चय तथा ग्रंथका अध्याय, सृष्टि ॥

योगः संनहनोपायध्यानसंगतियुक्तिषु ॥ २२ ॥

योग-कवच सामदानादि, ध्यान तथा मेल और युक्ति ॥ २२ ॥

भोगः सुखे स्त्र्यादिभृतावहेश्च फणकाययोः ।

भोग-सुखदेनेवाला तथा सुख,वेश्या आदिको पालन करना वा मोल लेना, सर्पका फन और शरीर ॥

चातके हरिणे पुंसि सारंगः शबले त्रिषु ॥ २३ ॥

सारङ्ग-चितकबरा रङ्गवाला, चितकबरा रङ्ग, मृगपशु, पक्षी, पपीहा पक्षी तथा मृगी ॥ २३ ॥

कपौ च प्लवगः-

प्लवग-बन्दर, मेढक तथा सारथि॥

-शापे त्वभिषंगः पराभवे ।

अभिषङ्ग-शाप तथा अनादर ॥

यानाद्यंगे युगः पुंसि युगं युग्मे कृतादिषु ॥ २४ ॥

युग (पुंल्लिग)—जुँआ, युग—(नपुंसक) जोड़ा (दो), सत्ययुगादि तथा चार हाथ ॥ २४ ॥

स्वर्गेषुपशुवाग्वज्रदिङ्नेत्रघृणिभूजले । लक्ष्यदृष्ट्या स्त्रियां पुंसि गौ–

गो–(पुँल्लिङ्ग–स्त्रीलिङ्ग) स्वर्ग, बाण, पशु–(गाय बैल), वाणी, वज्र, दिशा, नेत्र, किरण, भूमि तथा जल ॥

–र्लिंगं चिह्नशेफसोः ॥ २५ ॥

लिङ्ग–चिह्न तथा शिश्न इन्द्रिय ॥ २५॥

श्रृंगं प्राधान्यसान्वोश्च–

शृङ्ग–प्रभुता अर्थात् प्रधानता तथा कंगूरा ॥

–वरांगं मूर्धगुह्ययोः ।

वराङ्ग–माथा तथा स्त्रीका मूत्रद्वार ॥

भगं श्रीकाममाहात्म्यवीर्ययत्नार्ककीर्तिषु ॥ २६ ॥

भग–लक्ष्मी, इच्छा, ऐश्वर्य, वीर्य, उपाय, सूर्य, बड़ाई ॥ २६ ॥

॥ इति गान्ताः ॥

परिघः परिघातेऽस्त्रे–

परिघ–चारों ओरसे मारना तथा अस्त्र ॥

–ऽप्योघो वृन्देऽम्भसां रये ।

ओघ–समूह तथा जलका वेग ॥

मूल्ये पूजाविधावर्घो–

अर्घ–मूल्य तथा पूजामें जल देना॥

–ऽहोदुःखव्यसनेष्वघम् ॥ २७ ॥

अघ–पाप, दुःख, शिकार, जुआ खेलना आदि ॥ २७॥

त्रिष्विष्टेऽल्पे लघुः–

लघु–इष्ट और थोड़ा ॥

॥ इति घान्ताः ॥

काचाः शिक्यमृद्भेददृग्रुजः ।

काच–छींका, काचका भेद तथा नेत्ररोग ॥

विपर्यासे विस्तरे च प्रपञ्चः–

प्रपञ्च–विपरीत तथा शब्दका विस्तार और जगत् तथा ठगना ॥

–पावके शुचिः ॥ २८ ॥ मास्यमात्ये चात्युपधे पुंसि मेध्ये सिते त्रिषु ।

शुचि–(पु०) अग्नि ॥ २८ ॥ आषाढमास, राजाका मन्त्री, निष्कपट (त्रि०) पवित्र तथा श्वेतवस्तु ॥

अभिष्वंगे स्पृहायां च गभस्तौ च रुचिः स्त्रियाम् ॥ २९ ॥

रुचि–आलिंगन करना, इच्छा तथा किरण ॥ २९ ॥

॥ इति चान्ताः ॥

केकिताक्ष्यावहिभुजौ–

अहिभुज्–मोर और गरुड ॥

–दन्तविप्राण्डजा द्विजाः ।

द्विज–दांत, पक्षी तथा ब्राह्मण ॥

अजा विष्णुहरच्छागा–

अज–विष्णु, शिव तथा बकरा ॥

गोष्ठाध्वनिवहा व्रजाः ॥ ३० ॥

व्रज–गोशाला, मार्ग और समूह ॥ ३० ॥

धर्मराजौ जिनयमौ–

धर्मराज–जिन (बुद्ध) और यमराज ॥

–कुञ्जो दन्तेऽपि न स्त्रियाम् ।

कुञ्ज–हाथीका दांत और सघन वन ॥

वलजे क्षेत्रपूर्द्वारे वलजा वल्गुदर्शना ॥ ३१ ॥

वलज–(न०) खेत, नगरका दरवाजा (स्त्री) सुन्दर स्त्री ॥ ३१ ॥

समे क्ष्मांशे रणेऽप्याजिः–

आजि-पृथ्वीका समान भाग और संग्राम।

–प्रजा स्यात्संततौ जने ।

प्रजा–संतान और जनसमूह ॥

अब्जौ शंखशशांकौ च–

अब्ज–शंख और चन्द्रमा ॥

स्वके नित्ये निजं त्रिषु ॥ ३२ ॥

निज–(त्रि०) अपना तथा नित्य ३२

॥ इति जान्ताः ॥

पुंस्यात्मनि प्रवीणे च क्षेत्रज्ञो वाच्यलिंगकः ।

क्षेत्रज्ञ–आत्मा और चतुर ॥

संज्ञा स्याच्चेतना नाम हस्ताद्यैश्चार्थसूचना ॥ ३३ ॥

संज्ञा–चेतनशक्ति, नाम और हस्त आदिसे अभिप्रायका प्रगट करना ॥ ३३ ॥

॥ इति ञान्ताः ॥

काकेभगण्डौ करटौ–

करट–काक और हस्तीका गण्डस्थल ॥

गजगण्डकटी कटौ ।

कटि–हस्तीका गण्डस्थल और कमर ॥

शिपिविष्टस्तु खलतौ दुश्चर्मणि महेश्वरे ॥ ३४ ॥

शिपिविष्ट–गञ्जा, खुदरी हुई खाल और शिवजी ॥ ३४ ॥

देवशिल्पिन्यपि त्वष्टा–

त्वष्टृ–विश्वकर्मा, सूर्य और बढ़ई॥

–दिष्टं दैवेऽपि न द्वयोः ।

दिष्ट–प्रारब्ध और समय ॥

रसे कटुः कट्वकार्ये त्रिषु मत्सरतीक्ष्णयोः ॥ ३५ ॥

कटु–(पु०) रसविशेष (न०) अकार्य (त्रि०) अहंकार और तीक्ष्ण ३५

रिष्टं क्षेमाशुभाभावे–

रिष्ट–क्षेम, अशुभ और अभाव ॥

–ष्वरिष्टं तु शुभाशुभे ॥

अरिष्ट–शुभ और अशुभ ॥

मायानिश्चलयन्त्रेषु केतवानृत-राशिषु ॥ ३६ ॥ अयोधने शैल-शृंगे सीरांगे कूटमस्त्रियाम् ।

कूट–माया, निश्चल, यन्त्र (मृगफँसानेका जाल), कपट, झूठ, राशि ॥३६॥ लोहेका घन, पर्वतका कँगूरा तथा हलका अग्रभाग ॥

सूक्ष्मैलायां त्रुटिः स्त्री स्यात्काले ऽल्पे संशयेऽपि सा ॥ ३७ ॥

त्रुटि–छोटी इलायची, काल [अक्षरका रह जाना] अल्प तथा संशय ३७॥

आत्युत्कर्षाश्रयः कोटयो–

कोटि–धनुषकी टोंक, प्रकर्ष, कोना तथा करोड़संख्या ॥

–मूले लग्नकचे जटा ।

जटा–वृक्षकी जड़ तथा केशोंकी जटा॥

व्युष्टिः फले समृद्धौ च–

व्युष्टि–फल तथा सम्पदा ॥

दृष्टिर्ज्ञानेऽक्षिण दर्शने ॥ ३८ ॥

दृष्टि-ज्ञान, नेत्र तथा देखना ॥३८॥

इष्टिर्यागेच्छयोः–

इष्टि–यज्ञ तथा इच्छा ॥

–सृष्टं निश्चिते बहुनि त्रिषु ।

सृष्ट–बहुत तथा निश्चय किया गया ॥

कष्टे तु कृच्छ्रगहने–

कष्ट–दुःख तथा गहन ॥

–दक्षामन्दागदेषु च ॥ ३९ ॥ पटु–

पटु–दक्ष, तीक्ष्ण तथा रोगहीन ॥३९॥

–द्वौ वाच्यलिंगौ च–

पटु और कष्ट शब्द वाच्यलिंग हैं ॥

इति टान्ताः ॥

–नीलकण्ठः शिवेऽपि च ।

नीलकण्ठ–मयूर तथा शिव ॥

पुंसि कोष्ठोऽन्तर्जठरं कुसूलोऽन्तर्गृहं तथा ॥ ४० ॥

कोष्ठ–पेटका मध्यभाग, धान्यका स्थान, गृहके भीतरका भाग ॥ ४० ॥

निष्ठा निष्पत्तिनाशान्ताः–

निष्ठा–निष्पादन,नाश तथा अन्त ॥

–काष्ठोत्कर्षे स्थितौ दिशि ।

काष्ठा–उत्कर्ष, स्थिति, दिशा तथा कालविशेष ॥

त्रिषु ज्येष्ठोऽतिशस्तेऽपि–

ज्येष्ठ–अत्युत्तम, अतिवृद्ध, बड़ा भाई तथा वैशाखके उत्तरका मास ॥

–कनिष्ठोऽतियुवाल्पयोः ॥४१॥

कनिष्ठ–अतिछोटा तथा छोटा भाई ॥ ४१ ॥

इति ठान्ताः ॥

दण्डोऽस्त्री लगुडेऽपि स्याद्–

दंड–दंडा तथा सजा आदि ॥

–गुडो गोलेक्षुपाकयोः ।

गुड़—गुड़ तथा मिट्टी आदिका गोला ॥

सर्पमांसात्पशू व्याडौ—

व्याड—सर्प तथा मांस खानेवाला पशु व्याघ्र आदि ॥

—गोभूवाचस्त्विडा इलाः ॥४२॥

इडा—गैया तथा पृथ्वी, वाणी और नाडी ॥ ४२ ॥

क्ष्वेडा वंशशलाकाऽपि—

क्ष्वेडा—विष, सिंहनाद तथा बांसकी खपची ॥

—नाडी नालेऽपि षट्क्षणे ।

नाडी—नाडी अर्थात् वात, पित्त, कफ इत्यादिके विकारको जाननेवाली नस तथा छः क्षण ॥

काण्डोऽस्त्री दण्डबाणार्ववर्गावसरवारिषु ॥ ४३ ॥

काण्ड—दण्डा वा लाठी, बाण, खराब घोड़ा, परिच्छेद जैसे कि प्रथम कांड, अवसर तथा जल ॥ ४३ ॥

स्याद्भाण्डमश्वाभरणेऽमत्रे मूलवणिग्धने ।

भाण्ड—पात्र वा बरतन, घोड़ोंका गहना, बनियोंका मूल धन वा पूँजी ॥

इति डान्ताः ॥

भृशप्रतिज्ञयोर्बाढं—

बाढ़—अत्यर्थ तथा प्रतिज्ञा ॥

—प्रगाढं भृशकृच्छ्रयोः ॥ ४४ ॥

प्रगाढ—मजबूत तथा दुःख ॥४४॥

शक्तस्थूलौ त्रिषु दृढौ—

दृढ—समर्थ तथा मोटा ॥

—व्यूढौ विन्यस्तसंहतौ ।

व्यूढ—विन्यस्त तथा संहत और पृथुल ॥

इति ढान्ताः ॥

भ्रूणोऽर्भके स्त्रैणगर्भे—

भ्रूण—बालक तथा स्त्रीका गर्भ ॥

—बाणो बलिसुते शरे ॥ ४५ ॥

बाण—बाणासुर तथा तीर ॥ ४५ ॥

कणोऽतिसूक्ष्मे धान्यांशे—

कण—अत्यन्त सूक्ष्म तथा धान्यकण ॥

—संघाते प्रमथे गणः ।

गण—समूह तथा शिवके अनुचर ॥

पणो द्यूतादिषूत्सृष्टे भृतौ मूल्ये धनेऽपि च ॥ ४६ ॥

पण—जुआ आदिमें लगाया हुआ धन; पैसा तथा मजूर वा तलब ॥४६॥

मौर्व्यां द्रव्याश्रिते सत्त्वशौर्यसन्ध्यादिके गुणः ।

गुण—प्रत्यञ्चारूप आदि, चौबीस सत्त्व आदि, शुक्ल आदि, संधि आदि ॥

निर्व्यापारस्थितौ कालविशेषोत्सवयोः क्षणः ॥ ४७ ॥

क्षण—तीसकलासमय, उत्सव,बेकाम बैठना तथा विश्राम करना ॥ ४७ ॥

वर्णो द्विजादौ शुक्लादौ स्तुतौ वर्णं तु वाक्षरे ।

वर्ण—शुक्ल पीतादि रंग तथा वर्ण (पुं०न०) अक्षर, ब्राह्मणादि, स्तुति ॥

अरुणो भास्करेऽपि स्याद्वर्णभेदेऽपि च त्रिषु ॥ ४८ ॥

अरुण—सूर्य, सूर्यका सारथि, वर्णभेद ॥ ४८ ॥

स्थाणुः शर्वोऽप्यथ—

स्थाणु—ठूठा वृक्ष तथा अत्यन्त स्थिर और महादेव, खम्भा, वृक्ष, पर्वत ॥

—द्रोणः काके—

द्रोण—काक तथा द्रोणाचार्य ॥

—ऽप्याजौ रवे रणः ।

रण—संग्राम तथा शब्द ॥

ग्रामणीर्नापिते पुंसि श्रेष्ठे ग्रामाधिपे त्रिषु ॥ ४९ ॥

ग्रामणी—नाई, मुख्य ग्रामाधिप ॥ ४९ ॥

ऊर्णा मेषादिलोम्नि स्यादावर्त्ते चान्तरा भ्रुवोः ।

ऊर्णा—भेंड़का बाल तथा दोनों भौंके बीचकी भौंरी ॥

हरिणी स्यान्मृगी हेमप्रतिमा हरिता च या ॥ ५० ॥

हरिणी—मृगी, सोनेकी मूर्ति तथा हरे रंगकी मूर्ति ॥ ५० ॥

त्रिषु पाण्डौ च हरिणः—

हरिण—मृग तथा पाण्डुर वर्ण ॥

स्थूणा स्तम्भेऽपि वेश्मनः ।

स्थूणा—खम्भा तथा लोहेकी मूर्ति ॥

—तृष्णे स्पृहापिपासे द्वे—

तृष्णा—इच्छा (वाञ्छा) तथा प्यास ॥

—जुगुप्साकरुणे घृणे ॥ ५१ ॥

घृणा—जुगुप्सा वा निन्दा तथा करुणा ॥ ५१ ॥

वणिक्पथे च विपणिः—

विपणि—बाजारकी गली तथा दुकान ॥

—सुरा प्रत्यक् च वारुणी ।

वारुणी—मदिरा तथा पश्चिमकी दिशा ॥

करेणुरिभ्यां स्त्री नेभे—

करेणु—हाथी तथा हथिनी ॥

—द्रविणं तु बलं धनम् ॥ ५२ ॥

द्रविण—बल तथा धन ॥ ५२ ॥

शरणं गृहरक्षित्रोः—

शरण—गृह तथा रक्षा करनेवाला ॥

—श्रीपर्णं कमलेऽपि च ।

श्रीपर्ण—कमल तथा अग्निमन्थ ॥

विषाभिमरलोहेषु तीक्ष्णं क्लीबे खरं त्रिषु ॥ ५३ ॥

तीक्ष्ण—अत्यन्त गरम वस्तु, अत्यन्त तीखी, विष, युद्ध तथा लोहा ॥ ५३ ॥

प्रमाणं हेतुमर्यादाशास्त्रेयत्ताप्रमातृषु ।

प्रमाण—हेतु, मर्यादा, शास्त्रपरिच्छेद तथा ज्ञाता ॥

करणं साधकतमं क्षेत्रगात्रेन्द्रियेष्वपि ॥ ५४ ॥

करण—खेत, करण कारक, शरीर, इन्द्रिय तथा वैश्य शूद्रास्त्रीसे उत्पन्न ॥ ५४ ॥

प्राण्युत्पादे संसरणमसंबाधचमूगतौ । घण्टापथे—

संसरण—राजमार्ग, प्राणीका जन्म तथा बेरोक सेनाकी यात्रा ॥

—ऽथ वान्तान्ने समुद्गिरणमुन्नये ॥ ५५ ॥

समुद्गिरण—वमन किया हुआ अन्न तथा उखाड़ना तथा जड़ादिका निकालना ॥ ५५ ॥

अतस्त्रिषु—

यहांसे आगे कहे हुए णकारान्त शब्द तीनों लिंगोंमें होंगे ॥

विषाणं स्यात्पशुशृङ्गेभदन्तयोः ।

विषाण—पशुओंके सींग तथा हाथीका दांत ॥

प्रवणं क्रमनिम्नोर्व्यां प्रह्वे ना तु चतुष्पथे ॥ ५६ ॥

प्रवण—नम्र, तत्पर, ढाल वा क्रमसे नीचा स्थान तथा चौराहा ॥ ५६ ॥

संकीर्णौ निचिताशुद्धौ—

संकीर्ण—अशुद्ध तथा वर्णसंकर ॥

—ईरिणं शून्यमूषरम् ।

ईरिण—शून्य और ऊषर ॥

॥ इति णान्ताः ॥

देवसूर्यौ विवस्वन्तौ—

विवस्वत्—देव तथा सूर्य ॥

—सरस्वंतौ नदार्णवौ ॥ ५७ ॥

सरस्वत्—नद तथा समुद्र ॥ ५७ ॥

पक्षिताक्ष्यौं गरुत्मन्तौ—

गरुत्मत्—गरुड तथा पक्षी ॥

—शकुन्तौ भासपक्षिणौ ।

शकुन्त—गृध्र और पक्षिमात्र ॥

अग्न्युत्पातौ धूमकेतू—

धूमकेतु—अग्नि और धूममयी तारा ।

—जीमूतौ मेघपर्वतौ ॥ ५८ ॥

जीमूत—मेघ और पर्वत ॥ ५८ ॥

हस्तौ तु पाणिनक्षत्रे—

हस्त—हाथ, तेरहवां नक्षत्र ॥

—मरुतौ पवनामरौ ।

मरुत्—वायु, तथा देवता ॥

यन्ता हस्तिपके सूते—

यन्तृ–हाथीवान् तथा सूत ॥

–भर्ता धातरि पोष्टरि ॥ ५९ ॥

भर्तृ–ब्रह्मा और पालन करनेवाला ॥ ५९ ॥

यानपात्रे शिशौ पोतः–

पोत–नौका तथा लड़का ॥

–प्रेतः प्राण्यन्तरे मृते ।

प्रेत–परेत तथा मृतक ॥

ग्रहभेदे ध्वजे केतुः–

केतु–ध्वजा तथा एकग्रहका नाम ॥

–पार्थिवे तनये सुतः ॥ ६० ॥

सुत–राजा तथा पुत्र ॥ ६० ॥

स्थपतिः कारुभेदेऽपि–

स्थपति–कंचुकी तथा कारुभेद, काष्ठ चीरनेवाला ॥

–भूभृद् भूमिधरे नृपे ।

भूभृद् –पर्वत और राजा ॥

मूर्धाभिषिक्तो भूपेऽपि–

मूर्धाभिषिक्त–राजा और मन्त्री ॥

–ऋतुः स्त्रीकुसुमेऽपि च ॥६१॥

ऋतु–स्त्रीका मासिक धर्म और वसन्तादि ऋतु ॥ ६१ ॥

विष्णावप्यजिताव्यक्तौ–

अजित, अव्यक्त–विष्णु और महादेव ॥

–सूतस्त्वष्टरि सारथौ ।

सूत-सारथी तथा पारा धातु,त्वष्टा॥

व्यक्तः प्राज्ञेऽपि–

व्यक्त–पंडित तथा स्फुट ॥

–दृष्टान्तावुभौ शास्त्रनिदर्शने ॥ ६२ ॥

दृष्टान्त–तर्कादि शास्त्र तथा उदाहरण ॥ ६२ ॥

क्षत्ता स्यात्सारथौ द्वाःस्थे क्षत्रियायां च शूद्रजे ।

क्षत्तृ–सारथि, शूद्र और क्षत्रियासे उत्पन्न तथा द्वारपाल ॥

वृत्तान्तः स्यात्प्रकरणे प्रकारे कात्स्न्र्यवार्तयोः ॥ ६३ ॥

वृत्तान्त–प्रकरण, प्रकार, सम्पूर्णता तथा वार्ता ॥ ६३ ॥

आनर्तः समरे नृत्यस्थाननीवृद्विशेषयोः ।

आनर्त–आनर्त देश, संग्राम तथा नृत्यका स्थान ॥

कृतान्तो यमसिद्धान्तदैवाकुशलकर्मसु ॥ ६४ ॥

कृतान्त–यमराज, सिद्धान्त, भाग्य तथा पाप ॥ ६४ ॥

श्लेष्मादि रसरक्तादि महाभूतानि तद्गुणाः । इन्द्रियाण्यश्मविकृतिः शब्दयोनिश्च धातवः ६५ ॥

धातु–वात, पित्त, कफ, पेटमें अन्न जाकर जो रस बनता है वह और रक्त इत्यादि, पंचमहाभूत(पृथ्वी जल इत्यादि) पांचों महाभूतोंके गुण (रूप रस गन्ध इत्यादि)इन्द्रिय, पत्थरका विकार (शिलाजीत इत्यादि), वर्णात्मक शब्दोंके कारण (भू इत्यादि) ॥ ६५ ॥

कक्षान्तरेऽपि शुद्धान्तो नृपस्यासर्वगोचरे ।

शुद्धान्त–राजधानी तथा राजाओंका जनाना ॥

कासूसामर्थ्ययोः शक्ति–

शक्ति–बरछी तथा सामर्थ्य ॥

–मूर्तिः काठिन्यकाययोः॥६६॥

मूर्ति–कठिनता तथा शरीर ॥ ६६ ॥

विस्तारवल्लयोर्व्रतति–

व्रतति–विस्तार तथा वल्ली ॥

–वसती रात्रिवेश्मनोः ।

वसति–रात्रि तथा घर ॥

क्षयार्चयोरपचितिः–

अपचिति–क्षय तथा पूजा ॥

–सातिर्दानावसानयोः ॥ ६७ ॥

साति–दान तथा अन्त ॥ ६७ ॥

आर्तिः पीडाधनुष्कोट्यो–

आर्ति–पीडा तथा धनुषकी कोटि ॥

जातिः सामान्यजन्मनोः ।

जाति–सामान्यजाति तथा जन्म ।

प्रचारस्यन्दयो रीति–

रीति–लोकाचार तथा पीतल और लोहेका मल ॥

–रीतिर्डिम्बप्रवासयोः ॥ ६८ ॥

ईति–ईति सात प्रकारकी होती है-अतिवृष्टि, सूखा पड़ना, खेतोंमें मूसोंका लगना, टीड़ियोंका उपद्रव, सुगोंसे हानि और स्वचक्र, परराजाओंसे वैर, इन ७ को ईति कहते हैं तथा परदेशमें वास ॥ ६८ ॥

उदयेऽधिगमे प्राप्ति–

प्राप्ति–लाभ तथा उत्पत्ति ॥

–स्त्रेता त्वग्नित्रये युगे ।

त्रेता–त्रेतायुग तथा अग्नित्रय ॥

वीणाभेदेऽपि महती–

महती–नारदकी वीणा तथा महत्वा करके युक्त भार्यादि ॥

--भूतिर्भस्मनि संपदि ॥ ६९ ॥

भूति–अणिमामहिमादि आठ ऐश्वर्य, भस्म तथा सम्पत्ति ॥ ६९ ॥

नदीनगर्योर्नागानां भोगवत्य--

भोगवती–सर्पोंकी नदी तथा नगरी ॥

–थ संगरे । संगे सभायां समितिः--

समिति–संग, सभा तथा संग्राम ॥

--क्षयवासावपि क्षितिः ॥ ७० ॥

क्षिति—निवास, क्षय तथा पृथ्वी ॥७०॥

रवेरर्चिश्च शस्त्रं च वह्निज्वाला च हेतयः ।

हेति—सूर्यकी प्रभा तथा शस्त्र और आगकी ज्वाला ॥

जगती जगतिच्छन्दोविशेषेऽपि क्षितावपि ॥ ७१ ॥

जगती—लोक, एक प्रकारका छन्द तथा पृथ्वी ॥ ७१ ॥

पंक्तिश्छन्दोऽपि दशमं--

पंक्ति--पाँती तथा दशअक्षरके पादका छन्द ॥

--स्यात्प्रभावेऽपि चायतिः ।

आयति--आनेवाला समय, प्रभाव तथा लम्बाई ॥

पत्तिर्गतौ च--

पत्ति--पैदल तथा चलना ॥

--मूले तु पक्षतिः पक्षभेदयोः ॥ ७२ ॥

पक्षति--प्रतिपदा तिथि तथा पंखकी जड़ ॥ ७२ ॥

प्रकृतिर्योनिलिंगे च--

प्रकृति--स्वभाव तथा योनि, लिंग ॥

--कैशिक्याद्याश्च वृत्तयः ।

वृत्ति--जीविका, सूत्रोंका अर्थ तथा कैशिकी ॥

सिकताः स्युर्वालुकापि--

सिकता बालू--और सिकती ॥

--वेदे श्रवसि च श्रुतिः ॥७३ ॥

श्रुति--वेद, कान तथा सुनना ॥७३ ॥

वनिता जनितात्यर्थानुरागायां च योषिति ।

वनिता--स्त्री तथा अत्यन्त प्यारी स्त्री ॥

गुप्तिः क्षितिव्युदासेऽपि--

गुप्ति--रक्षा, भूमिका गड्ढा तथा जेलखाना ॥

--धृतिर्धारणधैर्ययोः ॥ ७४ ॥

धृति--धारण और धैर्य ॥ ७४ ॥

बृहती क्षुद्रवार्ताकी छन्दोभेदो महत्यपि ।

बृहती--क्षुद्रवार्ताकी, छन्दविशेष, बड़ी ॥

वासिता स्त्रीकरिण्योश्च--

वासिता--स्त्री तथा हथिनी ।

--वार्ता वृत्तौ जनश्रुतौ ॥ ७५ ॥

वार्ता--जीविका, समाचार ॥ ७५ ॥

वार्तं फल्गुन्यरोगे च त्रि--

वार्त--नीरोग, समाचार, जनश्रुति, जीवनोपाय तथा कुशल ॥

ष्वप्सु च घृतामृते ।

घृत--घी, जल ॥ अमृत--जल, मोक्ष तथा विना माँगी भीख ॥

कलधौतं रूप्यहेम्नो–

कलधौत–चांदी तथा सोना ॥

–र्निमित्तं हेतुलक्ष्मणोः ॥७६॥

निमित्त–हेतु तथा चिह्न ॥ ७६ ॥

श्रुतं शास्त्रावधृतयो–

श्रुत–शास्त्र तथा सुना गया ॥

–र्युगपर्याप्तयोः कृतम् ।

कृत–सत्ययुग पर्याप्ति तथा किया हुआ ॥

अत्याहितं महाभीतिः कर्म जीवानपेक्षि च ॥ ७७ ॥

अत्याहित–महाभय तथा साहस ७७

युक्ते क्ष्मादावृते भूतं प्राण्यतीते समे त्रिषु ।

भूत–प्रेत, पृथिवी आदि पांच देवयोनि तथा न्याययुक्त कार्य और सत्य तथा प्राणी ॥

वृत्तं पद्ये चरित्रे त्रिष्वतीते दृढनिस्तले ॥ ७८ ॥

वृत्त–पद्य (श्लोक) चरित्र, अतीत (भूतकाल), दृढ तथा गोल ॥ ७८ ॥

महद्राज्यं चा–

महत्–राज्य तथा बृहत् ॥

–वगीतं जन्ये स्याद्गर्हिते त्रिषु ।

अवगीत–लोकापवाद तथा जिसकी निंदा की गयी ॥

श्वेतं रूप्येऽपि–

श्वेत–सफेद रङ्ग तथा चांदी और रुपया ॥

–रजतं हेम्नि रूप्ये सिते त्रिषु ॥ ७९ ॥

रजत–सोना, चांदी तथा उज्ज्वल ७९ ॥

त्रिष्वतो–

यहांसे लेकर तकारान्त सम्पूर्ण शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥

–जगदिङ्गेऽपि–

जगत्–लोक तथा प्राणी ॥

–रक्तं नील्यादिरागि च ।

रक्त–नीलादि रङ्ग तथा रुधिर ॥

अवदातः सिते पीते शुद्धे–

अवदात–शुद्ध, श्वेत पदार्थ तथा पीला पदार्थ ॥

–बद्धार्जुनौ सितौ ॥ ८० ॥

सित–बँधा हुआ तथा श्वेत ॥ ८० ॥

युक्तेऽपि संस्कृते मर्षिण्यभिनीतो–

अभिनीत–युक्त, अत्यन्त प्रशस्त तथा भूषित और शान्त ॥

–ऽथ संस्कृतम् । कृत्रिमे लक्षणोपेतेऽप्य–

संस्कृत–संस्कारयुक्त, लक्षणयुक्त तथा कृत्रिम ॥

–नन्तोऽनवधावपि ॥ ८१ ॥

अनन्त–अनवधि (जिसकी मर्यादा न हो), विष्णु तथा शेषनाग ॥८१॥

ख्याते हृष्टे प्रतीतो–

प्रतीत–प्रसिद्ध तथा हर्षित ॥

–ऽभिजातस्तु कुलजे बुधे ।

अभिजात–कुलीन और पण्डित ॥

विविक्तौ पूतविजनौ–

विविक्त–पवित्र और विजन वा एकान्त ॥

–मूर्च्छितौ मूढसोच्छ्रयौ ॥८२॥

मूर्च्छित–मोहित तथा बढ़ा ॥८२॥

द्वौ चाम्लपरुषौ शुक्तौ–

शुक्त–चुक्र तथा कठोर ॥

–शिती धवलमेचकौ ।

शिति–धवल (शुक्ल) तथा मेचक (कृष्णवर्ण) ॥

सत्ये साधौ विद्यमाने प्रशस्ते-ऽभ्यर्हिते च सत् ॥ ८३ ॥

सत्–सत्य, साधु, विद्यमान, प्रशस्त तथा अभ्यर्हित ॥ ८३ ॥

पुरस्कृतः पूजितेऽरात्यभियुक्ते-ऽग्रतः कृते ।

पुरस्कृत–पूजित, शत्रुसे पीडित और आगे किये हुए ॥

निवातावाश्रयावातौ शस्त्राभेद्यं च वर्म यत् ॥ ८४ ॥

निवात–निवास, वायुरहित स्थान तथा शस्त्रोंसे अभेद्य कवच ॥ ८४ ॥

जातोन्नद्धप्रवृद्धाः स्युरुच्छ्रिता-

उच्छ्रित–उत्पन्न, ऊंचा, अहंकार-युक्त तथा अत्यन्त बड़ा ॥

–उत्थितास्त्वमी । वृद्धिमत्प्रो-द्यतोत्पन्ना–

उत्थित–वृद्धिको प्राप्त होनेवाला तथा उदयको प्राप्त होनेवाला और उत्पन्न होनेवाला ॥

–आदृतौ सादरार्चितौ ॥८५॥

आदृत–आदर किया हुआ तथा पूजित ॥ ८५ ॥

इति तान्ताः ॥

अर्थोऽभिधेयरैवस्तुप्रयोजननिवृ-त्तिषु ।

अर्थ–शब्दका अर्थ, धन, यथार्थ, निवृत्ति ॥

निपानागमयोस्तीर्थमृषिजुष्टे जले गुरौ ॥ ८६ ॥

तीर्थ–निपान अर्थात् कूपके पासका हौद वा जलाशय, शास्त्र, ऋषिसेवित जल तथा गुरु ॥ ८६ ॥

समर्थस्त्रिषु शक्तिस्थे सम्बद्धार्थे हितेऽपि च ।

समर्थ–समर्थ वा बलवान् तथा सम्बन्धयुक्त पदार्थ तथा हित ॥

दशमीस्थौ क्षीणरागवृद्धौ-

दशमीस्थ--रसरहित और अतिवृद्ध।

-वीथी पदव्यापि ॥ ८७ ॥

वीथी--मार्ग तथा पंक्ति ॥ ८७ ॥

आस्थानीयत्नयोरास्था-

आस्था--सभा तथा उपाय ॥

-प्रस्थोऽस्त्री सानुमानयोः ।

प्रस्थ--पर्वतकी चोटी तथा तोलनेका सेर ॥

इति थान्ताः ॥

अभिप्रायवशौ छन्दा-

छन्द--अभिप्राय तथा अधीन ॥

-वब्दौ जीमूतवत्सरौ ॥ ८८ ॥

अब्द--मेघ तथा वर्ष ॥ ८८ ॥

अपवादौ तु निन्दाज्ञे-

अपवाद--निन्दा तथा अज्ञ ॥

-दायादौ सुतबान्धवौ ।

दायाद--पुत्र तथा ज्ञाति (बिरादरी)

पादा रश्म्यंघ्रितुर्यांशा-

पाद--किरण, चरण तथा चौथाई ॥

-श्चन्द्राग्न्यर्कास्तमोनुदः ८९ ॥

तमोनुद्--चन्द्र, सूर्य तथा अग्नि ॥८९॥

निर्वादो जनवादेऽपि-

निर्वाद--लोकापवाद और निश्चित वाद ॥

-शादो जम्बालशष्पयोः ।

शाद--घास और कीचड़ ॥

आरावे रुदितं त्रातर्याक्रन्दो दारुणे रणे ॥ ९० ॥

आक्रन्द--आर्तशब्द, रोदन, रक्षण, भयंकर तथा युद्ध ॥ ९० ॥

स्यात्प्रासादोऽनुरागेऽपि-

प्रासाद--अनुग्रह (प्रसन्नता) और काव्यके गुण ॥

-सूदः स्याद्व्यञ्जनेऽपि च ।

सूद--व्यञ्जन और रसोई बरदारका नाम ॥

गोष्ठाध्यक्षेऽपि गोविन्दो-

गोविन्द--कृष्ण तथा विष्णु और गोष्ठका स्वामी ॥

-हर्षेऽप्यामोदवन्मदः ॥ ९१ ॥

आमोद--हर्ष तथा निर्हारि गन्ध ९१

प्राधान्ये राजलिंगे च वृषांगे ककुदोऽस्त्रियाम् ।

ककुद--प्रधान, राजचिह्न तथा बैलका कन्धा ॥

स्त्री संविज्ज्ञानसंभाषाक्रियाकाराजिनामसु ॥ ९२ ॥

संविद्--ज्ञान, सम्भाषण, कर्म, नियम, युद्ध और नाम ॥ ९२ ॥

धर्मे रहस्युपनिषत्-

उपनिषद्-धर्म, एकान्त और वेदान्त॥

-स्याद्दतौ वत्सरे शरत् ।

शरद्-क्वार कार्तिकका समय और वर्ष ॥

पदं व्यवसितत्राणस्थानलक्ष्माङ्घ्रिवस्तुषु ॥ ९३ ॥

पद-व्यवसाय, रक्षास्थान, चिह्न, चरण तथा वस्तु ॥ ९३ ॥

गोष्पदं सेविते माने-

गोष्पद-सेवित देश तथा भूमिपर गायके खुरसे हुआ गड्ढा ॥

-प्रतिष्ठा कृत्यमास्पदम् ।

आस्पद-प्रतिष्ठा,स्थान तथा कार्य ॥

त्रिष्विष्टमधुरौ स्वादु-

स्वादु-इष्ट और मधुर ॥

-मृदु चातीक्ष्णकोमलौ ॥९४॥

मृदु-अतीक्ष्ण तथा कोमल ॥९४॥

मूढाल्पापटुनिर्भाग्या मंदाः स्यु-

मन्द-मूर्ख, आलसी, अप्रवीण, अल्प तथा निर्भाग्य ॥

-र्द्वौ तु शारदौ । प्रत्यग्राप्रतिभौ-

शारद-डरपोक, छितिउन (वृक्ष) जलपीपर ओषधी ॥

-विद्वत्सुप्रगल्भौ विशारदौ ९५

विशारद-विद्वान्, चतुर और ढीठ पुरुष ॥ ९५ ॥

इति दान्ताः ॥

व्यामो वटश्च न्यग्रोधा-

न्यग्रोध-वटवृक्ष तथा अँकवार ॥

-वुत्सेधः काय उन्नतिः ।

उत्सेध-देह तथा ऊँचाई ॥

पर्याहारश्च मार्गश्च विवधौ वीवधौ च तौ ॥ ९६ ॥

विवध, वीवध-पर्याहार (ध्यानादि) तथा मार्ग ॥ ९६ ॥

परिधिर्यज्ञियतरोः शाखायामुपसूर्यके ।

परिधि-वृत्तकी परिधि वा गोलाई, सूर्य वा चन्द्रके चारों ओरका मण्डल, पलाश इत्यादि यज्ञके वृक्षकी शाखा ॥

बन्धके व्यसनं चेतःपीडाधिष्ठानमाधयः ॥ ९७ ॥

आधि-बन्धक, आपत्ति, मनकी पीडा तथा बैठना ॥ ९७ ॥

स्युः समर्थननीवाकनियमाश्च समाधयः ।

समाधि-चित्तके व्यापारका रोकना, अङ्गीकार,चुप रहना, नियम तथा ध्यान॥

दोषोत्पादेऽनुबन्धः स्यात्प्रकृत्यादिविनश्वरे ॥ ९८ ॥

मुख्यानुयायिनि शिशौ प्रकृतस्यानुवर्तने ।

अनुबन्ध–दोषका उत्पन्न करना, प्रकृति, प्रत्यय, आगम, आदेश इत्यादिमें जिसका नाश हो गया हो वह ॥ ९८ ॥ पिता इत्यादि बड़ोंका अनुसरण करनेवाला बालक, प्रारम्भ किया वस्तुका परम्परासे चलना ॥

विधुर्विष्णौ चन्द्रमसि–

विधु–विष्णु, चन्द्रमा, कपूर तथा राक्षस ॥

–परिच्छेदे बिलेऽवधिः ॥ ९९ ॥

अवधि–सीमा वा हद्द, गड्ढा और काल ॥ ९९ ॥

विधिर्विधाने दैवेऽपि–

विधि–करना, भाग्य, धर्मशास्त्र तथा आज्ञा देना ॥

–प्रणिधिः प्रार्थने चरे ।

प्रणिधि–प्रार्थना तथा चलनेवाला ॥

बुधवृद्धौ पण्डितेऽपि–

बुध–पण्डित तथा एक ग्रह, तथा वृद्ध पुरुष ॥

–स्कन्धः समुदयेऽपि च १००॥

स्कन्ध–समुदय, समूह, काण्ड, राजा तथा कन्धा ॥ १०० ॥

देशे नदविशेषेऽब्धौ सिन्धुर्ना सरिति स्त्रियाम् ।

सिंधु–समुद्र, एक नद, सिंधुदेश तथा नदी ॥

विधा विधौ प्रकारे च–

विधा–विधान प्रकार तथा बड़ाई ॥

–साधू रम्येऽपि च त्रिषु॥१०१

साधु–साधु, कुलीन, सुंदर, रोजगारी तथा सज्जन ॥ १०१ ॥

वधूर्जाया स्नुषा स्त्री च–

वधू–स्त्री,(विवाहिता स्त्री) पुत्रकी बहू, सवरग ओषधी ॥

–सुधा लेपोऽमृतं स्नुही ।

–सुधा–अमृत, चूना, बिजली भोजन, अँवरा, सेहुँड ॥

सन्धा प्रतिज्ञा मर्यादा–

संधा–प्रतिज्ञा, अंगीकार, मर्यादा ॥

–श्रद्धा संप्रत्ययः स्पृहा १०२॥

श्रद्धा–आदर, आकांक्षा तथा विश्वास ॥ १०२ ॥

मधु मद्ये पुष्परसे क्षौद्रे–

मधु–मद्य, पुष्परस, शहद, चैत्र तथा महुआ ॥

–ऽप्यन्धं तमस्यपि ॥

अन्ध–अन्धा तथा अँधियारा ॥

अतस्त्रिषु–

यहांसे लेकर धांतवर्गपर्यंत शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥

गंधन–सूचना करना वा चुगलीखाना, हिंसा तथा उत्साह देना वा भरोसा देना ।

आतञ्चनं प्रतीवापजवनाप्यायनार्थकम् ॥ ११५ ॥

आतञ्चन–वेग, तप करना तथा दूधमें मट्ठा डालना ॥ ११५ ॥

व्यञ्जनं लाञ्छनं श्मश्रुनिष्ठानावयवेष्वपि ।

व्यञ्जन–चिह्न, दाढ़ी मूछ, निष्ठान तथा अङ्ग ॥

स्यात्कौलीनं लोकवादे युद्धे पश्वहिपक्षिणाम् ॥ ११६ ॥

कौलीन–लोकापवाद वा लोकनिंदा तथा पशु सर्प पक्षीका युद्ध ॥ ११६ ॥

स्यादुद्यानं निःसरणे वनभेदे प्रयोजने ।

उद्यान–बगीचा, निकलना तथा प्रयोजन ॥

अवकाशे स्थितौ स्थानं–

स्थान–अवकाश और स्थिति ॥

–क्रीडादावपि देवनम् ॥११७॥

देवन–क्रीडा, व्यवहार तथा जीतनेकी इच्छा ॥ ११७ ॥

उत्थानं पौरुषे तन्त्रे संनिविष्टोद्गमेऽपि च ।

उत्थान–उठना वा खडा होना, उद्योग, कुटुम्बकार्य, सिद्धान्त तथा उत्तम औषध ।

व्युत्थानं प्रतिरोधे च विरोधाचरणेऽपि च ॥ ११८ ॥

व्युत्थान–तिरस्कार या अनादर, विरोध करना तथा स्वतन्त्रतासे काम करना ॥ ११८ ॥

मारणे मृतसंस्कारे गतौ द्रव्येऽर्थदापने । निर्वर्तनोपकरणानुव्रज्यासु च साधनम् ॥ ११९ ॥

साधन–पारा इत्यादि रसायनका बनाना, चलना, पृथ्वी, जल इत्यादि द्रव्य, धन दौलत दिलवाना, धन इत्यादिका पैदा करना, उपाय, पीछे पीछे चलना, पुरुषकी मूत्रइंद्रिय, तथा मृतक वा अग्निसंस्कार ॥ ११८ ॥

निर्यातनं वैरशुद्धौ दाने न्यासार्पणेऽपि च ।

निर्यातन–वैरशोधन, दान तथा धरोहर देना ॥

व्यसनं विपदि भ्रंशे दोषे कामजकोपजे ॥ १२० ॥

व्यसन–विपत्ति, भ्रंश,नाश वा पतन, कामज दोष तथा कोपज दोष ॥ १२० ॥

पक्ष्माक्षिलोम्नि किंजल्के तन्त्वाद्यंशेऽप्यणीयसि ।

पक्ष्मन्–नेत्रोंके पलक, केसर, सूतका टुकड़ा, अतिअल्प ॥

तिथिभेदे क्षणे पर्व–

पर्वन्–अष्टमी दर्श आदि तिथि, उत्सव ॥

–वर्त्मनेत्रच्छदेऽध्वनि ॥ १२१ ॥

वर्त्मन्–मार्ग वा रास्ता तथा आंखके पलक ॥ १२१ ॥

अकार्यगुह्ये कौपीनं–

कौपीन–अकार्य और गुह्य तथा कौपीन ॥

–मैथुनं संगतौ रते ।

मैथुन–स्त्री पुरुषका संयोग तथा रति ॥

प्रधानं परमात्मा धीः–

प्रधान–प्रधान वा मुख्य तथा राजाका मुख्य सहाय, परमात्मा, बुद्धि ॥

–प्रज्ञानं बुद्धिचिह्नयोः ॥ १२२ ॥

प्रज्ञान–बुद्धि और चिह्न ॥ १२२ ॥

प्रसूनं पुष्पफलयो–

प्रसून–फूल तथा फल ॥

–र्निधनं कुलनाशयोः ।

निधन–कुल और नाश ॥

क्रन्दने रोदनाह्वाने–

क्रन्दन–रोना, पुकारना तथा योद्धाओंका धमकीसे ललकारना ॥

–वर्ष्म देहप्रमाणयोः ॥ १२३ ॥

वर्ष्मन्–शरीर वा देह तथा प्रमाण वा माप ॥ १२३ ॥

गृहदेहत्विट्प्रभावा धामा–

धामन्–घर, देह, प्रभा वा प्रकाश तथा प्रभाव ॥

–न्यथ चतुष्पथे । संनिवेशे च संस्थानं–

संस्थान–किसी वस्तुके अवयवोंका विभाग तथा चौराहा और मरना वा नाश ॥

–लक्ष्म चिह्नप्रधानयोः ॥ १२४ ॥

लक्ष्मन्–चिह्न तथा प्रधान वा मुख्य ॥ १२४ ॥

आच्छादने संपिधानमपवारणमित्युभे ।

आच्छादन–ढाकना, छिपना, वस्त्र इत्यादिसे वेष्टन, वस्त्र तथा गुप्त होना ॥

आराधनं साधने स्यादवाप्तौ तोषणेऽपि च ॥ १२५ ॥

आराधन–सन्तुष्ट करना, सिद्ध करना तथा लाभ ॥ १२५ ॥

अधिष्ठानं चक्रपुरप्रभावाध्यासनेष्वपि ॥

अधिष्ठान–पहिया, नगर, आक्रमण वा अमलमें कर लेना ॥

रत्नं स्वजातिश्रेष्ठेऽपि–

रत्न—जवाहिर तथा स्वजातिमें श्रेष्ठ वा उत्तम ॥

—वने सलिलकानने ॥ १२६ ॥

वन—पानी और वन ॥ १२६ ॥

तलिनं विरले स्तोके—

तलिन—विरल तथा थोड़ा ॥

—वाच्यलिङ्गं तथोत्तरे ।

यहांसे नांतवर्गकी समाप्ति पर्य्यन्त संपूर्ण शब्द वाच्यलिंग होते हैं ॥

समानाः सत्समैके स्युः—

समान—पंडित, सम और एक ॥

—पिशुनौ खलसूचकौ ॥ १२७ ॥

पिशुन—सूचक वा चुगलखोर तथा खल ॥ १२७ ॥

हीनन्यूनावूनगर्ह्यौ—

हीन—थोड़ा, त्याग किया गया, न्यून—निन्दा करने योग्य व किसी वस्तुसे रहित ॥

—वेगिशूरौ तरस्विनौ ।

तरस्विन्—वेगवाला तथा शूर ॥

अभिपन्नोऽपराद्धोऽभिग्रस्तव्यापद्गतावपि ॥ १२८ ॥

अभिपन्न—अपराधी, जीता गया तथा विपत्तिको प्राप्त हुआ ॥ १२८ ॥

॥ इति नान्ताः ॥

कलापो भूषणे बर्हे तूणीरे संहतावपि ।

कलाप—समूह, मोरकी पूँछ, कोंधनी तथा गहना और तरकस ॥

परिच्छदे परीवापः पर्युप्तौ सलिलस्थितौ ॥ १२९ ॥

परीवाप—तंबू कनात इत्यादि सामग्री तथा बीजका बोना और थाला ॥ १२९ ॥

गोधुग्गोष्ठपती गोपौ—

गोप—अहीर, गन्धरस, अनेक कामोंको करनेवाला वा कामदार ॥

—हरविष्णू वृषाकपी ।

वृषाकपी—महादेव तथा विष्णु ॥

बाष्पमूष्माश्रु—

बाष्प—भाफ अर्थात् गरम वस्तुपर पानी डालनेसे धुआंके सदृश ऊपर उठती हुई वस्तु, आंसू, गरमी ॥

—कशिपु त्वन्नमाच्छादनं द्वयम् ॥ १३० ॥

कशिपु—भोजन, अन्न, वस्त्र तथा तकिया ॥ १३० ॥

तल्पं शय्याट्टदारेषु—

तल्प—खाट, अटारी तथा दारा ॥

—स्तम्बेऽपि विटपोऽस्त्रियाम् ।

विटप—शाखा पत्ता इत्यादिका समूह, घास तृण इत्यादिका गुच्छा, वृक्ष वा पेड़ ॥

प्राप्तरूपस्वरूपाभिरूपा बुधमनोज्ञयोः ॥ १३१ ॥ भेद्यलिंगा अमी–

प्राप्तरूप, स्वरूप, अभिरूप-पंडित तथा सुन्दर ॥ १३१ ॥

–कूर्मी वीणाभेदश्च कच्छपी ।

कच्छपी–कछुही और सारस्वती वीणा ॥

इति पांताः ॥

रवर्णे पुंसि रेफः स्यात्कुत्सिते वाच्यलिंगकः ॥ १३२ ॥

रेफ–अधम वा नीच तथा रेफ वा हल् रकार एक वर्ण ॥ १३२ ॥

इति फांताः ॥

अन्तराभवसत्त्वेऽश्वे गन्धर्वो दिव्यगायने ।

गन्धर्व–विश्वावसु इत्यादि स्वर्गके गवैये, घोड़ा, एक प्रकारका गन्धयुक्त मृग, मनुष्यादि प्राणी ॥

कम्बुर्ना वलये शंखे–

कम्बु–शंख, कंकण वा कंगन ॥

–द्विजिह्वौ सर्पसूचकौ ॥ १३३ ॥

द्विजिह्व–सर्प तथा चुगलखोर ॥१३३॥

पूर्वोऽन्यलिंगः प्रागाह पुंबहुत्वेऽपि पूर्वजान् ॥

पूर्व–पहिला (ली), पूर्वपुरुष अर्थात् पुरुखा, ब्रह्मा, पूर्वदिशा तथा पहिले ॥

इति बान्ताः ॥

कुम्भौ घटेभमूर्धांशौ–

कुम्भ–गूगलका वृक्ष, घड़ा, हाथीका मस्तक, अंश, कुम्भराशि ॥

–डिम्भौ तु शिशुबालिशौ ॥ १३४ ॥

डिम्भ–बालक तथा मूर्ख ॥१३४॥

स्तम्भौ स्थूणाजडीभावौ–

स्तम्भ–खम्भ, ठगमुरी ॥

–शम्भू ब्रह्मत्रिलोचनौ ।

शम्भु–ब्रह्मा और शिव ॥

कुक्षिभ्रूणार्भका गर्भा–

गर्भ–स्त्रीके पेटका गर्भ, पेट, बालक नाट्यकी तीसरी संधि ॥

–विस्रम्भः प्रणयेऽपि च ॥ १३५ ॥

विस्रम्भ–शृङ्गारकी प्रार्थना और विश्वास ॥ १३५ ॥

स्याद्भेर्यां दुन्दुभिः पुंसि स्यादक्षे दुन्दुभिः स्त्रियाम् ।

दुन्दुभि–नगाड़ा तथा लड़कोंका एक प्रकारका खिलौना ॥

स्यान्महारजने क्लीबं कुसुम्भं करके पुमान् ॥ १३६ ॥

कुसुम्भ–कमण्डलु, कुसुम्भका फूल ॥ १३६ ॥

क्षरित्रियेऽपि च नाभिर्ना–

नाभि—ठोड़ी, क्षत्रिय, मुख्य राजा, रथके चक्रका मध्यभाग और कस्तूरी ॥

सुरभिर्गवि च स्त्रियाम् ।

सुरभि—सुन्दर वा मनोहर,सुगंधयुक्त प्रसिद्ध,चंपा (पुष्पवृक्ष), वसन्तऋतु, जायफल, कामधेनु, सलईवृक्ष, सुवर्ण वा सोना तथा कमल (पुष्पवृक्ष) ॥

सभा संसदि सभ्ये च-

सभा—सभा तथा घर ॥

—त्रिष्वध्यक्षेऽपि वल्लभः॥१३७॥

वल्लभ—प्यारा-री, स्त्रीका पति,अध्यक्ष वा मालिक तथा कुलीन घोड़ा॥१३७॥

इति भांताः ॥

किरणप्रग्रहौ रश्मी-

रश्मि—किरण वा प्रकाश तथा लगाम।

—कपिभेकौ प्लवंगमौ ।

प्लवंगम—वानर तथा मेंढक ॥

इच्छामनोभवौ कामौ-

काम—इच्छा और काम ॥

—शौर्योद्योगौ पराक्रमौ॥१३८॥

पराक्रम—शूरता तथा उद्योग ॥ १३८ ॥

धर्माः पुण्ययमन्यायस्वभावाचारसोमपाः ।

धर्म—पुण्य,यमराज, न्याय, स्वभाव, आचार तथा सोमयज्ञ करके सोमवल्लीका रस पीनेवाला ॥

उपायपूर्व आरम्भ उपधा चाप्युपक्रमः ॥ १३९ ॥

उपक्रम—उपायपूर्वक प्रारम्भ, प्रारंभ तथा रिसवत ॥ १३९ ॥

वणिक्पथः पुरं वेदो निगमो-

निगम—व्यापार, शहर तथा वेद ।

--नागरो वणिक् । नैगमौ द्वौ-

नैगम—वेदसम्बन्धि वस्तु, नगरका रहनेवाला तथा बनियां और उपनिषद् ॥

—बले रामो नीलचारुसिते त्रिषु ॥ १४० ॥

राम—सुंदर वा मनोहर, नीली वस्तु, श्वेत वस्तु तथा परशुराम, रामचन्द्र, बलराम ॥ १४० ॥

शब्दादिपूर्वो वृन्देऽपि ग्रामः--

ग्राम—(पु०) गांव, (इस शब्दके पूर्वमें जब"शब्द"इत्यादि शब्द रहते हैं तब यह समूहवाची होता है, जैसा-शब्दग्राम, स्वरग्राम, यह शब्द कहीं स्वरवाची भी है) ।

--क्रान्तौ च विक्रमः ।

विक्रम—विक्रमण तथा पराक्रम ॥

स्तोमः स्तोत्रेऽध्वरे वृन्दे--

स्तोम—समूह तथा स्तोत्र ॥

जिह्मस्तु कुटिलेऽलसे ॥१४१॥

जिह्म—कुटिल तथा आलसी और वक्र ॥ १४१ ॥

गुल्मा रुक्स्तम्बसेनाश्च—

गुल्म—पिलही रोग, विना डालीका वृक्ष तथा एक प्रकारकी सेना ॥

जामिः स्वसृकुलस्त्रियोः ।

जामि—बहिन, तथा कुलस्त्री ॥

क्षितिक्षान्त्योः क्षमा युक्ते क्षमं शक्ते हिते त्रिषु ॥ १४२ ॥

क्षमा—पृथ्वी तथा क्षमा वा सहना ॥ १४२ ॥

त्रिषु श्यामौ हरित्कृष्णौ श्यामा स्याच्छारिवा निशा ।

श्याम, श्यामा—हरा, कृष्णशतावरी और रात्रि ॥

ललामं पुच्छपुंड्राश्वभूषाप्राधान्यकेतुषु ॥ १४३ ॥

ललाम—पूंछ, घोड़ा, घोड़ेके माथेका एक चिह्न, घोड़ेका गहना, प्रधान वा मुख्य, मनोहर, प्रभाव, पुरुष तथा भूषण और अश्वलिंगी ॥ १४३ ॥

सूक्ष्ममध्यात्मम—

सूक्ष्म—छल तथा अध्यात्म ॥

—प्याद्यौ प्रधाने प्रथम—

प्रथम—पहिला—ली, तथा प्रधान वा मुख्य ॥

—स्त्रिषु ।

यहांसे लेकर मान्तपर्यंत सम्पूर्ण शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥

वामौ वल्गुप्रतीपौ द्वा—

वाम—शोभित, उलटा तथा टेढ़ा ॥

वधमौ न्यूनकुत्सितौ ॥ १४४ ॥

अधम—न्यून तथा निन्दित १४४॥

जीर्णं च परिभुक्तं च यातयाममिदं द्वयम् ॥

यातयाम—पुराना—नी, (बासी अन्न इत्यादि) और भोजन करके त्याग किया गया—वा की गयी ॥

॥ इति मान्ताः ॥

तुरंगगरुडौ तार्क्ष्यौ—

तार्क्ष्य—घोड़ा तथा गरुड़ ॥

—निलयापचयौ क्षयौ ॥१४५॥

क्षय—नाश, प्रलय, क्षयरोग तथा घर ॥ १४५ ॥

श्वशुर्यौ देवरश्यालौ—

श्वशुर्य—देवर तथा साला ॥

भ्रातृव्यौ भ्रातृजद्विषौ ।

भ्रातृव्य—भतीजा तथा शत्रु ॥

पर्जन्यौ रसदब्देन्द्रौ—

पर्जन्य—शब्दित मेघ तथा इन्द्र ॥

—स्यादर्यः स्वामिवैश्ययोः १४६

अर्य—स्वामी तथा वैश्य ॥ १४६॥

तिष्यः पुष्ये कलियुगे--

तिष्य--पुष्य नक्षत्र और कलियुग ॥

--पर्यायोऽवसरे क्रमे ।

पर्याय--अवसर तथा क्रम ॥

प्रत्ययोऽधीनशपथज्ञानविश्वास-हेतुषु ॥ १४७ ॥ रन्ध्रे शब्दे--

प्रत्यय--अधीन,शपथ, ज्ञान, विश्वास तथा कारण॥१४७॥छिद्र और शब्द ॥

--ऽथानुशयो दीर्घद्वेषानुतापयोः।

अनुशय--बड़ा वैर तथा पश्चात्ताप ॥

स्थूलोच्चयस्त्वसाकल्ये गजानां मध्यमे गते ॥ १४८ ॥

स्थूलोच्चय--पर्वतका बड़ा ढाँका, अपूर्णता, हाथियोंकी मध्यम गति अर्थात् न जल्दी न धीरे ॥ १४८ ॥

समयाः शपथाचारकालसिद्धान्तसंविदः ।

समय--काल वा समय, शपथ वा किरिया, आचार वा अपने मतके सदृश व्यवहार, सिद्धान्त अर्थात् निर्णय किया हुआ पदार्थ तथा बातचीत करना ॥

व्यसनान्यशुभं दैवं विपदित्यनयास्त्रयः ॥ १४९ ॥

अनय--दुर्व्यसन, जुआ इत्यादि, दुष्ट भाग्य तथा विपत्ति और अनीति १४९॥

अत्ययोऽतिक्रमे कृच्छ्रदोषे दण्डे--

अत्यय--मरना, उल्लंघन, क्लेश-दोष तथा दण्ड और नाश ॥

ऽप्यथापदि । युद्धायत्योः संपरायः--

सम्पराय--आपत्ति, युद्ध तथा उत्तर-काल या अगाड़ीका समय ॥

--पूज्यस्तु श्वशुरेऽपि च॥१५०॥

पूज्य--पूजा वा आदर करनेके योग्य और ससुर ॥ १५० ॥

पश्चादवस्थायि बलं समवायश्च संनयौ ।

सन्नय--अच्छा न्याय करनेवाला, सेनाके पीछेकी सेना तथा समूह ॥

संघाते संनिवेशे च संस्त्यायः--

संस्त्याय--समूह,बैठक तथा विस्तार ।

--प्रणयास्त्वमी ॥ १५१ ॥ विस्रम्भयाच्ञाप्रेमाणः--

प्रणय--प्रेम वा प्रीति, मांगना तथा विश्वास ॥ १५१ ॥

--विरोधेऽपि समुच्छ्रयः ॥

समुच्छ्रय--ऊँचाई तथा विरोध ॥

विषयो यस्य यो ज्ञातस्तत्र शब्दादिकेष्वपि ॥ १५२ ॥

विषय--जानी हुई वस्तु, रूप,

रस, गन्ध, स्पर्श, शब्द ये प्रत्येक विषय कहलाते हैं, देश, स्थान और आश्रय ॥ १५२ ॥

निर्यासेऽपि कषायोऽस्त्री-

कषाय-कैषेला रङ्गवाला-ली, कैषेला रङ्ग, काढ़ा, विलेपन तथा नया अंगराग अर्थात् टटका चन्दनादिक ॥

-सभायां च प्रतिश्रयः ।

प्रतिश्रय-सभा, आश्रय वा अवलम्बन तथा अंगीकार ॥

प्रायो भूम्न्यन्वगमने-

प्राय-संन्यासपूर्वक भोजनका त्याग, मृत्यु वा मरण और तुल्य ॥

-मन्युर्दैन्ये क्रतौ क्रुधि ॥१५३॥

मन्यु-क्रोध, दीनता वा गरीबी तथा चिन्ता वा शोक ॥ १५३ ॥

रहस्योपस्थयोर्गुह्यं-

गुह्य-छिपानेके योग्य तथा स्त्री वा पुरुषका मूत्रेन्द्रिय ॥

-सत्यं शपथतथ्ययोः ।

सत्य-सच्चा-सच्ची, सत्यभामा, सत्यता, कसम तथा सत्ययुग ॥

वीर्यं बले प्रभावे च-

वीर्य-बल और प्रभाव ॥

-द्रव्यं भव्ये गुणाश्रये ॥१५४॥

द्रव्य-धन, भव्य अर्थात् सुंदर और स्थिर ॥ १५४ ॥

धिष्ण्यं स्थाने गृहे भेऽग्नौ-

धिष्ण्य-स्थान, गृह, नक्षत्र तथा अग्नि ॥

-भाग्यं कर्म शुभाशुभम् ।

भाग्य-भाग्य वा पूर्वजन्मके किये हुए अच्छे वा बुरे कर्म ॥

कशेरुहेम्नोर्गाङ्गेयं-

गांगेय-गंगासम्बन्धी वस्तु, भीष्म कौरवके पितामह, सुवर्ण वा सोना, कसेरुफल वा कन्द ॥

-विशल्यादन्तिकाऽपि च १५५॥

विशल्या-गुडूची ओषधी, इन्द्रपुष्पी ओषधी, अग्निकी शिखा वा आगकी लपट तथा दन्तिका ओषधी ॥ १५५ ॥

वृषाकपायी श्रीगौर्यो-

वृषाकपायी-लक्ष्मी तथा पार्वती ॥

-रभिख्या नामशोभयोः ॥

अभिख्या-नाम तथा शोभा ॥

आरम्भो निष्कृतिः शिक्षा पूजनं संप्रधारणम् ॥ १५६ ॥ उपायः कर्म चेष्टा च चिकित्सा च नव क्रियाः ।

क्रिया-क्रिया आरंभ, प्रायश्चित्त, शिक्षा, पूजन, विचार ॥ १५६ ॥ उपाय, कर्म, चेष्टा तथा दवाई करना ॥

छाया सूर्यप्रिया कान्तिः प्रतिबिम्बमनातपः ॥ १५७ ॥

छाया–सूर्यकी स्त्री वा शनैश्चरकी माता तथा शोभा और प्रतिबिम्ब ॥ १५७ ॥

कक्ष्या प्रकोष्ठे हर्म्यादेः काञ्च्यां मध्येभबन्धने ।

कक्ष्या–राजाकी डेउढ़ी, स्त्रियोंके कमरका गहना, हाथीके मध्य शरीरका बन्धन ॥

कृत्या क्रियादेवतयोस्त्रिषु भेद्ये धनादिभिः ॥ १५८ ॥

कृत्या–धन, स्त्री, भूमि इत्यादि, फोड़नेके योग्य शत्रुका पौरुष इत्यादि, तामसी देवता जिसको लोग शत्रुपर चलाते हैं तथा क्रिया वा कर्म ॥ १५८ ॥

जन्यं स्याज्जनवादेऽपि–

जन्य–जो पैदा होता है, निन्दित वचन धरके अर्थात् दामादके पक्षवाले मित्र इत्यादि, बाजार तथा युद्ध ॥

–जघन्योऽन्त्येऽधमेऽपि च ।

जघन्य–सबसे पिछला–ली, अधम वा नीच तथा मूत्रेन्द्रिय ॥

गर्ह्याहीनौ च वक्तव्यौ–

वक्तव्य–बोलनेके योग्य, निन्दा करनेके योग्य, हीन अर्थात् किसी वस्तुसे रहित तथा अधीन वा परतन्त्र ॥

–कल्यौ सज्जनिरामयौ ॥ १५९ ॥

कल्य–कवच धारण करनेवाला योद्धा तथा नीरोग ॥ १५९ ॥

आत्मवाननपेतोऽर्थादर्थ्यौ–

अर्थ्य–अर्थसे च्युत वा दूर न हुआई, बुद्धिमान्–मती, और शिलाजीत ॥

–पुण्यं तु चार्वऽपि ।

पुण्य–पुण्यवान्, मनोहर तथा धर्म ।

–रूप्यं प्रशस्तरूपेऽपि–

रूप्य–रमणीय वा सुन्दर, रुपया वा चांदी, छपी हुई चांदी वा सोना अर्थात् चांदी वा सोनेका रुपया ॥

–वदान्यो वल्गुवागपि ॥ १६० ॥

वदान्य--दाता वा देनेवाला–ली, मीठा बोलनेवाला–ली ॥ १६० ॥

न्याय्येऽपि मध्यं–

मध्य–बिचला-ली वा बीचवाला–ली, अधम वा नीच, न्याययुक्त वा न्यायके सदृश, कमर तथा बीच ॥

–सौम्यं तु सुन्दरे सोमदैवते ।

सौम्य–सूधा–धी, सुन्दर, चन्द्रको निवेदन करनेके योग्य वस्तु, बुध (एक ग्रह) ॥

इति यांताः ॥

निवहावसरौ वारौ–

वार–सोम, मंगल, बुध इत्यादि ७ वार, अवसर तथा समूह ॥

—संस्तरौ प्रस्तराध्वरौ ॥१६१॥

संस्तर—कुशका बिछौना; बिछौना तथा यज्ञ ॥ १६१ ॥

गुरू गीष्पतिपित्राद्यौ—

गुरु—भारी, बृहस्पति, बडेलोग (पिता इत्यादि) ॥

—द्वापरौ युगसंशयौ ।

द्वापर—संशय (सन्देह) 'द्वापर' युग ॥

प्रकारौ भेदसादृश्ये—

प्रकार—भेद (तरह) तथा तुल्यता ॥

—आकाराविङ्गिताकृती॥१६२॥

आकार—चेष्टा तथा सूरत ॥१६२॥

किंशारू सस्यशूकेषू—

किंशारु—यव इत्यादिका टूँडा (सुईके तुल्य अग्रभाग) तथा बाण और कंक पक्षी ॥

—मरू धन्वधराधरौ ।

मरु—निर्जलदेश और पर्वत ॥

अद्रयो द्रुमशैलार्काः—

अद्रि—वृक्ष, पर्वत तथा सूर्य ॥

—स्त्रीस्तनाब्दौ पयोधरौ॥१६३॥

पयोधर—स्तन और मेघ ॥ १६३॥

ध्वान्तारिदानवा वृत्रा—

वृत्र—वृत्रासुर, (एक दैत्य) अन्धकार तथा शत्रु ॥

—बलिहस्तांशवः कराः ।

कर—हाथ, हाथीकी सूंड, किरण तथा महसूल वा कर ॥

प्रदरो भङ्गनारीरुग्बाणा—

प्रदर—स्त्रियोंका एक रोग (जिसके होनेसे मूत्रद्वारसे लोहू बहता है) भंग (भग्नता) तथा बाण ॥

—अस्राः कचा अपि ॥ १६४॥

अस्र—केश, कोना आंसू तथा लोहू ॥ १६४ ॥

अजातशृंगो गौः काले-ऽप्यश्मश्रुर्ना च तूवरौ ।

तूवर—समयपर जिसके सींग न जमे हों ऐसा बैल, समयपर जिसके मूंछे न जमी हों ऐसा पुरुष ॥

स्वर्णेऽपि राः—

रै—धन तथा सुवर्ण (सोना) ॥

—परिकरः पर्यंकपरिवारयोः ॥ १६५ ॥

परिकर—पलँग और कुटुम्ब ॥१६५॥

मुक्ताशुद्धौ च तारः स्या—

तार—ऊंचा शब्द, नक्षत्र, आंखकी पुतली, मोती, सफाई, गोल मोती, गोल और निर्मल मोतीसे बना हार, जलसे पार उतरना, एक बानरका नाम तथा चांदी धातु ॥

–च्छारो वायौ स तु त्रिषु । कर्बुरे–

शार–चितकबरा–री, चौपड़ इत्यादिके खेलनेकी गुट्टी तथा वायु ॥

–ऽथ प्रतिज्ञाजिसंविदापत्सु संगरः ॥ १६६ ॥

संगर–संग्रामका युद्ध, प्रतिज्ञा, सलाह तथा आपत्ति वा विपत्ति॥१६६॥

वेदभेदे गुप्तवादे मन्त्रो–

मन्त्र–मन्त्र वा सलाह, एक वेदका भेद तथा गुप्त बोलना ॥

–मित्रो रवावपि ।

मित्र–सूर्य, मित्र (दोस्त) तथा अपने समीपके राजासे व्यवहित राजा ॥

मखेषु यूपखण्डेऽपि स्वरु–

स्वरु–इन्द्रका वज्र तथा यज्ञमें खम्भके छीलनेके समय उसमेंसे गिरा हुआ पहिला टुकड़ा ॥

–र्गुह्येऽप्यवस्करः ॥१६७ ॥

अवस्कर–विष्ठा तथा स्त्री वा पुरुषका मूत्रेन्द्रिय (उपस्थ) ॥१६७॥

आडम्बरस्तूर्यरवे गजेन्द्राणां च गर्जिते ।

आडम्बर–तैयारी, बाजेका शब्द तथा बड़े हाथियोंका शब्द ॥

अभिहारोऽभियोगे च चौर्ये संनहनेऽपि च ॥ १६८ ॥

अभिहार–चोराना, कवच इत्यादिका धारण तथा नालिश इत्यादि शत्रुके नाशका उपाय ॥ १६८ ॥

स्याज्जङ्गमे परीवारः खड्गकोषे परिच्छदे ।

परीवार–कुटुम्ब, तरवार इत्यादिका म्यान तथा लाव, लश्कर ॥

विष्टरो विटपी दर्भमुष्टिः पीठाद्यमासनम् ॥ १६९ ॥

विष्टर–बैठनेका आसन, वृक्ष, दर्भमुष्टि (एक प्रकारका परिमाण) वा नाप ॥ १६९ ॥

द्वारि द्वाःस्थे प्रतीहारः प्रतीहार्यप्यनन्तरे ।

प्रतीहार, प्रतीहारिन्–द्वार तथा द्वारपाल ॥

विपुले नकुले विष्णौ बभ्रुर्ना पिंगले त्रिषु ॥१७०॥

बभ्रु–पीले रंगवाली वस्तु, पीला रंग, बड़ा नौला, विष्णु तथा एक यादव १७०

सारो बले स्थिरांशे च न्याय्ये क्लीबं वरे त्रिषु ।

सार–श्रेष्ठ वा प्रधान, बल, वस्तुका स्थिर भाग, बाहीर, मज्जा व चरबी, पानी, धन तथा उचित वा न्यायके अनुसार ॥

दुरादरो द्यूतकारे पणे द्यूते दुरोदरम् ॥ १७१ ॥

दुरोदर—जुआरी, दाव (जो द्रव्य जुएमें लगाया जाता है) जुआ ॥१७१॥

महारण्ये दुर्गपथे कान्तारं पुंनपुंसकम् ।

कान्तार—दुर्गम वा टेढ़ा मार्ग, बड़ा वन एक प्रकारका ऊख ॥

मत्सरोऽन्यशुभद्वेषे तद्वत्कृपणयोस्त्रिषु ॥ १७२ ॥

मत्सर—ईर्ष्या वा डाह करनेवाला (ली) कृपण, तथा ईर्ष्या वा डाह १७२

देवाद्वृते वरः श्रेष्ठे त्रिषु क्लीबं मनाक्प्रिये ।

वर—श्रेष्ठ वा प्रधान, वा मुख्य देवताने जो प्रसन्न होकर दिया, दूलह वा वर, केशर ॥

वंशांकुरे करीरोऽस्त्री तरुभेदे घटे च ना ॥ १७३ ॥

करीर—बांसका छकड़ा, करील वा टेंटी वृक्ष, एक प्रकारका कांटेदार वृक्ष वा कीकर तथा घटना वा मेल १७३॥

ना चमूजघने हस्ते सूत्रे प्रतिसरोऽस्त्रियाम् ।

प्रतिसर—सेनाका पिछला हिस्सा, तथा मन्त्रतन्त्रका डोरा ॥

यमानिलेन्द्रचन्द्रार्कविष्णुसिंहांशुवाजिषु ॥ १७४ ॥ शुकाहिकपिभेकेषु हरिर्ना कपिले त्रिषु ।

हरि—यम, वायु, इन्द्र, चन्द्र, सूर्य, विष्णु, सिंह, किरण, घोडा ॥ १७४ ॥ तोता, सांप, बन्दर, मेढक और हरा रङ्ग तथा कपिल रङ्ग और कुछ पीली वस्तु ॥

शर्करा कर्परांशेऽपि—

शर्करा—ठिकडी, कंकडी, खांड, रेता तथा बहुत किड़िओंकी जमीन ॥

—यात्रा स्याद्यापने गतौ ॥ १७५ ॥

यात्रा—गमन वा चलना तथा चालना ॥ १७५ ॥

इरा भूवाक्सुराऽप्सु स्या—

इरा—मद्य, भूमि, वाणी तथा जल ॥

—त्तंद्री निद्राप्रमीलयोः ।

तन्द्री—निद्रा तथा आलस्य ॥

धात्री स्यादुपमाताऽपि क्षितिरप्यामलक्यपि ॥ १७६ ॥

धात्री—माता, आमला, पृथ्वी तथा उपमाता अर्थात् दूध पिलानेवाली धाय ॥ १७६ ॥

क्षुद्रा व्यङ्गा नटी वेश्या सरघा कण्टकारिका । त्रिषु क्रूरोऽधमेऽल्पेऽपि क्षुद्रं—

क्षुद्र—क्रूर, अधम, अल्प वा थोड़ा (डी) सूम, मधुमाछी, भटकटैया, हीन अंगवाली स्त्री, नटी, वेश्या ॥

–मात्रा परिच्छदे ॥ १७७ ॥

अल्पे च परिमाणे सा मात्रं कार्त्स्न्ये-ऽवधारणे।

मात्रा–परिच्छद व सामग्री॥१७७॥ परिमाण, सूक्ष्म वा पतला, सम्पूर्णता, तथा अवधारण वा निश्चय ॥

आलेख्याश्चर्ययोश्चित्रं–

चित्र–चित्रविचित्ररंगवाला-ली, आश्चर्ययुक्त, कई एक मिश्रितरङ्ग, एक नक्षत्र, मूसाकर्णी औषध, एक तरहकी ककडी,अद्भुतरस, तसबीर तथा आश्चर्य

–कलत्रं श्रोणिभार्ययोः॥१७८॥

कलत्र–कमर तथा स्त्री ॥ १७८ ॥

योग्यभाजनयोः पात्रं–

पात्र–लायक तथा बर्तन ॥

–पत्रं वाहनपक्षयोः ।

पत्र–सवारी और पंख ॥

निदेशग्रन्थयोः शास्त्रं–

शास्त्र–आज्ञा और ग्रन्थ ॥

–शस्त्रमायुधलोहयोः ॥ १७९ ॥

शस्त्र–हथियार और लोहा॥१७९॥

स्याज्जटांशुकयोर्नेत्रं–

नेत्र–जटा और वस्त्र तथा नेत्र ॥

–क्षेत्रं पत्नीशरीरयोः ।

क्षेत्र–स्त्री तथा शरीर, खेत ॥

मुखाग्रे क्रोडहलयोः पोत्रं–

पोत्र–सूकरके मुखका अग्रभाग तथा हलका अग्रभाग ॥

–गोत्रं तु नाम्नि च ॥ १८० ॥

गोत्र–नाम, पृथ्वी, पर्वत तथा कुल ॥ १८० ॥

सत्रमाच्छादने यज्ञे सदादाने वनेऽपि च ।

सत्र–ढक्कन, यज्ञ, सदादान,(सदावर्त) धन, वन तथा धूर्तता ॥

अजिरं विषये काये–

आजिर–विषय, शरीर, वायु तथा आंगन ॥

–ऽप्यम्बरं व्योम्नि वाससि १८१

अम्बर-आकाश तथा वस्त्र १८१॥

चक्रं राष्ट्रे–

चक्र–राज्य, चकवा पक्षी, समूह, रथका पाहिया, कुम्हारका चाक तथा जलका भँवर ॥

–ऽप्यक्षरं तु मोक्षेऽपि–

अक्षर–मोक्ष, हरफ, ब्रह्म तथा ओंकार ॥

–क्षीरमप्सु च ।

क्षीर–दुग्ध तथा जल ॥

स्वर्णेऽपि भूरिचन्द्रौ द्वौ–

भूरि तथा चन्द्र-सुवर्ण और सुन्दर॥

द्वारमात्रेऽपि गोपुरम् ॥ १८२ ॥

गोपुर—नगरका द्वार तथा द्वारमात्र ॥ १८२ ॥

गुहादम्भो गह्वरे द्वे—

गह्वर—गुफा और पाखण्ड ॥

—रहोऽन्तिकमुपह्वरे ।

उपह्वर—एकान्त तथा समीप ॥

पुरोऽधिकमुपर्यग्रा—

अग्र—पुर, अधिक तथा ऊपर ॥

ण्यगारे नगरे पुरम् ॥ १८३ ॥ मन्दिरं चा—

पुर—मन्दिर—स्थान और नगर १८३॥

—ऽथ राष्ट्रोऽस्त्री विषये स्यादुपद्रवे ।

राष्ट्र—देश तथा उपद्रव ॥

दरोऽस्त्रियां भये श्वभ्रे—

दर—भय,गड्ढा तथा थोड़ा वा सूक्ष्म ॥

—वज्रोऽस्त्री हीरके पवौ १८४ ॥

वज्र—इन्द्रका वज्र, सेहुँड़वृक्ष तथा हीरा ॥ १८४ ॥

तन्त्रं प्रधाने सिद्धान्ते सूत्रवाये परिच्छदे ।

तंत्र—कुटुम्बका कार्य, सिद्धान्त, उत्तम औषध,प्रधान वा मुख्य, जुलाहा, एक प्रकारका शास्त्र, सामग्री, एक प्रकारकी वेदकी शाखा, ऐसा हेतु जो पदार्थोंको सिद्ध करता हो ॥

औशीरश्चामरे दण्डेऽप्यौशीरं शयनासने ॥ १८५ ॥

औशीर—चँवरका दण्ड, शयन और आसन । किसीके मतमें यह शब्द पृथक् २ शयन और आसनका वाचक है ॥ १८५ ॥

पुष्करं करिहस्ताग्रे वाद्यभाण्डमुखे जले । व्योम्नि खड्गफले पद्मे तीर्थौषधिविशेषयोः ॥१८६ ॥

पुष्कर—तलाव, कमल, आकाश, जल, पुष्करमूल, हाथीके सूंडका अग्रभाग, बाजेका मुख ॥ १८६ ॥

अन्तरमवकाशावधिपरिधानान्तर्धिभेदतादर्थ्ये । छिद्रात्मीयविनाबहिरवसरमध्येऽन्तरात्मनि च १८७॥

अन्तर—पहरनेके वस्त्रादि, आत्मसम्बन्धी वा अपनी वस्तु, बाह्य वस्तु, अदृश्य वस्तु, अवकाश, अवधि, अदृश्य होना, भेद, तादर्थ्य, छिद्र, विना अवसर, मध्य, अन्तरात्मा ॥ १८७ ॥

मुस्तेऽपि पिठरं—

पिठर—मोथा, घास तथा मंथनदंड वा मथनिया ॥

—राजकशेरुण्यपि नागरम् ।

नागर—चतुर, नगरवासी, सोंठ तथा नागरमोथा ॥

शार्वरं त्वन्धतमसे घातुके भेद्यलिङ्गकम् ॥ १८८ ॥

शार्वर–मारनेवाला–ली, घन वा बड़ा अन्धकार ॥ १८८ ॥

गौरोऽरुणे सिते पीते–

गौर–श्वेत वा पीत वा लाल रंगवाली वस्तु, श्वेत रंग, पीला रंग, लाल रंग, तथा रजोधर्मसे पहिली अवस्थावाली स्त्री।

–व्रणकार्येऽप्यरुष्करः ।

अरुष्कर–घाव करनेवाला–ली,भेलावा ॥

जठरः कठिनेऽपि स्या–

जठर–कठोर वस्तु, वृद्ध वा बुड्ढा तथा पेट ॥

–दधस्तादपि चाधरः ॥ १८९ ॥

अधर–नीचे, नीचेका ओष्ठ, हीन तथा नीच ॥ १८९ ॥

अनाकुलेऽपि चैकाग्रो–

एकाग्र–एकाग्र वा तत्पर तथा स्वस्थचित्त ॥

–व्यग्रो व्यासक्त आकुले ।

व्यग्र–व्याकुल वा घबड़ाया–यी, दुश्चित्त ॥

उपर्युदीच्यश्रेष्ठेष्वप्युत्तरः स्या–

उत्तर–उत्तर देशमें उत्पन्न हुआ-ई, श्रेष्ठ वा मुख्य, उत्तरदिशा, विराटका पुत्र, ऊपर, विराटकी पुत्री तथा उत्तर (जवाब) ॥

–दनुत्तरः ॥ १९० ॥ एषां विपर्यये श्रेष्ठे–

अनुत्तर–श्रेष्ठ और अश्रेष्ठ॥१९०॥

–दूरानात्मोत्तमाः पराः ।

पर–पराया–यी (वस्तु) अन्य–दूसरा–री, दूर, उत्तम वा श्रेष्ठ, शत्रु, केवल तथा अनन्तर ॥

स्वादुप्रियौ तु मधुरौ–

मधुर–स्वादु और प्रिय ॥

–क्रूरौ कठिननिर्दयौ ॥१९१॥

क्रूर–कठिन और दयाहीन॥१९१॥

उदारो दातृमहतो–

उदार–दाता,बड़ा,सरल वा सूधा ॥

–रितरस्त्वन्यनीचयोः ।

इतर–अन्य तथा नीच ॥

मन्दस्वच्छन्दयोः स्वैरः–

स्वैर–मन्द वा ढीला–ली तथा स्वच्छंद(अपने मनका काम करनेवाला) ॥

–शुभ्रमुद्दीप्तशुक्लयोः ॥ १९२ ॥

शुभ्र–श्वेत वर्णकी वस्तु, उद्दीप्त वा प्रकाशमान तथा श्वेत रंग ॥ १९२ ॥

इति रान्ताः ॥

चूडा किरीटं केशाश्च संयता मौलयस्त्रयः ।

मौलि–मस्तक, चोटी, मुकुट बँधे हुए बाल ॥

द्रुमप्रभेदमातंगकाण्डपुष्पाणि पीलवः ॥ १९३ ॥

पीलु—वृक्षभेद, हस्ती, बाण तथा पुष्प ॥ १९३ ॥

कृतान्तानेहसोः काल—

काल—यमराज, मृत्यु तथा समय ॥

—श्चतुर्थेऽपि युगे कलिः ।

कलि—चौथा युग, पुष्पकी कली, युद्ध तथा कलह ॥

स्यात्कुरंगेऽपि कमलः—

कमल—हिरन, जल, तांबा, कमल तथा आकाश ॥

—प्रावारेऽपि च कम्बलः॥१९४॥

कंबल—सर्पराज, गौके गलेका सास्ना तथा कम्बलवस्त्र ॥ १९४ ॥

करोपहारयोः पुंसि बलिः प्राण्यङ्गजे स्त्रियाम् ।

बलि—महसूल तथा बुढ़ापेमें पुरुष के शरीरमें पड़नेवाली सिकुड़न ॥

स्थौल्यसामर्थ्यसैन्येषु बलं ना काकसीरिणोः ॥ १९५ ॥

बल—मोटाई, सामर्थ्य, सेना, काक-पक्षी तथा बलदेव ॥ १९५ ॥

वातूलः पुंसि वात्यायामपि वातासहे त्रिषु ।

वातूल—आंधी, बावला, तथा वायुको न सहनेवाला ॥

भेद्यलिंगः शठे व्यालः पुंसि श्वापदसर्पयोः ॥ १९६ ॥

व्याल—सर्प, दगाबाज तथा हिंस-कपशु ॥ १९६ ॥

मलोऽस्त्री पापविट्किट्टा—

मल—मैल, पाप तथा विष्ठा ॥

—न्यस्त्री शूलं रुगायुधम् ।

शूल—रोग (जो पेटमें होता है) तथा शूल (एक शस्त्र)॥

शंकावपि द्वयोः कीलः—

कील—अग्निकी ज्वाला वा लपट तथा लोहे आदिकी कील ॥

पालिः स्त्र्यश्र्यंकपंक्तिषु ॥१९७॥

पालि—खड्ग इत्यादिका टोंका (कोना)धारा,चिह्न तथा पंक्ति॥१९७॥

कला शिल्पे कालभेदे—

कला—तीस काष्ठाका एक समय, कारीगरी, मूलधन, वृद्धि, टुकड़ा तथा चन्द्रका सोलहवां भाग ॥

ऽप्याली सख्यावली अपि ।

आलि—सखी तथा पंक्ति ॥

अब्ध्यम्बुविकृतौ वेला काल-मर्यादयोरपि ॥ १९८ ॥

वेला—समुद्रका तीर, काल व समय तथा मर्यादा वा हद्द ॥ १९८ ॥

बहुलाः कृत्तिका गावो बहुलो-ऽग्नौ शितौ त्रिषु ।

बहुल—बहुल, काले रंगवाला—ली, अग्नि वा आग, कृष्णपक्ष, काला रंग, नेवारीपुष्प, गैया, स्त्री, बड़ी इलायची और आकाश ॥

लीला विलासक्रिययो—

लीला—विलास या क्रीड़ा, क्रिया तथा खेलना ॥

—रुपला शर्करापि च ॥१९९॥

उपला—पत्थर, रत्न तथा सिटकी ॥ १९९ ॥

शोणितेऽम्भसि कीलालं—

कीलाल—जल तथा रुधिर ॥

—मूलमाद्ये शिफाभयोः ।

मूल—जड़, पहिला, वृक्षकी जटा तथा आभा और आदिकारण ॥

जालं समूह आनायगवाक्ष-क्षारकेष्वपि ॥ २०० ॥

जाल—मत्स्यादि पकड़नेका जाल, समूह, झरोखा तथा न फूली हुई कली ॥ २०० ॥

शीलं स्वभावे सद्वृत्ते—

शील—शुद्ध कर्म वा पवित्र काम तथा स्वभाव ॥

—सस्ये हेतुकृते फलम् ।

फल—वृक्ष इत्यादिका फल,जायफल, ढाल, हलके नीचेका काष्ठ(जिसका अग्र-भाग लोहेका बना रहता है),हेतु, सिद्ध किया गया बाणका अग्रभाग, त्रिफला, परिणाम तथा लाभ वा नफा ॥

छर्दिर्नेत्ररुजोः क्लीबं समूहे पटलं न ना ॥ २०१ ॥

पटल—समूह, खपड़ा तथा एक नेत्ररोग ॥ २०१ ॥

अधःस्वरूपयोरस्त्री तलं—

तल—किसी वस्तुके नीचेका भाग तथा स्वरूप ॥

—स्याच्चामिषे पलम् ।

पल—एकदण्ड (२४ मिनट काल) का साठवां हिस्सा, ६४ मासा, मांस, तथा उँचाईका माप ॥

औवानलेऽपि पातालं—

पाताल—पाताल तथा वडवानल ॥

—चैलं वस्त्रेऽधमे त्रिषु ॥२०२ ॥

चैल—नीच वा अधम तथा वस्त्र ॥ २०२ ॥

कुकूलं शंकुभिः कीर्णे श्वभ्रे ना तु तुषानले ॥

कुकूल—करसीकी आग, कील व खूटियोंसे भरा हुआ गड्ढा ॥

निर्णीते केवलमिति त्रिलिंगं त्वेककृत्स्नयोः ॥ २०३ ॥

केवल—निर्णय किया गया, ‘ एक ’ संख्या तथा संपूर्ण ॥ २०३ ॥

पर्याप्तिक्षेमपुण्येषु कुशलं शिक्षिते त्रिषु ।

कुशल—चतुर, सामर्थ्ययुक्त, कल्याणवाला—ली, सामर्थ्य, क्षेम, पुण्य तथा कल्याण ॥

प्रवालमंकुरेऽप्यस्त्री—

प्रवाल—मूंगा, नया पत्ता, अंकुर तथा वीणाका दण्ड ॥

—त्रिषु स्थूलं जडेऽपि च२०४॥

स्थूल—मोटा—टी, निर्बुद्धि वा बुद्धिरहित तथा समूह ॥ २०४ ॥

करालो दन्तुरे तुङ्गे—

कराल—भयंकर, ऊंचे दांतवाला—ली तथा ऊंचा—ची ॥

—चारौ दक्षे च पेशलः ।

पेशल—चतुर तथा मनोहर ॥

मूर्खेऽर्भकेऽपि बालः स्या—

बाल—लड़का, केश, बाल, मूर्ख तथा नेत्रवाला औषधी ॥

—ल्लोलश्चलसतृष्णयोः ॥२०५॥

लोल-चञ्चल तथा लालची॥२०५॥

इति लान्ताः ॥

दवदावौ वनारण्यवह्नी—

दव—दाव, वन तथा वनकी आग॥

—जन्महरौ भवौ ।

भव—संसार, जन्म, शंकर ॥

मन्त्री सहायसचिवौ—

मंत्रिन्—राजाका मंत्री वा राजाको सलाह देनेवाला तथा सहायक ॥

—पतिशाखिनरा धवाः ॥२०६॥

धव—स्त्रीका पति, एक वृक्ष तथा पुरुष ॥ २०६ ॥

अवयः शैलमेषार्का—

अवि—मेंढा, पर्वत, सूर्य तथा रजस्वला स्त्री ॥

—आज्ञाह्वानाध्वरा हवाः ॥

हव—पुकारना, आज्ञा वा हुक्म तथा यज्ञ वा याग ॥

भावः सत्तास्वभावाभिप्रायचेष्टात्मजन्मसु ॥ २०७ ॥

भाव—अभिप्राय वा तात्पर्य, विद्वान् वा पंडित, सत्ता वा रहनेवालेका धर्म-स्वभाव, आत्मा, जन्म वा उत्पत्ति, चेष्टा तथा मनका विकार ॥ २०७ ॥

स्यादुत्पादे फले पुष्पे प्रसवो गर्भमोचने ।

प्रसव—जनना, उत्पत्ति, फल तथा पुष्प वा फूल ॥

अविश्वासेऽपह्नवेऽपि निकृतावपि निह्नवः ॥ २०८ ॥

निह्नव—अविश्वास, झूंठ बोलना तथा धूर्त्तपन ॥ २०८ ॥

उत्सेकामर्षयोरिच्छाप्रसवे मह उत्सवः ॥

उत्सव—उत्सव वा मंगलकार्य, औद्धत्य वा गर्व वा बडाई, कोप, इच्छाका वेग तथा आनन्दका समय ॥

अनुभावः प्रभावे च सतां च मतिनिश्चये ॥ २०९ ॥

अनुभाव—प्रभाव, सत्पुरुषोंकी बुद्धिका निश्चय ॥ २०९ ॥

स्याज्जन्महेतुः प्रभवः स्थानं चाद्योपलब्धये ।

प्रभव—उत्पत्तिका स्थान, कारण, पराक्रम तथा ज्ञानका प्रथम स्थान ॥

शूद्रायां विप्रतनये शस्त्रे पारशवो मतः ॥ २१० ॥

पारशव—शूद्रकी स्त्रीमें ब्राह्मणसे हुआ पुत्र तथा शस्त्र ॥ २१० ॥

ध्रुवो भभेदे क्लीबं तु निश्चिते शाश्वते त्रिषु ।

ध्रुव—स्थिर, नक्षत्रविशेष, निश्चय तथा शाश्वत ॥

स्वो ज्ञातावात्मनि स्वं त्रिष्वात्मीये स्वोऽस्त्रियां धने ॥ २११ ॥

स्व—जातिके पुरुष, आत्मा, अपना तथा धन ॥ २११ ॥

स्त्रीकटीवस्त्रबन्धेऽपि नीवी परिपणेऽपि च ॥

नीवी—स्त्रीके वस्त्रका बन्धन जो नाभिके समीप बांधा जाता है तथा मूलधन ॥

शिवा गौरीफेरवयो—

शिवा—पार्वती, सियार, शमीक वृक्ष, हर्र तथा आंवला ॥

—र्द्वन्द्वं कलहयुग्मयोः ॥२१२॥

द्वन्द्व—कलह तथा स्त्री पुरुषका जोडा ॥ २१२ ॥

द्रव्यासुव्यवसायेषु सत्त्वमस्त्री तु जन्तुषु ।

सत्त्व—द्रव्य, प्राण अत्यन्त उद्योग जन्तु, सत्त्वगुण तथा बल ॥

क्लीबं नपुंसके षण्डे वाच्यलिंगमविक्रमे ॥ २१३ ॥

क्लीब—नपुंसकलिङ्ग, नपुंसक पुरुष तथा पराक्रमहीन ॥ २१३ ॥

इति वान्ताः ॥

द्वौ विशौ वैश्यमनुजौ—

विट्—वैश्य मनुष्य तथा प्रवेश ॥

—द्वौ चराभिमरौ स्पशौ ।

स्पश—दूत तथा संग्राम ॥

द्वौ राशी पुञ्जमेषाद्यौ—

राशि—समूह तथा मेषवृषादि राशि ॥

—द्वौ वंशौ कुलमस्करौ ॥२१४॥

वंश—कुटुम्ब तथा बांस ॥ २१४ ॥

रहःप्रकाशौ वीकाशौ-

वीकाश-एकान्त तथा प्रकाश ॥

-निर्वेशो भृतिभोगयोः ।

निर्वेश-नौकरी,भोग तथा मूर्च्छा ॥

कृतान्ते पुंसि कीनाशः क्षुद्र-कर्षकयोस्त्रिषु ॥ २१५॥

कीनाश-यमराज तथा किसान२१५

पदे लक्ष्ये निमित्तेऽपदेशः स्यात्-

अपदेश-बहाना, निशाना वा लक्ष्य तथा निमित्त वा हेतु ॥

-कुशमप्सु च ।

कुश-कुश एक तरहकी घास तथा जल ॥

दशाऽवस्थानेकविधा-

दशा-अवस्था (लड़कई जवानी इत्यादि) ॥

प्याशा तृष्णापि चायता॥२१६॥

आशा-बड़ी तृष्णा तथा दिशा ॥ ॥ २१६ ॥

वशा स्त्री करिणी च स्याद्-

वशा-स्त्री, बांझ, गाय तथा हा-थिनी और बेटी ॥

-दृग्ज्ञाने ज्ञातरि त्रिषु । स्यात्कर्कशः साहसिकः कठोरामसृणावपि ॥ २१७॥

कर्कश-कठोर, दुःस्पर्श, साहसी तथा झगडेलू स्त्री और कबीला औषधि ॥ २१७ ॥

प्रकाशोऽतिप्रसिद्धेऽपि-

प्रकाश-अतिप्रसिद्ध, धूप, उजाला ॥

-शिशावज्ञे च बालिशः ।

बालिश-बालक तथा मूर्ख ॥

॥ इति शान्ताः ॥

सुरमत्स्यावनिमिषौ-

अनिमिष-देवता तथा मत्स्य वा मछली ॥

-पुरुषावात्ममानवौ ॥ २१८ ॥

पुरुष-पुरुष वा नर, आत्मा, नाग-केशर वृक्ष तथा मनुष्य ॥ २१८ ॥

काकमत्स्यात्खगौ ध्वांक्षौ-

ध्वाङ्क्ष-कौवा तथा मत्स्य पकड़नेवाला पक्षी (बगुला) इत्यादि ॥

-कक्षौ तु तृणवीरुधौ ।

कक्ष-कांख वा बगुला तथा तृण वा घासकी गंजी और लता ॥

अभीषुः प्रग्रहे रश्मौ-

अभीषु-किरण, डोरी तथा पगहा लगाम इत्यादि ॥

-प्रैषः प्रेषणमर्दने ॥ २१९ ॥

प्रैष-भेजना, मर्दन करना तथा आज्ञा देना ॥ २१९ ॥

पक्षः सहाये-

पक्ष-पक्षियोंका पंख, वा आधा महीना, सहाय, वैर, बल, मित्र, घर, शरीरकी अगलबलकी पँसली तथा बड़ा हाथी और निकट ॥

-ऽप्युष्णीषः शिरोवेष्टकिरीटयोः ।

उष्णीष-पगड़ी तथा किरीट व मुकुट ॥

शुक्रले मूषिके श्रेष्ठे सुकृते वृषभे वृषः ॥ २२० ॥

वृष-मूषा, जन्तु, श्रेष्ठ वा मुख्य, अडूसा एक झाड, वृषभनामक औषध, बलै, अण्डकोष, धर्म, मेष आदि १२ राशियोंमेंसे दूसरा राशि, सिंगिया(एक विष) तथा एक सुगंध चूर्ण ॥ २२० ॥

कोषोऽस्त्री कुड्मले खड्गपिधानेऽर्थौघदिव्ययोः ॥

कोष (श)-पुष्पकी कली, तलवारका घर वा म्यान, खजाना तथा शपथ (सौगंध वा कसम) ॥

द्यूतेऽक्षे शारिफलकेऽप्याकर्षो-

आकर्ष-जूआ, गुट्टियोंके रखनेके लिये वस्त्रादिसे बना घर तथा पासा ॥

-ऽथाक्षमिन्द्रिये ॥ २२१ ॥ ना सुतांगे कर्षचक्रे व्यवहारे कलिद्रुमे ।

अक्ष-इंद्रिय ॥ २२१ ॥ पासा, सोलह मासा, बहेड़ा, सोंचरनोन ॥

कर्षूर्वार्ता करीषाग्निः कर्षूः कुल्याभिधायिनि ॥ २२२ ॥

कर्षू-पासा, एक प्रकारकी तोल, पहिया, बहेड़ाफल, व्यवहार, करसीकी आग, जीविका तथा नदी ॥ २२२ ॥

पुंभावे तत्क्रियायां च पौरुषं-

पौरुष-पोरसामर गहिरा-री, पौरुष पुरुषका धर्म ॥

-विषमप्सु च ।

विष-विष वा जहर तथा पानी ॥

उपादानेऽप्यामिषं स्या-

आमिष-मांस तथा दूध ॥

दपराधेऽपि किल्बिषम् ॥२२३॥

किल्बिष-पाप, अपराध तथा प्रीति ॥ २२३ ॥

स्याद्वृष्टौ लोकधात्वंशे वत्सरे वर्षमस्त्रियाम् ।

वर्ष-बरस वा देवताओंका एक दिन, वृष्टि वा वर्षा, जम्बूद्वीप तथा स्नान ॥

प्रेक्षा नृत्येक्षणं प्रज्ञा-

प्रेक्षा-बुद्धि तथा देखना ॥

भिक्षा सेवार्थना भृतिः॥२२४॥

भिक्षा-भीख, सेवा, प्रार्थना वा मजूरी ॥ २२४ ॥

त्विट् शोभापि-

त्विष्–शोभा तथा वाणी ॥

–त्रिषु परे–

न्यक्ष–अध्यक्ष और रूक्ष यह तीनों शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥

–न्यक्षं कात्स्न्र्यनिकृष्टयोः ॥

न्यक्ष–निकृष्ट वा नीच तथा संपूर्णता ॥

प्रत्यक्षेऽधिकृतेऽध्यक्षो–

अध्यक्ष–प्रत्यक्ष तथा अधिकारी ॥

–रूक्षस्त्वप्रेमण्यचिक्कणे २२५ ॥

रूक्ष–प्रेमरहित रूखा ॥ २२५ ॥

॥ इति षांताः ॥

रविश्वेतच्छदौ हंसौ–

हंस–सूर्य और हंसपक्षी ॥

–सूर्यवह्नी विभावसू ।

विभावसु–सूर्य तथा अग्नि ॥

वत्सौ तर्णकवर्षौ द्वौ–

वत्स–बछवा, बच्चा वा लड़का, छाती तथा वर्ष वा बारिस ॥

–सारंगाश्च दिवौकसः ॥२२६॥

दिवौकस्–देवता तथा पक्षी २२६॥

शृंगारादौ विषे वीर्ये गुणे रागे द्रवे रसः ।

रस–खट्टा मीठा इत्यादि ६ रस पारा, धातु, गन्धरस, शृङ्गार, वीर, करुणा इत्यादि साहित्यके रस, वीर्य वा धातु प्रीति वा प्रेम, जहर, स्वाद, पतलीवस्तु (जैसा पानी शरबत आदि)

पुंस्युत्तंसावतंसौ द्वौ कर्णपूरे च शेखरे ॥ २२७ ॥

उत्तंस, अवतंस–कर्णफल वा कानका भूषण तथा शिरपेंच ॥ २२७ ॥

देवभेदेऽनले रश्मौ वसू रत्ने धने वसु ।

वसु–किरण वा प्रकाश, अग्नि वा आग, कुबेर, गुम्माभाजी, पानी, धन, तथा मणि ॥

विष्णौ च वेधाः–

वेधस्–ब्रह्मा, विष्णु तथा पंडित ॥

–स्त्री त्वाशीर्हिताशंसाहिदंष्ट्रयोः ॥ २२८ ॥

आशिस्–दूसरेके हितका चाहना और सर्पकी दंष्ट्रा ॥ २२८ ॥

लालसे प्रार्थनौत्सुक्ये–

लालसा–प्रार्थना तथा उत्कंठा वा बड़ी चाह ॥

–हिंसा चौर्यादिकर्म च ।

हिंसा–चोरी आदि बुरा कर्म तथा वध करना ॥

प्रसूरश्वापि–

प्रसू–माता तथा घोड़ी ॥

–भूद्यावौ रोदस्यौ रोदसी च ते ॥ २२९ ॥

रोदसी–द्विवचनांत, भूमि तथा आकाश ॥ २२९ ॥

ज्वालाभासौ न पुंस्यर्चि–

अर्चिस्–ज्वाला तथा प्रकाश ॥

–र्ज्योतिर्भद्योतदृष्टिषु ।

ज्योतिस्–ज्योतिर्विद्या, ताराप्रकाश तथा दृष्टि ॥

पापापराधयोरागः--

आगस्–पाप तथा अपराध ॥

--खगबाल्यादिनोर्वयः ॥२३०॥

वयस्–पक्षी और बाल्य आदि अवस्था ॥ २३० ॥

तेजःपुरीषयोर्वर्चो--

वर्चस्–तेज या प्रकाश वा चमक तथा विष्ठा ॥

--महस्तूत्सवतेजसोः ।

महस्–उत्सव तथा तेज ॥

रजो गुणे च स्त्रीपुष्पे–

रजस्--धूलि और रजोगुण तथा स्त्रीका हर महीनेका रुधिर ॥

--राहौ ध्वान्तेऽगुणे तमः २३१॥

तमस्--अन्धकार, राहुग्रह, तमोगुण अज्ञान तथा क्रोध ॥ २३१ ॥

छन्दः पद्येऽभिलाषे च--

छन्दस्--पद्य और अभिलाष तथा वेद ॥

--तपः कृच्छ्रादिकर्म च ।

तपस्--कृच्छ्रादिव्रत तथा लोकांतर अर्थात् कोई लोक ॥

सहो बलं सहा मार्गो–

सहस्--अगहन महीना तथा बल वा सामर्थ्य ॥

–नभः खं श्रावणो नभाः॥ २३२॥

नभस्–श्रावणमहीना तथा आकाश२३२

ओकः सद्माश्रयश्चौकाः–

ओकस्--आश्रय वा अवलंबन तथा घर।

–पयः क्षीरं पयोऽम्बु च ।

--पयस्- पानी तथा दूध ॥

ओजो दीप्तौ बले–

ओजस्--बल तथा प्रकाश ॥

–स्रोत इंद्रिये निम्नगारये२३३॥

स्रोतस्--सोत वा आपसे आप जल-का बहना, इन्द्रिय तथा नदीका वेग ॥ २३३ ॥

तेजः प्रभावे दीप्तौ च बले शुक्रे–

तेजस्--प्रभाव,प्रकाश,वीर्य,तथाकाम।

–ऽप्यतस्त्रिषु ।

यहांसे आगे सान्तवर्गकी समाप्ति-पर्यंत सब शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं॥

विद्वान्विदंश्च–

विद्वान्–पंडित वा जानकार तथा पत्र।

–बीभत्सो हिंस्रो–

बीभत्स-जिसको देखकर घिन्न उत्पन्न हो

घात करनेवाला, क्रूर वा कठोर तथा बीभत्स रस ॥

–ऽप्यतिशये त्वमी ॥ २३४ ॥ वृद्धप्रशस्ययोर्ज्यायान्–

ज्यायस्–बहुत बुड्ढा–बूढी तथा अत्यन्त प्रशंसा करनेके योग्य ॥२३४॥

कनीयांस्तु युवाल्पयोः ।

कनीयस्–अत्यन्त जवान, अत्यन्त छोटा तथा छोटा भाई ॥

वरीयांस्तूरुवरयोः–

वरीयस्–अत्यन्त बड़ा तथा अत्यन्त श्रेष्ठ ॥

–साधीयान्साधुबाढयोः॥२३५॥

साधीयस्–अत्यन्त साधु वा भलाली तथा अत्यन्त बहुत ॥ २३५॥

॥ इति सान्ताः ॥

दलेऽपि बर्ह–

बर्ह–मोरके पंख वा पूछ, पत्ता तथा करोंदा वृक्ष ॥

–निर्बन्धोपरागार्कादयो ग्रहाः ।

ग्रह–सूर्य इत्यादि ९ ग्रह, ग्रहण करना, यज्ञके पात्र, ग्रहण जो सूर्य चन्द्रको लगता है तथा आग्रह वा हठ ॥

द्वार्यापीडे क्वाथरसे निर्व्यूहो नागदन्तके ॥ २३६ ॥

निर्व्यूह–खूटी, शिरोवेष्टन (पगड़ी सिरपेंच इत्यादि) तथा द्वार और काढ़ा ॥ २३६ ॥

तुलासूत्रेऽश्वादिरश्मौ प्रग्राहः प्रग्रहोऽपि च ।

प्रग्राह,प्रग्रह–कैदी जो चोर इत्यादि अपराधीका दण्ड है, पगहा वा पशु बांधनेकी डोरी, तराजू तथा घोडा इत्यादिकी लगाम ॥

पत्नीपरिजनादानमूलशापाः परिग्रहाः ॥ २३७ ॥

परिग्रह–पत्नी वा स्त्री, परिवार, अंगीकार तथा वृक्षादिकी जड़ और शाप ॥ २३७ ॥

दारेषु च गृहाः–

गृह–पत्नी तथा घर ॥

–श्रोण्यामप्यारोहो वरस्त्रियाः ।

आरोह-चढना, श्रेष्ठ स्त्रीका कटिभाग वा श्रेष्ठ स्त्रीकी कमर तथा वृक्ष इत्यादिकी ऊँचाई ॥

व्यूहो वृन्दे–

व्यूह–समूह तथा एक प्रकारकी सेनाकी रचना ॥

–ऽप्यहिर्वृत्रो–

अहि–सर्प तथा वृत्रनामा दैत्य ॥

–प्यग्नीन्द्वर्कास्तमोऽपहाः ॥२३८॥

तमोऽपहा–चन्द्र,सूर्य तथा अग्नि २३८॥

परिच्छदे नृपार्हेऽर्थे परिबर्हो–

परिबर्ह–राजाका छत्र, चमर इत्यादि चिह्न तथा सामग्री ॥

॥ इति हान्ताः ॥

–ऽव्ययाः परे ।

अव–इसके उपरांत अव्ययोंका वर्णन करते हैं जो कि तीनों लिंग, सातों विभक्ति और एकवचन द्विवचन बहुवचनमें समान बने रहते हैं और उनमें कुछ विकार नहीं होता ॥

आङीषदर्थेऽभिव्याप्तौ सीमार्थे धातुयोगजे ॥ २३९ ॥

आङ्–ईषत्, अभिव्याप्ति, सीमार्थ और धातुके योगार्थमें होता है॥२३९॥

आ प्रगृह्यः स्मृतौ वाक्ये–

आ–स्मरण, वाक्यपूरणमें ॥

–ऽप्यास्तु स्यात्कोपपीडयोः ।

आः–कोपमें, पीडामें ॥

पापकुत्सेषदर्थे कु–

कु–पाप, निन्दा तथा थोड़े अर्थमें ॥

धिङ्निर्भर्त्सननिन्दयोः ॥२४०॥

धिक्–ग्लानि देना वा धिक्कारना तथा निन्दा ॥ २४० ॥

चान्वाचयसमाहारेतरेतरसमुच्चये ।

च–अन्वाचय, समाहार, इतरेतर और समुच्चयमें ॥

स्वस्त्याशीः क्षेमपुण्यादौ–

स्वस्ति-आशीर्वाद, कल्याण, पुण्य और मंगलमें ॥

–प्रकर्षे लंघनेऽप्यति ॥२४१॥

अति–अतिशय, बडाई, प्रकर्ष और लंघन अर्थमें ॥ २४१ ॥

स्वित्प्रश्ने च वितर्के च–

स्वित्–प्रश्न वा पूँछना तथा तर्क करनेमें ॥

–तु स्याद्भेदेऽवधारणे ।

तु–किन्तु, फेर, पादपूरणमें तथा अवधारणमें ॥

सकृत्सहैकवारे चा–

सकृत्–साथ वा संग तथा एकवारमें

–प्यारादूरसमीपयोः ॥२४२॥

आरात्–दूर तथा समीपमें २४२॥

प्रतीच्यां चरमे पश्चा–

पश्चात्–पीछे, पिछला तथा पश्चिमदिशामें ॥

दुताप्यर्थविकल्पयोः ।

उत–समुच्चय और विकल्पमें ॥

पुनः सहार्थयोः शश्व–

शश्वत्–सदा वा सर्वदा तथा निरन्तर वा हरदम और फिरमें ॥

-त्साक्षात्प्रत्यक्षतुल्ययोः॥२४३

साक्षात्-प्रत्यक्ष और तुल्यमें २४३

खेदानुकम्पासंतोषविस्मयामन्त्रणे बत ।

बत-खेद,दया,संतोष,आश्चर्य, जैसी इच्छा हो वैसा करो ऐसी आज्ञा देना॥

हन्त हर्षेऽनुकम्पायां वाक्यारम्भविषादयोः ॥ २४४ ॥

हन्त-हर्ष, दया, वाक्यारंभ तथा विषाद ॥ २४४ ॥

प्रति प्रतिनिधौ वीप्सालक्षणादौ प्रयोगतः ।

प्रति-मुख्यके समान व्याप्त करनेकी इच्छा, चिह्न तथा विपरीत ।

इति हेतुप्रकरणप्रकाशादिसमाप्तिषु ॥ २४५ ॥

इति-हेतु, प्रकरण, प्रकाश, आदि तथा समाप्ति॥ २४५ ॥

प्राच्यां पुरस्तात्प्रथमे पुरार्थेऽग्रत इत्यपि ।

पुरस्तात्-पूर्वदिशा, प्रथम, पूर्वकाल तथा आगे ॥

यावत्तावच्च साकल्येऽवधौ मानेऽवधारणे॥ २४६ ॥

यावत्-तावत्-संपूर्ण, हद्द, तोल तथा निश्चय॥ २४६ ॥

मंगलानन्तरारम्भप्रश्नकार्त्स्न्येंष्वथो अथ ।

अथो-अथ-मंगल,अनन्तर, आरंभ, प्रश्न तथा संपूर्णता ॥

वृथा निरर्थकाविध्यो-

वृथा-निरर्थक, विधिहीन ॥

-र्नानानेकोभयार्थयोः ॥२४७॥

नाना-अनेक तथा उभयार्थक ॥ २४७ ॥

नु पृच्छायां विकल्पे च-

नु-प्रश्न तथा विकल्प॥

-पश्चात्सादृश्ययोरनु ।

अनु-पीछे तथा सदृशता ॥

प्रश्नावधारणानुज्ञानुनयामन्त्रणे ननु॥ २४८ ॥

ननु-प्रश्न, निश्चय, आज्ञा, शान्त करना तथा संबोधन ॥ २४८ ॥

गर्हासमुच्चयप्रश्नशंकासंभावनास्वपि ।

अपि-निन्दा, समुच्चय, प्रश्न, शंका तथा संभावना ॥

उपमायां विकल्पे वा-

वा-उपमा तथा विकल्प ॥

-सामि त्वर्धे जुगुप्सिते॥२४९॥

सामि-आधा तथा निन्दित॥२४९॥

अमा सह समीपे च-

अमा-साथ तथा समीप ॥

-कं वारिणि च मूर्धनि ।

कम्-जल तथा मस्तक ॥

इवेत्थमर्थयोरेवं-

एवम्-इवार्थक तथा प्रकारार्थक ॥

-नूनं तर्केऽर्थनिश्चये ॥ २५० ॥

नूनम्-तर्कणा तथा अर्थनिश्चय ॥ ॥ २५० ॥

तूष्णीमर्थे सुखे जोषं-

जोषम्-चुप होना तथा सुख ॥

-किं पृच्छायां जुगुप्सने ।

किम्-प्रश्न तथा निन्दा करना ॥

नाम प्राकाश्यसंभाव्यक्रोधोपगमकुत्सने ॥ २५१ ॥

नाम-प्रसिद्धि, संभावना, क्रोध, सुन्दर वेष धारण करना तथा ललकारना ॥ २५१ ॥

अलं भूषणपर्याप्तिशक्तिवारणवाचकम् ।

अलम्-अलंकार, परिपूर्णता, सामर्थ्य तथा मना करना ॥

हुं वितर्के परिप्रश्ने-

हुम्-तर्कणाकरना तथा प्रश्नकरना ॥

-समयान्तिकमध्ययोः ॥२५२॥

समया-समीप तथा मध्य ॥२५२॥

पुनरप्रथमे भेदे-

पुनर्-प्रथमके अनन्तर तथा भेद ॥

-निर्निश्चयनिषेधयोः ।

निर्-निश्चय तथा निषेध ।

स्यात्प्रबन्धे चिरातीते निकटागामिके पुरा ॥ २५३ ॥

पुरा-प्रबन्ध अर्थात् निरन्तर, प्राचीन समीप तथा होनेवाला ॥ २५३ ॥

ऊररीयूरी चोररी च विस्तारेऽङ्गीकृतौ त्रयम् ।

ऊररी-ऊरी-उररी-विस्तार तथा अंगीकार करना ॥

स्वर्गे परे च लोके स्व-

स्वर्-स्वर्ग तथा परलोक ॥

-र्वार्तासंभाव्ययोः किल॥२५४॥

किल-वार्ता तथासंभावना ॥२५४॥

निषेधवाक्यालंकारजिज्ञासानुनये खलु ।

खलु-निषेध, वाक्यालंकार, जिज्ञासा तथा अनुनय ॥

समीपोभयतः शीघ्रसाकल्याभिमुखेऽभितः ॥ २५५ ॥

अभितः-समीप, दोनों ओर, शीघ्र, चारों ओर तथा संमुख ॥ २५५ ॥

नामप्राकाश्ययोः प्रादु-

प्रादुस्-नाम तथा प्रकट ॥

मिथोऽन्योन्यं रहस्यापि ।

मिथस्-परस्पर तथा एकांत ॥

तिरोऽन्तर्धौ तिर्यगर्थे-

तिरस्-अन्तर्धान तथा टेढ़ा ॥

-हा विषादशुगार्तिषु ॥ २५६ ॥

हा-विषाद,शोक तथा पीडा ॥२५६॥

अहहेत्यद्भुते खेदे-

अहह-अद्भुत तथा खेद ॥

-हि हेतावववधारणे।

हि-हेतु तथा निश्चय ॥

इत्यनेकार्थवर्गविवरणम् ॥ ३ ॥

अथाव्ययवर्गः ४.

चिराय चिररात्राय चिरस्याद्याश्चिरार्थकाः।

बहुत कालवाचक अव्ययशब्द ६-चिराय १ चिररात्राय २ चिरस्य ३ आदि शब्दसे चिरम् ४ चिरेण ५ चिरात्, चिरे ६ ॥

मुहुः पुनःपुनः शश्वदभीक्ष्णमसकृत्समाः ॥ १ ॥

बारम्बार अर्थवाचक अव्यय शब्द ५-मुहुः १ पुनःपुनः २ शश्वत् ३ अभीक्ष्णम् ४ असकृत् ५ ॥ १ ॥

स्राग्झटित्यञ्जसाह्नाय द्राङ्मंक्षु सपदि द्रुते।

शीघ्रतावाचक अव्यय शब्द ८-स्राक् १ झटिति २ अंजसा ३ अह्नाय४ द्राक् ५ मंक्षु ६ सपदि ७ द्रुतम् ८ ॥

-बलवत्सुष्ठु किमुत स्वत्यतीव च निर्भरे ॥ २ ॥

अतिशयवाचक अव्यय शब्द ६-बलवत् १ सुष्ठु २ किमुत ३ सु ४ अति ५ अतीव ६ ॥ २ ॥

पृथग्विनान्तरेणर्ते हिरुङ्नाना च वर्जने।

वर्जनवाचक वर्जनवाले अव्यय शब्द ६-पृथक् १ विना २ अंतरेण ३ ऋते ४ हिरुक् ५ नाना ६ ॥

यत्तद्यतस्ततो हेता-

कारणवाचक अव्यय शब्द ४-यत् तत् २ यतः ३ ततः ४ ॥

-वसाकल्ये तु चिच्चन ॥ ३ ॥

अपूर्णतावाचक अव्यय शब्द २-चित् १ चन २ ॥ ३ ॥

कदाचिज्जातु-

किसी कालवाचक अव्यय शब्द२-कदाचित् १ जातु २ ॥

-सार्धं तु साकं सत्रा समं सह।

साथ वाचक अव्ययशब्द५-साकम् १ सार्धम् २ सत्रा ३ समम् ४ सह५॥

आनुकूल्यार्थकं प्राध्वं-

अनुकूलतावाचक अव्यय शब्द १-प्राध्वम् १ ॥

-व्यर्थके तु वृथा मुधा ॥ ४ ॥

व्यर्थवाचक अव्यय शब्द २-
वृथा १ मुधा २ ॥ ४ ॥

आहो उताहो किमुत विकल्पे किं किमूत च ।

विकल्पार्थवाचक अव्यय शब्द ६-
आहो १ उताहो २ किमुत ३ किम् ४ किमु ५ उत ६ ॥

तु हि च स्म ह वै पादपूरणे-

श्लोककी पादपूर्णता बतानेवाले अव्यय शब्द ६-तु १ हि २ च ३ स्म ४ ह ५ वै ६ ॥

-पूजने स्वती ॥ ५ ॥

पूजावाचक अव्यय शब्द २-सु १ अति २ ॥ ५ ॥

दिवाह्नी-

दिनका अर्थवाचक अव्ययशब्द १-
दिवा १ ॥

-त्यथ दोषा च नक्तं च रजनाविति ।

रात्रिके अर्थवाचक अव्यय शब्द २-
दोषा १ नक्तम् २ ॥

तिर्यगर्थे साचि तिरो-

टेढ़े अर्थवाचक अव्यय शब्द २-
साचि १ तिरस् २ ॥

-प्यथ संबोधनार्थकाः ॥ ६ ॥ स्युः प्याट् पाडङ्ग हे है भोः-

सम्बोधनार्थवाचक अव्यय शब्द ६-
प्याट् १ पाट् २ अंग ३ हे ४ है ५ भोः ६ ॥ ६ ॥

-समया निकषा हिरुक् ।

समीपवाचक अव्यय शब्द ३-
समया १ निकषा २ हिरुक् ३ ॥

अतर्किते तु सहसा-

अकस्मात्का अर्थवाचक अव्यय शब्द १-सहसा-१ ॥

-स्यात्पुरः पुरतोऽग्रतः ॥ ७ ॥

आगेके अर्थवाचक अव्यय शब्द ३-
पुरः १ पुरतः २ अग्रतः ३ ॥ ७ ॥

स्वाहा देवहविर्दाने श्रौषट् वौषट् वषट् स्वधा ।

देवताओं और पितरोंके हव्य देनेके उपयोगी वाचक अव्यय शब्द ५-स्वाहा १ श्रौषट् २ वौषट् ३ वषट् ४ स्वधा ५ पितरोंके उपयोगी प्रसिद्ध हैं ॥

किंचिदीषन्मनागल्पे-

अल्पके वाचक अव्यय शब्द ३-
किंचित् १ ईषत् २ मनाक् ॥ ३ ॥

-प्रेत्यामुत्र भवान्तरे ॥ ८ ॥

जन्मान्तरवाचक अव्यय शब्द २-
प्रेत्य १ अमुत्र २ ॥ ८ ॥

व वा यथा तथेवैवं साम्ये--

समतावाचक अव्ययशब्द ६-व १ वा २ यथा ३ तथा ४ इव ५ एवम् ६ ॥

-ऽहो ही च विस्मये ।

विस्मयवाचक अव्यय शब्द २-अहो १ ही २ ॥

मौने तु तूष्णीं तूष्णीकां-

मौनार्थवाचक अव्ययशब्द २-तूष्णीम् १ तूष्णीकाम् २॥

-सद्यः सपदि तत्क्षणे ॥ ९ ॥

तत्कालवाचक अव्ययशब्द २-सद्यस् १ सपदि २ ॥ ९ ॥

दिष्ट्या समुपजोषं चेत्यानन्दे-

आनन्दवाचक अव्ययशब्द २-दिष्ट्या १ समुपजोषम् २ ॥

-ऽथान्तरेऽन्तरा । अन्तरेण च मध्ये स्युः-

मध्यवाचक अव्ययशब्द ३-अन्तरे १ अन्तरा २ अन्तरेण ॥ ३ ॥

-प्रसह्य तु हठार्थकम् ॥ १० ॥

हठार्थवाचक अव्ययशब्द १-प्रसह्य १ ॥ १० ॥

युक्ते द्वे सांप्रतं स्थाने-

युक्तार्थवाचक अव्ययशब्द २-सांप्रतम् १ स्थाने २ ॥

-ऽभीक्ष्णं शश्वदनारते ।

निरंतरवाचक अव्ययशब्द-२-अभीक्ष्णम् १ शश्वत् २ ॥

अभावे नह्य नो नापि-

अभाववाचक अव्ययशब्द ४-नहि १ अ २ नो ३ न ४ ॥

मास्म मालं च वारणे ॥ ११ ॥

निषेधवाचक अव्ययशब्द ३-मास्म १ मा २ अलम्-३ ॥ ११ ॥

पक्षांतरे चेद्यदि च-

पक्षान्तरवाचक अव्ययशब्द २-चेत् १ यदि २ ॥

-तत्त्वे त्वद्धाञ्जसा द्वयम् ।

तत्त्वार्थवाचक अव्ययशब्द २-अद्धा १ अंजसा २ ॥

प्राकाश्ये प्रादुराविः स्या-

प्रकटवाचक अव्ययशब्द २-प्रादुस् १ आविस् २ ॥

दोमेवं परमं मते ॥ १२ ॥

अङ्गीकारवाचक अव्ययशब्द ३-ओम् १ एवम् २ परमम् ३ ॥ १२ ॥

समन्ततस्तु परितः सर्वतो विष्वगित्यपि ।

सब ओरवाचक अव्ययशब्द ४-समन्ततः १ परितः २ सर्वतः ३ विष्वक् ४ ॥

अकामानुमतौ काम-

विना इच्छाके सलाह देनेमें १-कामम् १ ॥

–मसूयोपगमेऽस्तु च ॥ १३ ॥

ईर्षापूर्वक अङ्गीकारवाचक १–अस्तु १ ॥ १३ ॥

ननु च स्याद्विरोधोक्तौ–

विरुद्धउक्तिवाचक १–ननु १ ॥

–कच्चित्कामप्रवेदने ।

इच्छित प्रश्नवाचक १–कच्चित् १॥

निःषमं दुःषमं गर्ह्ये–

निन्दितवाचक २–निःषमम् १ दुःषमम् २ ॥

–यथास्वं तु यथायथम् ॥१४॥

यथायोग्यवाचक २–यथास्वम् १ यथायथम् २ ॥ १४ ॥

मृषा मिथ्या च वितथे–

मिथ्यावाचक २–मृषा १ मिथ्या २॥

–यथार्थं तु यथातथम् ।

सत्यवाचक २–यथार्थम् १ यथातथम् ॥

स्युरेवं तु पुनर्वैवेत्यवधारणवाचकाः ॥ १५ ॥

निश्चयवाचक ५–एवम् १ तु २ पुनर् ३ वै ४ वा ५ ॥ १५ ॥

प्रागतीतार्थकं–

भूतकालवाचक १–प्राक् १ ॥

–नूनमवश्यं निश्चये द्वयम् ।

अवश्यवाचक २–नूनम् १ अवश्यम् ॥ २ ॥

संवद्वर्षे–

वर्षवाचक १–संवत् १ ॥

–ऽवरे त्ववर्ग–

प्रथमवाचक १–अर्वाक् १ ॥

–गामेवं–

निश्चित अंगीकारवाचक २–आम् १ एवम् २ ॥

–स्वयमात्मना ॥ १६ ॥

आत्मवाचक १–स्वयम् १ ॥१६॥

अल्पे नीचै–

अल्पवाचक अव्यय शब्द १–नीचैस् १ ॥

–र्महत्युच्चैः–

ऊंचावाचक १–उच्चैस् १ ॥

–प्रायो भू–

बाहुल्य (अकसर) वाचक १–प्रायः १ ॥

–म्न्यद्रुते शनैः ।

मन्दवाचक अव्ययशब्द १–शनैस् १

सना नित्ये–

नित्यवाचक १–सना १ ॥

–बहिर्बाह्ये–

बाहरवाचक १–बहिस् १ ॥

–स्मातीते–

भूतकालवाचक १–स्म १ ॥

–ऽस्तमदर्शने ॥ १७ ॥

अदर्शनवाचक १–अस्तम् १॥१७॥

अस्ति सत्त्वे—

भावार्थक अव्यय १—अस्ति १ ॥

—रुषोक्तावु—

कोपवचनवाचक १—उ १ ॥

—ऊं प्रश्ने—

प्रश्नवाचक १—ऊम् १ ॥

—ऽनुनये त्वयि।

शान्त करनेमें १—अयि १ ॥

हुं तर्के स्या—

तर्कवाचक १—हुम् १ ॥

—दुषा रात्रेरवसाने—

प्रातःकालवाचक १—उषस् १ ॥

—नमो नतौ ॥ १८ ॥

नमस्कारवाचक अव्ययशब्द १—नमस् १ ॥ १८ ॥

पुनरर्थेऽङ्ग—

पुनर्वाचक १—अङ्ग १ ॥

—निन्दायां दुष्ठु—

निन्दावाचक १—दुष्ठु १ ॥

—सुष्ठु प्रशंसने।

प्रशंसावाचक १—सुष्ठु १ ॥

सायं साये—

सायंकालवाचक १—सायम् १ ॥

प्रगे प्रातः प्रभाते—

प्रातःकालवाचक २—प्रगे १ ॥ प्रातर् २ ॥

—निकषाऽन्तिके ॥ १९ ॥

समीपवाचक १—निकषा १॥ १९॥

परुत्परार्यैषमोऽब्दे पूर्वे पूर्वतरे यति।

गतवर्षवाचक १—परुत् १॥गतवर्षसे पहले वर्षका वाचक अव्यय १—परारि १ ॥ वर्त्तमान वर्षवाचक अव्यय १—ऐषमस् १ ॥

अद्यात्राह्नय—

इस दिनका वाचक अव्यय १—अद्य १ ॥

—थ पूर्वेऽह्नीत्यादौ पूर्वोत्तरापरात् ॥ २० ॥ तथाधरान्यान्यतरेतरात्पूर्वेद्युरादयः।

'प्रथमदिन' इत्यादि अर्थमें पूर्वआदि शब्दसे "एद्युस्" प्रत्यय होकर पूर्व दिनका वाचक 'पूर्वेद्युः' उत्तर दिनका वाचक 'उत्तरेद्युः' अपरदिनका वाचक 'अपरेद्युः' इत्यादि शब्द बनते हैं जैसे- 'अधरेद्युः' 'अन्येद्युः' 'अन्यतरेद्युः' 'इतरेद्युः' ॥ २० ॥

उभयद्युश्चोभयेद्युः—

दोनों दिनके वाचक अव्यय २—उभयद्युः१ उभयेद्युः २ ॥

—परे त्वह्नि परेद्यवि ॥ २१ ॥

परदिनका वाचक१—परेद्यवि १॥२१॥

ह्यो गते—

व्यतीतदिनका वाचक अव्यय शब्द १–ह्यस् १ ॥

–ऽनागतेऽह्नि श्वः–

कलदिनका १–श्वस् १ ॥

–परश्वस्तु परेऽहनि ।

आनेवाले परसों दिनका वाचक १–परश्वः १ ॥

तदा तदानीं–

तिसकालके वाचक अव्यय २–तदा १ तदानीम् २ ॥

–युगपदेकदा–

एक समयके वाचक अव्यय २–युगपत् १ एकदा २ ॥

सर्वदा सदा ॥ २२ ॥

सदाकालवाचक अव्यय २–सर्वदा १ सदा २ ॥ २२ ॥

एतर्हि संप्रतीदानीमधुना सांप्रतं तथा ।

'इसी समय' इस अर्थके वाचक अव्यय शब्द ५–एतर्हि १ सम्प्रति २ इदानीम् ३ अधुना ४ सांप्रतम् ५ ॥

दिग्देशकाले पूर्वादौ प्रागुदक्प्रत्यगादयः ॥ २३ ॥

पूर्वदिशा, पूर्वदेश और पूर्वकालमें 'प्राक्' शब्द है । उत्तर दिशा, उत्तरदेश और उत्तरकालवाचक अव्ययशब्द 'उदक्' पश्चिमदिशा पश्चिम देश और पश्चिमकालका वाचक अव्यय शब्द 'प्रत्यक्' इत्यादि ॥ २३ ॥

इत्यव्ययवर्गः ॥ ४ ॥

लिंगादिसंग्रहवर्गः ५.

सलिंगशास्त्रैः सन्नादिकृत्तद्धितसमासजैः । अनुक्तैः संग्रहे लिंगैः संकीर्णवदिहोन्नयेत् ॥ १ ॥

पाणिनिके कहे हुए लिङ्गानुशासनसहित (अर्थात् उनके अनुसार) सन्आदि प्रत्ययोंसे उत्पन्न चिकीर्षा आदि शब्दोंसे कृदन्तसे उत्पन्न श्वपाक आदिको तद्धित प्रत्यय अण् आदिसे उत्पन्न, "समासजैः" 'अदन्तोत्तरपदो द्विगुः' इस आदिसे और बाहुल्यसे पहिले अनुक्त शब्दोंसे संग्रह किये जाते हैं, यहां वर्गसंग्रह लिङ्गका ज्ञान किस प्रकार करैं इस पर कहते हैं, 'संकीर्णवत्' यह जैसे संकीर्णवर्गमें प्रकृति आदिसे जाने जाते हैं, इसी प्रकार यहां भी जानने, तिनमें प्रकृत्यर्थसे जैसे 'अर्द्धर्चाः पुंसि च' यहां प्रत्ययार्थसे जैसे 'स्त्रियां क्तिन्' 'प्रकृतिप्रत्ययार्थाद्यैः' इस आद्यशब्दसे क्रियाविशेषणोंको नपुंसकत्व और एकवचनत्व होता है, जैसे-'शोभनं पचति' इत्यादि ॥ १ ॥

लिङ्गशेषविधिर्व्यापी विशेषैर्यद्यबाधितः ।

सन्नादि–कृत्–तद्धित–समाससे उत्पन्न विषय पूर्वोक्त शब्दके लिंगसे अन्यलिंग होना लिंगशेष है, उसका विधि उत्सर्ग होनेसे काण्डत्रयका व्यापक है, जो पूर्वोक्त और यहांके कहे विशेष विधियोंसे बाधित न होवे, तभी व्यापक होता है, क्योंकि अपवादविषय छोड़कर उत्सर्ग सर्वत्र प्रवृत्त होता है इस कहनेसे लिंग विशेषविधिको जो उत्सर्गभूतका स्वर्ग आदि वर्ग अपवाद हैं तिनमें पहिलेके कहे हुए विशेषोंको फिर कहनेके दोष और विस्तारके डरसे फिर यहां विधान नहीं है. स्वर्गपर्याय यहां पुँल्लिंग कहेंगे उसका "द्योदिवौ द्वे स्त्रियां क्लीबे त्रिविष्टपम् " यह पूर्वोक्त अपवाद है और नीप्रभृतिकोंके तो 'कृतः कर्त्तरि' इत्यादिसे कहेंगे, यद्यपि पहले लिंग कहा है तथापि अप्राप्तके प्रापणार्थकतासे लिंगानुशासन यहां भी प्रधान ही है ॥

स्त्रियामीदूद्विरामैकाच् सयोनिप्राणिनाम च ॥ २ ॥

'स्त्रियाम्' यह अधिकार 'मसी' [श्लो० १०] शब्दपर्यंत जानना चाहिये 'ईदूतौ' ईकार और ऊकार 'विराम' अर्थात् अवसानस्थ हैं जिनके वे, ईदूद्विराम हैं वे और एकाच् ये दोनों ईदूद्विरामैकाच् हैं । ईदन्त ऊदन्त वा जो एकस्वर शब्द-स्वरूप हैं वे स्त्रीलिंग हैं यह अर्थ है, जैसे-धीः, श्रीः, भ्रूः, भूः, नयतीति नीः, इन आदिमें 'कृतः कर्त्तरि' इसके बाध होनेसे वाच्यलिंगत्व है, योनि भग है इनके सहित प्राणियोंके नाम 'स्त्रियाम्' स्त्रीलिङ्ग हैं जैसे माता-दुहिता–धेनु·आदि. दार शब्द आदिमें तो'दाराः पुंभूम्नीति' यह बाधक पहिले कह चुके हैं,कलत्रम् और गृहं शब्दको 'कलत्रं श्रोणिभार्ययोः' यहांका क्लीबपाठ बाधक है, इसी प्रकार अन्यत्र भी विचार कर लेना चाहिये ॥ २ ॥

नाम विद्युन्निशावल्लीवीणादिग्भूनदीह्रियाम् ।

विद्युत् आदि ह्रीशब्द पर्यंत ८ आठ शब्दोंके जो नाम अर्थात् संज्ञा हैं, वे स्त्रीलिङ्ग हैं, जैसे, विद्युत्–तडित्, निशा–रात्रिः, रजनिः, वल्ली,–व्रततिः, वीरुध्, वीणा,–विपञ्ची इत्यादि ॥

अदन्तैर्द्विगुरेकार्थो–

अकारान्त आदि शब्दोंसे जो एकार्थ द्विगुसमास है वह स्त्रीलिंग है, जैसे 'पंचानां मूलानां समाहारः पंचमूली' इसी प्रकार त्रिलोकी षडध्यायी इत्यादि ॥

–न स पात्रयुगादिभिः ॥ ३ ॥

च पुनः पात्र, युग आदि उत्तरपद अदन्तशब्दोंके साथ एकार्थ द्विगुसमासको स्त्रीलिंगत्व नहीं है जैसे पंचपात्रं, चतुर्युगं, त्रिभुवनम् ॥ ३ ॥

तल् वृन्दे येनिकट्यचत्रा वैरमैथुनिकादिवुन् । स्त्रीभावादावनिक्तिण्वुल्णच्ण्वुच्क्यब्युजिञिङ्निशाः ॥ ४ ॥ उणादिषु निरूरीश्च ङ्याबूङन्तं चलं स्थिरम् ।

भाव आदि अर्थमें विहित तल्‌प्रत्यय स्त्रीलिंगमें होता है, तथा भाव अर्थमें जैसे-शुक्लता, कर्म अर्थमें ब्राह्मणता, समूह अर्थमें ग्रामता, स्वार्थमें देवता, वृन्दे समूह अर्थमें य–इनि-कट्यच्–त्र-ये ४ चार प्रत्यय स्त्रीलिंगमें होते हैं. जैसे'पाशादिभ्यो यः' पाशानां समूहः पाश्या, वात्या, 'खलादिभ्य इनिः' खलिनी, पद्मिनी, ' रथादिभ्यः कट्यच् ' रथकट्या, इसी रीतिसे गोत्रा, वैर, मैथुन आदि अर्थमें जो वुन् प्रत्यय है सो स्त्रीलिंग है तिनमें वैर विरोधार्थमें जैसे-अश्वमहिषिका, अश्व और महिषीका यह वैर है, इस भांति काकोलूकिका, मैथुनिका अर्थमें जैसे–अत्रिभरद्वाजिका, अत्रिभरद्वाजिकी, यह मैथुनिक विवाहरूपसम्बन्ध, इसी प्रकार 'कुत्सश्च कुशिका च तयोर्मैथुनिका कुत्सकुशिकिका' वुन् ग्रहण वुञ्, उण् वा वुच्-अक् इक् आदिका उपलक्षण है, जैसे-काशिका गार्गिकया श्लाघते, कहीं वु भी पाठ है, आदिपदसे वीप्सा आदिमें वुन्का ग्रहण है 'स्त्रियां भावादिः स्त्रीभावादिस्तस्मिन्'स्त्रियाम् इसका अधिकार कर भाव आदि अर्थमें जो विहित प्रत्यय अनि–क्तिन् (ति) आदि हैं वे स्त्रीलिङ्ग अर्थमें होते हैं, अनि जैसे 'आक्रोशे नञ्यनिः ' इस सूत्रसे ' अनि ' प्रत्यय होनेसे ' अकरणिः' 'अजीवनिः' 'क्तिन्' से स्मृतिः, कृतिः, गतिः, 'ण्वुल्' से जीविका, प्रच्छर्दिका, प्रवाहिका, आसिका, 'णच्' से व्यावक्रोशी स्वार्थिका, द्राक्षा, 'ण्वुच्' से शायिका, इक्षुभक्षिका, 'क्यप्' से ब्रह्महत्या, व्रज्या, इज्या, 'स्त्रीभावादौ' क्यों कहा ? 'मृषोद्यं ब्रह्मभूयं' यहां दोष आवेगा, 'युच्' से कारणा, आसना, मंडना,-इञ्से वापिः, वासिः, कां कारिमकार्षीः ' इञ्' यह इण्इक्का उपलक्षणार्थ है, जैसे-आजिः, कृषिः, 'अ' से पचा, त्रपा, भिदा, 'नि'से ग्लानिः, म्लानिः, हानिः, ' श ' प्रत्ययसे क्रिया, इच्छा ॥ ४ ॥ उणादिकोंमें निः–ऊः–ईः ये तीन प्रत्यय

स्त्रीलिंगमें हैं, तिनमें 'नि' प्रत्ययान्तसे, श्रेणिः, श्रोणिः, द्रोणिः, 'उणादिष्वनिः' इस पाठमें, अनिः, जैसे-अवनिः, धरणिः, धमनिः, सरणिः, 'ऊदन्तः' जैसे—चमूः, कर्षूः, ईदन्त जैसे—तन्त्रीः, तरीः, लक्ष्मीः, ङ्यन्तम् आबन्तम्, (ङी आप् वा आङ्) ऊङन्त और जो 'चलं' जंगम हैं वा जो 'स्थिरं' स्थावर हैं वे स्त्रीलिंग हैं, जंगम जैसे—नारी, शिवा, ब्रह्मवधूः । स्थावर जैसे-कदली, नाला, कर्कन्धूः ॥

तत्क्रीडायां प्रहरणं चेन्मौष्टा पाल्लवाणदिक् ॥ ५ ॥

"तत् क्रीडायां" यहांके तत्शब्दसे यहां मौष्ट्यादिकका निर्देश है तिससे यह अर्थ है, वह मुष्ट्यादिक प्रहरण अर्थात् मारना जो क्रीडा वा खेलमें होय तो उस अर्थमें विहित 'ण' प्रत्यय स्त्रीलिंगमें है, दिक् इस शब्दसे उक्तोदाहरणकी अभिलाषा है, जिससे दाण्डा, मौसला ये उदाहरणके योग्य हैं, मुष्टिसे प्रहार करना जिस क्रीडामें है उसे 'मौष्टा वा मौष्ट्या' और पल्लव हाथ वा पत्तेसे मारना जिस क्रीडामें है उसे "पाल्लवा" कहते हैं ॥ ५ ॥

घञो ञः सा क्रियाऽस्यां चेद्दाण्डपातऽहिफाल्गुनी । श्यैनंपाता च मृगया तैलंपाता स्वधेति दिक् ॥६॥

वह घञन्तवाच्य दण्डपात आदिके आदि क्रिया इस फाल्गुनी आदिके अर्थमें घञन्तसे विहित जो ञ प्रत्यय है सो स्त्रीलिंगमें ही है, उदाहरण 'दण्डपातोऽस्यां फाल्गुन्यां दाण्डपाता फाल्गुनी' इसी प्रकार 'श्येनपातोऽस्यां श्यैनंपाता मृगया' 'तिलपातोऽस्यां स्वधाक्रियायां तैलंपाता' इति शब्दसे 'मुसलपातोऽस्यां मौसलपाता भूमिः' ये इत्यादि सिद्ध होते हैं, दिक्शब्दसे किसी देशमें फाल्गुन महीनेके पूर्णिमाको दण्डसे वा लाठीसे क्रीडा होती है इसलिये 'दाण्डपाता' आदि उदाहरण भी होते हैं ॥६ ॥

स्त्री स्यात्काचिन्मृणाल्यादिर्विवक्षापचये यदि ।

यदि 'अपचये' अर्थात् अल्पत्वके कहनेंकी इच्छा हो तो मृणाली आदि शब्द स्त्रीलिंग हैं, जैसे—'अल्पं मृणालं मृणाली आदिशब्दसे जैसे—'ह्रस्वो वंशो वंशी' गौरादि मानकर ङीष् प्रत्यय होता है,इसी भांति कुम्भी—प्रणाली—छत्री—पटी—मठी आदि ये भी हैं, 'ह्रस्वार्थे कन् प्रत्ययः स्त्रियां' जैसे-पेटिका, 'काचित्' यह क्यों कहा ? यहां दोष पडता है जैसे—'अल्पो वृक्षो वृक्षकः' इत्यादि स्त्रीलिंग नहीं हैं ॥

लंका शेफालिका टीका धात्री पञ्जिकाऽऽढकी ॥ ७ ॥

अब ङ्याबूङन्तं इत्यादिसे केह लिंगवालोंमेंसे किसी शब्दके सुखसे लिंगज्ञानके हेतु, भिन्न कांतादि क्रमसे कहतेहैं-१लंका-राक्षसपुरी २ शेफालिका-(फूलका भेद वा वृक्षभेद-निर्गुंडी-निरसा यह प्रसिद्ध) है, ३ टीका-कठिन पदकी व्याख्या, ४धातकी-वृक्षभेद-(आंवरा) यह प्रसिद्ध है, ५ पंजिका-(निःशेष पदकी व्याख्या), ६ आढकी-तुरई प्रसिद्ध है ॥ ७ ॥

सिध्रका सारिका हिक्का प्राचिकोल्का पिपीलिका । तिन्दुकी कणिका भंगिः सुरंगासूचिमाढयः ॥ ८ ॥

१ सिध्रका-वृक्षभेद, २ सारिका पक्षीभेद वा मयना, ३ हिक्का-स्वरभेद वा हिचकी, ४ प्राचिका पाचिका भी वनकी मक्खी वा 'पक्षिभेद' इति स्वामी, ५ उल्का-तेजका समूह, ६ पिपीलिका-कीडेका भेद (चींटी-वा चींटा भी) 'शनैर्यातीति पिपीलिका' यह स्वामीके मतसे पुँल्लिंग भी है, ७ तिन्दुकी वृक्ष-भेद (तेन्दुआ यह प्रसिद्ध है), ८ कणिका-परमाणु, ९ भंगि-कुटिलताका भेद वा टेढाई, १० सुरंगा-बिल वा 'सुरंग' यह प्रसिद्ध है, ११ सूचिः सूई वा व्यधनी, १२ माढिः-पत्तेकी सिरा ॥ ८ ॥

पिच्छावितण्डाकाकिण्यश्चूर्णिः शाणी द्रुणी दरत् । सातिः कन्था तथाऽऽसन्दी नाभी राजसभापि च ॥ ९ ॥

१ 'पिच्छा' शेमर यह प्रसिद्ध है, २ 'वितण्डा' वादभेद, ३ 'काकिण्यः वा काकिणी' पणका चौथा भाग वा कौडी, ४ 'चूर्णिः वा खूर्णि चूर्णिका, ५ 'शाणी' शण-पटविशेष है, ६ 'द्रूणी' कर्णजलौका वा कछुही, ७ 'दरत्' म्लेच्छजातिः॥ १॥ 'साति' दान और अवसानको कहते हैं, २ 'कन्था' प्रावरणान्तर वा दूसरा बिछौना ३ 'आसन्दी' आसनका भेद वा वेतका आसन वा कुर्सी, ४ 'नाभी वा नाभिः' शरीरका अंगविशेष वा टोंडी, ५ 'राज-सभा' राज्ञां सभा राजोंकी सभा व कच-हरी यह प्रसिद्ध है ॥ ९ ॥

झल्लरी चर्चरी पारी होरा लट्वा च सिध्मला । लाक्षा लिक्षा च गण्डूषा गृध्रसी चमसी मसी॥ १०॥

१ 'झल्लरी' बाजाका भेद वा झालर यह प्रसिद्ध है, २ 'चर्चरी' करशब्द वा हाथका शब्द वा हर्षक्रीडा, कईएक बाजे पढ़ते हैं 'कर्कटी' छोटा घड़ा, ३ पारी वा वारी, हाथीके पांवकी रस्सी

४ 'होरा' लग्नका आधा वा लग्न, ५ 'लट्वा' ग्रामचटक, चिडावा चिडी वा गरैया, ६ 'सिध्मला' मत्स्यविकार, ७ 'लाक्षा' जतु वा लाख, लाह प्रसिद्ध है. ८ 'लिक्षा यूकांड'—अर्थात् लीख प्रसिद्ध वा परिमाणभेद, ९ 'गंडूषा' जल आदिसे मुखपूर्ण कुल्ला प्रसिद्ध है, १० 'गृध्रसी' वातरोगभेद यह ऊरुकी सन्धिमें होता है, ११ 'चमसी' यज्ञपात्रभेद, १२ 'मसी' और भी पुं—'मसि' (कज्जल) ॥ १०॥

इति स्त्रीलिङ्गसंग्रहः ॥

पुंस्त्वे सभेदानुचराः सपर्यायाः सुरासुराः । स्वर्गयागाद्रिमेघाब्धिद्रुकालासिशरारयः ॥ ११ ॥

अब पुँल्लिंगसंग्रह कहते हैं, 'पुंस्त्वे' इसका [श्लोक० २१ के] 'पतद्ग्रह' शब्द पर्यन्त अधिकार है, भेदाः 'तुषितसाध्य आदि' 'अनुचराः' सुनन्द आदि इनके सहित सुर, असुर, देव और दैत्यके यह पर्यायके पुँल्लिंग हैं, सुरपर्याय जैसे-'अमरा निर्जरा देवा मरुतः' इत्यादयः, इनके भेद जैसे—'तुषिता—साध्याः' 'इन्द्रो मरुत्वान्मघवा'—सूरः सूर्यः, अर्य्यमा हाहा हूहूः तुम्बुरुः इत्यादि, अनुचराः जैसे—विष्णुके अनुचर जयविजयप्रभृति, रुद्रके अनुचर नन्दिकेश्वर आदि, इसी प्रकार-असुरपर्याय दैत्य दानव इत्यादि इनके भेद बलि नमुचि आदि, असुरके अनुचर कूष्मांड मुण्ड आदि, इस भांति सब स्थानमें जानना, इनके भी 'दैवतानि पुंसि वा देवताः स्त्रियाम्' आदि बाधकको स्मरण करावेंगे । 'अबाधिताः' इस वक्ष्यमाणसे स्वर्ग आदि १९ अपने भेद और पर्यायके सहित पुंलिंग हैं, १ स्वर्गपर्याय जैसे-'स्वर्ग—नाक, त्रिदिव, इत्यादिक 'द्योदिवौ द्वे, स्त्रियां क्लीबे त्रिविष्टपम्' यह बड़ा बलवान् बाधक हैं इनके विना पुँल्लिंग हैं, २ यागो यज्ञः वा मखः क्रतुः इनके भेद—अग्निष्टोम—वाजपेय आदि इनको बाधकत्व कहेंगे, ३ अद्रिः गिरिः वा पर्वतः इनके भेद जैसे—मेरु सह्याद्रि आदि इनके मध्यमें अपवाद है सो शैलवर्गमें कह चुके हैं, ४ मेघः घन वा बादल ये इत्यादि पर्याय हैं, भेद आवर्त आदि अभ्रस्य तु अभ्र मेघ, यह क्लीब पाठ बाधक है, ५ अब्धिः समुद्रका पर्यायभेद क्षीरोद आदि, ६ वृक्षः शाखी आदि पर्याय और वट पीपल आदि भेद हैं, यहां भी कहीं रूप भेद आदिसे 'पाटला, शिंशपाः' आदिमें अपवाद कहा है, ७ 'कालः दिष्टः समय इस प्रकार पर्यायहैं और मास आदि भेद हैं ।

असिः खड्ग—नन्दक आदि भेद,(इत्यादौ बाधः) ९'शरः बाणभेद नाराच आदि इषुधिर्द्वयोरिति विशेषो दर्शितः' १० 'अरिः' शत्रुभेद आततायी आदि॥११॥

करगण्डोष्ठदोर्दन्तकण्ठकेशनखस्तनाः । अह्नाहान्ताः क्ष्वेडभेदा रात्रान्ताः प्रागसंख्यकाः ॥ १२ ॥

'कर' राजग्रहणके योग्य भाग 'रश्मि' और 'पाणि''दीधिति'५ आदिको तो पुंस्त्व बाधित है, 'गण्डः' कपोल वा गाल, ' ओष्ठः ' ओष्ठ वा दंतच्छद दशनवसन आदि तो रूपभेदसे बाधित हैं, 'दोः' प्रवेष्ट 'भुजबाहोस्तु द्वयोरिति विशेषः' 'दंतः' दण्डः भेद जंभ 'कंठः' गलः 'समीपगलभेदेषु कण्ठं त्रिषु विदुर्बुधाः'इति शाश्वतः 'केशः'कचः वा बार, (बाल,) 'नखः' कररुहः नखोऽस्त्री इत्यादिना बाधितं, 'स्तनः'कुचः ये सब यथासम्भव सभेद और पर्य्याय पुँल्लिग हैं,१ 'अह्नःअहश्च' ये हैं अन्तमें जिनके वे पुँल्लिग हैं जैसे-अह्नः पूर्वं पूर्वाह्णः अह्नः परं पराह्णः,द्वे अहनी समाहृते द्व्यह्नः, २ क्ष्वेडभेदाः विषविशेष पुंस्त्व है जैसे सौराष्ट्रिकः यहां गरल विष पुंसि और क्लीबमें काकोल है इत्यादिसे बाधित है,३ 'रात्रान्ताः यह समासान्तके एकदेशका अनुकरण है,इसी प्रकार आगे भी रात्र शब्द है अन्तमें जिनके वे जो प्राक् असंख्यावाचक शब्द हों तो पुंसि हैं, जैसे—अहश्च रात्रिश्चाहोरात्रः, सर्वरात्रः, पूर्वरात्रः,वर्षारात्रः,अपररात्रः प्राक्, अंसख्यकाः यह क्यों कहा पंचरात्रं गणरात्रं इनमें दोष होगा, पुण्यरात्रको अर्धर्चादि पाठसे क्लीबत्व भी है ॥ १२ ॥

श्रीवेष्टाद्याश्च निर्यासा असन्नन्ता अबाधिताः । कशेरुजतुवस्तूनि हित्वा तुरुविरामकाः ॥ १३ ॥

१ 'श्रीवेष्ट' आदि ये निर्यास हैं अर्थात् द्रव वा गोन्द वा सारवाचक हैं वे पुँलिंग हैं, श्रीवेष्ट 'सरल'वा धूपकाष्ठ, श्रीपिष्ठ भी कहीं पाठ है, आद्यशब्दसे श्रीवास वृकधूप आदि, च शब्दसे गुग्गुलआदि, २ 'असन्त' ' अन्नंत' पुँलिंग हैं, असन्त जैसे—अंगिरा वेधा—चंद्रमा, अन्नंत जैसे—'कृष्णवर्त्मा मघवा' आदि. 'अबाधिता' क्यों कहा ? अप्सरसः, जलौकसः, सुमनसः, इदं वयः, इदं लोम, 'तुश्च रुश्च तुरु' ये दोनों विराम अर्थात् अंतमें हैं जिनके वे तुरुविरामकाः कहलाते हैं, कशेरु, जतु, मस्तु, इनको छोडकर

'तु' शब्दान्त और 'रु'शब्दान्त पुँल्लिंग हैं, जैसे—हेतुः सेतुः धातुः मन्तुः तन्तुः इत्यादि, कुरुः मेरुः किंशारुः इत्यादि, कशेरु आदि उपलक्षण हैं,—दारु, श्मश्रु प्रभृतिका तिनमें कशेरु अस्थिविशेष वा तृणविशेष, जतु लाक्षा वा लाही ॥ १३ ॥

कषणभमरोपान्ता यद्यदन्ता अमी अथ । पथनयसटोपान्ता गोत्राख्याश्चरणाह्वयाः ॥ १४ ॥

क—ष—ण आदि ३ वर्ण उपान्ते अन्त्यके समीपमें हैं जिनके वे तैसे यदि ये क आदि वर्णषट्क उपान्त अदन्त हों तो पुँल्लिंगमें होते हैं, जैसे-अंकः, लोकः, स्फटिकः, शुल्कः, वल्कः आदि तो पाहिले ही बाधित हैं और प्लोष-माष, प्लक्ष आदि षोपान्त हैं, वर्षा आदि शब्द तो पहिले ही बाधित हैं,पाषाण, गुण, किरण आदि णोपान्त शब्द विषाण आदिसे बाधित हैं, कौस्तुभ, दर्भ, शलभ, आदि भोपान्त हैं, कुसुम्भ आदिसे बाधित हैं। होम, ग्राम, व्यायाम, गुल्म आदि मोपान्त, 'पद्मा-देर्वा पुंसि'इत्यादिसे बाधित हैं. झर्झर, सीकर, सीर प्रभृति रोपान्त हैं अजिर आदिक बाधित हैं,रादिवर्णषट्क उपान्त शब्द अबाधित हैं, तौ पुँल्लिंग हैं यहां 'यद्यदन्ता' इस पूर्वोक्तका सम्बन्ध नहीं है, अथादित्वसे पकारोपान्त जैसे—यूप—बांष्प—कलाप आदि बाधित हैं, थकारोपान्त—वेपथु, रोमन्थ आदि, नोपान्त—इन, धन, भानु आदि, वनादि तो बाधित हैं, योपान्त-आय, व्यय, जायु, तन्तुवाय आदि, मृगया आदि तौ बाधित हैं,सोपान्त-रस, हास, आदि, बिस आदि बाधित हैं, टोपान्त-घट, पट, आदि, किरीट आदिको बाधितत्व कहा है, गोत्र वंशमें आख्या संज्ञा है जिनकी वे गोत्राख्य ऋषिसंज्ञक हैं, गोत्रके आदि पुरुष ये ये प्रवराध्यायमें पढ़े हैं और ये अन्य अपत्यप्रत्ययके विना गोत्र वाचित्वसे लोकमें प्रसिद्ध हैं वे पुँल्लिंग हैं जैसे—'भरद्वाजः गोत्रमस्माकम्' इस प्रकार कश्यप वत्स प्रभृति चरणके और वेदशाखाकी नामवाली संज्ञा पुँल्लिंग हैं जैसे कठ बह्वृच इत्यादि ॥ १४ ॥

नाम्न्यकर्तरि भावे च घञजबन्-ङ्णघाथुचः । ल्युः कर्तरीमनि-ज्भावे को घोः किः प्रादितोऽ-न्यतः ॥ १५ ॥

नाम संज्ञामें और अकर्तरि च कारके भावमात्रमें भी विहित घञ् आदि सात प्रत्ययान्त पुँल्लिंग हैं, भावे च इस चकारसे असंख्यामें भी घञ् गृहीत है

घञन्त जैसे—'प्रसीदन्ति मनांस्यस्मिन् प्रासादः, प्रास्यत इति प्रासः, विदंति अनेन वेदः, प्रपतति अस्मादिति प्रपातः, भावमें जैसे—पाकः त्यागः। अच् जैसे—जयः, चयः, नयः। अप् जैसे—करः, गरः, लवः, प्लवः,। नङ् जैसे—यज्ञः, प्रश्नः, याच्ञा। यहां पुंस्त्व बाधित है, नङ् उपलक्षण है 'स्वपो नन्' स्वप्नः। णप्रत्यय जैसे—न्यादः, घप्रत्यय जैसे-उरच्छदः, अथुच् जैसे-'वेपथुः' ल्युः प्रत्यय कर्तामें नंद्यादित्वसे पुँल्लिंगमें होता है,जैसे—नन्दनः, रमणः, मधुसूदनः, भावमें पृथु आदिसे जो इमनिच् है सो पुँल्लिंग है जैसे—पृथोर्भावः प्रथिमा, म्रदिमा, भाव ऐसा क्यों कहा ? 'वृणोतीति वारिमा पृथ्वी ' यहांका भावे यह शब्द देहलीदीपकन्यायसे पूर्व और परमें सम्बद्ध होता है, भावमें क प्रत्यय जैसे—आखूत्थः, प्रस्थः, प्रादितः और अन्यतःसे पर जो घुसंज्ञक धातु है उससे विहित जो किप्रत्यय है सो पुँल्लिंग है 'दाप् दैपौ विना ' दारूप और धारूप भी धातु घुसंज्ञक हैं; प्रादितः जैसे-प्रधिः,निधिः, आदिः अन्यतः जैसे-'जलधिः' इषुधिस्तु द्वयोरिति बाधितत्व है ॥ १५ ॥

द्वन्द्वेऽश्ववडवावश्ववडवा न समाहृते । कान्तः सूर्येन्दुपर्यायपूर्वोऽयःपूर्वकोऽपि च ॥ १६ ॥

द्वन्द्वे—समाहारसंज्ञकसे अन्यत्र समास द्वन्द्वसंज्ञकमें, 'अश्ववडवौ' पुंसि है, आप उदाहरण देते हैं, अश्वाश्च वडवाश्च अश्ववडवाः, इसी रीतिसे अश्ववडवान्, अश्व—वडवैःइत्यादि प्रयोगसे, समाहारे तु'अश्ववडवम्' यह क्लीव है. सूर्य, चंद्रके पर्यायपूर्वक कांतशब्द पुंसि हैं, जैसे 'सूर्यकान्तः, अर्ककान्तः, चन्द्रकान्तः, इन्दुकान्तः, सोमकान्तः' अयस् वा अयोवाचक अर्थात् लोहवाचक पूर्वक भी कान्त शब्द पुंसि है, जैसे 'अयस्कान्तः लोहकान्तः' ॥ १६ ॥

वटकश्चानुवाकश्च रल्लकश्च कुडंगकः । पुंखो न्यूंखः समुद्गश्च विटपट्टघटाः खटाः ॥ १७ ॥

अब पुँल्लिंग विशेष पर्यन्त अनुक्त और अकारान्तादि क्रमसे कहा है । १ वटकः—पिष्टकभेद वा (वरा), २ अनुवाकः—वेदका अवयव वा भाग, ३ रल्लकः—कम्बल वा कमरा प्रसिद्ध है, ४ कुडङ्गकः कुटंगकः—वृक्षलताका समूह, ५ पुंख—बाणका अवयव, ६ न्यूंखः न्युंखः सामवेदमें धरा ओंकार, ७ समुद्गः—संपुट वा डिब्बा, ८ विटः—धूर्त्त वा ठग, ९ पट्टः—काष्ठ आदिका बना आसनविशेष वा-

पाटा पीढ़ा, १० घटः तुला वा तराजू, ११ खटः अन्धकूप आदि वा कफ वा तृण ॥ १७ ॥

कोट्टारवट्टहट्टाश्च पिण्डगोण्डपिचण्डवत् । गडुः करण्डो लगुडो वरण्डश्च किणो घुणः ॥ १८ ॥

१ कोट्टः–दुर्ग–पुर–किला–गढ वा कोट्टारः, २ अरघट्टः–कूपभेद–महाकूप वा उसके ऊपर बँधा जलके निकालनेका काष्ठ वा अरहट–पुरवट, तवघट्ट, घाटाइ यहां प्रसिद्ध है, ३ हट्टः–क्रयविक्रयका स्थान वा हंटिया बाजार यह प्रासिद्ध है, ४ पिंडः–मिट्टी आदिका समूह, ५ गोंडः–नाभि वा नीचजातिभेद, ६ पिचण्डः–वा पिचिण्डः उदर वा पेट, पिचण्डवत् यहांके वत् शब्दसे गडादि शब्द भी पुँल्लिंग हैं यह बोधित होता है, ७ गडुः-गलगंड, ८ करण्डः-बांस आदिका बना भाण्डका भेद वा पिटारी वा पुष्पभाजन, ९ लगुडः-बांस आदिका दण्ड वा लाठी, १० वरण्डः–मुखका रोग वा वदनकी व्यथा, ११ किणः–मांसकी गांठिका भेद–वह भी जो फावडा, लाठी आदिके चलानेसे हाथ आदिमें (घट्ठा) स्पष्ट है त्रण और चिह्नको भी "किण" कहते हैं, १२ घुणः–काठका कीड़ा वा घुन यह प्रसिद्ध है ॥ १८ ॥

दृतिसीमन्तहरितो रोमन्थोद्गीथबुद्बुदाः । कासमर्दोऽर्बुदः कुन्दः फेनस्तूपौ सयूपकौ ॥ १९ ॥

१ दृतिः–चामका दोना वा मसक (भिस्तीका), २ सीमन्तः–केशवेश व चूडा गूँथा हुआ, ३ हरितः–पलाशवर्ण वा हरियर प्रसिद्ध है, ४ रोमन्थः–पशु जो जुगालिया चर्वण करते हैं (वा वागुर), ५ उद्गीथः–सामवेद, ६ बुद्बुदः-जलका विकार, ७ कासमर्दः–वा काशमर्दः–गुल्मभेद वा रोगभेद, ८ अर्बुदः–दशकोटि, ९ कुन्दः-पुष्पविशेष वा औजार रखनेका पात्र वा शिल्पभांड, १० फेनः–जलविकार, ११ स्तूपः–वटक आदि, ये और यूप यूपक वा" यूप " भी बरा पूआ आदिके नाम हैं ॥ १९ ॥

आतपः क्षत्रिये नाभिः कुणपक्षुरकेदराः । पूरक्षुरप्रचुक्राश्च गोलहिंगुलपुद्गलाः ॥ २० ॥

१ आतपः—सूर्यका प्रकाश वा उजियाला, २ नाभिः—राजाविशेष—वा क्षत्रिये क्षत्रिवाचि नाभिशब्द पुंल्लिग है, ३ कुणपः—उसी प्रकार कुणपः शवभेदः त्यक्तप्राणः, ४ क्षुरः—केशवपनद्रव्य—नाईका शस्त्र—(छूरा)वा पशुकी खुरी,५ केदरः—व्यवहारका द्रव्य वा पदार्थ, ६ पूरः—जलप्रवाह, ७ क्षुरप्रः-बाणका भेद 'खुरप्रः' भी, ८ चुक्रः शाकका भेद, ९ गोलः-वर्तुलपिंड वा गोल, १० हिंगुलः—रागद्रव्यका भेद वा रक्तवर्ण, ११ पुद्गलः वा पुद्गल आत्मा ॥ २० ॥

वेतालभल्लमल्लाश्च पुरोडाशोऽपि पट्टिशः । कुल्माषो रभसश्चैव सकटाहः पतद्ग्रहः ॥ २१ ॥

१ वेतालः—भूताधिष्ठितशव—मल्लविशेष२-शिवका अनुचर,३ द्वारपाल४, २भल्लः—भाल्,३ मल्लः-बाहुयुद्धकुशल वा माल प्रसिद्ध,४पुरोडाशः वा पुरोडाः(स्)-हविषूभेद, ५ पट्टिशः-अस्त्रभेद, ६ कुल्माषः वा कुल्मासः—अर्द्धास्विन्न यव वा कुत्सित माष, ७ रभसः—१हर्ष—२ वेग, ३ उत्सुकता, ४ वा पूर्वापर—विचार, ८ सकटाहः—कटाहके सहित कटाह शब्द भी पुँल्लिग है,कराही यह प्रसिद्ध है, ९ पतद्ग्रहः—निष्ठीवनपात्र वा पीकदान ॥ २१ ॥

॥ इति पुँल्लिगसंग्रहः ॥

द्विहीनेऽन्यच्च खारण्यपर्णश्वभ्रहिमोदकम् । शीतोष्णमांसरुधिरमुखाक्षिद्रविणं बलम् २२ ॥

द्विहीने स्त्री और पुरुषसे हीन नपुंसकका अधिकार है बाहिकशब्द पर्यन्त, श्लोकद्वयसे प्रधान करके निर्दिष्ट खादिशब्द २६ अपने पर्यायोंके सहित नपुंसक हैं, यहां अन्यत् इस बाधितसे जो भिन्न हैं वे क्लीब हैं यह सावधानका अर्थ कहा. चकारसे वस्त्र आभूषणका संग्रह है. १ खम्—१इंद्रिय २ व्योम वा देह, ३ शून्य, ४ अभ्र—बिन्दु, ५ पुर,६स्वर्ग, ७ सुखभी जैसे—छिद्रं—नभः वियत् इत्यादि. २ अरण्यं—विपिनं—काननं—इसप्र० इत्यादि,३पर्ण पत्रं वा पत्ता दलं इस० इत्यादि, ४ श्वभ्रं तु पातालं, ५ हिमं—प्रालेय,ठण्ढ,६ उदकं, जलं नीरं पानी इस० इत्यादि; ७ शीतं शीतलं, इस०इत्यादि, ८ उष्णं—तिग्मं इस० इत्यादि, शीतोष्णं गुणे क्लीबं तद्वति त्रिषु, ९ मांसं—पिशितं तरसं ये

इत्यादि, १०रुधिरं–शोणितं रक्तं, ११ मुखं-वदनं, वक्त्रं,१२ अक्षि-नयनं–नेत्र, १३ द्रविणं-धनं, इस०इत्यादि, १४ बलं-शक्ति सैन्य आदि, शक्तिमें जैसे–बलं शुष्मेत्यादि सैन्य चक्रमित्यादि॥ २२ ॥

फलहेमशुल्बलोहसुखदुःखशुभाशुभम् । जलपुष्पाणि लवणं व्यञ्जनान्यनुलेपनम् ॥ २३ ॥

१ फलं-फलमात्रं कपित्थं,इस०इत्यादि,हलं भी, २ हेम–सुवर्णं, कनकं, इस० इत्यादि, ३शुल्बं-ताम्रम् इस० इत्यादि,४ लोहं-कालायसं,इस०इत्यादि,५सुखं शर्म, शांतम्,इस०इत्यादि, ६ दुःखं-तु कृच्छ्रं, कष्टं, ७ शुभं–कल्याणं, कुशलं इस० इत्यादि, ८ अशुभं-अकल्याणं, ९ जलपुष्पाणि–कुमुद–कमल––कह्लार––उत्पलानि आदि, १० लवणं–सैन्धवं,इस० इत्यादि, ११ व्यञ्जनविशेषसे दधि-तक्र-आदिका ग्रहण है,१२अनुलेपनं–-कुंकुम आदि, यहां बाधितादन्यत् ऐसा क्यों कहा. आकाशो विहायाः, द्यौः, अटवी, अरण्यानी इस० इत्यादि, इसी प्रकार अन्यत्र भी विचारना चाहिये ॥ २३ ॥

कोट्याः शतादिसंख्याऽन्या वा लक्षा नियुतं च तत् । द्व्यच्कमसिसुसन्नन्तं यदनान्तमकर्तरि ॥ २४ ॥

कोट्याः–कोटिशब्दके विना जो शत आदि संख्या है वह क्लीबमें होती है, लक्ष शब्द वा विकल्पसे क्लीबमें है पक्षमें स्त्रीलिंग है, तत्शब्दसे लक्षका पर्याय नियुतं यह अर्थ है, उदाहरण जैसे–नियुतं-शतं–सहस्रं-अयुतमित्यादि असन्त इसन्त उसन्त–और अन्नन्त जो द्व्यच्क वा द्विस्वर हैं वे क्लीबमें हैं, असन्त जैसे-पयः, मनः, इसन्त जैसे–सर्पिः ज्योतिः; उसंत जैसे–वपुः, यजुः, अन्नन्त जैसे-चर्म शर्म साम नाम इत्यादि, इसीसे क्लीबत्व सिद्ध था आगे जो मर्मशब्दका उपादान है सो इसके अनित्यत्व ज्ञापनके अर्थ है, तिससे, ('गुणान्धकारशोकेषु तमो राहौ पुमानयम्'इत्यादि सिद्धम्)अकर्तरि अर्थमें कर्तासे अन्यत्र जो अनांत अन यह अंतमें जिसके हैं वे क्लीब हैं, जैसे गमनं, मरणं, दानं, करणं, वरणं; अकर्तरि क्यों कहा ? इध्मव्रश्चनः, कुठारः, नन्दयतीति नन्दनः ॥ २४ ॥

त्रान्तं सलोपधं शिष्टं रात्रं प्राक्संख्ययान्वितम् । पात्राद्यदन्तैरेकार्थो द्विगुर्लक्ष्यानुसारतः ॥२५॥

त्रान्तं क्लीबमें है जैसे–पात्रं–वहित्रं मित्रं–वस्त्रं–गात्रं–यंत्रम् ये इत्यादि, सकार और लकार उपधा अन्त्यसे पूर्व-वर्ण हैं जिनके वे क्लीबमें हैं, सोपधं जैसे-बुसं, बिसं, अन्धतमसं, लोपधं जैसे-कुलं, मूलं इस० इत्यादि; शिष्टं यह जो प्रागुक्तसे भिन्न है वह और प्रागुक्त भी जो अबाधित है सो भी त्रांतादिक क्लीबमें हैं, शिष्ट क्यों कहा ? पुत्रः–वृत्रः–हंसः–कंसः–पनसः–शालः–कालः–गलः; संख्यापूर्वक रात्रशब्द क्लीब है, (रात्राह्नाहाः पुंसि) इस सूत्रसे पुंस्त्व प्राप्त था उसका यह अपवाद है; त्रिरात्रं, पंचरात्रं; संख्याया यह क्यों कहा ? अर्द्धरात्रः, मध्यरात्रः, पात्र आदि अदन्तशब्दोंसे जो एकार्थ द्विगु समास है वह क्लीब है, पंचरात्रं आदि पदसे चतुर्युग; लक्ष्यानुसारतः–अर्थात् शिष्ट प्रयोगके अनुसार, इससे पंचमूली त्रिलोकी इत्यादि अपवाद हैं, एकार्थ क्यों कहा ? पंचकपालः, पुरोडाशः; द्विगु यह तद्धितार्थ है ॥ २५ ॥

द्वन्द्वैकत्वाव्ययीभावौ पथःसंख्याव्ययात्परः।षष्ठ्याश्छायाबहूनां चेद्विच्छायं संहतौ सभा ॥ २६ ॥

१ द्वन्द्वसमासका एकत्व और अव्ययीभाव समास क्लीबमें हैं द्वन्द्वैक्यं जैसे-पाणिपादं, शिरोग्रीवं, मार्दंगिकपाणविकम्, अव्ययीभाव जैसे-अधिश्रि, यथाशक्ति, उपगंगं; संख्या और अव्ययसे परे जैसे–विपथं, कापथं; संख्याव्ययादिति किं ? धर्मपथः योगपथः यह समासांतका अनुकरण है, समासमें षष्ठी विभक्त्यन्तसे परे जो छायाशब्द है सो क्लीब है, वह भी बहुतोंकी सम्बन्धिनी होय तौ जैसे–'वीनाम् पक्षिणां छाया विच्छायम्, इक्षूणां छाया इक्षुच्छायम्, बहूनां ऐसा क्यों कहा ? कुड्यस्य छाया कुड्यच्छाया, वा स्त्रियां यह तो कहेंगे, संहतौ समूहविषयमें सब शब्द क्लीब हैं यहां भी षष्ठ्याः इसका अनुवर्त्तन करते हैं, जैसे-दासीनां सभा दासीसभं, नृपसभं, रक्षःसभं, स्त्रीसभमित्यादि; संहतौ ऐसा क्यों कहा ? दासीनां सभा दासीसभा, दासीगृहं यह अर्थ है ॥ २६ ॥–

शालार्थापि परा राजामनुष्यार्थादराजकात् । दासीसभं

नृपसभं रक्षःसभमिमा दिशः॥२७॥

शालात् अर्थात् गृहात् अपिशब्दसे समुदायात् भी जो सभा शब्द है वो अराजकात् राजशब्दसे वर्जित और राजा मनुष्य अर्थात् राजार्थक राजपर्याय और अमनुष्यार्थक रक्षःआदि शब्दसे और षष्ठ्यन्तसे परे होय तो क्लीबमें है, (शाला गृहमर्थोऽभिधेयो यस्याः सा शालार्था) राजपर्यायिसे जैसे—इनसभं, प्रभुसभं; अमनुष्यार्थसे जैसे—रक्षःसभं, पिशाचसभं; अराजकात् क्यों कहा? राजसभा राजपर्यायके ग्रहणसे यहां नहीं हुआ, चन्द्रगुप्तसभा, राजविशेष यह है, षष्ठ्याः यह क्यों कहा ? नृपतिविषयसभा नृपतिसभा नृणां पतिर्यस्यां सा चासौ सभा चेति वा नृपतिसभा, अमनुष्यार्थात् यह क्यों कहा ? दासीसभा। दासीनां शाला इत्यर्थः। इमा दिशः,यह दासीसभं इस आदि क्रमसे उदाहरण हैं, तिनमें दासीसभं यह समुदाय ही अर्थमें है.शेष दो शाला और संहति अर्थमें है ॥ २७ ॥

उपज्ञोपक्रमान्तश्च तदादित्वप्रकाशने । कोपज्ञकोपक्रमादि कन्थोशीनरनामसु ॥ २८ ॥

१ उपज्ञा और उपक्रमान्तके आदित्वके प्रकाशनमें उपज्ञान्त और उपक्रमान्त यह समास क्लीबमें होता है, (उपज्ञायते इति उपज्ञा,॥ को ब्रह्मा तस्य उपज्ञा कोपज्ञं प्रजा ।। कस्योपक्रमः कोपक्रमं लोकः), प्रजापतिने प्रथम बनाया था इससे उसीने आदिमें प्रजा को जाना था यह अर्थ है, उन्हीं नरोंके मध्यमें षष्ठ्यन्तसे पर कंथा क्लीबमें है, जैसे सौशमीनां कन्था सौशमिकन्थम्, उशीनरदेशवाचीसे अन्यत्र दाक्षिकन्थानामसु यह क्यों कहा ? वीरणकंथा ॥ २८ ॥

भावे नणकचिद्भ्योऽन्ये समूहे भावकर्मणोः । अदन्तप्रत्ययाः पुण्यसुदिनाभ्यां त्वहः परः ॥२९॥

चकार इत्संज्ञक है जिसका वह चित् है, 'नश्च णश्च कश्च चिच्च नणकचितः तेभ्योऽन्ये' अर्थात् इनसे भिन्न जो तव्य, क्त आदि अदन्तधातुप्रत्यय भावमें विहित हैं। वे क्लीबमें हैं तिनमें धातुप्रत्यय जैसे—भवितव्यं, भाव्यं, सहितं, भुक्तं; नणकचित् क्यों कहा ? प्रश्नः, न्यादः, आखूत्थः, वेपथुः, नणक यह घञ्का उपलक्षण है पाकः, भावे क्यों कहा? कर्ममें दोष होगा, जैसे—'कर्तव्यो धर्मसंग्रहः, समूह अर्थमें' जैसे—भिक्षाणां

समूहो भैक्षं, गार्भिणं, औपगवं, काकं; भावमें अदन्त जैसे--गोर्भावः गोत्वं, शुचेर्भावः शौचं; कर्मणि जैसे—शुक्लस्य कर्म शौक्ल्यम्, राज्ञः कर्म राज्यं चौर्य्यं; तल् प्रत्ययको तो स्त्रीत्व कहा है, पुण्य और सुदिनशब्दसे पर विहितसमासान्त अहन् शब्द क्लीबमें है; अह्नाहान्त इस पुंस्त्वका अपवाद है, पुण्याहं, सुदिनाहं; सुदिन शब्द प्रशस्तार्थक है ॥ २९ ॥

क्रियाऽव्ययानां भेदकान्येकत्वेऽप्युक्थतोटके । चोचं पिच्छं गृहस्थूणं तिरीटं मर्म योजनम् ॥ ३० ॥

क्रिया और अव्ययोंका भेदक वा विशेषण क्लीब और एकवचनमें होते हैं, क्रियाविशेषण जैसे—मन्दं पचं, सुखं तिष्ठन्ति योगिनः, सलीलं नृत्यन्ति बालाः; अव्यय विशेषण जैसे—रम्यं स्वः सुखदं प्रातः, अब कितने कंठस्वरसे कहे हैं, उक्थं सामभेदः, तोटकं वृत्तभेदः, चोचं खाये फलका शेष वा तालफल, केला आदिके फलको भी कोई कहते हैं; मोचं और खेटं भी; २ पिच्छं गुच्छा वा मोरकी पोंछ--वा चूडा--वा लांगूल वा शाल्मलीवृक्ष—वा परम्परा आदि, उक्तउक्थं और मुक्तं, ३ गृहस्थूणं, घरका खम्भा वा थून्ही, ४ तिरीटं, बैठन वा शिरोभूषण, ५ मर्म, सन्धिस्थान वा हड्डियोंके जोडका स्थान, ६ योजनं क्रोशचतुष्टयं वा चार कोश ॥ ३० ॥

राजसूयं वाजपेयं गद्यपद्ये कृतौ कवेः । माणिक्यभाष्यसिन्दूरचीरचीवरपिञ्जरम् ॥ ३१ ॥

१ राजसूयं और २ वाजपेयं ये २ यज्ञके भेद हैं, (राज्ञा लतात्मकः सोमः सूयतेऽत्र राजसूयं, वाजं पैष्टी सुरा पीयते वा पेयमत्र वाजपेयम्), ३ गद्यं, ४ पद्यं ये कवेः कृतौ अर्थात् कविकी निश्छन्द रचनाको गद्यं, और पादसमूहकी रचनाको पद्यं; कवेः कृतौ ऐसा क्यों कहा-गद्या वाक्, पद्या पद्धतिः, ५ माणिक्यं, रत्नका भेद. 'मणिके मणिपूराख्ये नगरे भवं माणिक्यं' ६ भाष्यं पदार्थविवृति वा विवरण, (सूत्रार्थो वर्ण्यते यत्र वाक्यैः सूत्रानुसारिभिः । स्वपदानि च वर्ण्यन्ते भाष्यं भाष्यविदो विदुरिति) ७ सिन्दूरं, रक्त वा लालचूर्ण, ८ चीरं वस्त्रभेद, ९ चीवरं मुनिवासः वा वस्त्र, १० पंजरं वा पिंजरम्-पक्ष्यादि बन्धनागार वा पिंजरा ॥ ३१ ॥

लोकायतं हरितालं विदलस्थालबाह्लिकम् ।

१ लोकायतं—चार्वाकशास्त्र, २ हरितालं—धातुभेद. ३ विदलं—बांसका बना पात्रभेद, ४ स्थालं—पात्रभेद वा थार वा हांडी अन्नपात्र पाकपात्र आदि, ५बाह्लिकं—कुंकुम वा देशभेद उस देशका उत्पन्न कुंकुम, बाह्लवम् भी, 'वह्लदेशे भवं बाह्लवं' इति नपुंसकलिंगसंग्रहः ॥

पुन्नपुंसकयोः शेषोऽर्धर्चपिण्याककण्टकाः ॥ ३२ ॥

अब चिक्कस शब्दपर्यन्त पुंसि और क्लीबमें हैं. उससे भिन्नशेष है जैसे शंख और पद्म ये २ दो निधिवाचक पुँल्लिंग हैं, कम्बु नलिनका वाची तो पुन्नपुंसकलिङ्ग है तैसे अत्रत्य शब्द भी पर्यायबाधित है उसके पर्यायसे भिन्न है तो पुंनपुंसक लिङ्ग होते हैं, १अर्द्धर्चः अर्द्धर्चं-आधी ऋचा वेदभाग, २पिण्याकं-तिलकी खल, ३कंटकः रोमहर्ष वा रोमांच ॥३२॥

मोदकस्तण्डकष्टङ्कः शाटकः कर्पटोऽर्बुदः । पातकोद्योगचरकतमालामलका नडः ॥ ३३ ॥

१ मोदकः—भक्ष्यभेद वा (लड्डू), २ तण्डकः-उपतापविशेष वा रोग विशेष, ३ टंकः वा तंकः—अश्मदारणः वा पत्थर गढनेकी टांकी, ४ शाटकः—पटभेदः वा साडी प्रसिद्ध है, ५ कर्वटः वा कर्पटः, वाजे पढते हैं "खर्वटः" स्थानभेद वा वस्त्रभेद, ६अर्बुदः—संख्याभेद वा दशकोटि, ७पातकं—ब्रह्महत्यादि, ८ उद्योगः—उत्साह, ९ चरकः वा वरकः—वैद्यशास्त्र भेद, "करकः" यह भी पाठ है इसका स्यूतवस्त्र अर्थ है, १० तमालः—वृक्षभेद (तमाखू) प्रसिद्ध है, ११ आमलकः वा आमालकः—धात्रीफल वा आंवला प्रसिद्ध है, १२ नडः—भीतरी बिल वा तृणभेद ॥ ३३ ॥

कुष्ठं मुण्डं शीधु बुस्तं क्ष्वेडितं क्षेम कुट्टिमम् । संगमं शतमानार्मशम्बलाव्ययताण्डवम् ॥ ३४ ॥

१ कुष्ठं रोगभेद, पुष्कर वा कमल, २ मुण्डं—शिरः, ३ शीधु—मद्य, ४ बुस्तं भूँजा मांस वा कटहल आदिके फलका सार भाग—'कहीं पुस्तं वा शस्तं पाठ है कहीं चुस्तं वा तुस्तं भी पाठ है' ५ क्ष्वेडितं,वीरका किया सिंहनाद, ६ क्षेम-कुशल 'क्षेमोऽस्त्री लब्धरक्षणे' मोक्षको भी, ७ कुट्टिमं—गचका भेद, ८संगमं—संयोग, ९ शतमानं—मानभेद, १० अर्मं—अक्षिरोग, ११ शम्बलं वा सम्बलं—वर्णका भेद, १२ अव्ययं—स्वरादिनिपात वा विकाररहित, १३ ताण्डवं वा ताण्डव्यं—नाचका भेद ॥३४॥

कवियं कन्दकार्पासं पारावारं युगंधरम् । यूपं प्रग्रीवपात्रीवे यूषं चमसचिक्कसौ ॥ ३५ ॥

१ कवियं–तोबडा लगाम वा बाग-डोर,२ कन्दं–कमलिनीकी जड वा मूल, कहीं कर्म यह पाठ है, ३ कार्पासं–कपास वा रुई वस्त्रका कारण–आदि, ४ पारावार–वारं नदीआदिके दोनों पारको क्रमसे पार और वार कहते हैं, ५ युगन्धरं–कूबरं–रथके जूआके काठको पुष्ट करनेवाला काष्ठ वा पर्वत भेद आदि, ६ यूपं यज्ञाङ्गभेद–अथवा यज्ञपशु बांधनेका काष्ठभेद, ७ प्रग्रीवं–द्रुमशीर्षम् वा झरोखा–मुख–शाला खिडकी आदि, ८ पात्रीवं–पात्रीव वा यज्ञपात्रका भेद, ९ यूषं वा मापं–माण यह प्रसिद्ध है, (मुद्गामलकयूषस्तु ग्राही पित्तकफे हित इति उक्तं वैद्यके)१०–चमसचिक्कसौ ये २ दो पात्रभेद हैं ॥ ३५ ॥

अर्धर्चादौ घृतादीनां पुंस्त्वाद्यं वैदिकं ध्रुवम् । तन्नोक्तमिह लोकेऽपि तच्चेदस्त्यस्तु शेषवत् ॥ ३६॥

अर्धर्चादौ इस पुन्नपुंसकाधिकारवर्गमें घृतादिकोंको पाणिनि आदिकोंने पुंस्त्व आदि कहा है, वे तो वेदमें प्रसिद्ध वैदिक हैं इस हेतु उन्हें यहां नहीं कहा और लोकमें हैं तो वे शेषवत् अर्थात् उक्तसे भिन्नशेष हैं उनके समान शिष्टप्रयोगके अनुसार ग्राह्य है ॥३६ ॥

इति पुन्नपुंसकसंग्रहः ॥

अथ स्त्रीपुंसशेषसंग्रहः ॥

स्त्रीपुंसयोरपत्यान्ता द्विचतुःषट्पदोरगाः । जातिभेदाः पुमाख्याश्च स्त्रीयोगैः सह मल्लकः ॥ ३७ ॥

अपत्यप्रत्यय अन्तमें है जिनके वे शब्द स्त्री और पुँल्लिंगमें होते हैं जैसे-'उपगोः,अपत्यं पुमान् औपगवः,उपगोः अपत्यं स्त्री औपगवी, वैदेहः, वैदेही, गार्ग्यः, गार्गी, 'द्विचतुःषट्पदोरगाः' द्विपद, चतुष्पद और षट्पदवाची और भुजगवाची जातिभेद स्त्रीपुंस हैं तिनमें द्विपदजातिभेद जैसे–मानुषः पुमान्,मानुषी स्त्री, गोपः पुमान् स्त्री गोपी;ब्राह्मणः ब्राह्मणी, शूद्रः शूद्रा, अजादि मानकर टाप् है, चतुष्पदभेद जैसे–'मृगः, मृगी, हयः,हयी, षट्पद भेद जैसे–भृंगःभृंगी, मक्षिका–मक्खी, शिवा–सिंआरी, लूता, मकरी, पिपीलिका चिउंटी' उरग जैसे-उरगः, उरगी, नागः, नागी, 'स्त्रीयोगैः सह पुमाख्याः' अर्थात् स्त्री–वाचक शब्दके योगसे पुंवाचक शब्द स्त्री और पुँल्लिंगमें होते हैं, जैसे–इन्द्रः इन्द्राणी, 'मातुर्भ्राता मातुलः तस्य स्त्री मातुली,

पुंसिमें वर्त्तमान मातुलः स्त्रीयोगसे स्त्रीत्वमें भी हैं 'शूद्रस्य स्त्री शूद्री' 'मल्लक' आदि भी स्त्री और पुंसमें हैं, मल्लकः स्त्रीमें तो मल्लिका पुष्पवल्लिका भेद है ॥ ३७ ॥

ऊर्मिर्वराटकः स्वातिर्वर्णको झाटलिर्मनुः । मूषा सृपाटी कर्कन्धूर्यष्टिः शाटी कटी कुटी ॥ ३८ ॥

मुनिः यह भी पाठ है,यती इंगुदी—बुद्ध पिहालवृक्षभेद, पलाश आदि, ऊर्मि-तरंग, वराटकः-कोडी, स्त्रीलिंगमें वराटिका, ३ स्वातिः-नक्षत्र, ४ वर्णकः—चन्दन विलेपन, ५ झाटलिः जाटालिः वा 'पाटलिः' भी पाठ है, पलाशवृक्षके सदृश है, ६ मनुः-स्वायंभुव आदि वा मन्त्र, ७ मूषा—धातु गलानेका पात्र वा घरिआ, ८ सृपाटी—परिमाणभेद सृपाट वा स्त्री सृपाटी वा असृपाटी—रुधिरकी नदी, ९ कर्कन्धूः-बेरवृक्ष, १० यष्टिः-लाठी, ११ शाटी—पटभेद वा साडी, १२ कटिः वा कटः स्त्री० कटिः वा कटी—देहका अवयव वा कमर, १३ पुं०कुटिः, स्त्री. कुटिः वा कुटी, गृहविशेष वा पत्तोंका घर, यहां मूषा नकारान्त है॥३८॥

इति स्त्रीपुंसशेषसंग्रहः ॥

अथ स्त्रीनपुंसकशेषः ॥

स्त्रीनपुंसकयोर्भावक्रिययोः ष्यञ्क्वचिच्च वुञ् ॥ औचित्यमौचिती मैत्री मैत्र्यं वुञ् प्रागुदाहृतः ॥३९॥

भावक्रिययोः अर्थात् भाव और कर्म अर्थमें वर्तमान ष्यञ् प्रत्यय और वुञ् कहीं स्त्री और नंपुसकमें वर्त्तते हैं,तिनके मध्य ष्यञ् प्रत्ययका उदाहरण जैसे—औचित्यं यह 'उचितस्य भाव औचित्यं' और 'औचिती भी' मित्रस्य कर्म मैत्र्यं मैत्री वा, इसी प्रकार वार्द्धकं, वार्द्धकी, सामग्र्यं, सामग्री, आर्हत्यं, आर्हन्ती; वुञ् प्रत्यय तो वैरमैथुनिकादि वुन् इस भांति पहिले कहा है, जैसे मिथुनस्य भावः कर्म वा मैथुनिका मैथुनिके भी ॥ ३९ ॥

षष्ठ्यन्तप्राक्पदाः सेनाछायाशालासुरानिशाः ॥ स्याद्वा नृसेनं श्वनिशं गोशालमितरे च दिक्॥४०॥

तत्पुरुषसमाससे षष्ठ्यन्त षष्ठी विभक्त्यन्त प्राक्पद है जिनके ऐसे षष्ठ्यन्त प्राक्पद सेना आदि शब्द स्त्री और नपुंसकमें होवें उदाहरण जैसे-नृणां सेना नृसेनं वेति विकल्पसे नृसेना भी इतरे भिन्न पद भी इसी प्रकार उदाहरण करना चाहिये; श्वनिशं, गोशालं, यवसुरं, यवसुराः, कुड्यस्य छाया

कुड्यच्छायं कुड्यच्छाया वा षष्ठीबहुवचनान्तसे पूर्वपदकी छाया हो तो क्लीबमें ही होवे ऐसा पहिले दिखाया है ॥ ४० ॥

आबन्नन्तोत्तरपदो द्विगुश्चापुंसिनश्च लुप्। त्रिखट्वं च त्रिखट्वी च त्रितक्षं च त्रितक्ष्यपि ॥ ४१ ॥

आबन्त उत्तरपद और अन्नन्त उत्तरपदका द्विगुसमास पुंल्लिंगमें नहीं है, किन्तु स्त्री नपुंसकमें होते हैं, अन्नन्त उत्तरपदका जो अन्त नकार है उसका लुक् अर्थात् लोप भी होता है, (आप्-आ—अन्) आबन्तपदका उदाहरण जैसे,त्रिखट्वं यह तिस्रः खट्वाः समाहृताः त्रिखट्वं त्रिखट्वी भी, अन्नन्तोत्तरपद जैसे—त्रयस्तक्षाणः समाहृतास्त्रितक्षं, त्रितक्षी च; तक्षन् शब्दका अन्त्य नकार लुप्त है ॥४१ ॥

॥ इति स्त्रीनपुंसकशेषः ॥

अथ त्रिलिंगशेषसंग्रहः ।

त्रिषु पात्री पुटी वाटी पेटी कुवलदाडिमौ ।

पात्र आदि और दाडिम शब्दांत त्रिलिंग हैं, पात्रः पात्री पात्रम्—आदि, पुटी पुटः पुटं, वा पटः—टी—टं, पुटः मट्टीका बना डब्बा वा औषध पकानेका पात्रभेद, दूध आदिके पीनेका पात्र दोना आदि,वाटी,'वाटः—टी—टं,रास्ता वा मार्ग, पेटः टी वा टा—टं,पेटा—ढा पेटी—ढी यह पेटारा वा पेटारीका नाम है, कुवलः-ली—लं उत्पल, कमल, मोती आदि, दाडिमः—मी—मं, दाडिम्ब वृक्ष वा अनार ॥

इति त्रिलिंगशेषसंग्रहः॥

परं लिंगे स्वप्रधाने द्वन्द्वे तत्पुरुषेऽपि तत् ॥ ४२ ॥

द्वन्द्वैकत्वका और अव्ययीभाव समासका लिंग पहिले कह चुके हैं स्वप्रधाने अर्थात् उभयपदप्रधानइतरेतराख्य द्वन्द्व समासमें और तत्पुरुष समासमें भी जो 'परं' परपदस्थलिंग है वही लिंग होता है, तहां द्वन्द्वसमासमें जैसे कुक्कुटमयूर्य्याविमे, मयूरीकुक्कुटाविमौ, तत्पुरुषसमासमें जैसे—धान्येनार्थो धान्यार्थः, सर्पाद्भीतिः सर्पभीतिः, सर्पभयं,वाप्यश्वः,कुलविप्रः, कुलीनविप्रः, पूज्यकुलं, विप्रकुलं, ब्राह्मणका कुल, इत्यादि ॥ ४२ ॥

अर्थान्ताः प्राद्यलंप्राप्तापन्नपूर्वाः परोपगाः । तद्धितार्थो द्विगुः संख्यासर्वनामतदन्तकाः ॥ ४३ ॥

उक्त तत्पुरुषके लिंगका अपवाद कहा है, अर्थ इस पदसे, अर्थान्ताः अर्थात् अर्थ शब्द है अन्तमें जिनके वे परोपगाः परगामी वाच्यलिंग हैं, अर्थ जैसे—द्विजायायं द्विजार्थःसूपःद्विजार्था, यवागूः, द्विजार्थं पयः, ब्राह्मणार्थः-र्था—र्थं 'अर्थेन नित्यसमासोविशेष्यलिंगताचेतिवक्तव्यं—

यह वार्तिक भी है (प्राद्यलंप्राप्तापन्नपूर्वाः परोपगाः) पर विशेष्यको जाते हैं यह अर्थ है, प्रादि पूर्व जैसे–अतिक्रांतो मालामतिमालो हारः, अतिक्रांता मालामतिमालेयम् । अतिमालमिदं, अवक्रुष्टः कोकिलया अवकोकिकः । अलंपूर्वपद जैसे–अलं कुमार्यै इत्यलंकुमारिरयं, अलंकुमारिरियम्, अलंकुमारि इदम्, अलब्धजीविकः का–कं,प्राप्तजीविको द्विजः, प्राप्तजीविका स्त्री, प्राप्तजीविकमिदं, इसी प्रकार, आपन्नजीविक, 'तद्धितार्थो द्विगुः' अर्थात् तद्धित अर्थमें द्विगुसंज्ञक समास वाच्यलिंग है,पंचकपालः–लं–ला, पुरोडाश संख्याशब्द सर्वनामसंज्ञक और तदन्त भी परलिंगभाजी है, संख्या जैसे एकः पुमान्, एकं कुलं, द्वौ पुंमांसौ, द्वे स्त्रियौ, कुले च, त्रयः पुरुषाः, तिस्रः स्त्रियः, त्रीणि कुलानि, एवं चत्वारः चतस्रः चत्वारि षट्संज्ञकोंको कहते हैं. विंशति आदिकोंका लिंग द्वितीय कांडमें कह चुके हैं, और शत आदिकोंका तौ नपुंसकके संग्रहमें कह चुके हैं । सर्वनाम जैसे-सर्वो देशः सर्वा नदी सर्व जलं इसी प्रकार परः पुमान् 'संख्यान्तक जैसे ऊनत्रयः । ऊनतिस्रः ऊनत्रीणि' सर्वनामान्त जैसे–परमसर्वः परमसर्वा परमसर्वम् ॥ ४३ ॥

बहुव्रीहिरदिङ्नाम्नामुन्नेयं तदुदाहृतम् । गुणद्रव्यक्रियायोगोपाधयः परगामिनः ॥ ४४ ॥

अदिङ्नाम्नाम् अर्थात् दिशावाचक शब्दसे भिन्न नामवालोंका बहुव्रीहि समासमें अन्यलिंग होता है इसके उदाहरण आपसे आप विचारना चाहिये जैसे–'वृद्धा भार्या यस्य स वृद्धभार्यः'बहुधनः बहुधना बहुधनं अदिङ्नाम्नां ऐसा क्यों कहा? दक्षिणस्याः पूर्वस्याश्च दिशोरन्तरालं दक्षिणपूर्वा गुणयोगसे द्रव्ययोगसे और क्रियायोगसे जो उपाधि अर्थात् विशेषण है उनके धर्ममें जो प्रवृत्त शब्द हैं वे धर्मीके लिंगयोग होवैं, गुणयोगसे जैसे–शुक्लः पटः शुक्ला शुक्लं, गंधवती पृथ्वी गन्धवान् अश्मा,गन्धवत् कुसुमं,द्रव्यके योगसे जैसे–दण्डी दंडिनी स्त्री, दंडि कुलं क्रियायोगसे जैसे-याचक, याचिका, याचकम् आदि ॥ ४४ ॥

कृतः कर्तर्यसंज्ञायां कृत्याः कर्तरि कर्मणि । अणाद्यन्तास्तेन रक्ताद्यर्थे नानार्थभेदकाः ॥ ४५ ॥

असंज्ञामें जहां कर्ता अर्थमें कृत्संज्ञक प्रत्यय हैं वे वाच्यलिंग हैं, जैसे–करोतीति कर्त्ता पुमान् । कर्त्री स्त्री । कर्तृ कलत्रं कुर्वन्, ती–त्, असंज्ञादयः क्यों कहा प्रजा हरिः, कर्तरि क्यों कहा कृतिः, कर्म अर्थमें और कर्ताअर्थमें वर्तमान कृत्य प्रत्यय परगामी होते हैं, कर्ममें जैसे भव्यः (तरुः)–व्या–व्यं, गन्तव्यः (ग्रामः)–व्या–व्यं, कर्तव्या भक्तिः, कर्तामें जैसे वसतीति

वास्तव्योऽयं वास्तव्या सा वास्तव्यं तत्, कर्तरि कर्मणि क्यों कहा,भाव अर्थमें तो एधितव्यं त्वया तेन रक्तं इस इत्यादि अर्थमें अण् आदि तद्धितप्रत्ययान्त और नाना अर्थके कहने वाले वा अनेकार्थके विशेषभूत विशिष्ट होनेसे वाच्यलिंग हैं जैसे कुसुम्भेन रक्ता शाटी कौसुम्भी कौसुंभः पटः कौसुम्भं वासः, हैमः—हैमी—मं,ऐन्द्र—द्री—न्द्रं 'तेन रक्तं रागात्'इससे अण् होता है और रक्तार्थ इसके आदि शब्दसे मथुराया आगतोऽयं माथुरोऽयं वा माथुरीयं आदि अणाद्यन्ता इस इत्यादि पदसे ग्रामे भवः ग्राम्यः पुमान् ग्रामे भवा ग्राम्या स्त्रीआदि, यहां यत् प्रत्यय होता है ॥ ४५ ॥

षट्संज्ञकास्त्रिषु समा युष्मदस्मत्तिङव्ययम् । परं विरोधं शेषं तु ज्ञेयं शिष्टप्रयोगतः ॥ ४६ ॥

षट्संज्ञक अर्थात् षान्त और नान्त वा संख्या,तथा कतिशब्द भी त्रिषु समा वा तीनों लिंगोंमें तुल्य होते हैं और नित्य ही बहुत्व अर्थमें वर्तमान हैं इस कारणसे बहुवचनान्त हैं जैसे—षडिमे, षडिमाः, षडिमानि, पञ्चभिरेताभिः कति पुमांसः कति स्त्रियः कति कुलानि, युष्मद् और अस्मद् शब्द तथा तिङन्तपद और अव्ययवाचक शब्द-ये सब त्रिलिङ्ग और समान हैं, युष्मद् शब्द जैसे-त्वं स्त्री त्वं पुमान् त्वं कलत्रं,अस्मद् शब्द जैसे-आवां पुमांसौ आवां स्त्रियौ, आवां कलत्रे,तिङ् जैसे-स्थाली भवति, घटो भवति, पात्रं भवति इसी प्रकार दाराः भवन्तीत्यादि अव्यय जैसे—उच्चैः दाराः उच्चैः स्त्री उच्चैः कलत्रम् उच्चैःप्रासादः इत्यादि,परविरोधे—विप्रतिषेध वा विधियोंके परस्पर-विरोधमें परलिङ्गानुशासन होता है,जैसे-मानुष शब्द क-ष-ण-भ-म-र-इस प्रागुक्तविधिसे पुंस्त्व ही प्राप्त था,द्विचतुःषट्पद इस उपरोक्त स्त्रीपुंसविधिका निश्चय किया है जैसे—मानुषोऽयं, मानुषीयं, शेषं जो नहीं कहा गया नाम आदि वह शिष्ट महाकविप्रयोग और भाष्यकार आदिके प्रयोगसे जानना चाहिये, यद्वा अनुक्तशब्दोंके लिंग शिष्टप्रयोगसे जानने योग्य हैं,लिंगविधायक शास्त्र न करना चाहिये क्योंकि लिङ्गज्ञान् लोक वा संसारसे जान पडता है यह भाष्यकारका मत है॥४६॥

इति लिंगादिसंग्रहवर्गः ॥ ५ ॥

इत्यमरसिंहकृतौ नामलिंगानुशासने । सामान्यकाण्डस्तृतीयस्सांग एव समर्थितः ॥ ४७ ॥

इस प्रकार अमरसिंहकृतनामलिंगानुशासनमें सामान्य तृतीयकांड सांग निरूपण करा ॥ ४७ ॥

इति श्रीमुरादाबादवास्तव्य पंडितरामस्वरूपकृतभाषाटीकासहितः नामलिंगानुशासने सामान्यकाण्डस्तृतीयः समाप्तः ।

इत्यमरकोशः सम्पूर्णः ।

क्रय्य-पुस्तकें (कोशादिग्रन्थाः)।

नाम.	की. रु. आ.
अमरकोश–मूल–सटिप्पण छोटे अक्षरका गुटका.	.... ०–७
अमरकोश–संस्कृतटीकासहित	.... २–०
अनेकार्थध्वनिमञ्जरी–भाषामें सुगम है	.... ०–४
शब्दार्थचिन्तामणि–यह कोशग्रन्थ बहुत ही उत्तम और बृहत् है, इसमें अकारादि क्रमसे शब्द लिखे हैं व पुँल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग लिखनेके उत्तर शब्दोंकी व्युत्पत्ति व सिद्धिके पाणिनि–व्याकरणके सूत्र तथा शब्दोंके व उनके लिये अनेक कोषोंके प्रमाण तथा विशिष्ट शब्दोंमें अनेक ग्रन्थोंसे उदाहरण भी दिये गये हैं, यह ग्रन्थ ४ जिल्द व ३१९३ पृष्ठोंमें है। हर एक विषयके विद्वानोंको अवश्य अपने पास रखने योग्य है	.... २५–०
अमरुशतक–शृंगार और वेदान्तपर काव्य दो टीकासहित	०–१०
अश्वधाटीकाव्य–भाषाटीकासमेत.	.... ०–४
ऋतुसंहारकाव्य–कालिदासकृत और चौरकविकृत चौरपञ्चाशिका-काव्य। इसमें षड्ऋतुवर्णनादि राजकुमार बाबू देवनंदनसिंह-कृत छन्दोबद्ध भाषाटीका है.	.... ०–१०
कामाक्षिस्तुविशतक–मूककविरचित	.... ०–४
कलिविडम्बन–भाषाटीकासमेत तथा कलिप्रभाव भाषाटीकासमेत। इसमें–कलियुगप्रभाव वर्णन है.	.... ०–४
किरातार्जुनीयकाव्य–मल्लिनाथकृत संस्कृतटीकासहित	.... २–८
” तथा रफ कागजका.	.... २–०

नाम.	की. रु. आ.
कुमारसम्भव–महाकवि कालिदासकृत और मल्लिनाथकृत संजीवनी-टीकासमेत । इसमें–पार्वतीजीकी उत्पत्ति, ब्रह्माजीकी तारकासुरसे क्लेशित देवोंको शिक्षा, मदनदहन, रतिविलाप, पार्वतीके तपका उदय, पार्वतीका शिवजीसे विवाह करनेके निमित्त हिमवान्के पास सप्तऋषियोंको भेजकर विवाहका निश्चय और शिव–पार्वतीजीका विवाह विधिपूर्वक वर्णित है.	१–८
कृष्णलीलामृतकाव्य–और भक्त मनोरञ्जनी....	०–५
कृष्णकर्णामृतकाव्य–(बडाही सरस भक्तिमय है)	०–६
कार्ष्णिकण्ठाभरण–कार्ष्णिगोपालदास विरचित । नरोत्तमीय टीका तथा अमरेश्वरीय–टिप्पणीसहित । इसमें भुजङ्गप्रयात, रत्नदशक, तोटकरत्न दशक आदि दश दशक हैं । और श्रीकृष्णभगवान्की स्तुतिके साथ २ ऐसी उत्तम कविता है कि पण्डितोंका मन मुग्ध हो जाता है ।	०–८
गीतगोविन्द–राधाविनोदसमेत–संस्कृतटीका तथा भाषाटीका सहित । इसमें जयदेवगोस्वामिकृत अतिललित संस्कृतमें रागमय राधाकृष्णकी प्रेममयभक्तिकी गानेकी चीजें विद्यमान हैं । गानविद्या जाननेवालोंको अवश्य संग्रह करना चाहिये । यह भगवान्को अत्यन्त प्रिय है.	१–८
गीतगोविन्द–मूलमात्र.	०–३
गुरुपीयूषलहरी–गुरुनानकसाहबका वर्णन	०–६
घटकर्परकाव्य–भाषाटीकासमेत, ...	०–२
दशकुमारचरित्र–(संस्कृत) टीका व टिप्पणीसहित	१–८
दशकुमारचरित्र–भाषाग्रन्थ–राजकुमारादि दश कुमारोंकी अपूर्व रोचक देशाटनीय विचित्र कथा वर्णित है	०–१४

नाम.	की. रु. आ.
दृष्टान्तशतक–दोहा–भा० टी० इसके श्लोक, दोहोंमें यह विचित्रता है कि पूर्वार्द्धमें दृष्टान्त और उत्तरार्द्धमें दार्ष्टान्त क्रमसे कहे गये हैं.	०–३
नलोदयकाव्य–संस्कृतटीकासहित । इसमें महाराजा नल और दमयन्तीका रोचक चारित्र वर्णित है	१–३
पद्यमुक्तावली–इसके श्लोकोंके आदिसे क्रमसे स्वर व्यंजनोंके अक्षर आते हैं । यद्यपि छोटा है किन्तु देखने योग्य हैं.	०–१॥
पञ्चतन्त्र–मूलमात्र । विष्णुशर्माकृत नीतिशास्त्र.	१–१२
पञ्चतन्त्र–विष्णुशर्माकृत और पं० ज्वालाप्रसादजीमिश्रकृत सुबोध भाषाटीकासमेत । यह मित्रभेद, मित्रसंप्राप्ति, काकोलूकीय, लब्धप्रणाश, अपरीक्षितकारक इन पांच तन्त्रोंमें नीतियुक्त सर्वोत्कृष्ट है	३–०
भर्तृहरिशतक–नीति, शृङ्गार तथा वैराग्य संस्कृत टीका तथा भाषाटीका समेत। इसके नीतिशतकमें–निन्दाप्रशंसा, विद्वत्प्रशंसा, मानशौर्यप्रशंसा, दुर्जननिन्दा, सुजनप्रशंसा, धैर्यप्रशंसा, दैवप्रशंसा, कर्मप्रशंसा और शृंगारशतकमें–षड्ऋतुवर्णन, दुर्विरक्तवर्णन, स्त्रीपरित्यागप्रशंसा, यौवनप्रशंसा, कामिनीग्रहण-सुविरक्त और वैराग्यशतकमें–तृष्णाधिकार, मदनविडम्बन, विनयोंका रूपतिरस्कार, दुर्जनपुरुषोंकी निन्दाहास्यका वर्णन, भोगपद्धति, कामनिर्वेदताका स्वरूप इत्यादि वर्णन देखने ही योग्य है.	१–१२
भक्तिरत्नावली–श्रीमद्भागवतोद्धृत स्तुतिसंग्रह.	०–४
भामिनीविलास–पं० महावीरप्रसाद द्विवेदिकृत भाषाटीकासहित । इसमें–प्रास्ताविकविलास, शृंगारविलास, करुणाविलास तथा	

नाम.	की. रु. आ.
शांतिविलासादि अत्यन्त रोचक विषय हैं, पंडितोंके देखने योग्य है.	१–४
भोजप्रबन्ध–मूल। कविबल्लालकृत। इसमें भोजराजाका चरित्र राजनीतिसम्बन्धी भली भांति वर्णित है.	०–१२
भोजप्रबन्ध–पं० श्यामसुन्दरलाल त्रिपाठीकृत भाषाटीकासमेत	१–६
भोज और कालिदास–भाषाटीकासमेत। राजा भोज और कालिदासके चातुर्य्यकी उत्तमोत्तम कथाका संग्रह है	१–६
भङ्गाभङ्गानिषेध भाषाटीकासमेत। इसमें भाङ्गकी निन्दाका खण्डन भलीभांति किया है.	०–२
मारुतिस्तव–सटीक। जोधपुरनिवासी नित्यानन्दशास्त्रीजीने हनुमानजीकी लोकोत्तरमहिमाको ललितपद्योंमें वर्णन किया है। कवितामें यह विचित्रता है कि पद्योंके अक्षरोंमें रामरक्षा स्तोत्र सम्पूर्ण आ गया है जो कि विद्वानोंके देखने ही योग्य है। साथ ही जोधपुर वैदिक पाठशालाके प्रधानाध्यापक पण्डित भगवतीलालजीने इसकी ऐसी सरल टीका की है कि कविता स्पष्ट समझने आती है	०–५

स्त्रीणां द्विगुणाहारो [illegible] चतुर्गुणा

[illegible]

بنسری گوپال چند منترہ اکانب
چوک بجلی امرتسر

Bushan Lal Ishtri
P. G. Department
Kaul

B

राम

Bushan lal. Ishtri
P. G. Depart of Sanskrit
University of Jammu

British Information Services

British High Commission in India

BIS.B 358

MINISTER FORESEES GROWTH

OF BRITISH EXPORTS

Britain's Secretary of State for Trade and Industry, Mr. Peter Walker, said in London this week that the changes in exchange rates have made British [illegible] more competitive than [illegible]